KUFRIYYA KALIMAT KE BARE ME SUWAL JAWAB (HINDI)

DAWAT-E-ISLAMI

MAKTABA TUL MADINA

ह़राम अल्फ़ाज़ और कुफ़्रिय्या कलिमात के मुतअ़ल्लिक़ इल्म सीखना फ़र्ज़ है ।

(फ़तावा शामी जिल्द 1 सफ़ह़ा 107)

कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को "ऊपर वाला" कहना कैसा ? 109

"फुलां अल्लाह को ठगता है" कहना कैसा ? 129

रिश्वत को هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّيْ कहना कैसा ? 180

क्या अहले अ़रब को बुरा भला कहना कुफ़्र है 290

"झूट बोला तो क्या बुरा किया !" कहना कैसा ? 390

"आज नमाज़ की छुट्टी है" कहना कैसा ? 503

काफ़िर को मुसल्मान करने का त़रीक़ा 551

तजदीदे ईमान का त़रीक़ा 621

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَیْنَا رَحْمَتَكَ یَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(مستطرف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह किताब शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने "उर्दू" ज़बान में तह़रीर फ़रमाई है और मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह ग़लत़ी पाएं तो मजलिस को सफ़ह़ा और सत़र नम्बर के साथ Sms, E-mail, Whats App या Telegram के ज़रीए इत्तिलाअ़ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं!!!

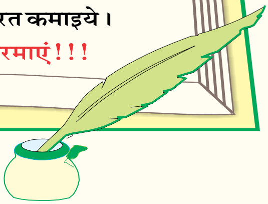

...राबित़ा :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1, गुजरात (हिन्द)

+91 98987 32611

E-mail : hindibook@dawateislamihind.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ो = ئُ	ु = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ه	व = و	न = ن

याद दाश्त

दौराने मुताअलआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उ़न्वान	सफ़्ह़ा	उ़न्वान	सफ़्ह़ा

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा

हराम अल्फ़ाज़ और कुफ़्रिय्या कलिमात के
मुतअ़ल्लिक़ इल्म सीखना फ़र्ज़ है।
(فتاوٰی شامی ج ۱ ص ۱۰۷)

कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब

-: मुअल्लिफ़ :-
शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी
ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना
अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार
क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَه

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

नाम किताब : **कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब**

मुअल्लिफ़ : शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

साले इशाअ़त : रबीउ़ल अव्वल, सि. 1441 ई.

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, दा'वते इस्लामी (हिन्द)

-: मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें :-

❁..... **अजमेर** : **मक्तबतुल मदीना**, 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह अजमेर शरीफ़, राजस्थान, फ़ोन : **0145-2629385**

❁..... **बरेली** : **मक्तबतुल मदीना**, दरगाह आ'ला ह़ज़रत, मह़ल्ला सौदागरान, रज़ा नगर, बरेली शरीफ़, यू.पी. फ़ोन : **09313895994**

❁..... **गुलबर्गा** : **मक्तबतुल मदीना**, फ़ैज़ाने मदीना मस्जिद, तिम्मापुरी चौक, गुलबर्गा शरीफ़, कर्नाटक फ़ोन : **09241277503**

❁..... **बनारस** : **मक्तबतुल मदीना**, सी. के. 68/26 मुस्लिम मुसाफ़िर ख़ाने के सामने, कच्छी सराय, दालमन्डी, वाराणसी (बनारस) यू.पी. फ़ोन : **09369023101**

❁..... **कानपुर** : **मक्तबतुल मदीना**, मस्जिद मख़्दूमे सिमनानी, नज़्द गुर्बत पार्क, डिपटी पडाव चौराहा, कानपुर, यू.पी. फ़ोन : **09616214045**

❁..... **कलकत्ता** : **मक्तबतुल मदीना**, 35A/H/2 मोमिन पुर रोड, दो तल्ला मस्जिद के पास, कलकत्ता, बंगाल, फ़ोन : **033-32615212**

❁..... **नागपुर** : **मक्तबतुल मदीना**, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ीनगर रोड, मोमिन पुरा, नागपुर (ताजपुर) महाराष्ट्र, फ़ोन : **09326310099**

❁..... **सुरत** : **मक्तबतुल मदीना**, वलिया भाई मस्जिद के सामने, ख़्वाजा दाना दरगाह के पास, सुरत, गुजरात, फ़ोन : **09601267861**

❁..... **इन्दौर** : **मक्तबतुल मदीना**, शॉप नम्बर 13, बॉम्बे बाज़ार, उदापुरा, इन्दौर, एम. पी. (मध्य प्रदेश) फ़ोन : **09303230692**

❁..... **बेंग्लोर** : **मक्तबतुल मदीना**, शॉप नं. 13, जामिअ़ा ह़ज़रत बिलाल, 9th मेन पिल्लाना गार्डन, 3rd स्टेज, बेंग्लोर 45, कर्नाटक : **08088264783**

❁..... **हुबली** : **मक्तबतुल मदीना**, ए. जे. मुढोल कोम्पलेक्स, ए. जे. मुढोल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक, फ़ोन : **08363244860**

E-mail : maktabadelhi@gmail.com / **Website :** www.dawateislamihind.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

(1)...... इज्माली फ़ेहरिस्त 5

(2)...... मुफ़्तियाने किराम की तक़ारीज़ 8

(3)...... तफ़्सीली फ़ेहरिस्त और मआख़िज़ो मराजेअ़ आख़िरी सफ़हात पर हैं।

इज्माली फ़ेहरिस्त

नम्बर	उन्वान	सफ़हा
1	बा'ज़ अहम इस्तिलाहात के बारे में सुवाल जवाब	39
2	कुफ़्र की अक़्साम और तक्फ़ीर के बारे में सुवाल जवाब	47
3	मुरतद के बारे में सुवाल जवाब	66
4	वुजूदे इलाही عَزَّوَجَلَّ के इन्कार के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल जवाब	96
5	"**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मकान से पाक है" के बारे में सुवाल जवाब	100
6	**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तौहीन के बारे में सुवाल जवाब	116
7	**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ए'तिराज़ के बारे में सुवाल जवाब	141
8	क़ुरआने पाक की तौहीन के बारे में सुवाल जवाब	180
9	नबी की गुस्ताख़ी के बारे में सुवाल जवाब	199
10	मे'राज शरीफ़ के इन्कार के बारे में सुवाल जवाब	226

11	ना'तिया अश्आ़र व शुअ़रा के बारे में सुवाल जवाब	230
12	अम्बियाए किराम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की गुस्ताख़ी के बारे में सुवाल जवाब	243
13	सादाते किराम की तौहीन के बारे में सुवाल जवाब	276
14	अ़रबों की गुस्ताख़ी के बारे में सुवाल जवाब	290
15	फ़िरिश्तों की तौहीन के बारे में सुवाल जवाब	299
16	जिन्नात के बारे में सुवाल जवाब	313
17	क़ियामत के बारे में सुवाल जवाब	325
18	शरीअ़त की तौहीन के बारे में सुवाल जवाब	328
19	आ़लिम व इ़ल्मे दीन की तौहीन के बारे में सुवाल जवाब	342
20	अज़ान की तौहीन के बारे में सुवाल जवाब	359
21	नमाज़ की तौहीन के बारे में सुवाल जवाब	362
22	रमज़ान के रोज़ों की तौहीन के बारे में सुवाल जवाब	377
23	ज़कात के इन्कार के बारे में सुवाल जवाब	382
24	गुनाहों के ज़रीए़ होने वाले कुफ़्रिय्यात के बारे में सुवाल जवाब	385
25	ह़राम को ह़लाल कहने के बारे में सुवाल जवाब	407
26	सुन्नतों की तौहीन के बारे में सुवाल जवाब	417
27	कुफ़्रिय्या वसाविस के बारे में सुवाल जवाब	423

www.dawateislami.net

28	कुफ़्फ़ार से दोस्ती वग़ैरा के बारे में सुवाल जवाब	428
29	इरादए कुफ़्र के बारे में सुवाल जवाब	451
30	कुफ़्र पर मजबूर किये जाने के बारे में सुवाल जवाब	458
31	कुफ़्रिय्या अफ़्आल के बारे में सुवाल जवाब	471
32	फ़ौतगी में बके जाने वाले कुफ़्रिय्यात के बारे में सुवाल जवाब	489
33	मज़ाक़ में कुफ़्रिय्यात बकने के बारे में सुवाल जवाब	496
34	गानों के **34** कुफ़्रिय्या अश्आर	512
35	मियां बीवी के मुतअ़ल्लिक़ कुफ़्रिय्यात के बारे में सुवाल जवाब	525
36	‘‘اِنْ شَآءَ اللّٰه’’ का मज़ाक़ उड़ाने के बारे में सुवाल जवाब	530
37	क्रिस्चेनों वग़ैरा के बारे में सुवाल जवाब	536
38	काफ़िर के इस्लाम क़बूल करने के बारे में सुवाल जवाब	550
39	मुतफ़र्रिक़ात	568
40	तज्दीदे ईमान, तज्दीदे निकाह़ वग़ैरा के बारे में सुवाल जवाब	621
41	इसी किताब ‘‘कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब’’ के मुतअ़ल्लिक़ मुतवक़्क़अ़ वस्वसों के बारे में सुवाल जवाब	632

www.dawateislami.net

(1) तक़रीज़े जलील

मोहसिने दा'वते इस्लामी, आलिमे बा अमल, हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इस्माईल क़ादिरी रज़वी नूरी مدّظِلّهُ العالی

(शैख़ुल हदीस व रईसे दारुल इफ़्ता दारुल उ़लूम अम्जदिय्या बाबुल मदीना कराची)

نَحمَدُہٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِہٖ اَشْرَفِ الْاَنْبِیَاءِ وَالْمُرْسَلِیْنَ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَصَحْبِہٖ اَجْمَعِیْنَ الَّذِیْ بُعِثَ مُعَلِّماً وَّنَوَّرَ الْخَلْقَ بِعُلُوْمِہِ النَّاجِیَۃ

मैं ने अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास क़ादिरी रज़वी साहिब دامَ ظِلُّہٗ की तालीफ़ कर्दा किताब मुतअ़ल्लिक़ए अ़क़ाइद बनाम "**कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब**" अज़ अव्वल ता आख़िर पढ़ने का शरफ़ ह़ासिल किया, येह किताब बहुत आसान उर्दू ज़बान में लिखी गई है, मा'मूली पढ़ा लिखा आदमी भी ब आसानी इसे पढ़ सकता है। येह किताब हर मुसल्मान को पढ़नी चाहिये ताकि कुफ़्रिय्या कलिमात से आगाही ह़ासिल हो और ईमान की हि़फ़ाज़त का सामान हो। बहुत से लोगों को आ़लिम फ़ाज़िल होने का दा'वा तो होता है लेकिन वोह अ़क़ाइद की बारीकियों से वाक़िफ़ नहीं होते, इस किताब को पढ़ने से ऐसों को बहुत कुछ सीखने को मिल सकता है। मैं ने इस किताब को ब नज़रे ग़ाइर तन्क़ीदी त़ौर पर पढ़ा है और मुझे येह किताब बहुत अच्छी लगी है, इस को पढ़ कर اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ख़ुद मुस्तफ़ीज़ हुवा हूं।

इस किताब में **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ व सदरुश्शरीअ़ह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के फ़तावा का ख़ूब ख़ूब फ़ैज़ान है, नीज़ येह किताब मज़्कूरा बुज़ुर्गों के इलावा अस्लाफ़े मुक़द्दसा मसलन **मुल्ला अ़ली क़ारी, साहि़बे रद्दुल मुह़तार** वग़ैरा **बह़रुल उ़लूम** के मुस्तनद फ़तावा के फ़ुयूज़ो बरकात से मालामाल है। येह किताब **सुवाल व जवाब** पर मुश्तमिल है और बा'ज़ तन्क़ीदी सुवालों का इस में सहल त़रीक़े से जवाब दिया गया है, नीज़ येह **क़ुरआनो** ह़दीस, अक़्वाले सह़ाबा व नसीह़त आमोज़ **ह़िकायात** का ईमान अफ़्रोज़ और दिलचस्प मज्मूआ़ है। मेरी सोच के मुत़ाबिक़ इस किताब का मुत़ालआ़ अ़वाम तो अ़वाम उ़लमाए किराम के लिये भी मुफ़ीद है। मेरी नाक़िस राय है कि जितना ज़ियादा हो सके, मश्हूरो मा'रूफ़ ज़बानों में इस

www.dawateislami.net

किताब का तरजमा करवाया जाए ताकि ज़ियादा से ज़ियादा लोग इस से मुतमत्तेअ़ हों। नीज़ इस किताब को स्कूल व मदारिस के निसाब में शामिल करना बेह़द, बेह़द, बेह़द मुफ़ीद है।

मेरी दुआ़ है **अल्लाह** तआ़ला इस किताब से मुसल्मानों को ज़ियादा से ज़ियादा मुस्तफ़ीज़ फ़रमाए और इस किताब के मुअल्लिफ़ को जज़ाए ख़ैर दे। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

محمد اسماعیل خادم الحدیث
دار العلوم امجدیہ

(2) तक़रीज़े जलील

अज़ : मुफ़्तियाने किराम مَدَّ ظِلُّھُم दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

मुसल्मान के लिये सब से अहम और अ़ज़ीज़ तरीन मताअ़ उस का **ईमान** है और सब से ज़ियादा इसी की ह़िफ़ाज़त की ज़रूरत है। शैत़ान हमारा सब से बड़ा दुश्मन है और उस का सब से शदीद ह़म्ला इसी ईमान पर होता है। इस लिये निहायत ज़रूरी है कि हर मुसल्मान अपने **ईमान की ह़िफ़ाज़त** की फ़िक्र में लगा रहे और **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़, औलियाए किराम से वाबस्तगी के साथ मज़ीद जो अहम इक़्दामात इस सिल्सिले में किये जा सकते हैं उन्हें बरूए कार लाए। ईमान की ह़िफ़ाज़त के अहम ज़राएअ़ में से एक ज़रीआ़ येह है कि जो चीज़ें ईमानिय्यात में दाख़िल हैं और जिन चीज़ों से ईमान पर असर पड़ता है उन का इ़ल्म ह़ासिल किया जाए ताकि हम हर वक़्त ऐसी तमाम चीज़ों से बचने की कोशिश करते रहें जो ईमान के मुनाफ़ी हैं। इन चीज़ों का इ़ल्म ह़ासिल किये बिग़ैर **कुफ़्रिय्यात** से बचना निहायत मुश्किल है लेकिन निहायत ही अफ़्सोस की बात है कि जिस त़रह़ कसीर मुसल्मान

www.dawateislami.net

दीन के दीगर शो'बों से मुतअ़ल्लिक़ ग़फ़्लत व काहिली और ला इ़ल्मी का शिकार हैं इसी त़रह़ **ईमानिय्यात** और **कुफ्रिय्यात** जैसे अहम और नाज़ुक मसाइल से भी ग़ाफ़िल व काहिल हैं और आए दिन न जाने कितने मुसल्मान ऐसे हैं जो मज़ाक़ में या गपें हांकते हुए कुफ़्रिय्या जुम्ले बोल देते हैं और इस रिवायत व हुक्म का मिस्दाक़ बनते हैं कि बा'ज़ अवक़ात आदमी **अल्लाह** तआ़ला की नाराज़गी का कोई ऐसा कलिमा बोल देता है कि **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये हमेशा की नाराज़ी लिख देता है।

मौज़ूअ़ की नज़ाकत व अहम्मिय्यत के पेशे नज़र इस मौज़ूअ़ पर उ़लमा ने ब कसरत किताबें लिखी हैं। तक़रीबन हर फ़िक़्ही किताब में "किताबुस्सियर" के नाम से इस मौज़ूअ़ से मुतअ़ल्लिक़ मवाद मौजूद होता है और इ़ल्मुल कलाम की किताबों में भी इस मौज़ूअ़ पर बाब बांधे जाते हैं। इस मौज़ूअ़ पर इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن का कलाम **फ़तावा रज़विय्या** और **अल मो'तमदुल मुस्तनद** में जब कि सदरुश्शरीअ़ह बदरुत्त़रीक़ह **मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी** عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ القَوِى का कलाम **बहारे शरीअ़त** और **फ़तावा अम्जदिय्या** में मौजूद है। इसी त़रह़ दीगर उ़लमाए अहले सुन्नत की भी इस मौज़ूअ़ पर निहायत मुफ़ीद और इ़ल्मी किताबें मौजूद हैं।

सय्यिदी, मुर्शिदी, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ाते मुबारका तब्लीग़ व इशाअ़ते दीन और मुसल्मानों की इस्लाहे अह़वाल के लिये दुन्या भर में मा'रूफ़ व मक़्बूल है। आप ने जिस त़रह़ अ़क़ाइदो आ'माल की इस्लाह़ के लिये **दा'वते इस्लामी** की बुन्याद रखी, इसे परवान चढ़ाया, दुन्या के कोने कोने तक पहुंचाया, कसीर कुतुब तस्नीफ़ फ़रमाईं, बयानात किये, मदनी मुज़ाकरे फ़रमाए, आप ने अपनी तमाम तर मस्रूफ़िय्यात को उम्मते मुह़म्मदिय्यह

www.dawateislami.net

عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के लिये वक्फ़ कर दिया है, यहां तक कि आप ने अपनी खाने की मजलिसों तक को इस्लाहे उम्मत के लिये वक्फ़ कर रखा है। हर वाक़िफ़े हाल शख़्स आप की हिफ़ाज़ते ईमान की कुढ़न को बेहतर तौर पर जानता और समझता है। मुसल्मानों के ईमान की हिफ़ाज़त के इसी जज़्बे के पेशे नज़र आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस नाज़ुक मौज़ूअ़ पर क़लम उठाया और मेहनते शाक़्क़ह के बा'द कसीर किताबों के मवाद को पेशे नज़र रख कर अपनी आ़दते मुबारका के मुताबिक़ निहायत आसान अल्फ़ाज़ व पैराए में इस मौज़ूअ़ पर ज़ेरे नज़र अ़ज़ीम व ज़ख़ीम और जमील व जलील किताब तालीफ़ फ़रमाई।

हक़ीक़त येह है कि इस मौज़ूअ़ पर क़लम उठाना निहायत ही दुश्वार और कठिन काम है। मवाद की फ़राहमी, उस की सिह़्ह़त का इल्तिज़ाम, अकाबिर बुज़ुर्गाने दीन और अइम्मए दीन की तह़क़ीक़ात से मुताबक़त, तमाम मवाद की तस्हील व तख़्रीज फिर ह़त्तल इम्कान बार बार ब कसरत उ़लमा से किताब में मज़्कूर बीसियों जुज़्इय्यात पर मुफ़स्सल कलाम और ख़ुतो किताबत करना कोई आसान काम नहीं, इस का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि आप ने सब से पहले इस किताब के लिये मवाद इकठ्ठा किया, इस को तरतीब देने के बा'द दा'वते इस्लामी की मजलिसे इफ़्ता के मुफ़्तियाने किराम को तफ़्तीश के लिये भेजा, मजलिसे इफ़्ता ने बा क़ाइदा कई हफ़्तों तक कई कई घन्टों की त़वील निशस्तों में इस किताब के एक एक जुज़्इय्ये पर ग़ौर किया, जिन पर इश्काल था अस्ल कुतुब से मुराजअ़त और बड़ी बह़सो तम्ह़ीस व ग़ौरो फ़िक्र के बा'द उस जुज़्इय्ये को रखने या न रखने पर इत्तिफ़ाक़ किया। नीज़ कसीर अह़काम का जुज़्इय्यात की रोशनी में इस्तिख़्राज किया, मुख़्तलिफ़ मुतआ़रिज़ जुज़्इय्यात की तन्क़ीह़ के साथ साथ किसी कलिमे के तौहीन आमेज़ होने या न होने नीज़ मूहिम होने या सरीह़ होने पर भी तफ़्सीली कलाम किया गया। फिर कई दफ़्आ़ ब नफ़्से नफ़ीस अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی की मौजूदगी में पूरी पूरी

रात इस किताब के जुज़्इय्यात व अह़कामात के मुतअ़ल्लिक़ बह़्स होती रही, बिल आख़िर येह गौहरे नायाब गौहरे मुराद तक पहुंचा। मज़्कूरा त़रीक़ए कार से वाज़ेह़ हो जाता है कि इस किताब का त़वील सफ़र कैसे गुज़रा लेकिन फिर भी अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की त़बीअ़त में मायूसी और हिम्मत हारना नाम को नहीं आया बल्कि अहम कामों के मुतअ़ल्लिक़ ग़ौर कर के, हदफ़ मुक़र्रर कर के तन देही के साथ इस में लगे रहे और इसे पायए तक्मील तक पहुंचा कर ही दम लिया।

अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्लो करम से इस किताब को अमीरे अहले सुन्नत مدظلہ العالی ने इस क़दर जां फ़िशानी और एह़तियात़ के साथ तह़रीर फ़रमाया है कि बिला मुबालग़ा उर्दू ज़बान में **ईमानिय्यात** और **कुफ़्रिय्यात** के मौज़ूअ़ पर इस से ज़ियादा जामेअ़, मुफ़ीद और अहम किताब आज तक देखने में नहीं आई। फिर इस मौज़ूअ़ पर लिखी जाने वाली दीगर कुतुब के मुक़ाबले में इस किताब में बा'ज़ ख़ुसूसिय्यात के ह़वाले से इन्फ़िरादिय्यत भी है कि इस किताब में अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ ने जुज़्इय्यात जम्अ़ करने के साथ साथ मौजूदा दौर में बोले जाने वाले कुफ़्रिय्या जुम्ले और कुफ़्रिय्या अफ़्आ़ल और गानों के कुफ़्रिय्या अश्आ़र की निशान देही भी फ़रमाई और इन को उ़लमाए किराम के जुज़्इय्यात की रोशनी में मुदल्लल भी फ़रमाया और जहां मुम्किन हुवा वहां उस जुम्ले के कुफ़्रिय्या होने की इ़ल्लत भी बयान फ़रमाई, साथ ही साथ इस किताब में जा ब जा इस्लाह़ के मदनी फूल, आयाते क़ुरआनिया, अह़ादीसे नबविय्या, सह़ाबए किराम और बुज़ुर्गाने दीन के अक़्वाल व वाक़िआ़त और शरई अह़काम भी पेश फ़रमाए ताकि इस किताब का पढ़ने वाला उक्ताहट का शिकार भी न हो और अह़कामे शरइय्या और इस्लाह़ के मदनी फूलों से इस्तिफ़ादा भी कर सके।

मजलिसे इफ़्ता (दा'वते इस्लामी) के तमाम मुफ़्तियाने किराम को इस बात का **इक़रार** है कि हम ने इस किताब का कई बार बग़ौर मुत़ालआ़ किया है और अपनी मा'लूमात की ह़द तक इसे शरई

www.dawateislami.net

ग़लति़यों से मुबर्रा पाया है। मजलिसे इफ़्ता ने इस किताब पर जो काम किया उस के नतीजे में इस बात में कोई शक नहीं कि येह किताब **रस्मुल इफ़्ता** के तमाम तक़ाज़ों को पूरा करती है। इस में मौजूद तमाम तर अह़काम उसूले तक्फ़ीर के तमाम तर लवाज़िमात और ज़वाबित़ की रिआ़यत करते हुए नीज़ फुक़हा और मुतकल्लिमीन के मज़्हब को सामने रखते हुए बयान किये गए हैं। इस किताब में इस बात का बत़ौरे ख़ास ख़याल रखा गया है कि कुतुबे फ़िक़्ह में जो फुक़हा के मज़्हब की रिआ़यत करते हुए **लुज़ूम** पर भी तक्फ़ीर की जाती है जब कि मुतकल्लिमीन के नज़्दीक सिर्फ़ **इल्तिज़ाम** पर तक्फ़ीर होती है तो ऐसा उस्लूब इख़्तियार किया जाए कि अह़काम मुतकल्लिमीन के मज़्हब ही पर बयान किये जाएं और फ़ुक़्हा की इ़बारात इस अन्दाज़ से पेश की जाएं जिस से जुज़्इय्ये के इन्तिबाक़ में पेचीदगी न हो, अलबत्ता कहीं कहीं सिर्फ़ मज़्हबे फ़ुक़हा ही बयान किया है।

अल्लाह तआ़ला अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی को पूरी उम्मत की त़रफ़ से दुन्या व आख़िरत में अ़ज़ीम से अ़ज़ीम तर जज़ाए ख़ैर अ़त़ा फ़रमाए और आप ने उम्मते मुस्लिमा को जो अ़ज़ीम तोह़फ़ा अ़त़ा फ़रमाया है इस का बेहतर से बेहतर बदला अ़त़ा फ़रमाए। आप के इ़ल्मो अ़मल और उ़म्र व आ़फ़िय्यत में मज़ीद बरकतें पैदा फ़रमाए। आप के फ़ैज़ को आ़म से आ़म तर फ़रमाए और आप के सदक़े हमें इख़्लास और ख़िदमते दीन का जज़्बा अ़त़ा फ़रमाए और इस किताब का नफ़्अ़ पूरी दुन्या में आ़म फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(1) محمد قاسم

(2) فضیل رضا العطاری

(3) ابو محمد علی اصغر العطاری المدنی

www.dawateislami.net

(3) तक़रीज़े जलील

आ़लिमे नबील, फ़ाज़िले जलील उस्ताज़ुल उ़लमा ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद आ'ज़म साह़िब क़िब्ला مَدَّظِلُّهُ العَالِی

(ता'लीमी रज़्वी दारुल इफ़्ता बरेली शरीफ़ यू पी, हिन्द)

इस किताब में ईमान व तौह़ीद व कुफ़्रो शिर्क की ता'रीफ़ात, **काफ़िर व मुरतद** की ता'रीफ़ व अह़काम, कुफ़्रे इल्तिज़ामी व कुफ़्रे लुज़ूमी की ता'रीफ़ व अह़काम वग़ैरहा बहुत सारे अहम मसाइल के बयान के साथ साथ **कई सो अक़्वाले कुफ़्रिय्या** और **चन्द अफ़्आ़ले कुफ़्रिय्या** का बयान है, सुवाल व जवाब की शक्ल में अक्सर बल्कि सब अह़काम, फ़िक़्हे ह़नफ़ी की मुस्तनद व मो'तमद कुतुबे फ़िक़्ह व फ़तावा, फ़तावा रज़विय्या व बहारे शरीअ़त व दुर्रे मुख़्तार व रद्दुल मुह़तार व फ़तावा आ़लमगीरी वग़ैरहा कुतुब के ह़वालों से बयान किये गए हैं। इस लिये येह किताब निहायत मुस्तनद व मो'तमद हो कर अ़वामो ख़वास, उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन त़लबा व मुदर्रिसीन सब के लिये एक बहुत मुफ़ीद इल्मी ख़ज़ाना है। बड़ी मेह़नतो मशक़्क़त काफ़ी व त़वील जिद्दो जुहद जां काह मुत़ालए़ के बा'द **कई सो अक़्वाले कुफ़्रिय्या** को जम्अ़ कर के उन के अह़काम बयान किये गए हैं।

शायद अब तक उर्दू ज़बान में इस मौज़ूअ़ पर ऐसी इतनी ज़ख़ीम व ह़जीम किताब की तरतीब व तालीफ़ नहीं की गई, मौला तआ़ला ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद इल्यास साह़िब क़ादिरी रज़वी अमीरे दा'वते इस्लामी और इन के रुफ़क़ाए कार उ़लमाए किराम व मुफ़्तियाने इज़ाम को इस अ़ज़ीम शाहकार पर दोनों जहां में जज़ाए ख़ैर अ़ता फ़रमाए। फ़क़ीर ने अव्वल से आख़िर तक इस किताब का मुत़ालआ़ किया **सह़ीह़ व रजीह़ व मुफ़्ता बिह** मसाइल पर मुश्तमिल पाया। मौलाए करीम इस किताबे मुस्तत़ाब को मक़्बूले ख़ासो आ़म और मुसल्मानों के **ईमान की ह़िफ़ाज़त** का ज़रीअ़ए ताम बनाए, और अहले ईमान को इस के मुत़ालए़ की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

मुअल्लिफ़े मौसूफ़ और इन के मुआविनीन इस अज़ीम दीनी कारनामा अन्जाम देने पर फ़क़ीर की तरफ़ से और फ़क़ीर के तलामिज़ा व मो'तक़िदीन व मुहिब्बीन व दारुल उलूम मज़्हरे इस्लाम के मुदर्रिसीन की तरफ़ से भी मुबारक बाद सद मुबारक बाद तहनिय्यती कलिमात क़बूल फ़रमाएं।

محمد اعظم غفرلہ

۱۱ ربیع الآخر ۱۴۳۰ھ

(4) तक़रीज़े जलील

आलिमे नबील, फ़ाज़िले जलील उस्ताज़ुल उलमा हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद नसीम मिस्बाही دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

(मुफ़्ती दारुल इफ़्ता जामिआ अशरफ़िया मुबारक पूर आ'ज़म गढ़, हिन्द)

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم

اَلْحَمْدُلِوَلِیِّهٖ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی نَبِیِّهٖ وَعَلٰی اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِیْنَ

ब क़दरे हाजत इल्मे दीन का हासिल करना हर मुसल्मान मर्द व औरत पर फ़र्ज़ है। हदीस में इर्शाद है : طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِیْضَةٌ عَلٰی كُلِّ مُسْلِمٍ (مشکوۃ ص ۳٤) तहारत, नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज वग़ैरा इबादात के मसाइल सीखना फ़र्ज़े ऐन है, लेकिन अक़ाइद के वोह बुन्यादी मसाइल जिन के ए'तिक़ाद से आदमी मुसल्मान होता है और इन्कार से काफ़िर या गुमराह हो जाता है, इन मसाइल का सीखना इबादात के मसाइल से **अहम** और **फ़र्ज़े ऐन** है। दुर्रे मुख़्तार में है : واعلم ان تعلم العلم یکون فرض عین

रद्दुल मुहतार में है :

وفی تبیین المحارم لا شک فی فرضیة العلم الفرائض الخمس...... وعلم الالفاظ المحرمة أو المکفرة ولعمری ھذا من اھم المھمات فی ھٰذا الزمان لانک تسمع کثیراً من العوام یتکلمون بما یکفر وھم عنھا غافلون۔

(مقدمہ ردالمحتار، جلد اوّل، ص ۲۹)

बहुत से ऐसे इन्सान हैं जो अपनी जहालत के सबब ऐसे अक़्वाल बक देते हैं या ऐसे अफ़आल का इरतिकाब कर बैठते हैं जिन की वज्ह से वोह दाइरए ईमान से ख़ारिज हो जाते हैं, और उन्हें इस का एहसास तक भी

www.dawateislami.net

नहीं होता। इस लिये उर्दू ज़बान में एक ऐसी आ़म फ़हम किताब की ज़रूरत थी जिस में उन अक़्वाल व अफ़्आ़ल का तफ़्सीली बयान हो जो ईमान व अ़क़ीदे के ख़िलाफ़ हैं, मगर येह सआ़दत ह़ज़रत अमीरे दा'वते इस्लामी मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी مَدَّظِلُّہُ النُّوْرَانِی के हिस्से में लिखी थी। मौसूफ़ ने इस मौज़ूअ़ पर 41 अब्वाब और 675 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल सुवाल व जवाब के अन्दाज़ में एक किताब तह़रीर फ़रमाई जिस का नाम **"कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब"** है। इस किताब को **मैं** ने अज़ अव्वल ता आख़िर बग़ौर मुत़ालआ़ किया है, मेरी मा'लूमात के मुत़ाबिक़ इस मौज़ूअ़ पर इतने **कसीर अक़्वाल व अफ़्आ़ले कुफ़्रिय्या** पर मुश्तमिल कोई और किताब मा'रिज़े वुजूद में नहीं आई।

येह किताब मुस्तनद व मो'तमद किताबों से माख़ूज़ है, इस में मज़्कूर सब अह़काम **सह़ीह़ व दुरुस्त** हैं। अगर येह किताब **मुस्लिम स्कूलों** और **कॉलेजों** में दाख़िले निसाब कर ली जाए तो दुन्यावी ता'लीम ह़ासिल करने वाले नौ जवान इस किताब के मुत़ालए़ से गुमराही व कुफ़्रिय्यात से बच सकते हैं, येह किताब सिर्फ़ अ़वाम ही के लिये मुफ़ीद नहीं बल्कि उ़लमाए किराम ह़त्ता कि मौजूदा दौर के मुफ़्तियाने आ़म के लिये भी आ'ला दरजे की मुफ़ीद है।

मेरी दुआ़ है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रत अमीरे दा'वते इस्लामी مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی को इस्लाम और सुन्नियत की त़रफ़ से बेहतरीन जज़ाए ख़ैर अ़त़ा फ़रमाए, इन के ज़िल्ले हुमायूं को दराज़ से दराज़ तर फ़रमाए और इन का फ़ैज़ आ़म करे और इस किताब को मक़्बूले अनाम बनाए और इसे हिदायत का ज़रीआ़ करे और इस तस्नीफ़ में इन के शुरकाए कार को भी अज्रे अ़ज़ीम अ़त़ा फ़रमाए।

امین بجاہ حبیبہ سید المرسلین علیہ وعلٰی الہ الصلوٰۃ والتسلیم

محمد نسیم مصباحی
خادم الافتاء والتدریس
جامعہ اشرفیہ مبارکپور اعظم گڑھ
۱۴ جمادی الاخرہ ۱۴۳۰ھ دوشنبہ مبارکہ

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब

शैत़ान इस अहम तरीन किताब को मुकम्मल पढ़ने से रोकने की भरपूर कोशिश करेगा मगर आप इस का वार नाकाम बना दीजिये, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ईमान की ह़िफ़ाज़त की मदनी सोच का वोह अनमोल ख़ज़ाना हाथ आएगा कि शैत़ान सर पीट कर रह जाएगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ के बा'द ह़म्दो सना और **दुरूद शरीफ़** पढ़ने वाले से फ़रमाया : "दुआ़ मांग, क़बूल की जाएगी, सुवाल कर, दिया जाएगा।" **(سُنَنُ النّسائی ص ۲۲۰ حدیث ۱۲۸۱)**

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ईमान पर मौत की किसी के पास ज़मानत नहीं

अल्लाहु रह़मान عَزَّوَجَلَّ के करोड़हा करोड़ एह़सान कि उस ने हमें इन्सान बनाया, **मुसल्मान** किया और अपने **ह़बीबे मुकर्रम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दामने करम

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

हमारे हाथों में दिया। इस में कोई शक नहीं कि हम **मुसल्मान** हैं मगर हम में से किसी के पास इस बात की कोई ज़मानत नहीं कि वोह मरते दम तक **मुसल्मान** ही रहेगा। जिस त़रह़ बे शुमार कुफ़्फ़ार ख़ुश क़िस्मती से मुसल्मान हो जाते हैं उसी त़रह़ मुतअ़द्दिद बद नसीब मुसल्मानों का مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ ईमान से मुन्ह़रिफ़ हो जाना (या'नी फिर जाना) भी साबित है। और जो ईमान से फिर कर या'नी **मुरतद** हो कर मरेगा वोह हमेशा हमेशा के लिये दोज़ख़ में रहेगा। चुनान्चे पारह 2 **सूरतुल बक़रह** आयत नम्बर 217 में फ़रमाने बारी तआ़ला है :

وَمَنْ يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۱۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम में जो कोई अपने दीन से फिरे, फिर काफ़िर हो कर मरे, तो उन लोगों का किया अकारत गया दुन्या में और आख़िरत में, और वोह दोज़ख़ वाले हैं, उन्हें उस में हमेशा रहना।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

ईमां पे रब्बे रह़मत عَزَّوَجَلَّ *दे दे तू इस्तिक़ामत*
देता हूं वासित़ा मैं तुझ को तेरे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم *का*

न जाने हमारा ख़ात़िमा कैसा हो !

एक त़वील ह़दीसे पाक में नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह भी इर्शाद फ़रमाया : औलादे आदम मुख़्तलिफ़ त़बक़ात पर पैदा की गई इन में से बा'ज़ **मोमिन** पैदा हुए **ह़ालते ईमान** पर ज़िन्दा रहे और **मोमिन** ही मरेंगे, बा'ज़ **काफ़िर** पैदा हुए **ह़ालते कुफ़्र** पर ज़िन्दा रहे और **काफ़िर** ही मरेंगे, जब कि बा'ज़ **मोमिन** पैदा हुए **मोमिनाना ज़िन्दगी** गुज़ारी और **ह़ालते कुफ़्र** पर रुख़्सत हुए, बा'ज़ **काफ़िर** पैदा हुए, **काफ़िर** ज़िन्दा रहे और **मोमिन** हो कर मरेंगे।

(سُنَنُ التّرمذی ج٤ ص ٨١ حديث ٢١٩٨)

शैत़ान अ़ज़ीज़ों के रूप में ईमान छीनने आएगा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्या में आने को तो हम आ गए मगर अब दुन्या से **ईमान** को सलामत ले जाने के लिये सख़्त दुश्वार गुज़ार घाटियों से गुज़रना होगा और फिर भी कुछ नहीं मा'लूम कि ख़ातिमा कैसा होगा ! **आह** ! आह ! आह ! मौत के वक़्त ईमान छीनने

के लिये शैत़ान त़रह़ त़रह़ के हथकन्डे इस्ति'माल करेगा ह़त्ता कि मां बाप का रूप धार कर भी **ईमान** पर डाके डालेगा और यहूदो नसारा को दुरुस्त साबित करने की मज़्मूम सई करेगा। यक़ीनन वोह ऐसा नाज़ुक मौक़अ़ होगा कि बस जिस पर **अल्लाहु** रह़मान عَزَّوَجَلَّ का ख़ास करम व एह़सान होगा वोही काम्याब व कामरान होगा और उसी का **ईमान** सलामत रहेगा। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیۡہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या,** जिल्द 9 सफ़ह़ा 83 पर फ़रमाते हैं कि इमाम इब्नुल ह़ाज मक्की قُدِّسَ سِرُّہٗ "**मदख़ल**" में फ़रमाते हैं कि दमे नज़्अ़ दो शैत़ान, आदमी के दोनों पहलू पर आ कर बैठते हैं एक उस के **बाप** की शक्ल बन कर दूसरा **मां** की। एक कहता है : वोह शख़्स यहूदी हो कर मरा तू (भी) यहूदी हो जा कि यहूद वहां बड़े चैन से हैं। दूसरा कहता है : वोह शख़्स नसरानी (या'नी क्रिस्चेन हो कर दुन्या से) गया तू (भी) नसरानी (क्रिस्चेन) हो जा कि नसारा (क्रिस्चेन) वहां बड़े आराम से हैं।

(المدخل لابن الحاج ج۳ص۱۸۱)

वाक़ेई मुआ़मला बड़ा नाज़ुक है, बरबादिये ईमान के ख़ौफ़ से ख़ाइफ़ीन के दिल टुकड़े टुकड़े हो जाते हैं।

फ़िक्रे मआ़श बद बला होले मआ़द जां गुज़ा

लाखों बला में फंसने को रूह़ बदन में आई क्यूं

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

पैदा न होने वाला क़ाबिले रश्क है

ह़दीसे मुबारक में कस्रते उम्मत की तरग़ीब दिलाई गई है और हमारे प्यारे प्यारे आक़ा **मुस्त़फ़ा जाने रह़मत** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बरोज़े क़ियामत इस उम्मत के कसीर होने पर ख़ुश होंगे और दीगर उम्मतों पर फ़ख़्र करेंगे लिहाज़ा औलाद के हुसूल की ख़्वाहिश में दुन्या व आख़िरत की भलाई पाने के लिये अच्छी अच्छी निय्यतें करनी चाहिएं लेकिन आज दुन्या में जो बे औलाद होता है वोह उ़मूमन ख़ूब दिल जलाता है और बच्चा पाने के लिये न जाने कैसे कैसे जतन करता है। अगर इस का **मत़्मह़े** नज़र (या'नी मक़्सदे अस्ली) फ़क़त़ घर की ज़ीनत और दुन्या की राह़त है, हुसूले औलाद से मक़्सूद आख़िरत की मन्फ़अ़त की कोई अच्छी निय्यत नहीं, तो ऐसा बे औलाद आदमी ना दानिस्ता त़ौर पर गोया

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

"किसी" के दुन्या में पैदा होने और फिर बहुत बड़े इम्तिह़ान में मुब्तला होने की आरज़ू कर रहा है ! मेरी येह बात शायद वोही शख़्स समझ सकता है जो "बुरे ख़ातिमे के ख़ौफ़" में मुब्तला हो । एक ख़ाइफ़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के फ़रमान का ख़ुलासा है : "**मुझे बड़े से बड़े नेक बन्दे पर भी रश्क नहीं आता, जो कि क़ियामत की होल नाकियों का मुशाहदा करेगा, मुझे सिर्फ़ उस पर रश्क आता है जो "कुछ भी" न हो ।**" (या'नी पैदा ही न हो) (حِلیَۃُ الاولیاء ج۸ ص۹۳رقم ۱۱۴۷۰ مُلَخَّصاً)

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना **फ़ारूक़े आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने **ग़लबए ख़ौफ़** के वक़्त फ़रमाया : **काश ! मेरी मां ने ही मुझ को न जना होता !** (الطَّبقاتُ الکُبریٰ لابنِ سعد ج۳ ص۲۷٤) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

काश ! कि मैं दुन्या में पैदा न हुवा होता क़ब्रो ह़श्र का सब ग़म ख़त्म हो गया होता

आह ! सल्बे ईमां का ख़ौफ़ खाए जाता है काश ! मेरी मां ने ही मुझ को न जना होता

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

क़ाबिले रश्क वोही है जो क़ब्र के अन्दर मोमिन है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्या में जीते जी मोमिन होना यक़ीनन बाइसे सआ़दत है मगर येह सआ़दत ह़क़ीक़त में उसी सूरत में सआ़दत है कि दुन्या से रुख़्सत होते वक़्त ईमान सलामत रहे। **ख़ुदा की क़सम ! क़ाबिले रश्क वोही है जो क़ब्र के अन्दर भी मोमिन है।** जी हां जो दुन्या से ईमान सलामत ले जाने में काम्याब हुवा वोही ह़क़ीक़ी मा'नों में काम्याब और जो जन्नत को पा ले वोही बा मुराद है। चुनान्चे पारह 4 सूरए आले इमरान आयत नम्बर 185 में इर्शाद होता है :

فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ؕ وَمَا الْحَیٰوةُ الدُّنْیَاۤ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿۱۸۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जो आग से बचा कर जन्नत में दाख़िल किया गया वोह मुराद को पहुंचा और दुन्या की ज़िन्दगी तो येही धोके का माल है।

बहरे ग़ौसो रज़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمَا *बचा या रब* عَزَّوَجَلَّ *मेरा नाज़ुक बदन जहन्नम से*
अपने अ़त्तार को अ़ता या रब عَزَّوَجَلَّ *कर जवारे रसूल* صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم *जन्नत में*

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया । (طبرانی)

बुरी सोहबत ईमान के लिये ख़तरनाक है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बुरी सोहबत ईमान के लिये बहुत ख़तरनाक है । **अफ़्सोस** ! सद करोड़ अफ़्सोस ! इस के बा वुजूद हम बुरे दोस्तों से बाज़ नहीं आते, गपशप की बैठकों से ख़ुद को नहीं बचाते, मज़ाक़ मस्ख़रियों, और ग़ैर सन्जीदा हरकतों की आदतों से पीछा नहीं छुड़ाते । **आह** ! बुरी सोहबत की नुहूसत ऐसी छाई है कि लम्हा भर के लिये भी तन्हाई में यादे इलाही करने को जी नहीं चाहता । **ईमान की हिफ़ाज़त** की अगर्चे चाहत है ताहम इस के लिये बुरे दोस्त छोड़ने बल्कि किसी क़िस्म की कुरबानी देने की हिम्मत नहीं । **याद रखिये** ! बुरा दोस्त ईमान के लिये बाइसे नुक़्सान साबित हो सकता है । हमारे प्यारे प्यारे आक़ा मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : “आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है उसे येह देखना चाहिये कि किस से दोस्ती करता है ।” (مُسند امام احمد ج۳ ص۱۶۹۔۱۶۸ حدیث ۸۰۳۴)

मुफ़स्सिरे शहीर **हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते

हैं : या'नी किसी से दोस्ताना करने से पहले उसे जांच लो कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) **रसूल** (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का मुत़ीअ़ (या'नी फ़रमां बरदार) है या नहीं रब तआ़ला फ़रमाता है : وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और सच्चों के साथ हो। (پ ۱۱، التوبۃ:۱۱۹)), सूफ़िया फ़रमाते हैं कि इन्सानी त़बीअ़त में अख़्ज़ या'नी ले लेने की ख़ासिय्यत है। ह़रीस की सोह़बत से ह़िर्स, ज़ाहिद की सोह़बत से ज़ोह्दो तक़्वा मिलेगा। ख़याल रहे कि ख़ुल्लत दिली दोस्ती को कहते हैं जिस से **मह़ब्बत** दिल में दाख़िल हो जावे। येह ज़िक्र दोस्ती व मह़ब्बत का है किसी फ़ासिक़ो फ़ाजिर को अपने पास बिठा कर मुत्तक़ी बना देना तब्लीग़ है। ह़ुज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने गुनहगारों को अपने पास बुला कर मुत्तक़ियों (या'नी परहेज़ गारों) का सरदार बना दिया। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 599)

आप के क़दमों में गिर कर मौत की या मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم
आरज़ू कब आएगी बर बे कसो मजबूर की

ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये अलग थलग रहने वाला

एक शख़्स सब से अलग थलग रहता था। ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू दरदा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस के पास

तशरीफ़ ला कर जब इस का सबब दरयाफ़्त किया तो उस ने कहा : "मेरे दिल में येह ख़ौफ़ बैठ गया है कि कहीं ऐसा न हो मेरा ईमान छिन जाए और मुझे इस की ख़बर तक न हो।" (قُوتُ القُلوب ج ۱ ص ٤٦٨ مُلَخَّصاً)

अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰلهٖ وسلَّم

दिल में हो याद तेरी गोशए तन्हाई हो फिर तो ख़ल्वत में अ़जब अन्जुमन आराई हो

आस्ताने पे तेरे सर हो अजल आई हो और ऐ जाने जहां तू भी तमाशाई हो

ईमान लूटने के लिये छीना झपटी !

आह ! न जाने हमारा क्या बनेगा ! **मौत** लम्ह़ा ब लम्ह़ा क़रीब आ रही है, क़ब्र की मन्ज़िल की जानिब बराबर आगे कूच जारी है। तसव्वुर कीजिये कि हम गोया बड़ी एह़तियात़ के साथ **ईमान** को ब ह़िफ़ाज़त सीने से चिमटाए हुए हैं, **एक** त़रफ़ नफ़्से अम्मारा ईमान पर झपट रहा है, तो **दूसरी** त़रफ़ शैत़ान पेंतरे बदल बदल कर वार कर रहा है, **तीसरी** त़रफ़ बद मज़्हब **ईमान** पर कमन्द डालने में मसरूफ़ हैं तो **चौथी** त़रफ़ से दुन्या की

बे जा महब्बत ईमान के दर पै है ! या'नी यूं समझिये कि कोई **हाथ** मरोड़ रहा है, कोई **टांग** खींच रहा है, कोई **मुक्के** रसीद कर रहा है, कोई **लातें** उछाल रहा है, हर एक पूरा ज़ोर लगा रहा है कि किसी त़रह़ हम से **ईमान** छीन ले। आह ! इस ह़ालत में **ईमान** की दौलत को सलामत ले कर क़ब्र में कैसे दाख़िल हों !

मह़बूबे ख़ुदा सर पे अजल आ के खड़ी है
शैत़ान से अ़त्तार का ईमान बचा लो

सल्बे ईमान की फ़िक्र में शब भर गिर्या व ज़ारी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! औलियाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام ईमान छिन जाने के ख़ौफ़ से लरज़ां व तरसां रहा करते थे चुनान्चे **ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन अस्बात़** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं मैं एक दफ़्आ़ **ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास ह़ाज़िर हुवा। **आप** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **सारी रात रोते रहे**। मैं ने दरयाफ़्त किया : क्या आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ गुनाहों के ख़ौफ़ से रो रहे हैं ? तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक **तिन्का** उठाया और फ़रमाया कि गुनाह तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इस तिन्के से भी कम ह़ैसिय्यत

रखते हैं, **मुझे तो इस बात का ख़ौफ़ है कि कहीं ईमान की दौलत न छिन जाए।** (منہاج العابدین ص۱۶۹)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

मुसल्मां है अ़त्त़ार तेरी अ़त़ा से
हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही عَزَّوَجَلَّ

सुब्ह़ मोमिन तो शाम को काफ़िर

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रह़मते आ़लम, शहन्शाहे अ़रबो अ़जम, रसूले मुह़तशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुअ़ज़्ज़म है : "उन फ़ितनों से पहले नेक आ'माल के सिल्सिले में जल्दी करो ! जो तारीक रात के हिस्सों की त़रह़ होंगे। **एक आदमी सुब्ह़ को मोमिन होगा और शाम को काफ़िर होगा और शाम को मोमिन होगा और सुब्ह़ काफ़िर होगा।** नीज़ अपने दीन को दुन्यावी साज़ो सामान के बदले फ़रोख़्त कर देगा।" (صحیح مُسلِم حدیث ۱۱۸ ص ۷۳)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

हैं ग़ुलाम आप के जितने करो दूर उन से फ़ितने
बुरी मौत से बचाना मदनी मदीने वाले صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ईमान पर मौत आती हो तो आज और अभी आ जाए !

आह ! आह ! आह ! दिल पर भी तो क़ाबू नहीं, येह भी कभी तोला है तो कभी माशा। अभी जज़्बात कुछ हैं तो चन्द लम्ह़ात के बा'द कुछ होंगे। **काश** ! ईमान की ह़िफ़ाज़त के जज़्बे पर इस्तिक़ामत मिलती। **सद करोड़ काश** ! आ़फ़िय्यत के साथ ईमान पर मौत की तड़प को दुन्या में आसान ज़िन्दगी गुज़ारने के अरमान पर सब्क़त ह़ासिल हो जाती। हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली** عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی से मन्क़ूल कर्दा एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के इर्शाद का ख़ुलासा है : अगर **ईमान पर मौत** मेरे अपने कमरए ख़ास के दरवाज़े पर मिल रही हो और **शहादत** इमारत के सद्र दरवाज़े (MAIN ENTRANCE) पर मुन्तज़िर हो तो शहादत अगर्चे आ'ला दरजे की सआ़दत है मगर मैं कमरे के दरवाज़े पर मिलने वाली ईमान पर मौत को फ़ौरन क़बूल कर लूंगा कि क्या मा'लूम इमारत के सद्र दरवाज़े तक पहुंचते पहुंचते

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा । (ابن عدی)

मेरा दिल बदल जाए और मैं **ईमान पर मिलने वाली मौत** के शरफ़ से ही मह़रूम हो जाऊं !

(اِحیاءُ الْعلوم ج ٤ ص ٢١١ مُلَخَّصاً)

मरीज़े मह़ब्बत का दम है लबों पर
सिरहाने अब आ जाओ शाहे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दिल में कभी ईमान तो कभी निफ़ाक़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दिल को "क़ल्ब" इसी लिये कहते हैं कि येह जब देखो मुन्क़लिब हो जाता या'नी बार बार बदलता रहता है, रात को दिल में आता है कि कल से ख़ूब इबादतें और रियाज़तें करूंगा मगर सुब्ह़ को येही दिल बदल कर गुनाहों के दलदल में डाल देता है । कभी दिल पर **ख़ौफ़े ख़ुदा** से कपकपी त़ारी हो जाती और आंखों से आंसू जारी हो जाते हैं तो कभी गुनाहों की ऐसी ज़िद चढ़ जाती है कि अल अमान वल ह़फ़ीज़ । **ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ुज़ैफ़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जो कि मुनाफ़िक़ीन और अस्बाबे निफ़ाक़ के इल्म के माहिर थे । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाया करते : दिल पर कभी तो ऐसी घड़ी आती है कि वोह **ईमान** से भर जाता है ह़त्ता कि उस में सूई की नोक

जितनी भी **निफ़ाक़** के लिये गुन्जाइश बाक़ी नहीं रहती और कभी उस पर ऐसी घड़ी वारिद होती है कि वोह **मुनाफ़क़त** से पुर हो जाता है और उस में सूई की नोक जितनी जगह भी **ईमान** के लिये बाक़ी नहीं बचती। (اِحیاءُ العلوم ج ٤ ص ٢٣١ مُلَخَّصًا) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बचा हर घड़ी जुर्मो इ़स्यां से या रब عَزَّوَجَلَّ
मेरा दिल हो पुर हुब्बे जानां से या रब عَزَّوَجَلَّ
न ख़ाली हो दिल मेरा ईमां से या रब عَزَّوَجَلَّ
मैं दुन्या से जिस दम चलूं जां से या रब عَزَّوَجَلَّ

झूटी ख़ुशामद से दीनदारी जाती रहती है !

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی इर्शाद फ़रमाते हैं : **निफ़ाक़** कि ज़बान से दा'वए इस्लाम करना और दिल में इस्लाम से इन्कार, येह भी **ख़ालिस कुफ़्र** है, बल्कि ऐसे लोगों के लिये जहन्नम का सब से नीचे का त़बक़ा है। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़मानए अक़्दस में कुछ लोग इस सिफ़त के इस नाम के साथ मश्हूर हुए कि उन के

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

कुफ़्रे बातिनी पर कुरआन नातिक़ हुवा, नीज़ नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने वसीअ़ इल्म से एक एक को पहचाना और फ़रमा दिया कि येह **मुनाफ़िक़** है। अब इस ज़माने में किसी ख़ास शख़्स की निस्बत, क़त्अ़ के साथ (या'नी यक़ीनी तौर पर) **मुनाफ़िक़** नहीं कहा जा सकता, कि हमारे सामने जो दा'वए इस्लाम करे हम उस को मुसल्मान ही समझेंगे, जब तक उस से वोह क़ौल या फे'ल जो मुनाफ़िये ईमान (या'नी ईमान के ख़िलाफ़) है न सादिर हो। (बहारे शरीअ़त, हिस्सए अव्वल, स. 96) मुनाफ़क़त की दूसरी क़िस्म **निफ़ाक़े अ़मली** है। इस का मत़लब येह होता है कि वोह काम करे जो मुसल्मानों के शायाने शान न हो मुनाफ़िक़ीन के करतूत हों जैसा कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, नबिय्ये मुह्तशम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : मुनाफ़िक़ की तीन निशानियां हैं : 《1》 जब बात करे तो झूट बोले 《2》 जब वा'दा करे तो वा'दा ख़िलाफ़ी करे और 《3》 जब उस के पास अमानत रखी जाए तो उस में ख़ियानत करे।

(صَحِیحُ البُخارِیّ ج۱ ص ۲۴ حدیث ۳۳)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़ह़ा करूं (या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشکوال)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मौत किसी भी लम्ह़े आ सकती है, और येह किस क़दर तश्वीश की बात है कि अगर मौत उस लम्ह़े आई जिस लम्ह़े दिल **ईमान** से ख़ाली और **निफ़ाक़** से भरपूर हुवा तो ज़रा सोचिये तो सही हमारा क्या होगा **अफ़्सोस** ! अक्सर हमारा ह़ाल येह होता है कि दिल में कुछ और ज़बान पर कुछ, दिल के अन्दर मुख़ात़ब (या'नी जिस से बात की जाए उस) के बारे में बुग़्ज़ के बिच्छू भरे होते हैं मगर उस के सामने ख़ुशामदाना अन्दाज़ में उस की ता'रीफ़ के पुल बांधते चले जाते हैं, यक़ीनन येह अ़मली मुनाफ़क़त है जो कि **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की नाराज़गी की सूरत में ईमान के लिये सख़्त नुक़्सान देह साबित हो सकती है। चुनान्चे **ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के फ़रमान का ख़ुलासा है : बा'ज़ अवक़ात एक शख़्स जब घर से निकलता है तो **दीनदार** होता है मगर जब घर लौटता है तो **दीनदार** नहीं होता। इस की वज्ह येह है कि वोह मिलने जुलने वालों की ख़्वाह म ख़्वाह ता'रीफ़ें करता है ह़ालां कि जिस की ता'रीफ़ कर रहा है वोह शख़्स मज़म्मत का मुस्तह़िक़ होता है मगर इस (ता'रीफ़ करने वाले) शख़्स की ज़बान और दिल में इख़्तिलाफ़ होता है। (قُوتُ القُلوب ج ١ ص ٤٧١ مُلَخَّصاً)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

ख़ुशामद के आ़दियों के लिये बस इ़ब्रत ही इ़ब्रत है, सच येही है कि ज़ियादा बोलने में फंसना ही फंसना है। या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ हमें इख़्लास की दौलत और ज़बान के क़ुफ़्ले मदीना की ने'मत से नवाज़ दे।

मेरा हर अ़मल बस तेरे वास्ति़े हो
عَزَّوَجَلَّ
कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

जिस को बरबादिये ईमान का ख़ौफ़ न होगा...

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **काश** ! ईमान की सलामती की मदनी सोच नसीब हो जाए, **सद करोड़ काश** ! हर वक़्त बुरे ख़ातिमे के ख़ौफ़ से दिल घबराता रहे, दिन में बार बार तौबा व इस्तिग़्फ़ार का सिल्सिला रहे। **अल्लाहु** ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ के दरबारे करम बार से **ईमान की ह़िफ़ाज़त** की भीक मांगने की रट जारी रहे। तश्वीश और सख़्त तश्वीश की बात येह है कि जिस त़रह़ दुन्यवी दौलत की ह़िफ़ाज़त के मुआ़मले में ग़फ़्लत उस के ज़ियाअ़ (या'नी ज़ाएअ़ होने) का सबब बन सकती है इसी त़रह़ बल्कि इस से

भी ज़ियादा सख़्त मुआ़मला **ईमान** का है। चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 561 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत**" सफ़ह़ा 495 पर मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن का इर्शाद है : उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं : "**जिस को सल्बे ईमान का ख़ौफ़ न हो नज़्अ़ के वक़्त उस का ईमान सल्ब हो जाने का शदीद ख़त़रा है।**"

ज़िन्दगी और मौत की है या इलाही عَزَّوَجَلَّ *कश्मकश*
जां चले तेरी रिज़ा पर बे कसो मजबूर की

एक "ग़लत़ लफ़्ज़" भी जहन्नम में झोंक सकता है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अच्छी सोह़बतें कमयाब हो गईं ! ज़बान की अ़दमे ह़िफ़ाज़त का दौर दौरा हो गया ! हमारी अक्सरिय्यत की ह़ालत येह हो गई है कि जो मुंह में आया बक दिया ! अफ़्सोस ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुशी और नाख़ुशी का एह़सास कम हो गया। ज़बान से निकले हुए अल्फ़ाज़ की अहम्मिय्यत के तअ़ल्लुक़ से एक इ़ब्रत अंगेज़ ह़दीसे पाक मुलाह़ज़ा

फ़रमाइये। चुनान्चे **सरकारे मदीना**, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहि़बे मुअ़त़्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे इ़ब्रत बुन्याद है **:** बन्दा कभी **अल्लाह तआ़ला की ख़ुशनूदी** की बात कहता है और उस की त़रफ़ तवज्जोह भी नहीं करता (या'नी बा'ज़ बातें इन्सान के नज़्दीक निहायत मा'मूली होती हैं) **अल्लाह** तआ़ला उस (बात) की वज्ह से उस के बहुत से दरजे बुलन्द करता है। और कभी **अल्लाह पाक की नाराज़गी** की बात करता है और उस का ख़याल भी नहीं करता इस (बात) की वज्ह से **जहन्नम** में गिरता है। (بُخاری ج٤ ص٢٤١ حدیث ٦٤٧٨) और एक रिवायत में है कि मशरिक़ व मग़रिब के दरमियान में जो फ़ासिला है उस से भी ज़ियादा फ़ासिले पर **जहन्नम** में गिरता है।

(مُسنَد اِمام احمد ج٣ ص٣١٩ حدیث ٨٩٣١)

बक बक की कहीं लत न जहन्नम में गिरा दे
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***ज़बां का हो अ़त़ा क़ुफ़्ले मदीना***

हाथ में आग की चिंगारी

आज कल ह़ालात ना गुफ़्ता बिह हैं, दुन्या की मह़ब्बत अक्सर के दिल पर ग़ालिब है, **ईमान की ह़िफ़ाज़त**

का ज़ेहन कम हो गया ! **ईमान** बचाना भी ज़रूरी है मगर इस के लिये कोशिश करने का कोई ख़ास जज़्बा नहीं, **ईमान** को संभालना और अह़कामे इस्लाम की पैरवी करना नफ़्से बदकार पर एक अम्रे दुश्वार है। **मेरे आक़ाए नामदार**, मदीने के ताजदार, नबियों के सरदार, सरकारे वाला तबार, हम ग़रीबों के ग़म गुसार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, मह़बूबे परवर्दगार, जनाबे अह़मदे मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : “लोगों पर एक ऐसा ज़माना भी आएगा कि उस वक़्त लोगों के दरमियान अपने **दीन पर सब्र** करने वाला, **आग की चिंगारी** पकड़ने वाले की त़रह़ होगा।”

(سُنَنُ التِّرمذی ج ٤ ص ١١٥ حديث ٢٢٦٧)

मेरा ह़श्र में होगा क्या या इलाही عَزَّوَجَلَّ *गुनाहों ने मेरी कमर तोड़ डाली*
गुनाहों से हर दम बचा या इलाही عَزَّوَجَلَّ *बना दे मुझे नेक, नेकों का सदक़ा*

सुन्नत का तर्क कहीं कुफ़्र तक न पहुंचा दे !

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुह़म्मद सह्ल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का फ़रमाने इब्रत निशान है : ख़ौफ़ का आ'ला दरजा येह है कि अपने बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के **इल्मे**

अज़ली के तअ़ल्लुक़ से डरता रहे (कि न जाने मेरे बारे में क्या तै है, आया अच्छा ख़ातिमा या कि बुरा ख़ातिमा !) और इस बात से भी ख़ौफ़ज़दा रहे कि कहीं कोई काम **ख़िलाफ़े सुन्नत** (या'नी सुन्नत को मिटाने वाली बुरी बिद्अ़त का इरतिकाब) न कर बैठे जिस की नुहूसत उसे **कुफ़्र** तक पहुंचा दे। (قُوتُ القلوب ج ۱ ص ٤٦٧)

दुन्या में हर आफ़त से बचाना मौला عَزَّوَجَلَّ　*उ़क़्बा में न कुछ रन्ज दिखाना मौला* عَزَّوَجَلَّ
बैठूं जो दरे पाके पयम्बर के हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم　*ईमान पे उस वक़्त उठाना मौला* عَزَّوَجَلَّ

गुनाह करने से दिल काला हो जाता है

आह ! गुनाहों का सिल्सिला रुकने का नाम नहीं लेता, मा'सियत की मुसीबत जान नहीं छोड़ती, **अफ़्सोस** ! गुनाहों की आ़दत ने कुछ ऐसा ढीट बना छोड़ा है कि गुनाह करने से दिल भी क़त्अ़न नहीं लरज़ता, **हाए** ! **हाए** ! गुनाहों की कसरत की नुहूसत कहीं बरबादिये ईमान का सबब न बन जाए ! गुनाहों के आ़दियों को ख़बरदार करते हुए हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی **सालिहीन** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن का इर्शादे आ़ली नक़्ल फ़रमाते हैं : "बेशक

गुनाह करने से **दिल काला** हो जाता है, और दिल की सियाही की अ़लामत व पहचान येह है कि गुनाहों से घबराहट नहीं होती, इत़ाअ़त की सआ़दत नहीं मिलती और नसीह़त असर नहीं करती। **ऐ अ़ज़ीज़**! तुम किसी भी गुनाह को मा'मूली मत समझो और कबीरा गुनाहों पर इस्रार करने के बा वुजूद अपने आप को तौबा करने वाला गुमान न करो।" (منہاج العابدین ص ۳۵)

कर के तौबा मैं फिर गुनाहों में हो ही जाता हूं मुब्तला या रब عَزَّوَجَلَّ
नीम जां कर दिया गुनाहों ने मर्ज़े इस्यां से दे शिफ़ा या रब عَزَّوَجَلَّ

मरने के बा'द नौ जवान बूढ़ा हो गया !!!

हाए! हमारा येह नाज़ुक बदन तो न गर्मी सह सकता है न ही सर्दी। अगर مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ईमान बरबाद हो गया तो येह अ़ज़ाबे नार कैसे बरदाश्त कर सकेगा ! **आह**! जहन्नम की होलनाकियां !! ह़ज़रते सय्यिदुना हश्शाम बिन ह़स्सान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡحَنَّان फ़रमाते हैं : **मेरा एक बेटा जवानी की ह़ालत में फ़ौत हो गया**। बा'द अज़ वफ़ात मैं ने उसे ख़्वाब में देखा कि **बूढ़ा** हो चुका है। मैं ने पूछा : **ऐ बेटे**! तू बूढ़ा किस त़रह़ हो गया ? तो उस

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

ने जवाब दिया : जब फ़ुलां शख़्स मरने के बा'द दुन्या से हमारे पास पहुंचा तो **दोज़ख़ ने उसे देख कर एक सांस ली जिस की वज्ह से हम सब एक पल में बूढ़े हो गए** ! نَعُوْذُبِاللّٰہِ الرَّحِیْمِ مِنَ الْعَذَابِ الْاَلِیْم या'नी हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जो कि बड़ा मेह्रबान है उस की पनाह मांगते हैं दर्दनाक अ़ज़ाब से। (منہاج العابدین ص ۱٦۷)

हाए ! मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब عَزَّوَجَلَّ *! गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी*
गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब عَزَّوَجَلَّ *! अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा*

जो मोमिन है वोह ख़ुदा से डरे

अल्लाह तबारक व तआ़ला पारह 4 **सूरए आले इमरान** आयत नम्बर 175 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَخَافُوْنِ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۷۵﴾
(پ ٤ اٰلِ عمران ۱۷۵)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और मुझ से डरो अगर ईमान रखते हो।

काश ! ख़ौफ़े ख़ुदा नसीब हो जाए

ऐ काश ! इस आयते मुक़द्दसा के सदक़े ग़फ़्लत का पर्दा चाक हो जाए और उम्मीदे रह्मत के साथ साथ हमें

सहीह़ मा'नों में **ख़ौफ़े ख़ुदा** भी मुयस्सर आ जाए, दुन्या की बे सबाती का ह़क़ीक़ी मा'नों में एह़सास हो जाए, काश ! काश ! काश ! **बुरे ख़ातिमे** का डर दिल में घर कर जाए, अपने **परवर्दगार** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़गियों का हर दम धड़का लगा रहे, नज़्अ़ की सख़्तियों, मौत की तल्ख़ियों, अपने ग़ुस्ले मय्यित व तक्फ़ीन व तदफ़ीन की कैफ़िय्यतों, क़ब्र की अंधेरियों और वह़शतों, मुन्कर व नकीर के सुवालों, क़ब्र के अ़ज़ाबों, मह़शर की गर्मियों और घबराहटों, पुल सिरात़ की दह्शतों, बारगाहे इलाही की पेशियों, मैदाने क़ियामत में छोटी छोटी बातों की भी पुरसिशों और सब के सामने ऐ़ब खुलने की रुस्वाइयों, जहन्नम की ख़ौफ़नाक चिंघाड़ों, दोज़ख़ की होलनाक सज़ाओं और अपने नाज़ों के पले बदन की नज़ाकतों, **जन्नत** की अ़ज़ीम ने'मतों से मह़रूमियों वग़ैरा वग़ैरा का ख़ौफ़ हमें बेचैन करता रहे। और **ऐ काश** ! येह ख़ौफ़ हमारे लिये हिदायत व रह़मत का ज़रीआ़ बन जाए जैसा कि पारह 9 **सूरतुल आ'राफ़** आयत नम्बर 154 में इर्शादे रब्बुल इबाद है :

هُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُوْنَ ﴿١٥٤﴾

(پ۹، الاعراف ۱۵٤)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : हिदायत और रह़मत है उन के लिये जो अपने रब से डरते हैं।

तू कर ख़ौफ़ अपना अ़ता या इलाही عَزَّوَجَلَّ *ज़माने का डर मेरे दिल से मिटा कर*

मैं थरथर रहूं कांपता या इलाही عَزَّوَجَلَّ *तेरे ख़ौफ़ से तेरे डर से हमेशा*

ख़ौफ़े ख़ुदा से क्या मुराद है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! "**ख़ौफ़े ख़ुदा**" से मुराद येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर, उस की बे नियाज़ी, उस की नाराज़गी, उस की गिरिफ़्त (पकड़), उस की त़रफ़ से दिये जाने वाले अ़ज़ाबों उस के ग़ज़ब और इस के नतीजे में ईमान की बरबादी वग़ैरा से ख़ौफ़ज़दा रहने का नाम **ख़ौफ़े ख़ुदा** है। ऐ काश ! हमें ह़क़ीक़ी मा'नों में **ख़ौफ़े ख़ुदा** नसीब हो जाए। आह ! आह ! आह ! हम तो अपने ख़ातिमे के बारे में **अल्लाहु क़दीर** عَزَّوَجَلَّ की **ख़ुफ़्या तदबीर** जानते हैं न कभी जीते जी जान सकेंगे। ज़बाने रिसालत से **जन्नत** की बिशारत की अ़ज़ीम सआ़दत से बहरा मन्द कई जन्नती हस्तियों के **ख़ौफ़े ख़ुदा** की बातें

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

जब पढ़ते सुनते हैं तो अपनी ग़फ़्लत पर वाक़ेई ह़सरत होती है। चुनान्चे पढ़िये और कुढ़िये :

सात सह़ाबा عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के रिक़्क़त अंगेज़ कलिमात

《1》 **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू बक्र सिद्दीक़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक बार परिन्दे को देख कर फ़रमाया : "**ऐ परिन्दे** ! काश ! मैं तुम्हारी त़रह़ होता और मुझे इन्सान न बनाया जाता" 《2》 ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है : "काश ! मैं एक **दरख़्त** होता जिस को काट दिया जाता" 《3》 **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़स्माने ग़नी** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते : "मैं इस बात को पसन्द करता हूं कि मुझे वफ़ात के बा'द उठाया न जाए" 《4,5》 ह़ज़रते सय्यिदुना **त़ल्ह़ा** और ह़ज़रते सय्यिदुना **ज़ुबैर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाया करते : "काश ! हम पैदा ही न हुए होते" 《6》 उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना **आ़इशा सिद्दीक़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाया करतीं : "काश ! मैं नस्यम मन्सिय्यन (या'नी कोई भूली बिसरी चीज़)

होती'' ﴾7﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊ़द** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते : ''काश ! मैं **राख** होता।'' (قُوتُ القُلوب ج ١ ص ٤٥٩۔٤٦٠ مُلَخَّصًا) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم *के क़दमों से मैं लिपट गया होता*
काश ! ऐसा हो जाता ख़ाक बन के त़यबा की

काश ! उन के सह़रा का ख़ार बन गया होता
फूल बन गया होता गुलशने मदीना का

नख़्ल बन के त़यबा के बाग़ में खड़ा होता
मैं बजाए इन्सां के कोई पौदा होता या

या बत़ौरे तिन्का ही मैं वहां पड़ा होता
गुलशने मदीना का काश ! होता मैं सब्ज़ा

मुर्ग़ बन के त़यबा में ज़ब्ह़ हो गया होता
जां कनी की तक्लीफ़ें ज़ब्ह़ से हैं बढ़ कर काश !

काश ! इस जहां का मैं न बशर बना होता
आह ! कस्रते इस्यां हाए ! ख़ौफ़ दोज़ख़ का

शोर उठा येह मह़शर में ख़ुल्द में गया अ़त्त़ार
गर न वोह बचाते तो नार में गया होता

अ़वामी बैठकों से दूर रहने में आ़फ़िय्यत है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! माह़ोल बद से बदतर होता जा रहा है, ज़बानों की लगामें अक्सर ढीली हो चुकी हैं, सुन्नी उ़लमा की सोह़बतों से मह़रूम, **मदनी माह़ोल** से दूर, ग़ैर सन्जीदा नौ जवानों बल्कि

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

इसी त़रह़ के बकबक झकझक करने वाले बड़बड़िये बड़े बूढ़ों की फ़ुज़ूल बैठकों से ह़स्सास शख़्स बहुत घबराता है, क्यूं कि ऐसी जगहों पर ज़बानें क़ैंचियों की त़रह़ चल रही होती हैं, مَعَاذَاللّٰه बसा अवक़ात **कुफ़्रिय्या कलिमात** भी बक दिये जाते हैं । ऐसी मजलिसों में बरबादिये ईमान का सख़्त ख़त़रा रहता है । नेकी की दा'वत देने या किसी सख़्त ह़ाजत पड़ने पर शरई इजाज़त मिलने पर ह़स्बे ज़रूरत शिर्कत करने के इलावा ऐसी मह़फ़िलों से दूर रहना बेह़द ज़रूरी है ।

दे फ़िरदौस बहरे रज़ा या इलाही عَزَّوَجَلَّ *तू दोज़ख़ से हम को बचा या इलाही* عَزَّوَجَلَّ
तू कर दोस्त अच्छे अ़त़ा या इलाही عَزَّوَجَلَّ *बुरी सोह़बतों से बचा या इलाही* عَزَّوَجَلَّ
तू ईमां पे मुझ को उठा या इलाही عَزَّوَجَلَّ
जहन्नम से कर दे रिहा या इलाही عَزَّوَجَلَّ

तश्वीश सख़्त तश्वीश की बात येह है कि ज़रूरिय्याते दीन में से किसी ज़रूरते दीनी का इन्कार यूंही जो फ़े'ल मुनाफ़िये ईमान (या'नी ईमान की ज़िद) **है मसलन बुत या चांद सूरज को सज्दा करना ऐसा क़त़ई कुफ़्र है कि इस में जहालत भी उ़ज़्र नहीं या'नी इस का कुफ़्र होना मा'लूम हो या न हो दोनों ही**

सूरतों में कुफ़्र है। चुनान्चे अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐनी ह़नफ़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **उ़म्दतुल क़ारी** में इर्शाद फ़रमाते हैं : "हर उस इन्सान की **तक्फ़ीर** की जाएगी (या'नी उस को काफ़िर क़रार दिया जाएगा) जो **सरीह़ कलिमए कुफ़्र** मुंह से निकाले या फिर ऐसा फ़े'ल करे जो **कुफ़्र** का बाइ़स हो अगर्चे वोह येह जानता न हो कि येह कलिमा या फ़े'ल **कुफ़्र** है।" (عمدۃ القاری ج ۱ ص ۴۰۳)

अफ़्सोस ! कुफ़्रिय्यात की मा'लूमात नहीं

अफ़्सोस ! हमारी ग़ालिब अक्सरिय्यत को **कुफ़्रिय्या कलिमात** की कमा ह़क़्क़ुहू मा'लूमात भी नहीं। हर एक को अपने बारे में येह ख़ौफ़ रखना चाहिये कि कहीं ऐसा न हो कि मुझ से कोई ऐसा क़ौल या फ़े'ल सादिर हो जाए जिस के सबब مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلّ ईमान बरबाद हो जाए और किया कराया सब अकारत जाए, और مَعاذَاللّٰہ ثُمَّ مَعاذَاللّٰہ **कुफ़्र** ही पर दुन्या से सफ़र हो जाए और फिर हमेशा हमेशा के लिये जहन्नम मुक़द्दर हो जाए।

कुफ़्रिय्या कलिमात आ़म होने के बा'ज़ अस्बाब

अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! आज कल फ़िल्मों ड्रामों, फ़िल्मी गानों, अख़्बारी मज़्मूनों, जिन्सी व रूमानी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

नॉविलों, इश्क़िया व फ़िस्क़िया अफ़्सानों, बच्चों की बेहूदा कहानियों, त़रह़ त़रह़ के बे तुके हफ़्त रोज़ों, ह़या सोज़ माहनामों और मुख़र्रिबे अख़्लाक़ डाइजस्टों और मिज़ाह़िया चुटकुलों की केसिटों वग़ैरा के ज़रीए **कुफ़्रिय्या कलिमात** आ़म होते जा रहे हैं।

कुफ़्रिय्या कलिमात के मुतअ़ल्लिक़ इ़ल्म सीखना फ़र्ज़ है

याद रखिये ! **कुफ़्रिय्या कलिमात** के मुतअ़ल्लिक़ इ़ल्म ह़ासिल करना **फ़र्ज़** है। चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 23 सफ़ह़ा 624 पर फ़रमाते हैं : **मुह़र्रमाते बात़िनिय्या** (या'नी बात़िनी मम्नूआ़त मसलन) **तकब्बुर व रिया व उ़ज्ब** (या'नी ख़ुद पसन्दी) **व ह़सद वग़ैरहा और उन के मुआ़लजात** (या'नी इलाज) **कि इन का इ़ल्म भी हर मुसल्मान पर अहम फ़राइज़ से है।**[1] मजीद

(1) एह़याउल उ़लूम जिल्द 3 में मुतअ़द्दद बात़िनी अमराज़ का बयान किया गया है, इस का बग़ौर मुत़ालआ़ करना नीज़ मक्तबतुल मदीना से जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयानात की केसिटें सुनना, मदनी रसाइल पढ़ना और दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना भी इन फ़र्ज़ उ़लूम को सीखने के ज़राएअ़ हैं।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو یعلی)

सफ़्हा 626 पर **फ़तावा शामी** के ह़वाले से फ़रमाते हैं : **ह़राम अल्फ़ाज़ और कुफ़्रिय्या कलिमात के मुतअ़ल्लिक़ इल्म सीखना फ़र्ज़ है, इस ज़माने में येह सब से ज़रूरी उमूर हैं।** (رَدُّالْمُحتار ج ۱ ص ۱۰۷)

कुफ़्रिय्या कलिमात से मुतअ़ल्लिक़ अहम ज़ाबित़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! क़ौल का कुफ़्र होना और बात और क़ाइल (या'नी कहने वाले) को **काफ़िर** मान लेना और बात है। **कुफ़्रे लुज़ूमी** (जिसे फ़िक़्ही कुफ़्र भी कहते हैं) के मुर्तकिब को भी अगर्चे फ़ुक़हाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام **काफ़िर** कहते हैं। मगर उ़लमाए मुतकल्लिमीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن कुफ़्रे लुज़ूमी वाले की तक्फ़ीर नहीं करते। "**कुफ़्रे इल्तिज़ामी** (की ता'रीफ़) **येह** (बयान की गई है) **कि ज़रूरिय्याते दीन से किसी शै का तस्रीह़न** (या'नी साफ़ साफ़) **ख़िलाफ़ करे येह क़त़्अ़न इज्माअ़न** (या'नी सब के नज़्दीक) **कुफ़्र है।**" उ़लमाए मुतकल्लिमीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن का त़रीक़ा ही ज़ियादा मोह़तात़ है। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 15 में **कुफ़्रिय्या**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

कलिमात पर **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का फ़तवाए कुफ़्र ज़िक्र करने के बा'द आगे चल कर सफ़हा 445 पर फ़रमाते हैं : "अगर्चे अइम्मए मुहक़्क़िक़ीन व उ़लमाए मोह़तात़ीन उन्हें **काफ़िर** न कहें और येही सवाब (या'नी सह़ीह़) है هُوَالْجَوَابُ وَبِهٖ يُفْتٰى وَعَلَيْهِ الْفَتْوٰى وَهُوَ الْمَذْهَبُ وَعَلَيْهِ الْاِعْتِمَادُ وَفِيْهِ السَّلَامَةُ وَفِيْهِ السَّدَادُ या'नी "येही जवाब है, इसी के साथ **फ़तवा** दिया जाता है, इसी पर **फ़तवा** है, येही मज़्हब है, इसी पर ए'तिमाद है, इसी में सलामती है और येही दुरुस्त है।" लिहाज़ा **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो**! अगर आप को किसी मुसल्मान का क़ौल या फ़े'ल ब ज़ाहिर कुफ़्र नज़र आए तब भी जज़्बात में आ कर मह़्ज़ अपनी अट्कल से उस को **काफ़िर व मुरतद** न ठहराएं, मुफ़्तियाने अहले सुन्नत की ख़िदमत में रुजूअ़ लाएं, वोह जिस त़रह़ फ़रमाएं उसी को अ़मली जामा पहनाएं।

बिग़ैर इ़ल्म के दीनी बह़सें करने वालो ख़बरदार !

दीन के मुतअ़ल्लिक़ जो बात यक़ीनी त़ौर पर मा'लूम हो वोही बयान करनी चाहिये, ज़ियादा **अ़क़्ल के घोड़े** दौड़ाना ईमानिय्यात के मुआ़मले में इन्तिहाई ख़त़रनाक होता है कि ठोकर लगने पर आदमी बसा अवक़ात

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

कुफ़्रिय्यात की गहरी खाई में जा पड़ता है और उसे इस बात का पता तक नहीं चलता कि उस का ईमान बरबाद हो चुका है ! चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 24 सफ़ह़ा 159 ता 160 पर फ़रमाते हैं : इमाम **हुज्जतुल इस्लाम** मुह़म्मद ग़ज़ाली फिर अ़ल्लामा मनावी शारेह़े जामेअ़ सग़ीर फिर सय्यिदी अ़ब्दुल ग़नी नाबलुसी **ह़दीक़ा** में फ़रमाते हैं : "कोई आदमी बदकारी और चोरी करे तो बा वुजूद गुनाह होने के उस के लिये येह अ़मल इतना मोहलिक (हलाक ख़ेज़) और तबाह कुन नहीं जितना बिला तह़क़ीक़ इल्मे इलाही के बारे में कलाम करना मोहलिक (या'नी हलाक करने वाला) है क्यूं कि बिला तह़क़ीक़ और बिग़ैर **पुख़्तगिये इल्म** के कहीं वोह **कुफ़्र** का मुर्तकिब हो जाएगा और उसे इल्म भी नहीं होगा ! इस की मिसाल ऐसे ही है जैसे तैरना जाने बिग़ैर दरिया की मौजों और लहरों पर सुवार होने के, और शैत़ान की फ़रेब कारियां जो अ़क़ाइद और मज़ाहिब से तअ़ल्लुक़ रखती हैं कोई ढकी छुपी नहीं हैं। और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब कुछ ख़ूब जानता है।"

(اَلْحدِيقَةُ النَّدِيَّة ج ۲ ص ۲۷۰)

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी की फ़रमाइश

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी अलह़ाज **मुफ़्ती मुह़म्मद फ़ारूक़** अ़त्त़ारी मदनी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی की फ़रमाइश और उन्हीं के तआ़वुन से उम्मत की ख़ैर ख़्वाही के मुक़द्दस जज़्बे के तह़त **"कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब"** का काम शुरूअ़ हुवा था, फिर इस में त़वील वक़्फ़ा आ गया। येह काम दुश्वार ही नहीं दुश्वार तरीन था, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने कभी कभी मा'मूली सा क़लम तो चलाया है मगर ज़िन्दगी में कभी इतने नाज़ुक और कठिन मौज़ूअ़ पर क़लम उठाने की जुरअत नहीं की थी, बहर कैफ़ **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की इआ़नत और नबिय्ये रह़मत की ह़िमायत के भरोसे हिम्मत कर के दोबारा काम शुरूअ़ किया और बिल आख़िर चन्द बे रब्त़ फ़िक़रात तरतीब देने में काम्याबी ह़ासिल हुई। ग़ालिबन इस उ़न्वान पर उर्दू ज़बान में इस त़रह़ की कोई किताब इस से पहले कभी मन्ज़रे आ़म पर नहीं आई। अन्दाज़ ह़त्तल इम्कान आसान रखा है, कहीं कहीं क़स्दन मुश्किल अल्फ़ाज़ लिख कर ए'राब लगा कर सवाबे आख़िरत की निय्यत से हिलालैन में उन के मा'ना भी

www.dawateislami.net

लिख दिये हैं ताकि इस्लामी भाइयों को दीगर दीनी कुतुब के मुत़ालए़ में सहूलत हो कि हर किताब में इस त़रह़ का अन्दाज़ नहीं होता मगर मैं ने इस किताब में कहीं भी फ़क़त़ अपनी राए से कोई हुक्मे शरई क़ाइम नहीं किया। दीगर कुतुब के साथ साथ बिल ख़ुसूस **फ़तावा रज़विय्या शरीफ़** से ख़ूब ख़ूब रहनुमाई ह़ासिल की है और फिर दा'वते इस्लामी की मदनी मजलिस **अल मदीनतुल इल्मिय्या** के **उ़लमाए किराम** دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ से तख़्रीज व नज़्रे सानी करवाई है। नीज़ **मुफ़्तियाने अहले सुन्नत** کَثَّرَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऐसों की कसरत फ़रमाए। आमीन) ने इस किताब को **बिल इस्तीआ़ब** (या'नी अज़ इब्तिदा ता इन्तिहा) पढ़ा / सुना है और तफ़्तीश फ़रमाई है और इन ह़ज़रात की इजाज़त मिलने पर ही इस की इशाअ़त की गई है।

सरसरी देखने और सीखने का फ़र्क़

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की इनायात और उ़लमाए अहले सुन्नत की नवाज़िशात से आयिन्दा सफ़ह़ात में **कुफ़्रिय्या कलिमात** की सुवालन जवाबन मुख़्तसर सी मा'लूमात फ़राहम करने की सई की गई

है जो कि कलिमाते कुफ़्र का **फ़र्ज़ इल्म** ह़ासिल करने में मददगार साबित हो सकती है। "सरसरी नज़र दौड़ा लेने" और "सीखने" के फ़र्क़ को हर त़ालिबे इल्म ख़ूब जानता है। लिहाज़ा ख़ुद को "त़ालिबे इल्म" तसव्वुर करते हुए ब मुत़ाबिक़ इस **मक़ूला :** اَلسَّبَقُ حَرْفٌ وَّالتَّكْرَارُ اَلْفٌ या'नी "सबक़ (अगर्चे) एक ह़र्फ़ हो (मगर उस को याद करने के लिये उस की) तकरार एक हज़ार बार होनी चाहिये।" इस किताब में दिये हुए मज़ामीन को ह़त्तल इमकान "सीखने" की कोशिश कीजिये। अगर आप ख़ास ख़ास बातों को ज़ेह्न नशीन करने में काम्याब हो गए तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकतें ख़ुद ही देख लेंगे।

किताबों की अग़लात़ दुरुस्त करवाने का त़रीक़ा

अगर इस किताब की कोई बात समझ में न आए तो मुफ़्तियाने अहले सुन्नत से रुजूअ़ फ़रमाएं, अगर इस किताब में कहीं ग़लत़ी पाएं तो तह़रीरी त़ौर पर मअ़ नाम व पता व फ़ोन नम्बर मुत्त़लअ़ फ़रमा कर ख़ुद को सवाब का ह़क़दार बनाएं। नाम व पता व फ़ोन नम्बर यूं भी ज़रूरी होता है कि अगर पढ़ने वाले को ग़लत़

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

फ़हमी हुई हो तो दूर करने की सई की जा सकती है। येह हमेशा याद रखिये ! कि ज़बानी निशान देही करने या किसी के ज़रीए़ कहलवा देने से किताबों की ग़लति़यों की इस्लाह़ मुश्किल होती है।

दुआ़ए अ़त्तार

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! हर त़रह़ के कुफ़्र से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमा ! **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारा ईमान सलामत रखना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें ईमानो आ़फ़िय्यत के साथ मदीनए मुनव्वरह में ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़्रा जल्वए मह़बूब में शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने मदनी ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस किताब "**कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब**" को लिखने, पढ़ने, तक़्सीम करने और हर त़रह़ की मुआ़वनत करने वालों को दोनों जहान की भलाइयों से मालामाल फ़रमा।

कुफ़्रिया बात अदा न हो लब से ऐसा मोह़तात़ दे बना या रब عَزَّوَجَلَّ
मेरा ईमां सदा रहे मह़फ़ूज़ सारे नबियों का वासित़ा या रब عَزَّوَجَلَّ

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बा'ज़ अहम इस्तिलाहात के बारे में सुवाल जवाब

ईमान की ता'रीफ़

सुवाल : ईमान की ता'रीफ़ बता दीजिये।

जवाब : ईमान लुग़त में **तस्दीक़ करने** (या'नी सच्चा मानने) को कहते हैं। (تفسیر قُرطُبی ج ۱ ص ۱٤٧) **ईमान** का दूसरा लुग़वी मा'ना है : **अम्न देना**। चूंकि मोमिन अच्छे अ़क़ीदे इख़्तियार कर के अपने आप को दाइमी या'नी हमेशा वाले अ़ज़ाब से अम्न दे देता है इस लिये अच्छे अ़क़ीदों के इख़्तियार करने को **ईमान** कहते हैं। (तफ़्सीरे नईमी, जि. 1, स. 8) और इस्तिलाहे शरअ़ में **ईमान** के मा'ना हैं : "सच्चे दिल से उन सब बातों की तस्दीक़ करे जो **ज़रूरिय्याते दीन** से हैं।"

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 1, स. 92)

और आ'ला ह़ज़रत **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हर बात में सच्चा जाने, हुज़ूर की ह़क़्क़ानिय्यत को सिदक़े दिल से मानना ईमान है जो इस का मुक़िर (या'नी इक़रार करने वाला) हो उसे

मुसल्मान जानेंगे जब कि उस के किसी क़ौल या फ़े'ल या ह़ाल में **अल्लाह** व रसूल (عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم) का इन्कार या तक्ज़ीब (या'नी झुटलाना) या तौहीन न पाई जाए। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 29, स. 254)

कुफ़्र की ता'रीफ़

सुवाल : कुफ़्र के क्या मा'ना हैं ?

जवाब : कुफ़्र का लुग़वी मा'ना है : "किसी शै को छुपाना।" (اَلْمُفْرَدات ص ٧١٤) और इस्तिलाह़ में किसी एक **ज़रूरते दीनी** के इन्कार को भी **कुफ़्र** कहते हैं अगर्चे बाक़ी तमाम **ज़रूरिय्याते दीन** की तस्दीक़ करता हो। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 1, स. 92) जैसे कोई शख़्स अगर तमाम **ज़रूरिय्याते दीन** को तस्लीम करता हो मगर **नमाज़** की फ़र्ज़िय्यत या **ख़त्मे नुबुव्वत** का मुन्किर हो वोह **काफ़िर** है कि **नमाज़** को फ़र्ज़ मानना और **सरकारे मदीना** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को आख़िरी नबी मानना दोनों बातें **ज़रूरिय्याते दीन** में से हैं।

ज़रूरिय्याते दीन की ता'रीफ़

सुवाल : ज़रूरिय्याते दीन किसे कहते हैं ?

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

जवाब : ज़रूरिय्याते दीन, इस्लाम के वोह अह़काम हैं, जिन को हर ख़ासो आ़म जानते हों, जैसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की वह़दानिय्यत (या'नी उस का एक होना), अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की नुबुव्वत, नमाज़, रोज़े, ह़ज, जन्नत, दोज़ख़, क़ियामत में उठाया जाना, ह़िसाबो किताब लेना वग़ैरहा। मसलन येह अ़क़ीदा रखना (भी ज़रूरिय्याते दीन में से है) कि हु़ज़ूर रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم "ख़ातमुन्नबिय्यीन" हैं, **हु़ज़ूरे अकरम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द कोई नया नबी नहीं हो सकता। **अ़वाम** से मुराद वोह मुसल्मान हैं जो **उ़लमा** के त़ब्क़े में शुमार न किये जाते हों मगर **उ़लमा** की सोह़बत में बैठने वाले हों और इल्मी मसाइल का ज़ौक़ रखते हों। वोह लोग मुराद नहीं जो दूर दराज़ जंगलों पहाड़ों में रहने वाले हों जिन्हें सह़ीह़ **कलिमा** पढ़ना भी न आता हो कि ऐसे लोगों का **ज़रूरिय्याते दीन** से ना वाक़िफ़ होना इस दीनी ज़रूरी को ग़ैर ज़रूरी न कर देगा। अलबत्ता ऐसे लोगों के **मुसल्मान** होने के लिये येह बात ज़रूरी है कि **ज़रूरिय्याते दीन** के मुन्किर (या'नी इन्कार करने वाले) न हों और येह अ़क़ीदा रखते हों कि **इस्लाम**

में जो कुछ है ह़क़ है। इन सब पर इज्मालन **ईमान** लाए हों। (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 1, स. 92, मुलख़्ख़सन)

ज़रूरिय्याते दीन की मज़ीद वज़ाह़त के लिये **नुज़्हतुल क़ारी शर्हे सह़ीहुल बुख़ारी** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 294 से इक़्तिबास मुलाह़ज़ा हो, चुनान्चे शारेह़े बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा **मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़** अमजदी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ईमान की ता'रीफ़ में ज़रूरिय्याते दीन का (जो) लफ़्ज़ आया है, इस से मुराद वोह दीनी बातें हैं जिन का दीन से होना ऐसी क़त़्ई यक़ीनी दलील से साबित हो जिस में ज़र्रा बराबर शुबा न हो और उन का दीनी बात होना हर आ़मो ख़ास को मा'लूम हो। **ख़वास** से मुराद उ़लमा हैं और **अ़वाम** से मुराद वोह लोग हैं जो आ़लिम नहीं मगर उ़लमा की सोह़बत में रहते हों। इस बिना पर वोह दीनी बातें जिन का दीनी बात होना सब को मा'लूम है मगर उन का सुबूत क़त़्ई नहीं तो वोह ज़रूरिय्याते दीन से नहीं मसलन **अ़ज़ाबे क़ब्र, आ'माल का वज़्न**। यूंही वोह बातें जिन का सुबूत **क़त़्ई** है मगर उन का दीन से होना अ़वामो ख़वास सब को मा'लूम नहीं तो वोह भी **ज़रूरिय्याते दीन** से नहीं, जैसे सुल्बी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा । (شعب الایمان)

बेटी(1) के साथ अगर पोती हो तो पोती को छटा हिस्सा मिलेगा ।

जिन दीनी बातों का सुबूत **क़त़ई** हो और वोह **ज़रूरिय्याते दीन** से न हों उन का मुन्किर (या'नी इन्कार करने वाला) अगर उस के सुबूत के **क़त़ई** होने को जानता हो तो **काफ़िर** है और अगर न जानता हो तो उसे बताया जाए, बताने पर अगर ह़क़ माने तो मुसल्मान और बताने के बा'द भी अगर इन्कार करे तो **काफ़िर** । (شامی ج۳ص۳۰۹)

वोह बातें जिन का दीन से होना सब को मा'लूम है मगर उन का सुबूत **क़त़ई** नहीं उन का मुन्किर **काफ़िर** नहीं अगर येह बातें **ज़रूरिय्याते मज़्हबे अहले सुन्नत से** हों तो (इन्कार करने वाला) गुमराह और अगर इस से भी न हो तो **ख़ाती़** (या'नी ख़त़ाकार) ।

मदीना

(1) नुज़्हतुल क़ारी के नुस्ख़ों में इस जगह "**बेटी**" के बजाए "**बेटियों**" लिखा है जो किताबत की ग़लती़ मा'लूम होती है क्यूं कि ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने हुमाम عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللّٰہِ السَّلَام "अल मुसायरह" सफ़्ह़ा 360 पर तह़रीर फ़रमाते हैं : जिन का सुबूत **क़त़ई** है मगर वोह **ज़रूरिय्याते दीन** की ह़द को न पहुंचा हो जैसे (मीरास में) सुल्बी बेटी के साथ अगर पोती हो तो पोती को छटा हिस्सा मिलने का हुक्म इज्माए उम्मत से साबित है...... الخ (المسايرة ص ٣٦٠)

ज़रूरिय्याते मज़्हबे अहले सुन्नत

मज़्हबे अहले सुन्नत की **ज़रूरिय्यात** का मत्लब येह होता है कि उस का मज़्हबे अहले सुन्नत से होना सब अ़वाम व ख़वासे अहले सुन्नत को मा'लूम हो। जैसे अ़ज़ाबे क़ब्र, आ'माल का वज़्न।

(नुज़्हतुल क़ारी शर्हे सहीहुल बुख़ारी, जि. 1, स. 294)

तौह़ीद की ता'रीफ़

सुवाल : तौह़ीद किसे कहते हैं ?

जवाब : **अल्लाह** तआ़ला को उस की ज़ातो सिफ़ात और अह़काम व अफ़्आ़ल में शरीक से पाक मानना तौह़ीद है।

शिर्क की ता'रीफ़

सुवाल : शिर्क के क्या मा'ना हैं ?

जवाब : शिर्क का मा'ना है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी को वाजिबुल वुजूद या मुस्तह़िक़्क़े इ़बादत (किसी को इ़बादत के लाइक़) जानना या'नी उलूहिय्यत में दूसरे को शरीक करना और येह **कुफ़्र** की सब से बद तरीन क़िस्म है। इस के सिवा कोई बात कैसी ही शदीद कुफ़्र हो ह़क़ीक़तन **शिर्क** नहीं।

(बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 1, स. 96, मुलख़्ख़सन)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

वाजिबुल वुजूद किसे कहते हैं ?

सुवाल : अभी आप ने वाजिबुल वुजूद की इस्तिलाह़ बयान की इस के मा'ना भी बता दीजिये।

जवाब : वाजिबुल वुजूद ऐसी ज़ात को कहते हैं जिस का वुजूद (या'नी "होना") ज़रूरी और अ़दम मुह़ाल (या'नी न होना ग़ैर मुम्किन) है या'नी (वोह ज़ात) हमेशा से है और हमेशा रहेगी, जिस को कभी फ़ना नहीं, किसी ने उस को पैदा नहीं किया बल्कि उसी ने सब को पैदा किया है। जो ख़ुद अपने आप से मौजूद है और येह सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात है।

(हमारा इस्लाम, ह़िस्सए सिवुम, स. 95)

निफ़ाक़ की ता'रीफ़

सुवाल : निफ़ाक़ की क्या ता'रीफ़ है ?

जवाब : ज़बान से इस्लाम का दा'वा करना और दिल में इस्लाम से इन्कार करना **निफ़ाक़** है। येह भी **ख़ालिस कुफ़्र** है बल्कि ऐसे लोगों के लिये जहन्नम का सब से निचला त़बक़ा है। सरवरे काएनात, शहन्शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी ह़यात के ज़माने में इस सिफ़त के कुछ अफ़राद बत़ौरे **मुनाफ़िक़ीन** मश्हूर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

हुए, उन के बातिनी कुफ़्र को **कुरआने मजीद** में बयान किया गया है । नीज़ **सुल्ताने मदीना** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ब अताए इलाही عَزَّوَجَلَّ अपने वसीअ़ इल्म से एक एक को पहचाना और नाम ब नाम फ़रमा दिया कि येह येह **मुनाफ़िक़** हैं। अब इस ज़माने में किसी मख़्सूस शख़्स की निस्बत यक़ीन से कहना कि वोह मुनाफ़िक़ है मुम्किन नहीं, कि हमारे सामने जो **इस्लाम** का दा'वा करे हम उसे **मुसल्मान** ही समझेंगे जब तक कि **ईमान** के मुनाफ़ी (या'नी ईमान के उलट) कोई क़ौल (बात) या फ़े'ल (काम) उस से सरज़द न हो । अलबत्ता **निफ़ाक़** या'नी मुनाफ़क़त की एक शाख़ इस ज़माने में भी पाई जाती है कि बहुत से **बद मज़्हब** अपने आप को मुसल्मान कहते हैं और देखा जाए तो इस्लाम के दा'वे के साथ साथ बहुत से **ज़रूरिय्याते दीन** का इन्कार भी करते हैं। (बहारे शरीअ़त, हिस्सए अव्वल, स. 96, मुलख़्ख़सन)

मुरतद की ता'रीफ़

सुवाल : मुरतद किसे कहते हैं ?

जवाब : मुरतद वोह शख़्स है कि इस्लाम के बा'द किसी ऐसे अम्र का इन्कार करे जो **ज़रूरिय्याते दीन** से हो ।

या'नी ज़बान से **कलिमए कुफ़्र** बके जिस में तावीले सहीह़ की गुन्जाइश न हो। यूंही बा'ज़ अफ़्आ़ल (काम) भी ऐसे हैं जिन से **काफ़िर** हो जाता है मसलन बुत को सज्दा करना, मुस्ह़फ़ शरीफ़ (क़ुरआने पाक) को नजासत की जगह फेंक देना।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 9, स. 173)

कुफ़्र की अक़्साम और तक्फ़ीर के बारे में सुवाल जवाब

कलिमाते कुफ़्र की क़िस्में

सुवाल : कलिमाते कुफ़्र की कितनी क़िस्में हैं ?

जवाब : कलिमाते कुफ़्र की दो क़िस्में हैं (1) लुज़ूमे कुफ़्र (2) इल्तिज़ामे कुफ़्र। चुनान्चे सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : **अक़्वाले कुफ़्रिय्या** दो क़िस्म के हैं (1) एक वोह जिस में किसी मा'निये सहीह़ का भी एह़तिमाल (या'नी पहलू) हो (2) दूसरे वोह कि उस में कोई ऐसे मा'ना नहीं बनते जो क़ाइल को कुफ़्र से बचावे। इस में अव्वल को **लुज़ूमे कुफ़्र** कहा जाता है और क़िस्मे दुवुम को **इल्तिज़ामे कुफ़्र**। लुज़ूमे कुफ़्र की सूरत में

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

भी फ़ुक़हाए किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام) ने हुक्मे कुफ़्र दिया मगर मुतकल्लिमीन[1] (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن) इस से सुकूत करते (या'नी ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमाते) हैं । और फ़रमाते हैं जब तक **इल्तिज़ाम** की सूरत न हो क़ाइल को **काफ़िर** कहने से सुकूत किया जाएगा और अह़्वत़ (या'नी ज़ियादा मोह़तात़) येही मज़्हबे मुतकल्लिमीन (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن) है । وَاللّٰهُ اَعْلَم ।

(फ़तावा अम्जदिय्या, जि. 4, स. 512, 513)

लुज़ूम व इल्तिज़ाम की तफ़्सील

सुवाल : लुज़ूमे कुफ़्र और **इल्तिज़ामे कुफ़्र** की मज़ीद तफ़्सील बयान कर दीजिये ।

जवाब : लुज़ूमे कुफ़्र की ता'रीफ़ का ख़ुलासा येह है कि वोह बात ऐने कुफ़्र नहीं मगर कुफ़्र तक पहुंचाने वाली है और **इल्तिज़ामे कुफ़्र** येह है कि **ज़रूरिय्याते दीन** में से किसी चीज़ का सराह़तन (या'नी वाज़ेह़ त़ौर पर) ख़िलाफ़ करे । चुनान्चे मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن लुज़ूम व

---

(1) जो उ़लमाए किराम इल्मे कलाम या'नी इल्मे अ़क़ाइद के माहिर होते हैं और नक़्ली या'नी शरई दलाइल के साथ साथ अ़क़्ली दलाइल से भी अ़क़ाइद को साबित करते हैं उन्हें मुतकल्लिमीन कहा जाता है ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह्क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

इल्तिज़ाम के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : "**सय्यिदुल आ़लमीन** मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जो कुछ अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) के पास से लाए उन सब में उन की तस्दीक़ करना और सच्चे दिल से उन की एक एक बात पर यक़ीन लाना **ईमान** है और (عَزَّوَجَلَّ) مَعَاذَ اللّٰہ उन में से किसी बात का झुटलाना और उस में अदना शक लाना **कुफ़्र** (है)। फिर येह इन्कार जिस से ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) मुझे और सब मुसल्मानों को पनाह दे, दो त़रह़ होता है (1) **लुज़ूमी** व (2) **इल्तिज़ामी**। **इल्तिज़ामी येह कि ज़रूरिय्याते दीन से किसी शै का तस्रीह़न (या'नी साफ़ साफ़) ख़िलाफ़ करे येह क़त़्अ़न इज्माअ़न कुफ़्र है** अगर्चे (ख़िलाफ़ करने वाला) नामे **कुफ़्र** से चिड़े और कमाले इस्लाम का दा'वा करे.........जैसे त़ाइफ़ए **तालिफ़ए** नयाचरह (या'नी हलाक व बरबाद होने वाले नेचरी फ़िर्क़े वालों) का, वुजूदे **मलक** व जिन्न व शैत़ान व आस्मान व नार व जिनान व मो'जिज़ाते अम्बिया عَلَیۡہِمُ اَفۡضَلُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से उन मआ़नी पर कि अहले इस्लाम के नज़्दीक **हु़ज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मुतवातिर हैं इन्कार करना और अपनी तावीलाते बात़िला व तवह्हुमाते आ़त़िला (या'नी

झूटी तावीलों और ख़ाली वहमों) को ले मरना । न हरगिज़ हरगिज़ इन तावीलों के शोशे इन्हें **कुफ़्र** से बचाएंगे, न मह़ब्बते इस्लाम व हमदर्दी के झूटे दा'वे काम आएंगे... और **लुज़ूमी** येह कि जो बात उस ने कही ऐन **कुफ़्र** नहीं मगर **मुन्जिर बि कुफ़्र** (या'नी कुफ़्र की त़रफ़ ले जाने वाली) होती है, या'नी मआले सुख़न व लाज़िमे हुक्म को तरतीबे मुक़द्दमात व तत्मीमे तक़्रीबात करते ले चलिये तो अन्जामे कार उस से किसी **ज़रूरिय्ये दीन** का इन्कार लाज़िम आए ।"

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 431)

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के फ़तवे का आसान लफ़्ज़ों में ख़ुलासा

सुवाल : सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के **मुबारक फ़तवे** के बयान कर्दा इक़्तिबास का आसान लफ़्ज़ों में ख़ुलासा कर दीजिये ।

जवाब : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن अपने **मुबारक फ़तवे** के मज़्कूरा इक़्तिबास में ईमान व कुफ़्र की ता'रीफ़ बयान करने के बा'द कुफ़्र की दो अक़्साम **लुज़ूम व इल्तिज़ाम** का ज़िक्र करते हुए फ़रमाते हैं : (1) **इल्तिज़ामे कुफ़्र**

या'नी ज़रूरिय्याते दीन में से किसी एक चीज़ का भी ख़िलाफ़ करना। चाहे वोह ख़िलाफ़ करने वाला ब ज़ाहिर इस्लाम का कैसा ही शैदाई बनता हो और बेशक **कुफ़्र** के नाम से चिड़ता हो मगर उस पर हुक्मे **कुफ़्र** है और वोह इस्लाम से ख़ारिज है। जैसा कि नेचरी फ़िर्क़े वाले जो कि ब ज़ाहिर इस्लाम और मिल्लते इस्लामिया की महब्बतों का ख़ूब दम भरते और बढ़ चढ़ कर अपने आप को मुसल्मानों में खपाते हैं मगर कई **ज़रूरिय्याते दीन** का ख़िलाफ़ करते हैं मसलन मलाएका, जिन्नात, शैतान, आस्मान, जन्नत, दोज़ख़ और मो'जिज़ाते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वोह मआनी जो कि हमारे मक्की मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ब तवातुर साबित हैं और सभी अहले इस्लाम का जिन पर इत्तिफ़ाक़ है उन को तस्लीम करने के बजाए उलटी सीधी तावीलों के ज़रीए अपने मन घड़त जुदागाना मा'ना बयान करते हैं। लिहाज़ा नेचरियों को उन के महब्बते इस्लाम के दा'वे हरगिज़ कुफ़्र से नहीं बचा सकते। (2) **लुज़ूमे कुफ़्र** ऐने कुफ़्र तो नहीं होता मगर कुफ़्र तक ले जाने वाला होता है। या'नी कलाम का अन्जाम और हुक्म का लाज़िम कुफ़्रे हक़ीक़ी है। मुराद येह कि अगर मुक़द्दमात को तरतीब दिया जाए और तक़्रीबात को मुकम्मल करते जाएं तो

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

बिल आख़िर किसी ज़रूरिय्ये दीनी का इन्कार लाज़िम आए। इस की बहुत सी सूरतें होती हैं।

इख़्तिलाफ़ी कुफ़्र के बारे में हुक्म

सुवाल : ऐसे शख़्स के बारे में क्या हुक्म है जिस के "क़ौल" के कुफ़्र होने न होने में अइम्मए दीन या'नी फ़ुक़हा और मुतकल्लिमीन का इख़्तिलाफ़ हो।

जवाब : ऐसा शख़्स अगर्चे इस्लाम से ख़ारिज नहीं, ताहम उस के लिये **तौबा व तजदीदे ईमान व निकाह़** का हुक्म है। चुनान्चे मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना **शाह अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "फिर जब कि अइम्मए दीन (या'नी फ़ुक़हा और मुतकल्लिमीन) इन के **कुफ़्र** में मुख़्तलिफ़ हो गए तो राह येह है कि अगर अपना भला चाहें जल्द अज़् सरे नौ कलिमए इस्लाम पढ़ें।" चन्द सुतूर बा'द मज़ीद फ़रमाते हैं : "इस के बा'द अपनी औ़रतों से तजदीदे निकाह़ करें कि **कुफ़्रे ख़िलाफ़ी** (या'नी जिस क़ौल या फ़े'ल के कुफ़्र होने में फ़ुक़हा और मुतकल्लिमीन का इख़्तिलाफ़ हो उस) का हुक्म येही है।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 445, 446)

कुफ़्रे लुज़ूमी में आ'माल बरबाद हो जाते हैं या नहीं ?

सुवाल : जिस के किसी क़ौल या फ़े'ल के **कुफ़्र** होने में अइम्मए दीन या'नी फ़ुक़हा और मुतकल्लिमीन का

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

इख़्तिलाफ़ हो, क्या उस के भी तमाम आ'माल बरबाद हो जाते हैं ?

जवाब : नहीं। क्यूं कि येह **कुफ़्रे लुज़ूमी** है और ऐसा शख़्स इस्लाम से ख़ारिज नहीं होता, इस का निकाह़ भी नहीं टूटता इस की बैअ़त भी बर क़रार रहती है और इस के साबिक़ा आ'माल भी बरबाद नहीं होते। अलबत्ता इस के लिये **तजदीदे ईमान व तजदीदे निकाह़** का हुक्म है। चुनान्चे मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن नक़्ल करते हैं : **अ़ल्लामा ह़सन बिन अ़म्मार शुरुम्बुलाली** (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی) **शर्ह़े वह्बानिया** में फिर **अ़ल्लामा अ़लाई** (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَاقِی) **शर्ह़े तन्वीर** में फ़रमाते हैं : "जो मुत्तफ़िक़ा कुफ़्र हो वोह आ'माले सालिह़ा और निकाह़ को बाति़ल कर देता है और उस की औलाद औलादे ज़िना होगी। और जिस (क़ौल या फ़े'ल के कुफ़्र होने) में ख़िलाफ़ (या'नी इख़्तिलाफ़) हो तो उसे **इस्तिग़फ़ार, तौबा** और **तजदीदे** (ईमान व) **निकाह़** का हुक्म दिया जाएगा।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 446)

क्या क़त़ई कुफ़्र में भी इख़्तिलाफ़ हो सकता है ?

सुवाल : अगर **कुफ़्रे क़त़ई** हो (मसलन क़ादियानी का कुफ़्र) और कोई मुफ़्ती उस में इख़्तिलाफ़ करे तो क्या हुक्म है ?

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو یعلی)

जवाब : वोह "मुफ़्ती" ही नहीं जो **क़त़ई कुफ़्र** में इख़्तिलाफ़ करे बल्कि अ़वाम के साथ साथ ऐसे मुफ़्ती का हुक्म भी **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के नज़्दीक येह है : مَنْ شَكَّ فِیْ عَذَابِهٖ وَ کُفْرِهٖ فَقَدْ کَفَرَ या'नी जो उस (क़त़ई कुफ़्र बकने वाले काफ़िर) के अ़ज़ाब और कुफ़्र में शक करे वोह ख़ुद **काफ़िर** है। (دُرِّمُختار ج٦ ص٣٥٦)

मुसल्मान को काफ़िर कहना कैसा ?

सुवाल : किसी सुन्नी सह़ीहुल अ़क़ीदा मुसल्मान को **काफ़िर** कहना कैसा है ?

जवाब : सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "किसी मुसल्मान को **काफ़िर** कहा तो ता'ज़ीर (या'नी सज़ा) है। रहा येह कि वोह क़ाइल (या'नी मुसल्मान को काफ़िर कहने वाला) ख़ुद **काफ़िर** होगा या नहीं, इस में दो **सूरतें** हैं : ﴾1﴿ अगर इसे मुसल्मान जानता है तो **काफ़िर** न हुवा और ﴾2﴿ अगर इसे **काफ़िर** ए'तिक़ाद करता है (या'नी येह अ़क़ीदा रखता है कि येह काफ़िर है) तो ख़ुद **काफ़िर** है कि मुसल्मान को **काफ़िर** जानना दीने इस्लाम को **कुफ़्र** जानना है और दीने इस्लाम को कुफ़्र जानना **कुफ़्र** है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है । (مسند احمد)

हां अगर उस शख़्स में कोई ऐसी बात पाई जाती है जिस की बिना पर तक्फ़ीर हो सके और उस ने उसे **काफ़िर** कहा और **काफ़िर** जाना तो (कहने वाला) **काफ़िर** न होगा ।" (دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج ٦ ص ١١١) नीज़ फ़रमाया : (मुसल्मान को बतौरे गाली) बद मज़्हब, मुनाफ़िक़, ज़िन्दीक़, यहूदी, नसरानी, नसरानी का बच्चा, काफ़िर का बच्चा कहने पर भी ता'ज़ीर (सज़ा) है ।" (बहारे शरीअत, हिस्सा : 9, स. 126, 127, دُرِّمُختار ج ٦ ص ١١٢، اَلْبَحْرُ الرَّائِق ج ٥ ص ٧٤) अलबत्ता जो वाक़ेई **काफ़िर** है उस को **काफ़िर** ही कहेंगे ।

दूसरे के बारे में काफ़िर होने की आरज़ू

सुवाल : ज़ैद ने बक्र से कहा : "काश ! तू सिख होता कि कम अज़ कम तेरे चेहरे पर दाढ़ी तो होती ।" ज़ैद के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब : ज़ैदे बे क़ैद के इस क़ौले बदतर अज़ बौल में **कुफ़्र** पर राज़ी रहना पाया जा रहा है येह कहना कुफ़्र है । हज़रते अ़ल्लामा **अ़ली क़ारी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى नक़्ल करते हैं : "सय्यिदुना **इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है : किसी के **कुफ़्र** पर राज़ी होना बिग़ैर किसी तफ़्सील के **कुफ़्र** है ।"

(منح الروض للقارى ص٤٨٤،٤٨٥)

बे ख़याली में कुफ़्र बक देना

सुवाल : अगर किसी के मुंह से बे ख़याली में कुफ़्र निकल गया मसलन कहना चाहता था, "**अल्लाह** मालिक है" मगर مَعَاذَاللّٰه मुंह से निकला, "**अल्लाह** मालिक नहीं" क्या इस सूरत में भी **काफ़िर** हो जाएगा ?

जवाब : क़ाइल का क़ौल तो यक़ीनन **कुफ़्र** है मगर उस की **तक्फ़ीर** नहीं की जाएगी कि बे ख़याली में येह कलिमा सादिर हुवा। सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "कहना कुछ चाहता था और ज़बान से कुफ़्र की बात निकल गई तो **काफ़िर** न हुवा या'नी जब कि इस अम्र से इज़्हारे नफ़रत करे कि सुनने वालों को भी मा'लूम हो जाए कि ग़लत़ी से येह लफ़्ज़ निकला है और अगर बात की पच की (या'नी जो कुछ मुंह से निकला उस पर अड़ा रहा) तो अब **काफ़िर** हो गया कि **कुफ़्र** की ताईद करता है।"

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 9, स. 174)

ना बालिग़ का कुफ़्र बकना

सुवाल : अगर कोई ना बालिग़ बच्चा कलिमए कुफ़्र बक दे तो क्या उस पर भी हुक्मे **कुफ़्र** लागू हो जाता है ? अगर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे । (شعب الایمان)

हां तो फिर जब बालिग़ होने के बा'द उस को पता चले कि मैं ने ना बालिग़ी में **कुफ़्र** बका था और जो **कुफ़्र** बका था कुछ कुछ याद है सहीह़ त़रह़ याद भी नहीं तो अब किस त़रह़ **तौबा** करे ?

जवाब : ना बालिग़ समझदार का **कुफ़्र व इस्लाम** मो'तबर है । मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "समझदार बच्चा अगर **इस्लाम** के बा'द **कुफ़्र** करे तो हमारे नज़्दीक वोह **मुरतद** होगा ।" (माख़ूज़ अज़ फ़तावा अफ़्रीक़ा, स. 16) मा'लूम हुवा **बालिग़** या **समझदार ना बालिग़ कुफ़्र करे तो मुरतद** हो जाएगा । अगर बालिग़ होने के बा'द एह़सास हुवा और अगर **कुफ़्रिय्या** क़ौल याद है तो ख़ास उस से तौबा करे और अगर शक है या याद नहीं तो उस **मश्कूक कुफ़्रिय्या** कलिमा समेत हर क़िस्म के कुफ़्र से तौबा करे । या'नी इस त़रह़ कहे : "मैं तमाम **कुफ़्रिय्यात** से तौबा करता हूं ।" फिर कलिमा पढ़ ले ।

ना बालिग़ बच्चे के मुसल्मान होने का मस्अला

सुवाल : वालिदैन में एक काफ़िर है और दूसरा मुसल्मान । इस सूरत में बच्चों को मुसल्मान शुमार करेंगे या काफ़िर ?

जवाब : ना बालिग़ मगर समझदार बच्चे के मुसल्मान या काफ़िर होने में ख़ुद उसी बच्चे का ए'तिबार है अलबत्ता ना समझ बच्चे में तफ़्सील येह है कि काफ़िर मियां बीवी में से अगर कोई एक मुसल्मान हो गया तो उन के ना बालिग़ ना समझ बच्चे मुसल्मान होने वाले के ताबेअ़ होंगे या'नी मुसल्मान माने जाएंगे लिहाज़ा **काफ़िर** बाप ज़िन्दा हो या मर गया हो, मां के क़बूले इस्लाम से ना समझ ना बालिग़ बच्चे ख़ुद ब ख़ुद मुसल्मान हो गए। जैसा कि मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 26 सफ़ह़ा 327 पर फ़रमाते हैं : **"मां के मुसल्मान होने से दोनों ना बालिग़ बच्चे मुसल्मान हो गए।"** हिदाया व दुर्रे मुख़्तार वग़ैरहुमा में है : (फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं :) बच्चा वालिदैन में बेहतर दीन वाले के ताबेअ़ होता है। (تَنوِیرُ الْاَبْصَار ج ٤ ص ٣٦٧)

ना बालिग़ का कुफ़्र किस उ़म्र में मो'तबर है ?

सुवाल : ना बालिग़ बच्चे का **कुफ़्र** किस उ़म्र में मो'तबर है ?

जवाब : सात बरस या ज़ियादा उ़म्र का बच्चा जो कि अच्छे बुरे की तमीज़ रखता हो वोह अगर **कुफ़्र**

करेगा तो **काफ़िर** हो जाएगा क्यूं कि उस का **कुफ़्र व इस्लाम** मो'तबर है।

(मुलख़्ख़स अज़् फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 242)

काफ़िर को काफ़िर कहना ज़रूरी है

सुवाल : काफ़िर को काफ़िर कहना जाइज़ है या ना जाइज़ ?

जवाब : काफ़िर को काफ़िर कहना न सिर्फ़ जाइज़ बल्कि बा'ज़ सूरतों में फ़र्ज़ है। सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه लिखते हैं : "एक येह वबा भी फैली हुई है कहते हैं कि हम तो **काफ़िर** को भी **काफ़िर** न कहेंगे कि हमें क्या मा'लूम कि उस का ख़ातिमा कुफ़्र पर होगा।" येह भी ग़लत़ है। क़ुरआने अ़ज़ीम ने **काफ़िर** को **काफ़िर** कहा और **काफ़िर** कहने का हुक्म दिया। (चुनान्चे इर्शाद होता है :)

قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ﴿۱﴾
(پ ۳۰ الکافرون ۱)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ ऐ काफ़िरो !

और अगर ऐसा है तो **मुसल्मान** को भी मुसल्मान न कहो, तुम्हें क्या मा'लूम कि इस्लाम पर मरेगा, ख़ातिमे का ह़ाल तो **ख़ुदा** (عَزَّوَجَلَّ) जाने। आगे चल कर मज़ीद फ़रमाते हैं : बा'ज़ **जाहिल** येह कहते हैं कि "हम किसी को **काफ़िर** नहीं कहते आ़लिम लोग जानें वोह

www.dawateislami.net

काफ़िर कहें।" मगर क्या येह लोग नहीं जानते कि अ़वाम के तो वोही अ़क़ाइद होंगे जो क़ुरआनो ह़दीस वग़ैरहुमा से उ़लमा ने उन्हें बताए या अ़वाम के लिये कोई शरीअ़त जुदागाना है ? जब ऐसा नहीं तो फिर आ़लिमे दीन के बताए पर क्यूं नहीं चलते ! नीज़ येह कि **ज़रूरिय्याते** (दीन) का इन्कार कोई ऐसा अम्र नहीं जो उ़लमा ही जानें। अ़वाम जो उ़लमा की सोह़बत से मुशर्रफ़ होते रहते हैं वोह भी उन से बे ख़बर नहीं होते। फिर ऐसे मुआ़मले में पहलू तही और ए'राज़ (या'नी मुंह फैरने) के क्या मा'ना !

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 9, स. 173, 174)

क़त़ई काफ़िर के कुफ़्र में शक करने वाला भी काफ़िर हो जाता है

मज़ीद **बहारे शरीअ़त** ह़िस्सए अव्वल में है : **"मुसल्मान को मुसल्मान, काफ़िर को काफ़िर जानना ज़रूरिय्याते दीन से है......** क़त़ई काफ़िर के कुफ़्र में शक भी आदमी को **काफ़िर** बना देता है...... इस ज़माने में बा'ज़ लोग येह कहते हैं कि मियां ! जितनी देर उसे **काफ़िर** कहोगे उतनी देर **अल्लाह अल्लाह** करो येह सवाब की बात है। इस का जवाब येह है कि हम कब कहते हैं कि **काफ़िर**

काफ़िर का वज़ीफ़ा कर लो ! मक़्सूद येह है कि उसे **काफ़िर** जानो और पूछा जाए तो क़त्अ़न (या'नी यक़ीनी तौ़र पर) **काफ़िर** कहो, न येह कि अपनी सुल्हे़ कुल से उस के **कुफ़्र** पर पर्दा डालो।"

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 1, स. 98)

क्या आ़म आदमी हुक्मे कुफ़्र लगा सकता है ?

सुवाल : घर के फ़र्द या दोस्त वग़ैरा की कोई बात सुन या देख कर क्या आ़म आदमी भी उस को **काफ़िर** कह सकता है ?

जवाब : जब किसी बात के **कुफ़्र** होने के बारे में यक़ीनी तौ़र पर मा'लूम हो मसलन किसी मुफ़्ती साहि़ब ने बताया हो या किसी मो'तबर किताब मसलन **बहारे शरीअ़त** या **फ़तावा रज़विय्या शरीफ़** वग़ैरा में पढ़ा हो तब तो उस कुफ़्री बात को कुफ़्र ही समझे वरना सिर्फ़ अपनी अट्कल से हरगिज़ हरगिज़ हरगिज़ किसी मुसल्मान को **काफ़िर** न कहे। क्यूं कि कई जुम्ले ऐसे होते हैं जिन के बा'ज़ पहलू **कुफ़्र** की त़रफ़ जा रहे होते हैं और बा'ज़ इस्लाम की त़रफ़ और कहने वाले की निय्यत का भी मा'लूम नहीं होता कि उस ने कौन सा पहलू मुराद लिया है। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़हा करूं (या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشكوال)

अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : हमारे अइम्मा رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى ने हुक्म दिया है कि अगर किसी कलाम में 99 एह़तिमाल कुफ़्र के हों और एक इस्लाम का तो वाजिब है कि एह़तिमाले इस्लाम पर कलाम मह़मूल किया जाए जब तक उस का ख़िलाफ़ साबित न हो। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 604, 605)

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : किसी कलाम में चन्द मा'ने बनते हैं बा'ज़ कुफ़्र की त़रफ़ जाते हैं बा'ज़ इस्लाम की त़रफ़ तो उस शख़्स की तक्फ़ीर नहीं की जाएगी हां अगर मा'लूम हो कि क़ाइल (कहने वाले) ने मा'निये कुफ़्र का इरादा किया मसलन वोह ख़ुद कहता है कि मेरी मुराद येही (कुफ़्रिय्या मा'ना वाली) है तो (अब) कलाम का मोह़्तमल होना (या'नी कलाम में तावील का पाया जाना) नफ़्अ़ न देगा। यहां से मा'लूम हुवा कि कलिमे के **कुफ़्र** होने से क़ाइल का **काफ़िर** होना ज़रूर नहीं।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 9, स. 173)

बिग़ैर इल्म के फ़तवा देना कैसा ?

सुवाल : जो मुफ़्ती न होने के बा वुजूद बिग़ैर इल्म के फ़तवा दे उस के लिये क्या हुक्म है ?

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

जवाब : ऐसा शख़्स सख़्त गुनहगार और अ़ज़ाबे नार का हक़दार है। सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "जिस ने बिग़ैर इल्म के फ़तवा दिया तो आस्मानो ज़मीन के फ़िरिश्ते उस पर ला'नत भेजते हैं।" (اَلْجامِعُ الصَّغِير ص۵۱۷ حديث۸۴۹۱)

मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 23 सफ़्ह़ा 716 पर फ़रमाते हैं : सनद ह़ासिल करना तो कुछ ज़रूर नहीं, हां बा क़ाइदा ता'लीम पाना ज़रूर है (ता'लीम ख़्वाह) मद्रसे में हो या किसी आ़लिम के मकान पर। और जिस ने बे क़ाइदा ता'लीम पाई वोह जाहिले मह़्ज़ से बदतर, "नीम मुल्ला ख़त़रए ईमान" होगा। ऐसे शख़्स को **फ़तवा नवीसी** पर जुर्अत **ह़राम** है। और अगर **फ़तवा** से अगर्चे सह़ीह़ हो, (मगर) वज्हुल्लाह मक़्सूद नहीं (या'नी दुरुस्त फ़तवा हो तब भी अगर **अल्लाह** की रिज़ा मत़्लूब नहीं) बल्कि अपना कोई दुन्यावी नफ़्अ़ मन्ज़ूर है तो येह दूसरा सबबे ला'नत है कि आयातुल्लाह के इवज़ समने क़लील (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की आयतों के बदले थोड़ा भाव) ह़ासिल करने पर फ़रमाया गया :

اُولٰٓئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِی الْاٰخِرَةِ وَ لَا یُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ وَ لَا یَنْظُرُ اِلَیْهِمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ وَ لَا یُزَكِّیْهِمْ ۪ وَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿۷۷﴾ (پ۳ اٰل عمران ۷۷)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : आख़िरत में उन का कुछ ह़िस्सा नहीं, और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) न उन से बात करे न उन की त़रफ़ नज़र फ़रमाए क़ियामत के दिन, और न उन्हें पाक करे और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।

ग़लत़ मस्अला बताना सख़्त कबीरा गुनाह है

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 23 सफ़ह़ा 711 ता 712 पर फ़रमाते हैं : झूटा मस्अला बयान करना सख़्त शदीद कबीरा (गुनाह) है अगर क़स्दन है तो शरीअ़त पर इफ़्तिरा (या'नी झूट बांधना) है और शरीअ़त पर इफ़्तिरा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर इफ़्तिरा है, और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا یُفْلِحُوْنَ ﴿ؕ۶۹﴾ (پ۱۱ یونس ۶۹)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) पर झूट बांधते हैं उन का भला न होगा।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الايمان)

अगर आ़लिम भूल कर ग़लत़ मस्अला बता दे तो गुनाह नहीं

और अगर बे इल्मी से है तो जाहिल पर **सख़्त ह़राम** है कि फ़तवा दे। हां अगर आ़लिम से इत्तिफ़ाक़न सह्व (भूल) वाक़ेअ़ हुवा और उस ने अपनी त़रफ़ से बे एह़तियात़ी न की और ग़लत़ जवाब सादिर हुवा तो मुआख़ज़ा नहीं मगर फ़र्ज़ है कि मुत्त़लअ़ होते ही फ़ौरन अपनी ख़त़ा ज़ाहिर करे, इस पर इस्रार करे तो पहली शिक़ या'नी इफ़्तिरा (झूट बांधना) में आ जाएगा। وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 23, स. 711, 712)

जाहिल से मस्अला पूछना कैसा ?

सुवाल : जान बूझ कर किसी जाहिल से मस्अला पूछना कैसा ?

जवाब : गुनाह है। ताजदारे रिसालत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सरापा इ़ब्रत है : مَنْ اَفْتٰى بِغَيْرِ عِلْمٍ كَانَ اِثْمُهٗ عَلٰى مَنْ اَفْتَاهُ या'नी "जिसे बिग़ैर इ़ल्म के फ़तवा दिया गया तो उस का गुनाह फ़तवा देने वाले पर है।" (سُنَنُ اَبِي دَاوُد ج٣ ص٤٤٩ حديث ٣٦٥٧)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात् अज्र लिखता है और क़ीरात् उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : "इस के दो मत़्लब हो सकते हैं, **एक** येह कि जो शख़्स उ़लमा को छोड़ कर जाहिलों से मस्अला पूछे और वोह ग़लत़ मस्अला बताएं तो (बताने वाला तो गुनहगार है ही) पूछने वाला भी **गुनाहगार** होगा कि येह **आ़लिम** को छोड़ कर उस के पास क्यूं गया, न येह पूछता न वोह ग़लत़ बताता। **दूसरे** येह कि जिस शख़्स को **ग़लत़ फ़तवा** दिया गया तो इस का **गुनाह** फ़तवा देने वाले पर है। ख़ुलासा येह है कि बे इ़ल्म का मस्अलए शरई बयान करना सख़्त **जुर्म** है।"

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 212)

मुरतद के बारे में सुवाल जवाब

मुरतद किसे कहते हैं ?

सुवाल : मुरतद किसे कहते हैं ?

जवाब : मुरतद वोह शख़्स है कि इस्लाम के बा'द किसी ऐसे अम्र का इन्कार करे जो **ज़रूरिय्याते दीन** से हो या'नी ज़बान से (ऐसा) **कलिमए कुफ़्र** बके जिस में तावीले सह़ीह़ की गुन्जाइश न हो। यूंही बा'ज़ अफ़्आ़ल भी ऐसे होते हैं जिन से **काफ़िर** हो जाता है मसलन बुत

को सज्दा करना। मुस्हफ़ शरीफ़ (कुरआने पाक) को नजासत की जगह फेंक देना।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 9, स. 173)

मुरतद की दुन्या में सज़ा

सुवाल : क्या **मुरतद** की दुन्या में भी कोई सज़ा है ?

जवाब : जी हां । दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ़ 182 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" हिस्सा 9 सफ़्हा 174 ता 175 पर सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : जो शख़्स مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **मुरतद** हो गया तो मुस्तह़ब है कि **ह़ाकिमे इस्लाम** उस पर इस्लाम पेश करे और अगर वोह कुछ शुबा बयान करे तो उस का जवाब दे और अगर मोहलत मांगे तो तीन दिन क़ैद में रखे और हर रोज़ इस्लाम की तल्क़ीन करे। यूंही अगर उस ने मोहलत न मांगी मगर उम्मीद है कि इस्लाम क़बूल कर लेगा जब भी तीन दिन क़ैद में रखा जाए। फिर अगर मुसल्मान हो जाए फ़बिहा (या'नी बहुत बेहतर) वरना **क़त्ल** कर दिया जाए। बिग़ैर इस्लाम पेश किये उसे **क़त्ल** कर डालना मकरूह है। (دُرِّمُختار ج٦ ص ٣٤٦-٣٤٩)

क्या मुरतद को हर कोई क़त्ल कर सकता है ?

सुवाल : क्या **मुरतद** को हर कोई क़त्ल कर सकता है ?

जवाब : जी नहीं। येह सिर्फ़ **बादशाहे इस्लाम** का काम है। चुनान्चे सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : **मुरतद** को क़ैद करना और इस्लाम न क़बूल करने पर क़त्ल कर डालना **बादशाहे इस्लाम** का काम है और इस से मक़्सूद येह है कि ऐसा शख़्स अगर ज़िन्दा रहा और उस से तअ़र्रुज़ न किया गया (या'नी रोक टोक न की गई) तो मुल्क में त़रह़ त़रह़ के फ़साद पैदा होंगे और फ़ितने का सिलसिला रोज़ बरोज़ तरक़्क़ी पज़ीर होगा, जिस की वज्ह से अम्ने आ़म्मा में ख़लल पड़ेगा, लिहाज़ा ऐसे शख़्स को ख़त्म कर देना ही मुक़्तज़ाए ह़िक्मत (या'नी मस्लह़त का तक़ाज़ा) था। अब चूंकि हुकूमते इस्लाम हिन्दुस्तान में बाक़ी नहीं, कोई रोकथाम करने वाला बाक़ी न रहा, हर शख़्स जो चाहता है बकता है और आए दिन मुसल्मानों में फ़साद पैदा होता है, नए नए मज़्हब पैदा होते रहते हैं, एक ख़ानदान बल्कि बा'ज़ जगह एक घर में कई मज़्हब हैं और बात बात पर झगड़े लड़ाई हैं, इन

तमाम ख़राबियों का बाइ़स येही नया मज़्हब है। ऐसी सूरत में सब से बेहतर तरकीब वोह है जो ऐसे वक़्त के लिये क़ुरआनो ह़दीस में इर्शाद हुई, अगर मुसल्मान इस पर अ़मल करें तमाम क़िस्सों से नजात पाएं दुन्या व आख़िरत की भलाई हाथ आए। वोह येह है कि ऐसे लोगों से बिल्कुल मेलजोल छोड़ दें, सलाम कलाम तर्क कर दें, उन के पास उठना बैठना, उन के साथ खाना पीना, उन के यहां शादी बियाह करना ग़रज़ हर क़िस्म के तअ़ल्लुक़ात उन से क़त्अ़ कर दें गोया समझें कि वोह अब रहा ही नहीं।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 9, स. 175)

औ़रत या बच्चा मुरतद हो तो सज़ा

सुवाल : अगर औ़रत या समझदार **बच्चा** मुरतद हो जाए तो क्या उस को भी क़त्ल किया जाएगा ?

जवाब : नहीं। सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : औ़रत या ना बालिग़ समझवाल (या'नी समझदार) **बच्चा** मुरतद हो जाए तो क़त्ल न करेंगे। बल्कि क़ैद करेंगे यहां तक कि तौबा करे और मुसल्मान हो जाए।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 9, स. 175, عالمگیری ج۲ص ۲٥٤)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

मुरतद की औलाद ह़रामी होती है

सुवाल : क्या **मुरतद** की औलाद ह़रामी होगी ?

जवाब : जी हां। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِ फ़ुक़हाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام से नक़्ल करते हैं : जो शख़्स مَعَاذَ اللہ **मुरतद** हो जाए उस की औ़रत **ह़राम** हो जाती है, फिर इस्लाम लाए तो उस से **जदीद निकाह़** किया जाए। इस से पहले उस **कलिमए कुफ़्र** के बा'द की सोह़बत से जो बच्चा होगा **ह़रामी** होगा और येह शख़्स अगर आ़दत के त़ौर पर कलिमए शहादत पढ़ता रहे कुछ फ़ाएदा न देगा जब तक अपने उस **कुफ़्र** से **तौबा** न करे कि आ़दत के त़ौर पर **मुरतद** के कलिमा पढ़ने से उस का **कुफ़्र** नहीं जाता।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 299, 300)

क्या मुरतद के तमाम आ'माल ज़ाएअ़ हो जाते हैं ?

सुवाल : क्या **कलिमए कुफ़्र** बकने से तमाम आ'माल अकारत हो जाते हैं ?

जवाब : कुफ़्रे क़त़्ई बक कर या इस त़रह़ का फ़े'ले कुफ़्र कर के जो **काफ़िर व मुरतद** हुवा उस के तमाम आ'माल बरबाद हो जाते हैं। पारह 2 **सूरतुल बक़रह** आयत नम्बर 217 में फ़रमाने बारी तआ़ला है :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

وَمَنْ يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۱۷﴾
(پ ۲ البقرة ۲۱۷)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम में जो कोई अपने दीन से फिरे फिर काफ़िर हो कर मरे तो उन लोगों का किया अकारत गया दुन्या में और आख़िरत में और वोह दोज़ख़ वाले हैं उन्हें उस में हमेशा रहना।

कुफ़्र बकने वाले की हां में हां मिलाने वाले का हुक्म

सुवाल : कुफ़्र बकने वाले की हां में हां मिलाने वाले के बारे में क्या हुक्मे शरई है ?

जवाब : अगर फ़िक़्ही व **लुज़ूमी कुफ़्र** बका है तो बकने वाला और हां में हां मिलाने वाला इस्लाम से ख़ारिज न हुए और साबिक़ा नेक आ'माल भी बरबाद न हुए। अलबत्ता तौबा व तजदीदे ईमान फ़र्ज़ है और बीवी वाले को तजदीदे निकाह़ का हुक्म दिया जाएगा अलबत्ता बिला इक्राहे शरई होशो ह़वास में **सरीह़ कुफ़्र** बकने वाला, ऐसे ही सरीह़ कलिमए कुफ़्र के मा'ना समझने के बा वुजूद हां में हां मिलाने वाला और ताईद में सर हिलाने वाला भी **काफ़िर व मुरतद** हो जाता है और शादी

शुदा था तो निकाह़ टूट जाता, किसी का मुरीद था तो बैअ़त ख़त्म हो जाती और ज़िन्दगी भर के नेक आ'माल बरबाद हो जाते हैं, अगर **ह़ज** कर लिया था तो वोह भी गया, अब बा'दे **तजदीदे ईमान** साह़िबे इस्तित़ाअ़त होने पर नए सिरे से **ह़ज** फ़र्ज़ होगा।

मुरतद दोबारा ईमान लाए तो नमाज़ रोज़े के मसाइल

सुवाल : अगर कोई मुसल्मान مَعَاذَاللّٰهعَزَّوَجَلَّ **मुरतद** हो जाए तो उस की साबिक़ा नमाज़ व रोज़ा और ह़ज के बारे में क्या मस्अला है ? नीज़ अगर **दोबारा मुसल्मान** हो जाए तो क्या अह़काम हैं ?

जवाब : मुरतद होते ही उस के पिछले तमाम नेक आ'माल **ब शुमूल** नमाज़, रोज़ा, ह़ज वग़ैरा ज़ाएअ़ हो गए। **दोबारा ईमान** लाने के बा'द येह है कि जो नमाज़ें ज़मानए इस्लाम में **क़ज़ा** हुई थीं उन की **क़ज़ा** ईमान लाने के बा'द भी बाक़ी है और येही हुक्म रोज़ए रमज़ान का है। चुनान्चे **दुर्रे मुख़्तार** में है : "और ज़मानए इस्लाम में जो इबादतें तर्क कीं, **इरतिदाद** या'नी दीन से मुन्ह़रिफ़ होने (दीन से फिर जाने) के बा'द अज़ सरे नौ मुसल्मान होने पर उन को दोबारा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्हो शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

अदा करे, क्यूं कि नमाज़ और रोज़े का तर्क गुनाह है और **इरतिदाद** के बा'द (अगर्चे नेकियां बरबाद हो जाती हैं मगर) गुनाह बाक़ी रहते हैं। अगर (पहले ह़ज कर लिया हो तब भी) साहिबे इस्तिताअ़त होने पर **ह़ज** नए सिरे से फ़र्ज़ होगा।" (دُرِّمختار ج ٦ ص ٣٨٣ - ٣٨٥) हां ज़मानए इरतिदाद में रह जाने वाली नमाज़ों और दीगर इबादतों की **क़ज़ा** नहीं है और इस दौरान जो इबादतें की हैं वोह मक़्बूल भी नहीं।

मुरतद्दीन की सोह़बत से ईमान बरबाद हो सकता है

सुवाल : मुरतद की सोह़बत में बैठना कैसा है ?

जवाब : ह़राम है। येह याद रहे कि बिग़ैर दलीले क़त़्ई सिर्फ़ शक की बिना पर किसी को **मुरतद** नहीं बोल सकते। मुरतद्दीन के साथ निशस्तो बरख़ास्त (या'नी उठने बैठने) के मुतअ़ल्लिक़ किये जाने वाले एक सुवाल के जवाब में मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 21 सफ़ह़ा 278 पर फ़रमाते हैं : उन के पास निशस्तो बरख़ास्त **ह़राम** है उन से मेलजोल **ह़राम** है अगर्चे अपना बाप

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

या भाई बेटे हों। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَ اِمَّا یُنْسِیَنَّكَ الشَّیْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۶۸﴾ (پ۷ الانعام ۶۸)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो कहीं तुझे शैतान भुलावे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

لَا تَجِدُ قَوْمًا یُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِ یُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ لَوْ كَانُوْۤا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِیْرَتَهُمْ ؕ (پ ۲۸ المجادلة ۲۲)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम न पाओगे उन लोगों को जो यक़ीन रखते हैं **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) और पिछले दिन पर कि दोस्ती करें उन से जिन्हों ने **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) और उस के **रसूल** (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) से मुख़ालफ़त की अगर्चे वोह उन के बाप या बेटे या भाई या कुम्बे वाले हों।

फ़तावा रज़विय्या जिल्द 14 सफ़ह़ा 328 पर है : मुरतद्दों में सब से बदतर मुरतद "मुनाफ़िक़" है। येही वोह है कि **इस की सोह़बत हज़ार काफ़िर की सोह़बत से ज़ियादा मुज़िर** (नुक़्सान देह) **है कि येह** (ब ज़ाहिर) **मुसल्मान बन कर कुफ़्र सिखाता है।**

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा । (جمع الجوامع)

मुरतद की नमाज़े जनाज़ा का हुक्मे शरई

सुवाल : मुरतद और काफ़िर के जनाज़े की नमाज़ अदा करने वाले के बारे में क्या हुक्मे शरई है ?

जवाब : मुरतद और काफ़िर के जनाज़े का एक ही हुक्म है । मज़्हब तब्दील कर के ईसाई (क्रिस्चेन) होने वाले का जनाज़ा पढ़ने वाले के बारे में पूछे गए एक सुवाल का जवाब देते हुए सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 9 **सफ़ह़ा** 170 पर इर्शाद फ़रमाते हैं : अगर ब सुबूते शरई साबित हो कि मय्यित عِیَاذًا بِاللّٰہ (ख़ुदा की पनाह) तब्दीले मज़्हब कर के ईसाई (क्रिस्चेन) हो चुका था तो बेशक उस के जनाज़े की नमाज़ और मुसल्मानों की त़रह़ उस की तज्हीज़ो तक्फ़ीन सब ह़रामे क़त़्ई थी । قَالَ اللّٰہُ تَعَالٰی (**अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है) :

وَ لَا تُصَلِّ عَلٰۤى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا وَّ لَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖؕ
(پ۱۰ التوبہ: ۸۴)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उन में से किसी की मय्यित पर कभी नमाज़ न पढ़ना और न उस की क़ब्र पर खड़े होना ।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

मगर नमाज़ पढ़ने वाले अगर उस की नसरानिय्यत (या'नी क्रिस्चेन होने) पर मुत्तलअ़ न थे और बर बिनाए इल्मे साबिक़ (पिछली मा'लूमात के सबब) उसे मुसल्मान समझते थे न उस की तज्हीज़ो तक्फ़ीन व नमाज़ तक उन के नज़्दीक उस शख़्स का नसरानी (क्रिस्चेन) हो जाना साबित हुवा, तो इन अफ़्आ़ल में वोह अब भी मा'ज़ूर व बे क़ुसूर हैं कि जब उन की दानिस्त (मा'लूमात) में वोह मुसल्मान था, उन पर येह अफ़्आ़ल बजा लाने ब ज़ो'मे ख़ुद शरअ़न लाज़िम थे, हां अगर येह भी उस की ईसाइय्यत से ख़बरदार थे फिर नमाज़ व तज्हीज़ो तक्फ़ीन के मुर्तकिब हुए क़त्अ़न सख़्त गुनहगार और वबाले कबीरा में गिरिफ़्तार हुए, जब तक तौबा न करें नमाज़ उन के पीछे मकरूह। मगर मुआ़मलए मुरतद्दीन फिर भी बरत्ना जाइज़ नहीं कि येह लोग भी इस गुनाह से काफ़िर न होंगे। हमारी शरए मुत़ह्हर सिराते़ मुस्तक़ीम है, इफ़्रातो़ तफ़्रीत़ (या'नी ह़द्दे ए'तिदाल से बढ़ाना घटाना) किसी बात में पसन्द नहीं फ़रमाती, अलबत्ता अगर साबित हो जाए कि उन्हों ने उसे नसरानी जान कर न सिर्फ़ ब वज्हे हमाक़त व जहालत किसी ग़रज़े दुन्यवी की निय्यत से बल्कि ख़ुद उसे ब वज्हे नसरानिय्यत मुस्तह़िक़े ता'ज़ीम व क़ाबिले तज्हीज़ो तक्फ़ीन व नमाज़े जनाज़ा तसव्वुर किया तो बेशक जिस जिस का

ऐसा ख़याल होगा वोह सब भी काफ़िर व मुरतद हैं और उन से वोही मुआ़मला बरत्ना वाजिब जो मुरतद्दीन से बरता जाए ! और उन की शिर्कत किसी त़रह़ रवा नहीं, और शरीक व मुआ़विन सब गुनहगार । وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَم ।

काफ़िर को मर्ह़ूम कहना कैसा ?

सुवाल : अपने मरे हुए **मुरतद** बाप को **मर्ह़ूम** कह सकता है या नहीं ?

जवाब : इरतिदाद का इल्म होने की सूरत में **मर्ह़ूम** कहना कुफ़्र है । सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जो किसी **काफ़िर** के लिये उस के मरने के बा'द **मग़्फ़िरत** की दुआ़ करे या किसी मुर्दा मुरतद को **मर्ह़ूम** (या'नी रह़मत किया जाए) या **मग़्फ़ूर** (या'नी मग़्फ़िरत किया जाए) या किसी मरे हुए हिन्दू को **बैकुन्ठ बाशी** (या'नी जन्नती) कहे वोह ख़ुद **काफ़िर** है।"

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 1, स. 97)

नमाज़ और दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत में वालिदैन के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत का नाज़ुक मस्अला

सुवाल : अगर किसी के वालिदैन या दोनों में से एक काफ़िर

या मुरतद हो तो वोह **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स देने के बा'द येह दुआ : "**या अल्लाह** ! हमारी, हमारे मां बाप की और सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा।" कर सकता है या नहीं ? नीज़ नमाज़ में इस कुरआनी दुआ رَبِّ اجْعَلْنِیْ مُقِیْمَ الصَّلٰوۃِ...... का येह हिस्सा رَبَّنَا اغْفِرْ لِیْ وَلِوَالِدَیَّ ۱؎ (या'नी ऐ हमारे परवर्दगार ! मेरी और मेरे मां बाप की मग़्फ़िरत फ़रमा। ۱؎) पढ़े या नहीं ?

जवाब : अगर वालिदैन काफ़िर हों तो उन के लिये दुआए मग़्फ़िरत करना **कुफ़्र** है। इस लिये दर्स **फ़ैज़ाने सुन्नत** में दुआ के येह अल्फ़ाज़ "हमारे मां बाप की" न बोले बल्कि इस तरह दुआ करे : **या अल्लाह** ! हमारी और सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा। नमाज़ में भी ऐसी दुआ नहीं पढ़ सकता। अगर सुवाल में मज़्कूर दुआ का तरजमा जानता है कि वालिदैन की बख़्शिश की दुआ इस में है और जानता है कि उस के वालिदैन काफ़िर या **मुरतद** हैं फिर भी जान बूझ कर अपने वालिदैन की मग़्फ़िरत की निय्यत से उस ने येह दुआ की तो इस दुआ करने वाले पर हुक्मे **कुफ़्र** है और **तौबा व तजदीदे ईमान उस पर फ़र्ज़ है।**

ख़ानदान का कोई फ़र्द बिलफ़र्ज़ काफ़िर हो तो...

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मां बाप या ख़ानदान का

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

कोई फ़र्द अगर مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **काफ़िर या मुरतद** हो तो वाक़ेई सख़्त आज़्माइश होती है, मगर किसी सूरत शरीअ़त का दामन हाथ से नहीं छोड़ना चाहिये। ज़ैल में दी हुई **आयत** और इस के तह़्त दिया हुवा **मज़्मून** पढ़ेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस्तिक़ामत मिलने के साथ साथ **मा'लूमात का ख़ज़ानए ला जवाब** हाथ आएगा। चुनान्चे पारह 28 **सूरए मुजादलह** आयत नम्बर 22 में इर्शादे रब्बुल इबाद है :

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ يُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَوْ كَانُوْٓا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِيْرَتَهُمْ ط
(پ۲۸ المجادلة ۲۲)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम न पाओगे उन लोगों को जो यक़ीन रखते हैं **अल्लाह** और पिछले दिन पर कि दोस्ती करें उन से जिन्हों ने **अल्लाह** और उस के **रसूल** से मुख़ालफ़त की अगर्चे वोह उन के बाप या बेटे या भाई या कुम्बे वाले हों।

मुसल्मान की पहचान

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان **शाने ह़बीबुर्रह़मान** सफ़्ह़ा 235 ता 236 पर फ़रमाते हैं : येह आयते करीमा भी

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام की ना'त है और मुसल्मानों की पहचान है। इस में मुसल्मानों की निशानी येह बताई गई कि मोमिन हरगिज़ ऐसा नहीं कर सकता कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व **रसूल** عَلَيْهِ السَّلَام के दुश्मनों से मह़ब्बत रखे अगर्चे वोह उस के ख़ास अहले क़राबत ही हों। जिस से मा'लूम हुवा कि अगर्चे मां बाप का बहुत बड़ा ह़क़ है, मगर ह़क़्क़े मुस्त़फ़ा عَلَيْهِ السَّلَام के मुक़ाबले में किसी का कुछ ह़क़ नहीं।

मां बाप अगर काफ़िर हों तो उन से मह़ब्बत ह़राम है

हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام का हुक्म है कि दाढ़ी रखो। मां या बाप या यार दोस्त कहें कि दाढ़ी मुंडवाओ हरगिज़ जाइज़ नहीं कि मुंडाए। **रब** का हुक्म है कि नमाज़ पढ़ो और रोज़ा रखो। **मां** कहे : येह काम न कर। मां की बात हरगिज़ न मानी जावेगी। क्यूं कि **अल्लाह** व **रसूल** عَلَيْهِ السَّلَام का ह़क़ सब पर मुक़द्दम (या'नी सब से बढ़ कर) है। इसी त़रह़ अगर किसी का बेटा या भाई या बाप या मां **काफ़िर** हों, तो उन से मह़ब्बत, दोस्ती तमाम की तमाम **ह़राम** हैं।

सह़ाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने जंग में काफ़िर रिश्तेदारों को क़त्ल किया

इस आयत की तफ़्सीर **सह़ाबए किराम** (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) की ज़िन्दगी है। चुनान्चे ह़ज़रते **अबू उ़बैदा** बिन जर्राह़

رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने **जंगे उहुद** में अपने वालिद "जर्राह़" को **क़त्ल** किया, **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपने फ़रज़न्द अ़ब्दुर्रह़मान को जो उस वक़्त काफ़िर थे मुक़ाबले के लिये बुलाया कि अ़ब्दुर्रह़मान आओ ! आज बाप बेटे दो दो हाथ हो जाएं ! लेकिन **हु़ज़ूर** عَلَيْهِ السَّلَام ने उन को रोक दिया (اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बा'द में मुसल्मान हो गए) ह़ज़रते **मुस्अ़ब** बिन **उ़मैर** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपने भाई अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मैर को **क़त्ल** किया जो **काफ़िर** था और ह़ज़रते **उ़मर** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपने मामूं आ़स बिन हिशाम बिन मुग़ीरा को **क़त्ल** किया जो **काफ़िर** था, और ह़ज़रते **अ़ली** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه और ह़ज़रते **ह़म्ज़ा** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने रबीआ़ के लड़कों उ़त्बा और शैबा को **जंगे बद्र** में **क़त्ल** किया जो उन के क़राबत (रिश्तेदार) थे, **ख़ुदा** और **रसूल** पर ईमान लाने वालों को (जिस्मानी) रिश्तेदारी का क्या पास !

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 870, روح البیان ج۹ص ۴۱۲)

गुस्ताख़ों से मेलजोल रखना बे ईमानों की निशानी है

मस्अला : इस आयत से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला और **रसूल** عَلَيْهِ السَّلَام की शान में गुस्ताख़ी

करने वालों से मेलजोल और महब्बत रखना **हराम** है और बे ईमानों की निशानी। **सआदत मन्द फ़रज़न्द अपने बाप के दुश्मनों से महब्बत नहीं करता, अगर कोई शख़्स किसी की मां को गाली दे दे, तो** (उस का बेटा) **उस से बोलना गवारा नहीं करता, तो जिन पर दोनों जहान** (और) **मां व बाप कुरबान उन** (प्यारे प्यारे, मदनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) **की बदगोई करने वालों के पास उठना बैठना और उन से महब्बत करना क्यूंकर गवारा किया जा सकता है**! इस से वोह लोग इब्रत पकड़ें जो हर मज़्हब के जल्सों और सोहबतों में बे धड़क शिर्कत करते हैं। ख़ुदाए पाक (बचने की) तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

(اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم)

सांप जान और बुरा दोस्त ईमान लेता है

تا توانی دُور شو از یارِ بد　　یارِ بد بدتر بُوَد از مارِ بد

مارِ بد تنہا ہمیں برجاں زَنَد　　یارِ بد بَر دین و بَرایماں زَنَد

(मस्नवी शरीफ़ के इन दो अश्आ़र का ख़ुलासा है कि) जहां तक हो सके बुरे दोस्त से दूर रहो कि बुरा दोस्त सांप

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

से भी ज़ियादा नुक़्सान देह होता है। सांप तो सिर्फ़ जान लेता है जब कि बुरा यार ईमान लेता है।

दौलत मन्द (अगर) डाकू से महब्बत रखे तो एक दिन (उसी डाकू के बाइ़स) अपनी दौलत बरबाद कर देगा। इसी त़रह़ दौलते ईमान रखने वाला अगर बे ईमानों से महब्बत रखे, तो एक दिन अपना ईमान खो देगा। आज बहुत सी ऐसी मिसालें मौजूद हैं कि **बुरों की सोह़बत** में बैठ कर **बद मज़्हब** बन गए।

(शाने ह़बीबुर्रह़मान, स. 235, 236)

क़ादियानी काफ़िर हैं

सुवाल : ख़त्मे नुबुव्वत के मुन्किरीन या'नी जो **क़ादियानियों** को काफ़िर न माने उस के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब : मिरज़ाइयों (क़ादियानियों) के **कुफ़्र** पर मुत्तलअ़ हो कर उन्हें **काफ़िर** न समझने वाला ख़ुद **काफ़िर मुरतद** है। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 321, मुलख़्ख़सन) इस में क़ादियानियों के तमाम गुरौह शामिल हैं। वोह **क़ादियानी** भी जो मिरज़ा ग़ुलाम अह़मद को **नबी** मानें और वोह भी जो मिरज़ा को **मुजद्दिद** या मसीह़ मानें और वोह भी जो इन में से तो कुछ न मानें मगर उस को मह़ज़

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

मुसल्मान मानें बल्कि वोह भी **काफ़िर व मुरतद** हैं जो उस के अ़क़ाइद को जानने के बा वुजूद उस के **काफ़िर** होने पर शक करें। **क़ादियानी अ़क़ाइद** की तफ़्सील मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के रसाइल में मौजूद है जो **रद्दे मिरज़ाइय्यत** के नाम से मिल सकते हैं। (ईमान की ह़िफ़ाज़त, स. 55)

हुसामुल ह़रमैन के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल

सुवाल : क्या आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की किताबे मुस्तत़ाब **हुसामुल ह़रमैन** से आप मुत्तफ़िक़ हैं ?

जवाब : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुकम्मल इत्तिफ़ाक़ है। मैं **हुसामुल ह़रमैन** के एक एक लफ़्ज़ बल्कि हर हर ह़र्फ़ का मुअय्यिद हूं। **मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा**

ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن ने **हुसामुल ह़रमैन** में गुस्ताख़ाने रसूल की गुस्ताख़ाना इबारात की शरई गिरिफ़्त फ़रमा कर गुस्ताख़ों की **तक्फ़ीर** फ़रमाई है। **इस किताब पर ह़रमैने त़य्यिबैन के उस दौर के जय्यिद उ़लमाए किराम** رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام **की तस्दीक़ात मौजूद हैं।** اَلْحَمْدُ لِلّٰہ मैं ने भी 19 ज़ी क़ा'दह 1419 हि. को इस पर चन्द ताईदी सुत़ूर लिखी हैं। जो **दा'वते इस्लामी** के मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ होने वाली इस किताब में बराबर शामिल की जाती हैं। **दा'वते इस्लामी** से वाबस्ता इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों के अ़क़ाइदो आ'माल की इस्लाह़ की ख़ात़िर जारी किये जाने वाले **"मदनी इन्आ़मात"** में हर साल कम अज़ कम एक बार **हुसामुल ह़रमैन** का **मुत़ालआ़** करने की भी तरग़ीब मौजूद है। **दा'वते इस्लामी** से वाबस्ता पढ़े लिखे इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों में से शायद ही कोई ऐसा होगा जिस ने कम अज़ कम एक बार **हुसामुल ह़रमैन** का मुत़ालआ़ न किया हो। **"हुसामुल ह़रमैन"** पर की जाने वाली ताईद बनाम **"मदनी इल्तिजा"** की नक़्ल मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

مدنی التجاء : سگِ مدینہ محمد الیاس عطار قادری رضوی عفی عنہ

الحمد للہ رب العلمین والصلوٰۃ والسلام علی سید الانبیاء والمرسلین

اما بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

اللہ عزوجل کا کروڑہا کروڑ احسان کہ اُس نے ہمیں مسلمان کیا اور دامنِ رحمتِ عالمیان صلی اللہ علیہ وسلم ہمارے ہاتھوں میں دیا۔ سلطانِ مدینۂ منورہ اور سردارِ مکۂ مکرمہ صلی اللہ علیہ وسلم کے صدقے میں جہاں ہم بے شمار اولیائے کرام کے فیضان سے مالا مال ہیں وہاں اللہ عزوجل کے ولی، عاشقِ نبی صلی اللہ علیہ وسلم نائبِ غوثِ جلی رضی اللہ عنہم مجددِ دین، مصطفوی سیدی و مرشدی امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمٰن کا فیضان بھی ہمارے لئے ان شاء اللہ عزوجل باعثِ فلاحِ دارین ہے۔ آپ ایک ایسے متبحر عالم تھے کہ جس عنوان پر قلم اٹھایا علم کے دریا بہا دیئے۔ آپ کی کتبِ مبارکہ سے آج بھی ایک دنیا فیضیاب ہو رہی ہے۔ زیرِ نظر کتاب **تمہید الایمان** مع **حسام الحرمین** کے تو کیا کہنے! واللہ العظیم جلّ جلالہٗ میرے آقا احمد رضا نے یہ کتابیں لکھ کر دودھ کا دودھ اور پانی کا پانی کر دیا!

ع
دودھ کا دودھ پانی کا پانی کیا
کس نے تیرے سوا شاہ احمد رضا رضی اللہ عنہ

تمام اسلامی بھائیوں اور اسلامی بہنوں سے میری مدنی التجاء ہے کہ پہلی فرصت میں اس کتاب کا مطالعہ فرمالیں۔ اور اس میں دی ہوئی ھدایات پر سختی سے عمل کریں۔ اعلیٰحضرت رضی اللہ عنہ کی جملہ تحریریں عین قرآن و سنت کے مطابق ہیں۔ اگر شیطان کے وسوسوں میں پھنس کر میرے آقا اعلیٰحضرت رضی اللہ عنہ کی کسی بھی تحریر پر تنقید کی یا تنقید کرنے والے کی صحبت اختیار کی بلکہ اُس سے محبت بھی کی تو خبردار! کہیں ایمان سے ہاتھ نہ دھو بیٹھیں۔

میں سنّی ہوں سنّی رہوں سنّی مروں سنّی مدینے میں
بقیع پاک میں بن جائے تربت یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم

محمد الیاس
۱۹ ذوالقعدۃ ۱۴۱۹ھ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

मुरतद की दा'वत खाना कैसा ?

सुवाल : मुरतद के यहां जा कर **दा'वत** खाना कैसा है ?

जवाब : ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। **ह़दीसे** पाक में फ़रमाया : न उन के साथ खाना खाओ, न उन के साथ पानी पियो, न उन के पास बैठो, न उन के साथ नमाज़ पढ़ो, न उन के जनाज़े की नमाज़ पढ़ो। (جَمعُ الْجَوامِع لِلسُّیُوطی ج۲ ص ۴۰۱ حدیث ۶۶۶۹) मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमते फ़ैज़ दरजत में **सुवाल** हुवा : अगर कोई क़ादियानी मस्जिद के ख़र्च के वासिते रुपिया वग़ैरा दे या किसी त़ालिबे इ़ल्म या और शख़्स को मकान पर बुला कर खाना खिलाए या भेज दे इन दोनों सूरतों में खाना खाना जाइज़ है या नहीं ? या वोह रुपिया मस्जिद में लगाना कैसा है ? بَيِّنُوا تُوجَرُوا (बयान फ़रमाइये अज्र पाइये) **अल जवाब :** न वोह रुपै लिये जाएं, न खाना खाया जाए, और उस के यहां जा कर खाना **सख़्त ह़राम** है। وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 24, स. 328) मगर येह याद रहे कि बिला दलीले शरई मह़्ज़ अट्कल पच्चू से या फ़क़त़ शक के सबब किसी मुसल्मान को **मुरतद** नहीं कह सकते। जैसे किसी को क़ादियानियों

के पास उठते बैठते देखा तो अगर्चे उस का येह फ़े'ल ह़राम है मगर सिर्फ़ इस वज्ह से उस को क़ादियानी नहीं कह सकते। हां जब किसी का क़ादियानी होना या किसी दूसरी क़िस्म का मुरतद होना क़त़्ई त़ौर पर साबित हो जाए तो फिर उसे काफ़िर मानना ज़रूरी है और ब वक़्ते ज़रूरत काफ़िर कहना भी।

मुरतद का ज़बीह़ा ह़लाल है या ह़राम ?

सुवाल : मुरतद अगर بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَر कह कर कुरबानी का जानवर ज़ब्ह़ करे तो **कुरबानी** हो जाएगी या नहीं ?

जवाब : कुरबानी भी नहीं होगी और उस जानवर का गोश्त खाना भी **ह़राम** होगा। चाहे जानवर कुरबानी का हो या कोई और। मसलन **मुरतद** ने بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَر पढ़ कर मुर्ग़ी ज़ब्ह़ की तो वोह भी **ह़राम** है। सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "मुरतद का ज़बीह़ा मुर्दार है अगर्चे बिस्मिल्लाह पढ़ कर ज़ब्ह़ करे। यूंही (मुरतद ने) कुत्ते या बाज़ या तीर से जो शिकार किया है वोह भी मुर्दार है अगर्चे छोड़ने के वक़्त बिस्मिल्लाह कह ली हो।"

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 9, स. 177, عالمگیری ج۲ص۲۵۵)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

मुरतद की क़ुरबानी का गोश्त खा सकते हैं या नहीं ?

सुवाल : मुरतद के घर से आया हुवा क़ुरबानी का गोश्त खाना कैसा है जब कि मुसल्मान क़स्साब ने ज़ब्ह़ किया हो ?

जवाब : क़ुरबानी का जानवर हो या आ़म ज़बीह़ा, क़ाइ़दा येह है कि मुसल्मान का ज़ब्ह़ कर्दा गोश्त ज़ब्ह़ से ले कर खाने तक एक लम्ह़े के लिये भी मुसल्मान की नज़र से ओझल हो कर अगर **मुरतद** या ग़ैरे किताबी काफ़िर के क़ब्ज़े में न गया हो तो उस का खाना ह़लाल है वरना **ह़राम** । चुनान्चे मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن इर्शाद फ़रमाते हैं : "अगर वक़्ते ज़ब्ह़ से वक़्ते ख़रीदारी तक वोह गोश्त मुसल्मान की निगरानी में रहे, बीच में किसी वक़्त मुसल्मान की निगाह से ग़ाइब न हो और यूं इत़्मीनाने काफ़ी ह़ासिल हो कि येह मुसल्मान का ज़बीह़ा है तो उस का ख़रीदना, जाइज़ और खाना ह़लाल होगा।"

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 20, स. 282)

मुरतद बेटा, बाप की विरासत का ह़क़दार है या नहीं ?

सुवाल : अगर बेटा مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **मुरतद** हो गया हो तो वोह अपने बाप की वफ़ात के बा'द **वरसा** पाएगा या नहीं ?

जवाब : नहीं पाएगा। क्यूं कि मुरतद किसी का वारिस नहीं होता। सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी

عَلَیْهِ رَحمَۃُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **मुरतद** किसी मुआमले में गवाही नहीं दे सकता और **किसी का वारिस नहीं हो सकता** और ज़मानए इरतिदाद में जो कुछ कमाया उस में **मुरतद** का कोई **वारिस** नहीं।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 9, स. 177, دُرِّمُختار, رَدُّالْمُحتار ج۶ ص۳۸۱)

मुरतद से मुसल्मान क्या सुलूक करें ?

सुवाल : मुसल्मानों को मुरतद के साथ क्या रविय्या रखना चाहिये ?

जवाब : इस सिल्सिले में **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 14 सफ़ह़ा 298 ता 299 से गुस्ताख़िये रसूल वाले इम्तिह़ानी परचे के मुतअ़ल्लिक़ एक मुबारक फ़तवे का इक्तिबास मुलाह़ज़ा हो। चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْهِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "इन नाम के मुसल्मान कहलाने वालों में जिस शख़्स ने वोह मल्ऊ़न परचा मुरत्तब किया वोह काफ़िर मुरतद है, जिस जिस ने उस पर नज़रे सानी कर के बर क़रार रखा वोह **काफ़िर मुरतद**, जिस जिस की निगरानी में तय्यार हुवा वोह **काफ़िर मुरतद**, त़लबा में जो कलिमा गो थे और उन्हों ने बख़ुशी उस मल्ऊ़न इबारत का तरजमा किया

अपने नबी की तौहीन पर राज़ी हुए या इसे हलका जाना या इस को अपने नम्बर घटने या पास न होने से आसान समझा वोह सब भी **काफ़िर मुरतद,** बालिग़ हों ख़्वाह (समझदार) ना बालिग़, इन चारों फ़रीक़ में हर शख़्स (चूंकि मुरतद हो चुका है लिहाज़ा उस) से मुसल्मानों को सलाम कलाम **ह़राम,** मेलजोल **ह़राम,** निशस्तो बरख़ास्त **ह़राम,** बीमार पड़े तो उस की इ़यादत को जाना **ह़राम**, मर जाए तो उस का जनाज़ा उठाना **ह़राम**, उसे मुसल्मानों के गोरिस्तान (या'नी क़ब्रिस्तान) में दफ़्न करना **ह़राम**, मुसल्मानों की त़रह़ उस की क़ब्र बनाना **ह़राम**, उसे मिट्टी देना **ह़राम**, इस पर फ़ातिह़ा **ह़राम**, उसे कोई सवाब पहुंचाना **ह़राम** बल्कि ख़ुद क़ात़ेए़ इस्लाम (या'नी मुरतद को ईसाले सवाब करना कुफ़्र) जब इन में कोई मर जाए उस के अइ़ज़्ज़ा अक़्रिबा मुस्लिमीन अगर हुक्मे शर्अ़ मानें तो उस की लाश दफ़्ए़ उ़फ़ूनत (या'नी बदबू से नजात) के लिये मुर्दार कुत्ते की त़रह़ भंगी चमारों से ठेले में उठवा कर किसी तंग गढ़े में डलवा कर ऊपर से आग पथ्थर जो चाहें फेंक फेंक कर पाट दें कि उस की बदबू से ईज़ा न हो। येह अह़काम उन सब (मुरतद्दीन) के लिये आ़म हैं। और जो जो उन में निकाह़ किये हुए हों उन सब की जोरूएं (या'नी बीवियां) उन के निकाहों से

निकल गई अब अगर कुर्बत होगी **हराम हराम हराम** व ज़िनाए ख़ालिस होगी और इस से जो औलाद पैदा होगी वलदुज़्ज़िना होगी। औ़रतों को शरअ़न इख़्तियार है कि इद्दत गुज़र जाने पर जिस से चाहें निकाह़ कर लें। इन (मुरतद्दीन) में जिसे हिदायत (नसीब) हो और (वोह) तौबा करे और अपने **कुफ्ऱ** का इक़्रार करता हुवा फिर मुसल्मान हो, उस वक़्त येह अह़काम जो उस की मौत से मुतअ़ल्लिक़ थे मुन्तही (या'नी ख़त्म) होंगे, और वोह मुमानअ़त जो उस मेलजोल की थी जब भी बाक़ी रहेगी, यहां तक कि उस के ह़ाल से सिदक़े नदामत व ख़ुलूसे तौबा व सिह़्ह़ते इस्लाम ज़ाहिर व रोशन हो मगर औ़रतें उस से (या'नी मुरतद शोहर के तौबा व तजदीदे ईमान कर लेने के बा वुजूद) भी निकाह़ में वापस नहीं आ सकतीं, उन्हें अब भी इख़्तियार होगा कि चाहें दूसरे से निकाह़ कर लें या किसी से न करें, उन पर कोई जब्र नहीं पहुंचता। हां उन (औ़रतों) की मरज़ी हो तो बा'दे (क़बूले) इस्लाम उन (या'नी साबिक़ा शोहरों) से भी निकाह़ कर सकेंगी।"

इम्तिह़ानी परचे में मुरतद लीडर के बारे में सुवाल आए तो....?

सुवाल : इस जवाब से तो येह ज़ाहिर होता है कि इम्तिह़ानी

परचों में किसी मुरतद लीडर के फ़ज़ाइल के बारे में सुवाल हो तो उस का जवाब न दिया जाए ?

जवाब : बेशक न दिया जाए चाहे इम्तिहान में फ़ेल होना पड़े । अगर उस लीडर के मुरतद होने के बारे में यक़ीनी मा'लूमात होने के बा वुजूद जवाब में मुसल्मान लिख दिया तो लिखने वाला बालिग़ या समझदार ना बालिग़ ता़लिबे इल्म ख़ुद काफ़िर व मुरतद हो जाएगा मज़ीद तफ़्सील गुज़श्ता जवाब में मौजूद है ।

लाखों बला में फंसने को रूह़ बदन में आई क्यूं !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हम दुन्या में पैदा हो कर वाक़ेई सख़्त इम्तिह़ान में मुब्तला हो चुके हैं । बहुत एह़तियात़ से ज़िन्दगी बसर करनी चाहिये अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता किसी के क़ौलो फ़े'ल से उस पर **कुफ्रे क़त़ई** नाफ़िज़ हो गया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ न करे बिगै़र तौबा व तजदीदे ईमान के मौत आ पहुंची तो चाहे लाख ह़ाजी नमाज़ी हो हमेशा हमेशा के लिये दोज़ख़ की आग में जलना पड़ेगा । सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان क़त़ई जन्नती होने के बा वुजूद ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से हमेशा लरज़ां व तरसां रहा करते थे । चुनान्चे

तीन सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में डूबे हुए इब्रत अंगेज़ इर्शादात मुलाहज़ा हों :

﴾1﴿ काश ! मैं मेंढा होता

इस्लाम के अ़ज़ीम सिपह सालार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिन्हें हुज़ूर सरापा नूर, फ़ैज़ गन्जूर, शाहे ग़यूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस उम्मत का अमीन फ़रमाया। अपने बारे में कहा करते थे : **काश ! मैं मेंढा होता, मेरे घर वाले मुझ को ज़ब्ह़ कर लेते, मेरा गोश्त खा लेते और शोरबा पी लेते।** (الزھد للامام احمد بن حنبل ص۲۰۳) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

﴾2﴿ काश ! मैं राख होता

ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं : आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : **काश ! मैं राख होता**

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ो शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी । (مجمع الزوائد)

जिसे हवाएं उड़ा ले जातीं । (الزهد للامام احمد بن حنبل ص۱۷۲)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 काश ! मैं रोज़े क़ियामत न उठाया जाऊं

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जो कि हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुक़र्रब तरीन सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में से हैं, ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के ग़लबे की बिना पर फ़रमाते हैं : **काश ! मरने के बा'द मुझे दोबारा न उठाया जाता ।** (اِحْيَاءُ الْعُلُوم ج ٤ ص ٢٢٦)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

काश कि मैं दुन्या में पैदा न हुवा होता क़ब्रो ह़श्र का सब ग़म ख़त्म हो गया होता

आह ! सल्बे ईमां का ख़ौफ़ खाए जाता है

काश ! मेरी मां ने ही मुझ को न जना होता

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

वुजूदे इलाही के इन्कार के बारे में सुवाल जवाब

"अल्लाह होता तो ग़रीबों का साथ देता" कहना कैसा ?

सुवाल : किसी ने मुश्किलात से तंग आ कर येह कह दिया : "अगर वाक़ेई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ होता तो ग़रीबों का साथ देता, मजबूरों का सहारा होता" इस बारे में कुछ इर्शाद फ़रमाइये ।

जवाब : मज़्कूरा जुम्ले से साफ़ ज़ाहिर है कि कहने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के **वुजूद** ही का इन्कार कर रहा है कि ग़रीबों मजबूरों की मदद न होना इस वज्ह से है कि (مَعَاذَاللهعَزَّوَجَلَّ) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नहीं है अगर होता तो उन की मदद होती । कहने वाला **काफ़िर व मुरतद** है ।

"अल्लाह होता तो ज़रूर सुनता" कहना कैसा ?

सुवाल : येह कहना कैसा कि "मुझे ऐसा लगता है कि **अल्लाह** नहीं है अगर होता तो मेरी दुआ ज़रूर सुनता ।"

जवाब : इस जुम्ले में **अल्लाहु** ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ के वुजूद का इन्कार पाया जा रहा है । कहने वाला **काफ़िर** हो गया ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बा'ज़ लोग ऐसे भी होते हैं कि जब तक आसाइशें मिलती हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से खुश रहते हैं मगर जूं ही रोज़ी में तंगी वग़ैरा के ज़रीए़ आज़्माइशें आती हैं तो ऊल फ़ूल बकने और ख़ुदा की पनाह ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को बुरा भला कहने लगते हैं जैसा कि पारह 30 **सूरतुल फ़ज्र** की आयत नम्बर 15 और 16 में **अल्लाहु रह़मान** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

فَاَمَّا الْاِنْسَانُ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ رَبُّهٗ فَاَكْرَمَهٗ وَ نَعَّمَهٗ ۙ فَیَقُوْلُ رَبِّیْۤ اَكْرَمَنِ ؕ ﴿۱۵﴾ وَ اَمَّاۤ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ فَقَدَرَ عَلَیْهِ رِزْقَهٗ ۙ فَیَقُوْلُ رَبِّیْۤ اَهَانَنِ ﴿۱۶﴾ ج

(پ ۳۰ سورۃ الفجر ۱۵،۱۶)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : लेकिन आदमी तो जब उसे उस का **रब** (عَزَّوَجَلَّ) आज़्माए कि उस को जाह और ने'मत दे जब तो कहता है : **मेरे रब** (عَزَّوَجَلَّ) ने मुझे इ़ज़्ज़त दी और अगर आज़्माए और उस का रिज़्क़ उस पर तंग करे तो कहता है : **मेरे रब** (عَزَّوَجَلَّ) ने मुझे ख़्वार किया।

दुश्वारी के साथ आसानी भी होती है

अगर बीमारी, बे रोज़गारी या किसी त़रह़ की दुश्वारी का सामना हो तो सब्र, सब्र और सिर्फ़ सब्र ही करना

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

चाहिये कि **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने सब्र करने वालों के लिये ढेरों ढेर अज्र रखा है। **अल्लाहु** बारी عَزَّوَجَلَّ ने हर दुश्वारी के साथ आसानी भी रखी है, चुनान्चे पारह 30 **सूरए अलम नशरह़** की आयत नम्बर 5 और 6 में इर्शादे रब्बानी है :

فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ یُسْرًا ۙ﴿۵﴾ اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ یُسْرًا ؕ﴿۶﴾
(پ ۳۰ الم نشرح ۵-۶)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है, बेशक दुश्वारी के साथ और आसानी है।

ख़ुदा, जज़ा और सज़ा का इन्कार

सुवाल : एक शख़्स ने कहा : ख़ालिक़, मालिक, ज़िन्दगी, मौत, जज़ा व सज़ा बस सब यूं ही एक सोच है। इस के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब : कहने वाला अगर मुसल्मान था तो **काफ़िर व मुरतद** हो गया। इस **क़ौले बदतर अज़ बौल** में रब्बे वदूद عَزَّوَجَلَّ के **वुजूद** का इन्कार है जो कि बद तरीन **कुफ़्र** है। नीज़ इस में मौत और जज़ा व सज़ा का भी इन्कार है और येह भी **सरीह़ कुफ़्रिय्यात** हैं।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو یعلی)

अभी तौबा कर लेने और **ज़बान को क़ाबू** में रखने में आफ़िय्यत है, वरना जो लोग कुफ़्र की मौत मर कर हमेशा हमेशा के लिये वासिले जहन्नम हो जाएंगे वोह बहुत ही पछताएंगे। इन जहन्नमियों और अहले जन्नत का मुकालमा मुलाह़ज़ा फ़रमाइये जो कि निहायत ही क़ाबिले इ़ब्रत है। चुनान्चे इस को पारह 29 **सूरतुल मुद्दस्सिर** की आयत नम्बर 40 ता 47 में इस त़रह़ बयान किया गया है :

فِیْ جَنّٰتٍ ۛؕ یَتَسَآءَلُوْنَ ﴿ۙ۴۰﴾ عَنِ الْمُجْرِمِیْنَ ﴿ۙ۴۱﴾ مَا سَلَكَكُمْ فِیْ سَقَرَ ﴿۴۲﴾ قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّیْنَ ﴿ۙ۴۳﴾ وَ لَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِیْنَ ﴿ۙ۴۴﴾ وَ كُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآىٕضِیْنَ ﴿ۙ۴۵﴾ وَ كُنَّا نُكَذِّبُ بِیَوْمِ الدِّیْنِ ﴿ۙ۴۶﴾ حَتّٰۤى اَتٰىنَا الْیَقِیْنُ ﴿ؕ۴۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बाग़ों में पूछते हैं, मुजरिमों से, तुम्हें क्या बात दोज़ख़ में ले गई ? वोह बोले, हम नमाज़ न पढ़ते थे और मिस्कीन को खाना न देते थे और बेहूदा फ़िक्र वालों के साथ बेहूदा फ़िक्रें करते थे और हम इन्साफ़ के दिन को झुटलाते रहे यहां तक कि हमें मौत आई।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का जिस्म मानना कैसा ?

सुवाल : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को इन्सान की त़रह़ बदन वाला मानना कैसा है ?

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

जवाब : ऐसा **कहने या मानने वाला काफ़िर** है। मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या,** जिल्द 14, सफ़्हा 250 पर "**दुर्रे मुख़्तार**" के हवाले से नक़्ल करते हैं : "अगर **ज़रूरिय्याते दीन** से किसी चीज़ का मुन्किर हो तो **काफ़िर** है जैसे येह कहना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अज्साम के मानिन्द जिस्म है।" (دُرِّمُختار ج٢ ص ٣٥٨)

"अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मकान से पाक है" के बारे में सुवाल जवाब

"रोज़ी देने वाला ऊपर बैठा है" कहना कैसा ?

सुवाल : "रोज़ी देने वाला या इन्साफ़ करने वाला **ऊपर** बैठा है।" कहना कैसा ?

जवाब : येह कलिमए कुफ़्र है क्यूं कि इस में **अल्लाहु रहमान** عَزَّوَجَلَّ के लिये **सम्त व मकान** साबित किये गए हैं। सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये **मकान** साबित करना **कुफ़्र** है कि वोह **मकान** से पाक है, येह कहना कि "ऊपर ख़ुदा है नीचे तुम" येह **कलिमए कुफ़्र** है। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा 9, स. 180, فتاوٰی قاضی خان ج٤ ص ٤٧٠)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

बच्चों को अल्लाह कहना सिखाइये

सुवाल : अपने बच्चों को बा'ज़ लोग येही ज़ेहन देते हैं कि **अल्लाह** ऊपर है। लिहाज़ा इन बच्चों को जब प्यार से पूछा जाए कि **अल्लाह** तआ़ला कहां है ? तो फ़ौरन आस्मान की त़रफ़ उंगली उठा देते हैं। ऐसा सिखाना कैसा ?

जवाब : इस त़रह़ वोही सिखाता होगा जिस का अपना ज़ेहन भी येही होता होगा कि مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ "**अल्लाह** तआ़ला ऊपर है या ऊपर उस का **मकान** है जिस में वोह रहता है" येह दोनों बातें कुफ़्र हैं। **अल्लाह** तआ़ला जिहत (या'नी सम्त) से भी पाक है और **मकान** से भी। बच्चे को इशारा मत सिखाइये बल्कि जूं ही बोलने के लाइक़ हो सब से पहले उस की ज़बान से लफ़्ज़ "**अल्लाह**" निकलवाने की कोशिश फ़रमाइये। इस के बा'द لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسولُ اللّٰه صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कहना सिखाइये। नीज़ उस को येह कहना भी सिखाइये : **अल्लाह हमारी जान से भी क़रीब है।** पारह 26 **सूरए** قٓ आयत नम्बर 16 में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ो शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَیْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِیْدِ ﴿۱۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हम दिल की रग से भी उस से ज़ियादा नज़्दीक हैं।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحمۃُ اللّٰہِ الْھَادِی फ़रमाते हैं : येह कमाले इ़ल्म का बयान है कि हम बन्दे के ह़ाल को ख़ुद उस से ज़ियादा जानने वाले हैं, "वरीद" वोह रग है जिस में ख़ून जारी हो कर बदन के हर हर जुज़्व (या'नी हिस्से) में पहुंचता है, येह रग गरदन में है। मा'ना येह हैं कि इन्सान के अज्ज़ा एक दूसरे से पर्दे में हैं मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से कोई चीज़ पर्दे में नहीं।

(ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, स. 826)

"अल्लाह" का इशारा गूंगे बहरे किस त़रह़ करें ?

सुवाल : आज कल गूंगे बहरों को तरबियत देने वाले "**अल्लाह**" का इशारा आस्मान की त़रफ़ उंगली उठवा कर सिखाते हैं येह कहां तक दुरुस्त है ?

जवाब : येह त़रीक़ा क़त्अ़न ग़लत़ है। इन बेचारों के ज़ेह्न में येही नज़रिय्यात बैठ जाते होंगे कि "**अल्लाह** तआ़ला ऊपर है या ऊपर उस का **मकान है** जिस में वोह रहता

है येह दोनों बातें **कुफ़्र** हैं" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिहत (या'नी सम्त) से भी पाक है और **मकान** से भी। आस्मान की त़रफ़ इशारा करने के बजाए इन को हाथ के ज़रीए़ लफ़्ज़ "**अल्लाह** (**اللّٰه**)" बनाना सिखाना चाहिये और इस का त़रीक़ा निहायत ही आसान है। सीधे हाथ की उंग्लियां मा'मूली सी कुशादा कर के अंगूठे का सिरा ऊपर की त़रफ़ थोड़ा सा बढ़ा कर शहादत की उंगली के पहलू के वस्त़ में लगा लीजिये अब सीधी हथेली की पुश्त की त़रफ़ देखिये तो लफ़्ज़ **अल्लाह** (**اللّٰه**) मह़सूस होगा। इसी त़रह़ कर के उलटे हाथ की हथेली की अगली त़रफ़ देखेंगे तो **अल्लाह** (**اللّٰه**) लिखा हुवा नज़र आएगा।

फ़िल्में कुफ़्रिय्यात सीखने का ज़रीआ़ हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** तआ़ला के लिये मकान और जिहत (या'नी सम्त) साबित करने वाले जुम्ले लोगों में काफ़ी राइज होते जा रहे हैं मसलन "ऊपर वाला" कहना तो बहुत ज़ियादा आ़म है। जो कि अक्सर लोगों ने ज़ियादा तर फ़िल्मों ड्रामों से सीखा है। चूंकि हर मुसल्मान **कुफ़्रिय्यात** की पहचान नहीं कर पाता, इस वज्ह से न जाने कितने

मुसल्मान रोज़ाना येह ग़लतियां करते होंगे। **जिन लोगों से ज़िन्दगी में कभी एक बार भी येह जुम्ला सादिर हो गया हो उन्हें चाहिये कि इस से तौबा करें और नए सिरे से कलिमा पढ़ें और अगर शादी शुदा हैं तो नए सिरे से निकाह़ भी करें।** काश ! मुसल्मान **बुरे ख़ातिमे** का डर अपने अन्दर पैदा करें, फ़िल्मों ड्रामों और गाने बाजों से कनारा कशी इख़्तियार करें और **ज़रूरिय्याते दीन** का इल्म ह़ासिल करें। **आह**! मौत हर वक़्त सर पर खड़ी है ! **मौत** बीमारियों, धमाकों, हंगामों, सैलाबों, तूफ़ानी बारिशों, ज़ल्ज़लों, आतश ज़दगियों, नीज़ तेज़ रफ़्तार गाड़ियों के ह़ादिसों के ज़रीए़ अच्छे ख़ासे कड़ियल जवानों को भी फ़ौरी तौर पर उचक कर ले जाती है और सारी ख़र मस्तियां और फ़न्कारियां ख़ाक में मिल जाती हैं

जल गए परवाने शम्एं पानी पानी हो गईं
मेरा तेरा ज़िक्र हो कर अन्जुमन में रह गया

"अल्लाह आस्मान से देख रहा है" कहना कैसा ?

सुवाल : बद निगाही करने वाले को डराने के लिये येह कह सकते हैं या नहीं कि, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **आस्मान से देख रहा है।**

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

जवाब : नहीं कह सकते कि येह **कुफ़्रिय्या जुम्ला** है। **फ़तावा आ़लमगीरी** जिल्द 2 सफ़ह़ा 259 पर है : "**अल्लाह** तआ़ला आस्मान से या अ़र्श से देख रहा है" ऐसा कहना **कुफ़्र** है। (عالمگیری ج۲ص۲۵۹) हां बद निगाही बल्कि किसी भी त़रह़ का गुनाह करने वाले को येह एह़सास दिलाया जाए कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **देख रहा है।**" जैसा कि पारह 30 **सूरतुल अ़लक़** की 14वीं आयते करीमा में इर्शाद होता है :

اَلَمْ یَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ یَرٰى ﴿۱۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या न जाना कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) देख रहा है।

हज़ार ह़ज से बेहतर अ़मल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! काश ! ह़क़ीक़ी मा'नों में हमारे ज़ेह्न में हर वक़्त येह बात जमी रहे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **हमें देख रहा है** अगर वाक़ेई इस तसव्वुर की मे'राज नसीब हो जाए तो फिर गुनाहों का सुदूर नहीं हो सकता। ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम अबुल क़ासिम क़ुशैरी** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते ह़सरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाया करते थे : "एक बार

बैठना **हज़ार हज** से बेहतर है।" इस एक बार बैठने से मुराद येही है कि तमाम तर तवज्जोह जम्अ़ कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपने आप को ह़ाज़िर तसव्वुर करना (कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे देख रहा है) (الرِّسالَةُ القُشَيرِيَّة ص ٣٢١) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واله وسلَّم

आंखों में आग की सलाई फिराई जाएगी

काश ! निगाहों की ह़िफ़ाज़त की आ़दत बन जाए, यक़ीनन बद निगाही का अ़ज़ाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा। **अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी** رَحمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيه नक़्ल करते हैं : **"जिस ने ना मह़रम से आंख की ह़िफ़ाज़त न की बरोज़े क़ियामत उस की आंख में आग की सलाई फिराई जाएगी।"** (بَحرُ الدُّمُوع، ص ١٧١-١٧٢)

आंखों के क़ुफ़्ले मदीना[1] का एक मदनी नुस्ख़ा

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الوَالِي नक़्ल करते हैं : ह़ज़रते

مــدينـه

(1) बद निगाही के साथ साथ फ़ुज़ूल निगाही से भी बचना और ह़या से अक्सर नज़रें नीची रखना दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में "आंखों का क़ुफ़्ले मदीना" कहलाता है।

www.dawateislami.net

सय्यिदुना **जुनैद बग़दादी** عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی से किसी ने अ़र्ज़ की : या सय्यिदी ! मैं आंखें नीची रखने की आ़दत बनाना चाहता हूं, कोई ऐसी बात इर्शाद फ़रमाइये जिस से मदद ह़ासिल करूं । फ़रमाया : येह ज़ेहन बनाए रखो कि **मेरी नज़र किसी दूसरे को देखे इस से पहले एक देखने वाला** (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) **मुझे देख रहा है ।** (اِحیاءُ الْعُلُوم ج ٥ ص ١٢٩) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

नीची नज़र रखने का ला जवाब त़रीक़ा

बयान किया जाता है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन अबी सिनान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان नमाज़े ई़द के लिये गए । जब वापस घर तशरीफ़ लाए तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की अहलिया कहने लगी : आज आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कितनी औ़रतें देखीं ? आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ख़ामोश रहे, जब उस ने ज़ियादा इसरार किया तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : **घर से**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

निकलने से ले कर, तुम्हारे पास वापस आने तक मैं अपने (पाउं के) **अंगूठों की त़रफ़ देखता रहा।**

(کتابُ الْوَرَع مع موسُوعَہ امام ابنِ ابی الدُّنیا، ج ۱ص۲۰۵)

سُبْحٰنَ اللّٰہ ! **अल्लाह** वाले बिला ज़रूरत बिल ख़ुसूस भीड़ के मौक़अ़ पर इधर उधर देखते ही नहीं कि मबादा (या'नी ऐसा न हो कि) शरअ़न जिस की इजाज़त न हो उस पर नज़र पड़ जाए ! (गुज़रे हुए नेक बन्दों की एक अ़लामत बयान करते हुए) ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद ताई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : नेक लोग फ़ुज़ूल इधर उधर देखने को ना पसन्द करते थे। (ایضاً ص ۲۰٤)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

कोई देख तो नहीं रहा !

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़रक़द सिन्जी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मुनाफ़िक़ जब देखता है कि उसे कोई (आदमी) नहीं देख रहा तो वोह गुनाह कर डालता है। **अफ़्सोस** ! कि वोह इस बात का तो ख़याल रखता है कि लोग उसे न देखें मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **देख रहा है** इस बात का लिह़ाज़ नहीं करता। (ایضاً ص ۱۳۰) **अल्लाहु**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे । (شعب الایمان)

रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

छुप के लोगों से किये जिस के गुनाह वोह ख़बरदार है क्या होना है
अरे ओ मुजरिमे बे परवा देख सर पे तलवार है क्या होना है

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

मदनी इल्तिजा : सुन्नतों भरे बयान का केसिट बनाम : **"अल्लाह देख रहा है" मक्तबतुल मदीना** से हदिय्यतन ह़ासिल कर के ख़ुद भी सुनिये और घर वालों को भी सुनाइये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इन्तिहाई मुफ़ीद पाएंगे ।

"ऊपर अल्लाह का सहारा" कहने का हुक्मे शरई

सुवाल : किसी से यूं कहना कैसा है कि "ऊपर **अल्लाह** का सहारा, ज़मीन पर आप का सहारा ।"

जवाब : कुफ़्र है कि इस में **अल्लाह** तबारक व तआ़ला के लिये **मकान व सम्त** को साबित किया जा रहा है ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को "ऊपर वाला" कहना कैसा ?

सुवाल : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ात के लिये **ऊपर वाला,** बोलना कैसा है ?

जवाब : अल्लाह तबारक व तआ़ला की ज़ात के लिये लफ़्ज़

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

"ऊपर वाला" बोलना **कुफ़्र** है कि इस लफ़्ज़ से उस के लिये **जिहत** (या'नी सम्त) का सुबूत होता है और उस की ज़ात जिहत (सम्त) से पाक है जैसा कि ह़ज़रते अ़ल्लामा **सा'दुद्दीन तफ़्ताज़ानी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** तबारक व तआ़ला **मकान** में होने से पाक है और जब वोह **मकान** में होने से पाक है तो **जिहत** (या'नी सम्त) से भी पाक है, (इसी त़रह़) **ऊपर** और **नीचे** होने से भी पाक है।" (شرح العقائد ص ٦٠) और ह़ज़रते अ़ल्लामा **इब्ने नुजैम मिस्री** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ नक़्ल फ़रमाते हैं : "जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को **ऊपर** या **नीचे** क़रार दे तो उस पर हुक्मे **कुफ़्र** लगाया जाएगा।" (اَلْبَحْرُ الرَّائِق ج ٥ ص ٢٠٣) लेकिन अगर कोई शख़्स **येह जुम्ला बुलन्दी व बरतरी** के मा'ना में इस्ति'माल करे तो क़ाइल पर हुक्मे कुफ़्र न लगाएंगे मगर इस क़ौल को बुरा ही कहेंगे और क़ाइल को इस से रोकेंगे। (फ़तावा फ़ैज़ुर्रसूल, जि. 1, स. 2)

"अल्लाह मस्जिद, मन्दर हर जगह है" कहना

सुवाल : किसी ने कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर जगह है, का'बे में भी है, मस्जिद में भी है, मन्दर में भी है और गिरजा में भी है" कहने वाले के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब : कहने वाले पर **लुज़ूमे कुफ़्र** का हुक्म है क्यूं कि इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये **मकान** साबित किया गया है। इस त़रह़ के कलिमात ह़म्दिया कलाम में बा'ज़ **ना'त ख़्वान** पढ़ते हैं, उन को **तौबा व तजदीदे ईमान व तजदीदे निकाह़** करना चाहिये।

"अल्लाह मकान से पाक है" इस की वज़ाह़त

सुवाल : आज कल उ़मूमन अ़वाम येह कहते सुनाई देते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऊपर रहता है, उस का आस्मान पर मकान है। बे शुमार लोग यूं भी बोलते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर जगह है। ह़ालां कि इस्लामी अ़क़ीदा येह है कि ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ जगह व मकान से पाक है। मेह़रबानी कर के इस की वज़ाह़त कर दीजिये।

जवाब : बेशक **अल्लाहु रह़मान** عَزَّوَجَلَّ जगह व मकान से पाक है। दर अस्ल फ़िल्में ड्रामे देख देख कर और बेहूदा ग़ज़लें और फ़िल्मी गाने सुन सुन कर बहुत से लोगों के ज़ेहनों के अन्दर सुवाल में मज़्कूरा कुफ़्री अ़क़ीदा जम गया है। और इन लोगों से सुन सुन कर औलाद दर औलाद ज़ेह्नों में مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह अ़क़ीदा मुन्तक़िल होता जा रहा है। इल्मे दीन व उ़लमाए दीन

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساكر)

से दूरी के बाइस **अल्लाहु रह़मान** عَزَّوَجَلَّ का जगह और **मकान** से पाक होना बा'ज़ अज़्हान क़बूल नहीं कर पाते। ख़ुदाए ह़न्नानो मन्नान جَلَّ جَلَالُهٗ के जगह व **मकान** से पाक होने पर यूं तो बे शुमार दलाइल हैं मगर मैं सिर्फ़ एक दलील अ़र्ज़ करने की कोशिश करता हूं, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ क़बूले ह़क़ का जज़्बा रखने वाला ज़ेह्न फ़ौरन क़बूल कर लेगा : येह बात ज़ेह्न नशीन फ़रमा लीजिये कि **अल्लाहु करीम** عَزَّوَجَلَّ क़दीम है या'नी हमेशा हमेशा से है। वोह तब से है कि जब अब तब कब, यहां वहां ऊपर नीचे, दाएं बाएं वग़ैरा कुछ भी न था। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस की सिफ़ात के इलावा हर चीज़ **ह़ादिस** है। ह़ादिस, क़दीम की ज़िद है। ह़ादिस या'नी वोह कि जो अ़दम से वुजूद में आए। इस को और आसान लफ़्ज़ों में यूं समझिये कि जो पहले से न था मगर बा'द में मौजूद हो। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हर मुसल्मान **अल्लाहु करीम** عَزَّوَجَلَّ और उस की सिफ़ात को **क़दीम** ही मानता है और इस के इलावा हर चीज़ बा'द में बनाई गई इस को भी तस्लीम करता है तो बस इतनी सी बात समझने की ज़रूरत है कि बा'द में बनाई जाने वाली चीज़ों में यक़ीनन ज़मीनो

www.dawateislami.net

आस्मान, अ़र्श व कुर्सी, ऊपर नीचे दाएं बाएं वग़ैरा भी शामिल हैं। अब अगर येह कहा जाए कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऊपर है या आस्मान पर है या अ़र्श पर है या हर जगह है तो फिर आस्मान, अ़र्श बल्कि हर जगह को क़दीम मानना लाज़िम आएगा या फिर येह ज़ेह्न बनाना पड़ेगा कि पहले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जगह व मकान से पाक था बा'द में जूं जूं वोह عَزَّوَجَلَّ चीज़ें बनाता गया उन में "रहता" चला गया। जब "ऊपर" वुजूद में आया तो ऊपर आ गया, जब "नीचे" की तख़्लीक़ हुई तो नीचे उतर आया, "अ़र्श" बनाया तो अ़र्श पर पहुंच गया और जब "जगहें" पैदा कीं तो हर जगह तशरीफ़ ला कर रहने लगा।

وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰہ۔

अल्लाह करे दिल में उतर जाए मेरी बात (आमीन)

उम्मीद है कि मस्अला समझ में आ गया होगा। बहर ह़ाल शरई हुक्म येही है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को "ऊपर" या "आस्मान पर रहता है" या "हर जगह है" कहना **कुफ़्रे लुज़ूमी** है। येह अ़क़ीदा रखने वाला मुसल्मान अगर्चे उ़लमाए मुतकल्लिमीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِین के नज़्दीक इस्लाम से ख़ारिज नहीं होता ताहम फ़ुक़हाए किराम

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़हा करूं (या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشكوال)

رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के नज़्दीक उस पर हुक्मे **कुफ़्र** है। लिहाज़ा उस पर लाज़िम है कि **तौबा, तजदीदे ईमान व तजदीदे निकाह़** करे।

मकान के मुतअ़ल्लिक़ कुफ़्रिय्यात की 7 मिसालें

﴾1﴿ **अल्लाह** तआ़ला के लिये जिहत (या'नी सम्त) मानना **कुफ़्र** है या'नी येह कहना **अल्लाह** तआ़ला ऊपर है वग़ैरहा। (اَلْبَحْرُ الرَّائِق ج٥ ص٢٠٣) सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : **अल्लाह** तआ़ला जिहत (या'नी सम्त) व **मकान** व ज़मान व ह़रकत व सुकून व शक्ल व सूरत व जमीअ़ हवादिस से पाक है। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 1, स. 8)

﴾2﴿ ख़ुदा के लिये **मकान** साबित करना (या'नी मानना या कहना) **कुफ़्र** है। (اَلْبَحْرُ الرَّائِق ج٥ ص٢٠٣)

﴾3﴿ **अल्लाह** तआ़ला के लिये **जिस्म** और **मकान** साबित करना **कुफ़्र** है। इस मस्अले की तफ़्सील मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के मुबारक रिसाले "क़वारिउ़ल क़ह्हार" (फ़तावा रज़विय्या जिल्द 29 सफ़्ह़ा 119 ता 285) में देखी जा सकती है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

﴾4﴿ येह कहना कि "ऊपर ख़ुदा है नीचे तुम हो।" येह **कलिमए कुफ़्र** है। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 9, स. 180, فتاوٰی قاضی خان ج ٤ ص ٤٧٠)

﴾5﴿ जो कहे : "**अल्लाह** तआ़ला आस्मान में है" अगर तो उस ने वोह मुराद लिया जो ज़ाहिरन अख़्बार (या'नी अहादीसे मुबारका) में है उस की हिकायत (या'नी उसी का बयान) है तो फिर **कुफ़्र** नहीं। अगर **मकान** की निय्यत है तो **कुफ़्र** है और अगर कुछ भी निय्यत नहीं तब भी अक्सर **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के नज़्दीक **कुफ़्र** है। (البحر الرائق ج ٥ ص ٢٠٣, फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 284) **अफ़्सोस!** इस त़रह के जुम्ले लोगों में ब कसरत बके जाते हैं। आप ग़ौर फ़रमा लीजिये अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता ज़िन्दगी में कभी इस त़रह बोल दिया है **तौबा, तजदीदे ईमान व तजदीदे निकाह़** कर लीजिये।

﴾6﴿ येह कहना कि "कोई मकान कोई गोशा ऐसा नहीं जहां ज़ाते ख़ुदा मौजूद न हो" **कलिमए कुफ़्र** है। (माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 620, مجمع الانھر ج ٢ ص ٥٠٥)

﴾7﴿ जो कहे : "**अल्लाह** तआ़ला आस्मान से या अ़र्श से देख रहा है" येह क़ौल **कुफ़्र** है।

(فتاوٰی عالمگیری ج ٢ ص ٢٥٧)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तौहीन के बारे में सुवाल जवाब

"अल्लाह ज़ालिमों का साथ देता है" कहना

सुवाल : कोई अपने दुश्मन से तंग आ कर अगर इस त़रह़ बक दे कि "फुलां शख़्स ने हमारी नाक में दम कर रखा है और दुख की बात तो येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी ऐसों ही के साथ होता है।" उस के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब : ऐसा कहना **कुफ़्र** है कि इस जुम्ले में रब्बे आ'ला عَزَّوَجَلَّ को ज़ालिमों का साथ देने वाला क़रार दे कर उस की **तौहीन** की गई है।

ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की नाराज़गी को हलका जानना कैसा ?

सुवाल : येह कहना कैसा है मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाराज़ होने की परवाह नहीं, मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ नहीं।

जवाब : इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़गी को हलका जानना पाया जा रहा है। और उस عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से बे ख़ौफ़ होने का पहलू भी मौजूद है लिहाज़ा मज़्कूरा जुम्ला **कुफ़्रिय्या** है। सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह

हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : "किसी से कहा कि गुनाह न कर वरना **ख़ुदा** तुझे **जहन्नम** में डालेगा।" उस ने कहा : "मैं **जहन्नम** से नहीं डरता" या कहा : "**ख़ुदा** के अ़ज़ाब की कुछ परवा नहीं।" या एक ने दूसरे से कहा : "**तू ख़ुदा** से नहीं डरता ?" उस ने गुस्से में कहा : "नहीं।" या कहा : " **ख़ुदा** क्या कर सकता है ? इस के सिवा क्या कर सकता है कि **दोज़ख़** में डाल दे" या कहा : "**ख़ुदा** से डर।" उस ने कहा : "**ख़ुदा** कहां है ?" येह सब **कलिमाते कुफ़्र** हैं। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 9, स. 180)

इमामे आ'ज़म का ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो लोग दुन्या ही को अपना सब कुछ बना बैठते, मौत को भुला बैठते और नेक लोगों से रिश्ता तुड़ा बैठते हैं वोह आ़म तौ़र पर बे लगाम होते हैं, उन की ज़बान गोया उन के दिल के आगे होती है, दिल की त़रफ़ रुजूअ़ करने की नौबत ही नहीं आती बस जो कुछ ज़बान की नोक पर आया फिसल कर बाहर आ जाता है और वोह हर दम बकबक करते रहते हैं और फिर इस त़रह़ مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ज़बान से **कुफ़्रिय्यात** सरज़द होने का इम्कान भी

www.dawateislami.net

बढ़ता चला जाता है। हमें अपने अन्दर **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ पैदा करना चाहिये। करोड़ों ह़नफ़िय्यों के पेश्वा और मेरे आक़ा व मौला ह़ज़रते इमामे आ'ज़म, फ़क़ीहे अफ़्ख़म, **इमाम अबू ह़नीफ़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه का **ख़ौफ़े ख़ुदा** मुलाह़ज़ा हो। चुनान्चे मन्क़ूल है, एक बार सय्यिदुना **इमामे आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه किसी से गुफ़्त्गू फ़रमा रहे थे कि किसी बात पर अचानक उस शख़्स ने **इमामे आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से कहा : **اِتَّقِ اللّٰه** ! या'नी ख़ुदा का ख़ौफ़ करो ! इन अल्फ़ाज़ का उस के मुंह से निकलना था कि **सय्यिदुना इमामे आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه का चेहरा ज़र्द पड़ गया, सर झुका लिया और फ़रमाने लगे : भाई ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को जज़ाए ख़ैर दे, इल्म पर जिस वक़्त किसी को नाज़ होने लगे उस वक़्त वोह इस बात का ज़रूरत मन्द होता है कि कोई उस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की याद दिला दे। (عقود الجمان ص ٢٢٧)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भूल से पाक है

सुवाल : "मेरी क़िस्मत में शायद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुछ लिखना ही **भूल** गया है" येह कहना कैसा है ?

जवाब : ऐसा कहना **कुफ़्र** है। क्यूं कि इस क़ौल में **अल्लाहु** रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ की शदीद तरीन **तौहीन** करते

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

हुए उसे "**भूल** जाने वाला क़रार" दिया गया है। यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **भूल जाने से पाक है**। और हर वोह बात जिस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ **भूल** जाना साबित किया जाए **ख़ालिस कुफ़्र** है। चुनान्चे पारह 16 **सूरए त़ाहा** की आयत नम्बर 52 में इर्शाद होता है :

لَا یَضِلُّ رَبِّیْ وَ لَا یَنْسَى ﴿۵۲﴾
(پ ۱۶ طٰهٰ ۵۲)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : मेरा रब (عَزَّوَجَلَّ) न बहके न भूले।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ भूल मन्सूब करना

सुवाल : "न जाने मेरा बुलावा कब आएगा ? शायद बनाने वाला **भूल** गया है" येह कहना कैसा है ?

जवाब : ऐसा कहना **कुफ़्र** है। क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भूलने से पाक है। **बहारे शरीअ़त** में है : "कोई शख़्स बीमार नहीं होता या बहुत बूढ़ा है मरता नहीं उस के लिये कहना कि इसे **अल्लाह** मियां **भूल** गए हैं" येह **कुफ़्र** है।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 9, स. 179, عالمگیری ج۲ص ۲۵۹)

अल्लाह मियां कहना कैसा ?

सुवाल : अल्लाह मियां कहना कैसा ?

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

जवाब : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ "मियां" का लफ़्ज़ बोलना मम्नूअ़ है। **अल्लाह** पाक, **अल्लाह** तआ़ला, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और **अल्लाह** तबारक व तआ़ला वग़ैरा बोलना चाहिये। मेरे आक़ा **आ'ला हज़रत** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "(**अल्लाह** तआ़ला के लिये) **मियां** का इत़्लाक़ न किया जाए (या'नी न बोला जाए) कि वोह तीन मा'ना रखता है, इन में दो रब्बुल इ़ज़्ज़त के लिये मुह़ाल (या'नी ना मुम्किन) हैं **मियां** (या'नी) **आक़ा** और **शोहर** और मर्द व औ़रत में **ज़िना का दलाल**, लिहाज़ा इत़्लाक़ मम्नूअ़।"

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 614)

"ईमान" का लिबास किस को मिलेगा ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! जब भी कोई आफ़त आ पड़े ख़्वाह त़वील अ़र्से तक बे रोज़गारी या बीमारी दूर न हो या मसाइल ह़ल न हों, हर मौक़अ़ पर सिर्फ़ **सब्र सब्र** और **सब्र** से काम लेना और आख़िरत का सवाब व अज्र ह़ासिल करना चाहिये। ह़ज़रते **सय्यिदुना दावूद** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : **ऐ मेरे रब**! जो आदमी तेरी रिज़ा के ह़ुसूल के लिये मुसीबतों पर **सब्र** करता है उस परेशान और ग़मगीन आदमी का बदला क्या है ?

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : उस का बदला येह है कि मैं उसे **ईमान का लिबास** पहनाऊंगा और उस से कभी भी नहीं उतारूंगा। (إحيـاءُ العلوم ج ٤ ص ٩٠) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰلهٖ وسلَّم

"कैसे यक़ीन करूं कि अल्लाह सुनता है।" कहना कैसा ?

सुवाल : अगर कोई परेशान ह़ाल यूं कह बैठे : "कैसे यक़ीन करूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सुनता है।" तो क्या हुक्म है ?

जवाब : ऐसा कहना **कुफ़्र** है क्यूं कि मज़्कूरा जुम्ले में **अल्लाह** तबारक व तआ़ला के समीअ़ होने (या'नी सुनने वाला होने की सिफ़त) पर शक किया जा रहा है जो कि **ख़ालिस कुफ़्र** है। बिलफ़र्ज़ येह जुम्ला **दुआ़** के मौक़अ़ पर बोला गया और कहने वाला अगर अपने इस क़ौल से येह मुराद लेता है कि "कैसे यक़ीन करूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुआ़ क़बूल करता है" तो येह मा'ना भी **कुफ़्रिय्या** हैं कि इस में मुत़्लक़न **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के **दुआ़** न क़बूल करने का इज़्हार किया जा रहा है, ह़ालां कि **अल्लाह** तबारक व तआ़ला पारह 24 **सूरतुल मुअमिन** की आयत नम्बर 60 में इर्शाद फ़रमाता है :

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ؕ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हारे रब (عَزَّوَجَلَّ) ने फ़रमाया : मुझ से दुआ़ करो मैं क़बूल करूंगा।

है येह दुआ़ हो क़ब्र न सूनी   है तेरा फ़रमां اُدْعُوْنِیْۤ
या अल्लाह मेरी झोली भर दे   जल्वए यार से इस को बसाना

"अल्लाह साबिरों के साथ है" का इन्कार

सुवाल : किसी परेशान ह़ाल ने बिफर कर कहा : कहते हैं, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब्र करने वालों के साथ है।" मैं कहता हूं, येह सब बक्वास है। इस त़रह़ कहना कैसा है ?

जवाब : खुला **कुफ़्र** है कि इस क़ौल में रब्बुल आ़लमीन की सख़्त **तौहीन**, और इस आयते क़ुरआनी का इन्कार और इस की भी **तौहीन** पाई जा रही है :

اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِیْنَ ﴿۱۵۳﴾
(پ ۲ البقرة ۱۵۳)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) साबिरों के साथ है।

करबला वालों से बढ़ कर मुसीबत ज़दा कौन ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! परेशान ह़ाल को चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहे और अपने

आप को समझाते हुए दिल ही दिल में कहे कि शहीदान व असीराने करबला عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان पर जो मुसीबतें आई थीं वोह यक़ीनन मुझ पर आने वाली मुसीबतों से करोड़ों गुना ज़ियादा थीं मगर उन्हों ने हंसी ख़ुशी बरदाश्त कीं और **सब्र** कर के जन्नत के हक़दार बने । मैं कहीं बे सब्री कर के आख़िरत की सआ़दत से मह़रूम न हो जाऊं । यक़ीनन यक़ीनन यक़ीनन दुन्यवी परेशानियों, तंग दस्तियों, बीमारियों वग़ैरा में सब्र करने वालों के लिये आख़िरत की ख़ूब ख़ूब राह़त सामानियां हैं ।

मुसीबत की अ़जीब ह़िक्मत

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि **एक नबी** عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने परवर्दगार عَزَّوَجَلَّ के दरबार में अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब्बुल इ़ज़्ज़त ! **मोमिन** बन्दा तेरी **इत़ाअ़त** करता और तेरी **मा'सियत** (ना फ़रमानी) से बचता है (लेकिन) तू इस से दुन्या लपेट लेता और इस को आज़्माइशों में डालता है। और **काफ़िर** तेरी इत़ाअ़त नहीं करता बल्कि तुझ पर और तेरी **मा'सियत** (ना फ़रमानी) पर जुरअत करता है लेकिन तू उस से **मुसीबत** को दूर रखता और उस के लिये दुन्या कुशादा कर देता है (आख़िर इस में क्या

ह़िक्मत है ?) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई : बन्दे भी मेरे हैं और मुसीबत भी मेरे इख़्तियार में है और सब मेरी ह़म्द के साथ मेरी तस्बीह़ करते हैं। **मोमिन के ज़िम्मे गुनाह होते हैं तो मैं उस से दुन्या को दूर कर के उस को आज़्माइश में डालता हूं तो येह** (आज़्माइश व मुसीबत) **उस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाती है** ह़त्ता कि वोह मुझ से मुलाक़ात करेगा तो मैं उसे नेकियों का बदला दूंगा और **काफ़िर** की (दुन्यवी ए'तिबार से) कुछ नेकियां होती हैं तो मैं उस के लिये रिज़्क़ कुशादा करता और मुसीबत को उस से दूर रखता हूं तो यूं उस की नेकियों का बदला दुन्या में ही दे देता हूं ह़त्ता कि जब वोह मुझ से मुलाक़ात करेगा तो मैं उस के गुनाहों की उस को सज़ा दूंगा। (إحياء العلوم ج ٤ ص ١٦٢)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के निज़ाम को उलटा कहने वाला काफ़िर है

सुवाल : अगर कोई यूं कहे : "**अल्लाह** तबारक व तआ़ला के घर का तो सारा निज़ाम ही उलटा है।" तो क्या हुक्मे शरई है ?

जवाब : ऐसा कहने वाला **काफ़िर** हो गया। क्यूं कि मज़्कूरा जुम्ला रब्बे मुबीन عَزَّوَجَلَّ की शदीद तरीन **तौहीन** है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह्क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

"अल्लाह मक्कारों का साथ देता है" कहना कैसा ?

सुवाल : "**अल्लाह** तबारक व तआ़ला अय्यारों और मक्कारों का साथ देता है।" येह कहना कैसा है ?

जवाब : कहने वाला **काफ़िर** हो गया क्यूं कि येह जुम्ला क़ुरआने मुबीन के सरीह़ मुख़ालिफ़ और **अल्लाहु** रब्बुल आ़लमीन तबारक व तआ़ला की सख़्त तरीन **तौहीन** पर मब्नी है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर छोड़ कर देख लिया !

सुवाल : किसी ने मश्वरा दिया : भाई ! अपना मुआ़मला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर छोड़ दीजिये। जवाब दिया : "मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर छोड़ कर भी देख लिया, कुछ नहीं होता !" येह जवाब कैसा है ?

जवाब : येह जवाब **अल्लाहु** मतीन عَزَّوَجَلَّ की **तौहीन** पर मब्नी और **कुफ़्र** है।

अल्लाह को ह़ासिद कहना कैसा है ?

सुवाल : कोई ख़ुश ख़ुश जा रहा हो कि राह में पथ्थर से ठेस लगे और पाउं ज़ख़्मी हो जाए इस पर अगर वोह इस त़रह़ शिक्वा करे : "**या अल्लाह** ! क्या तू भी मेरी ख़ुशी पर ह़सद करता है ?" इस का हुक्मे शरई बयान कर दीजिये।

जवाब : ख़ालिस कलिमए कुफ़्र है, क्यूं कि مَعَاذَاللّٰهعَزَّوَجَلَّ उस ने **अल्लाहु** वाजिद عَزَّوَجَلَّ को **ह़ासिद** कह कर उस की सख़्त तरीन **तौहीन** की है।

हाथों हाथ सज़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ के हर काम में ह़िक्मतें ही ह़िक्मतें होती हैं। तक्लीफ़ पर **सब्र** कर के अज्र ह़ासिल करना चाहिये क्यूं कि आफ़ातो बलिय्यात, कफ़्फ़ारए सय्यिआत और बाइ़से तरक़्क़िये दरजात होती हैं। चुनान्चे **ताजदारे रिसालत,** शहन्शाहे नुबुव्वत, पैकरे जूदो सख़ावत, सरापा रह़मत, मह़बूबे रब्बिल इ़ज़्ज़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **जब किसी बन्दे से भलाई का इरादा करता है तो उस के गुनाह की सज़ा फ़ौरी त़ौर पर उसे दुन्या ही में दे देता है।**"

(مُسنَد اِمام احمد بن حَنبل ج ٥ ص ٦٣٠ حديث ١٦٨٠٦)

आख़िरत की मुसीबत बरदाश्त करना मुम्किन नहीं

आह! हम तो सरापा गुनाहों में डूबे हुए हैं, **काश!** जब भी कोई मुसीबत पेश आए उस वक़्त येह ज़ेहन बनाना नसीब हो जाए कि शायद आख़िरत के बजाए **दुन्या**

ही में सज़ा दे दी गई है । इस त़रह़ उम्मीद है कि सब्र आसान हो जाएगा । **ख़ुदा की क़सम !** मरने के बा'द मिलने वाली सज़ा के मुक़ाबले में दुन्या की सज़ा इन्तिहाई आसान है । दुन्या की मुसीबत आदमी बरदाश्त कर ही लेता है मगर **आख़िरत की मुसीबत बरदाश्त करना ना मुम्किन है** यहां तक कि अगर कोई कह दे कि मैं **क़ब्र** या जहन्नम का अ़ज़ाब बरदाश्त कर लूंगा तो वोह **काफ़िर** हो जाएगा ।

"अल्लाह बद मआ़श के साथ है" कहना कैसा ?

सुवाल : अगर किसी **बद मआ़श** से बेज़ार हो कर مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ कोई यूं कह दे कि "फ़ुलां को **ख़ौफ़े ख़ुदा** इस लिये नहीं कि **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ख़ुद उस के साथ है कि जा बेटा...... तू लोगों की बहन बेटी के दुपट्टे उतार, उन पर झूटे इल्ज़ामात लगा तू जो भी कर मैं तेरे साथ हूं ।" उस के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब : मज़्कूरा जुम्ला रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ की शदीद तौहीन की वज्ह से **कुफ़्र** है ।

कीचड़ में लिथड़े हुए बच्चे से दर्से इब्रत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ के हर काम में ह़िक्मत होती है । येह ज़ेहन मत

बनाइये कि सिर्फ़ नेक बन्दों ही पर इम्तिह़ान आता है, बसा अवक़ात गुनहगारों को भी मुसीबतों में मुब्तला कर के उन को गुनाहों की आलूदगियों से पाक किया जाता है । चुनान्चे

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان अपनी दिल पज़ीर तक़रीर में फ़रमाते हैं : ह़ज़रते **बा यज़ीद बिस्त़ामी** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه किसी जगह से गुज़र रहे थे, मुलाह़ज़ा फ़रमाया, एक **बच्चा** कीचड़ में गिर गया है और उस के कपड़े व जिस्म लिथड़ गए हैं, लोग देखते हुए गुज़र जाते हैं, कोई परवाह भी नहीं करता । कहीं दूर से मां ने देखा, दौड़ती हुई आई, दो थप्पड़ **बच्चे** के लगाए, कपड़े उतार कर धोए, उसे ग़ुस्ल दिया । **ह़ज़रत** (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه) को येह देख कर वज्द आ गया और फ़रमाया कि येही ह़ाल हमारा और **रह़मते इलाही** (عَزَّوَجَلَّ) का है । हम गुनाहों की दलदल में लिथड़ जाते हैं, किसी को क्या परवाह ! मगर **रह़मते इलाही** (عَزَّوَجَلَّ) का दरिया जोश में आता है, हम को **मुसीबतों** के ज़रीए़ दुरुस्त किया जाता है और तौबा व इ़बादात के पानी से ग़ुस्ल दे कर साफ़ फ़रमाता है । **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया । (طبرانی)

عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان येह ह़िकायत नक़्ल करने के बा'द फ़रमाते हैं : जब मेह़रबान मां कुछ सज़ा दे कर तम्बीह कर सकती है तो ख़ालिक़ व मालिक इस से कहीं ज़ियादा मेह़रबान है बा'ज़ अवक़ात सज़ा दे कर इस्लाह़ फ़रमाता है । (मुअ़ल्लिमे तक़रीर, स. 33)

"अल्लाह बख़्शेगा नहीं तो कहां जाएगा !" कहना कैसा ?

सुवाल : येह कहना कैसा **अल्लाह** ग़फ़ूरुर्रह़ीम है "ज़रूर बख़्शेगा, बख़्शेगा नहीं तो जाएगा कहां !"

जवाब : जो **अल्लाह** तबारक व तआ़ला पर किसी दूसरे को क़ादिर माने और **रब्बे ग़फ़ूर** عَزَّوَجَلَّ को मह़कूम व मजबूर क़रार दे वोह **काफ़िर** है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ादिरे मुत़्लक़ है, सब पर ह़ाकिम है, सब उसी के मोह़ताज हैं, उस पर किसी का ज़ोर नहीं चलता । मज़्कूरा जुम्ला "ज़रूर बख़्शेगा, बख़्शेगा नहीं तो जाएगा कहां !" में **अल्लाह** तआ़ला को मजबूर व मह़कूम और ग़ैरे क़ादिर मानने का पहलू नुमायां है इस जुम्ले पर हुक्मे **कुफ़्र** है ।

"फ़ुलां अल्लाह को ठगता है" कहना कैसा ?

सुवाल : बड़ी रात के नवाफ़िल पढ़ने वाले ने कहा : "मैं तो साल भर कुछ नहीं करता बड़ी रात को **अल्लाह को**

ठग लेता हूं।" या कहा : "फ़ुलां यूं तो कभी नमाज़ नहीं पढ़ता मगर बड़ी रात को **अल्लाह को ठग लेता** है।"

जवाब : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को **ठग** लेता हूं" और "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को **ठग** लेता है।" येह दोनों कलिमात **सरीह़ कुफ़्रिय्यात** हैं। इन दोनों बातों में **अल्लाहु** रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ को **धोका** खा जाने वाला माना गया है जो कि उस की शदीद तरीन **तौहीन** है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **तौहीन** करने वाला **काफ़िर व मुरतद** हो जाता है।

क्या अल्लाह को सख़ी कह सकते हैं ?

सुवाल : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को सख़ी कह सकते हैं या नहीं ?

जवाब : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को **सख़ी** नहीं **जवाद** कहना चाहिये। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या जिल्द 27 सफ़ह़ा 165 पर फ़रमाते हैं : "अस्माए इलाहिय्यह तौक़ीफ़िया (या'नी क़ुरआनो ह़दीस की त़रफ़ से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ठहराए हुए नाम) हैं, यहां तक कि **अल्लाह** جَلَّ جَلَالُه का **जवाद** होना अपना ईमान मगर उसे **सख़ी** नहीं

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

कह सकते कि शरअ़ में वारिद नहीं।" **मुफ़स्सिरे** शहीर **हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : मुहावरए अ़रब में उमूमन **सख़ी** उसे कहते हैं जो ख़ुद भी खाए औरों को भी खिलाए। **जवाद** वोह जो ख़ुद न खाए औरों को खिलाए। इसी लिये **अल्लाह** तआ़ला को **सख़ी** नहीं कहा जाता है। **सख़ी** के मुक़ाबिल (OPPOSITE) **बख़ील** है (और बख़ील वोह है) जो ख़ुद खाए औरों को न खिलाए। **जवाद** का मुक़ाबिल (OPPOSITE) **मुम्सिक** है (और मुम्सिक वोह है) जो न खाए न खाने दे। **अल्लाह** तआ़ला की तमाम दुन्यवी उख़्रवी ने'मतें दुन्या के लिये हैं उस (की अपनी ज़ात) के लिये नहीं।

(मिरआत, जि. 1, स. 221)

ख़ुदा को राम कहना कैसा ?

सुवाल : ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ को **राम** कहना कैसा ?

जवाब : सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ख़ुदा को **राम** कहना हिन्दूओं का मज़्हब है। वोह चूंकि उसे हर शै में "रमा हुवा" या'नी हुलूल[1] किया

(1) हुलूल या'नी एक चीज़ का दूसरी चीज़ में इस त़रह़ दाख़िल होना कि दोनों में तमीज़ न हो सके।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

हुवा जानते हैं, इस वज्ह से उसे **राम** कहते हैं और येह अक़ीदा **कुफ़्र** है और उसे (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को) **राम** कहना भी **कलिमए कुफ़्र** है।

(फ़तावा अम्जदिय्या, जि. 4, स. 418)

अल्लाहु रब्बुल आलमीन عَزَّوَجَلَّ की तौहीन के मुतअ़ल्लिक़ कुफ़्रिय्यात की 50 मिसालें

﴾1﴿ "**अल्लाह** तो हमारे लिये "डाइज़ फ़ॉम 80 की गोली" खा कर सो गया है।" येह कहना **सरीह़ कुफ़्र** है।

﴾2﴿ प्यार ऐसा है कि **ख़ुदा** को भी ह़ैरत है। येह **कलिमए कुफ़्र** है।

﴾3﴿ फुलां की ह़रकतों से तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी परेशान है या ﴾4﴿ फुलां को पैदा कर के तो **अल्लाह** तआ़ला भी पछता रहा है येह दोनों **सरीह़ कुफ़्रिय्यात** हैं।

﴾5﴿ "वोह तो **अल्लाह** के पिछवाड़े रहता है" येह **कलिमए कुफ़्र** है।

﴾6﴿ ख़ुदा को मख़्लूक़ कहना ﴾7﴿ ख़ुदा का बन्दा बनने से इन्कार करना ﴾8﴿ ख़ुदा की नफ़ी (या'नी इन्कार) येह तीनों सरीह़ **कलिमाते कुफ़्र** हैं।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 278)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

﴾9﴿ किसी शख़्स से कहना कि "तू ख़ुदा को भूल जा" **कुफ़्र** है। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 278)

﴾10﴿ "**रब** रूठता है तो रूठे, मेरा मह़बूब मुझ से न रूठे।" येह **कलिमए कुफ़्र** है। इस त़रह़ के जुम्ले आ़म त़ौर पर फ़िल्मी गानों में इस्ति'माल होते हैं। मा'ना जानने के बा वुजूद लोग ऐसे गाने बख़ुशी चलाते और सुनते हैं इन सब पर भी हुक्मे **कुफ़्र** है।

﴾11﴿ येह कहना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ख़त़ा करता है या

﴾12﴿ येह कहना कि उस में कोई नक़्स (या'नी ख़ामी) है। येह दोनों **कुफ़्रिय्यात** हैं।

﴾13﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के किसी शै में हुलूल करने का अ़क़ीदा **कुफ़्रिय्या** है।

﴾14﴿ जो कहे : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी बीमारी और बेटे की मशक़्क़त के बा वुजूद अगर मुझे अ़ज़ाब दिया तो उस ने मुझ पर ज़ुल्म किया।" येह कहना **कुफ़्र** है। (البحر الرّائق ج٥ ص٢٠٩)

﴾15﴿ जो कहे : "ऐ **अल्लाह** ! मुझे रिज़्क़ दे और मुझ पर तंगदस्ती डाल कर ज़ुल्म न कर।" ऐसा कहना **कुफ़्र** है। (فتاوٰی خانیه ج٣ ص ٤٦٧)

﴾16﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ **ज़ुल्म** की निस्बत करना, उसे **ज़ालिम** कहना **कुफ़्र** है।

(फ़तावा अम्जदिय्या, जि. 4, स. 432)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

﴾17﴿ जो शख़्स कहे : "**अल्लाह** जानता है कि येह काम मैं ने नहीं किया ह़ालां कि (इस को मा'लूम है कि) वोह काम इस ने किया है।" तो उस पर हुक्मे **कुफ़्र** है। (منح الروض الازھر لِلقاری ص ۵۱۱)

इस त़रह़ का जुम्ला मस्जिद में आ कर सुवाल करने वाले और इस के इ़लावा कई मवाक़ेअ़ पर ब कसरत इस्ति'माल होता है बल्कि बा'ज़ लोगों का तो येह "तकिया कलाम" होता है। सच्ची बात में अगर कहा तो ह़रज नहीं ताहम इस त़रह़ कहने की आ़दत निकाल देना मुनासिब है कि आ़दत हुई तो झूटी बात पर भी मुंह से निकल सकता है।

﴾18﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को किसी भी शै या किसी ज़ात का मोह़ताज कहना **कुफ़्र** है।

﴾19﴿ "अगर क़ियामत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़क़ के साथ फ़ैसला करेगा तो मैं तुम से अपना ह़क़ ले लूंगा।" इस त़रह़ कहना **कुफ़्र** है। (عالمگیری ج ۲ ص ۲۰۹) क्यूं कि इस में **अल्लाह** तआ़ला के ह़क़ के साथ फ़ैसला करने में शक का इज़्हार है।

﴾20﴿ किसी ज़बान दराज़ आदमी से कहा : "**ख़ुदा** तुम्हारी ज़बान का मुक़ाबला नहीं कर सकता मैं कैसे कर सकूंगा।" येह कहना **कुफ़्र** है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 9, स. 180)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा। (ابن عدی)

21 एक ने दूसरे से कहा : अपनी औ़रत को क़ाबू में क्यूं नहीं रखता ? उस ने कहा : "औ़रतों पर ख़ुदा को तो क़ुदरत है नहीं, मुझे कहां से होगी !" येह कहना **कुफ़्र** है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 9, स. 180)

22 "अरे येह तो इतना चालाक है कि **ख़ुदा** को भी धोका दे दे" येह **कलिमए कुफ़्र** है।

23 एक ने दूसरे पर ज़ुल्म किया, **मज़्लूम** ने कहा : **ख़ुदा** ने येही मुक़द्दर किया था। ज़ालिम ने कहा : "मैं **अल्लाह** के मुक़द्दर किये बिग़ैर करता हूं।" येह **कुफ़्र** है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 9, स. 180, عالمگیری ج ۲ ص ۲۶۱)

24 **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम की **तसग़ीर** करना **कुफ़्र** है, जैसे किसी का नाम **अ़ब्दुल्लाह** या **अ़ब्दुल ख़ालिक़** या **अ़ब्दुर्रह़मान** हो, उसे पुकारने में आख़िर में अलिफ़ वग़ैरा ऐसे ह़ुरूफ़ मिला दें जिस से **तसग़ीर** समझी जाती है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 9, स. 180, اَلْبَحْرُ الرَّائِق ج ٥ ص ٢٠٣) **तसग़ीर** का मत़लब है किसी शै को छोटा कर के बयान करना, जैसे किताब से किताबचा, मुख से **मुखड़ा**, कमर से **कमरिया**, रुपिया से **रुपल्ली**, आंख से **अंखड़ी**, नगर से **नगरी** या **नगरिया** वग़ैरा वग़ैरा। सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساكر)

मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : बा'ज़ अस्माए इलाहिय्यह जिन का इत़्लाक़ (या'नी बोला जाना) ग़ैरुल्लाह (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा दूसरों) पर जाइज़ है उन के साथ नाम रखना जाइज़ है जैसे **अ़ली, रशीद, कबीर बदीअ़**। क्यूं कि बन्दों के (रखे जाने वाले इन) नामों में वोह मा'ना मुराद नहीं जिन का इरादा **अल्लाह** तआ़ला पर इत़्लाक़ करने (या'नी बोले जाने) में होता है और इन नामों में अलिफ़ व लाम मिला कर भी नाम रखना जाइज़ है मसलन **अल अ़ली, अर्रशीद**, हां इस ज़माने में चूंकि अ़वाम में नामों की तसग़ीर करने का ब कसरत रवाज हो गया है लिहाज़ा जहां ऐसा गुमान हो ऐसे नाम (रखने) से बचना ही मुनासिब है। ख़ुसूसन जब अस्माए इलाहिय्यह के साथ अ़ब्द का लफ़्ज़ मिला कर नाम रखा गया मसलन **अ़ब्दुर्रह़ीम, अ़ब्दुल करीम, अ़ब्दुल अ़ज़ीज़** कि यहां मुज़ाफ़ इलैह[1] से मुराद **अल्लाह** तआ़ला है और ऐसी सूरत में तसग़ीर

---

(1) इल्मे नह़्व में "मुज़ाफ़" वोह इस्म है जिसे दूसरे इस्म की त़रफ़ निस्बत दी जाए और "मुज़ाफ़ इलैह" वोह इस्म जिस की त़रफ़ कोई दूसरा इस्म मन्सूब किया जाए। जैसे : "**अल्लाह** का बन्दा" इस में "बन्दा" मुज़ाफ़ और "**अल्लाह**" मुज़ाफ़ इलैह है।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

अगर क़स्दन होती तो مَعَاذَاللّٰه कुफ़्र होती क्यूं कि येह उस शख़्स की तसग़ीर नहीं बल्कि मा'बूदे बरहक़ جَلَّ جَلَالُهٗ की तसग़ीर है मगर अ़वाम और ना वाक़िफ़ों का येह मक़्सद यक़ीनन नहीं है इसी लिये वोह हुक्म नहीं दिया जाएगा बल्कि उन को समझाया और बताया जाए और ऐसे मौक़अ़ पर ऐसे नाम ही न रखे जाएं जहां येह एह़तिमाल (या'नी गुमान) हो।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, स. 245, मक्तबतुल मदीना, دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج۹ ص۲۸۸)

﴾25﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये येह मानना कि वोह सोता ﴾26﴿ ऊंघता और ﴾27﴿ बहक्ता है **कुफ़्र** है।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 183)

﴾28﴿ जो शख़्स दुन्या में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से कलामे ह़क़ीक़ी का मुद्दई (दा'वेदार) हो **काफ़िर** है।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 186)

﴾29﴿ येह कहना कि "**अल्लाह** तआ़ला का इ़ल्म क़दीम नहीं है।" **कुफ़्र** है। (فتاوٰی عالمگیری ج۲ ص۲۶۲)

﴾30﴿ जो **अल्लाह** के लिये बाप या ﴾31﴿ बीवी या ﴾32﴿ बेटा माने वोह **काफ़िर** है और जो मुम्किन कहे वोह गुमराह बद दीन है।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सए अव्वल, स. 18)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़हा करूं (या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشکوال)

《33》 अगर ज़रूरिय्याते दीन से किसी चीज़ का मुन्किर हो तो **काफ़िर** है। जैसे येह कहना कि **अल्लाह** तआला **अज्साम के मानिन्द जिस्म** है। या कहे : "जैसे हमारे हाथ या पाउं हैं ऐसे ही जिस्म के टुकड़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये भी हैं।" (دُرِّمُختار ج۲ ص ۳۵۸)

《34》 **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ जहालत या 《35》 इज्ज़ (या'नी मजबूर होना) या 《36》 नक़्स (या'नी ख़ामी) की निस्बत करना **कुफ़्र** है। (اَلْبَحْرُ الرَّائِق ج۵ ص۲۰۲)

《37》 "**ख़ुदा** से छीन लाऊंगा" कहना **कलिमए कुफ़्र** है।

《38》 येह कहना : "छोड़ो यार ! **ख़ुदा** से हम ख़ुद ही निमट लेंगे।" येह **कलिमए कुफ़्र** है।

《39》 जो कहे कि मा'दूम (या'नी जो अभी वुजूद में नहीं आई ऐसी) शै **अल्लाह** तआला को मा'लूम नहीं वोह **काफ़िर** है। (اَلْبَحْرُ الرَّائِق ج۵ ص ۲۰۳)

《40》 जिस ने कहा : "अगर **अल्लाह** तआला मुझे फ़ुलां के साथ जन्नत में दाख़िले का हुक्म करेगा तो मैं नहीं जाऊंगा।" कहने वाला **काफ़िर** है। (منح الروض ص ۵۲۲)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

41 किसी ने कहा : "अगर **अल्लाह** तआला ने फ़ुलां के बिग़ैर जन्नत दी तो मैं जन्नत में न जाऊंगा या 42 कहा : अगर **अल्लाह** तआला ने फ़ुलां अ़मल की वज्ह से जन्नत दी तो मैं जन्नत में न जाऊंगा" ऐसे पर हुक्मे **कुफ़्र** है। (مَجْمَعُ الْاَنْهُر ج ۲ ص ۵۰۹)

43 एक शख़्स ने दूसरे शख़्स से कहा : "अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी तेरी सिफ़ारिश करे तो मैं उस की सिफ़ारिश क़बूल नहीं करूंगा।" ऐसा कहना **कुफ़्र** है।

44 "अगर **ख़ुदा** भी मुझे इस काम का हुक्म देता तो मैं न करता।" येह कहना **कुफ़्र** है। (عالمگیری ص ۲۵۸)

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن इस मस्अले के तह़्त फ़रमाते हैं : मैं कहता हूं और अगर इस से येह मुराद ली जाए कि इस काम का करना मुझ पर बहुत भारी है इस ह़ैसिय्यत से कि अगर येह काम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से नाज़िल किया हुवा फ़र्ज़ होता तो भी मेरा नफ़्स मुझे इस के करने से ज़रूर मन्अ़ करता तो उस की तक्फ़ीर नहीं की जाएगी। (مترجم حاشیه عالمگیری باب احکام المرتدین ص ۲٤)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

﴾45﴿ दो आदमियों में लड़ाई हुई, किसी ने कहा : सुल्ह़ कर लो। इस पर उस ने कहा : तुम तो क्या अगर **ख़ुदा** कहे तब भी सुल्ह़ नहीं करूंगा। येह **कलिमए कुफ़्र** है।

﴾46﴿ एक ने दूसरे से कहा : मैं और तुम **ख़ुदा** के हुक्म के मुवाफ़िक़ काम करें। दूसरे ने कहा : "मैं **ख़ुदा** का हुक्म नहीं जानता या ﴾47﴿ कहा : यहां किसी का हुक्म नहीं चलता" कहने वाला **काफ़िर** है। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 9, स. 179) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : येह कलिमा "**ख़ुदा** का हुक्म नहीं जानता" जब मुत़्लक़ कहा जाए और इस से मुराद इस्तिख़्फ़ाफ़ (हलका जानना) व तौहीने हुक्मे ख़ुदा हो तो इस के कुफ़्र होने में कोई शक नहीं हां अगर उस ने इस के ह़क़ीक़ी मा'ना मुराद लिये जो शरीअ़त को न जानने के हैं तो कुफ़्र नहीं और जब उस (या'नी कहने वाले) की मुराद मा'लूम नहीं तो **तक्फ़ीर** न करने में ह़िफ़ाज़त है अगर्चे ज़ियादा ज़ाहिर इस से इस्तिख़्फ़ाफ़ (या'नी हलका जानना। तौहीन) ही है।

(مترجم حاشیہ عالمگیری باب احکام المرتدین ص ٢٥)

﴾48﴿ "मेरे ज़ुल्मों से तुझे **ख़ुदा** भी नहीं बचाएगा।" येह कहना **कुफ़्र** है।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोजे़ जुमुआ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

49 किसी शख़्स से कहा गया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा त़लब करो।" उस ने जवाब दिया : "मुझे नहीं चाहिये।" जवाब देने वाले पर हुक्मे **कुफ़्र** है।

(منح الروض ص ٥٢٢)

50 किसी ने अपने मोह़सिन का शुक्रिय्या अदा करते हुए कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को जज़ाए ख़ैर दे" मोह़सिन बोला : "मुझे जज़ाए ख़ैर नहीं चाहिये।" मोह़सिन पर हुक्मे **कुफ़्र** है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ए'तिराज़ के बारे में सुवाल जवाब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ए'तिराज़ करना कैसा ?

सुवाल : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर **ए'तिराज़** करना कैसा ?

जवाब : क़त़ई कुफ़्र है और मो'तरिज़ **काफ़िर व मुरतद**।

अल्लाह पर ए'तिराज़ करना क्यूं कुफ़्र है ?

सुवाल : येह भी वज़ाह़त कर दीजिये कि आख़िर **ए'तिराज़** करना क्यूं **कुफ़्र** है ?

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

जवाब : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर **ए'तिराज़** से बचने का शरीअ़त में हुक्म है और हर मुसल्मान का हुक्मे शरीअ़त के आगे सरे तस्लीम ख़म है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ख़ालिक़ो मालिक है, उसी عَزَّوَجَلَّ के पैदा कर्दा बन्दे का उस عَزَّوَجَلَّ पर **ए'तिराज़** करना उस عَزَّوَجَلَّ की शदीद तरीन तौहीन है। مَعَاذَاللهعَزَّوَجَلَّ अगर ए'तिराज़ की इजाज़त दे दी जाए तो फिर जिस की समझ में जो कुछ आएगा वोह कहता फिरेगा कि मसलन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फुलां काम क्यूं किया ? फुलां काम क्यूं नहीं किया ? इस को यूं नहीं और यूं करना चाहिये था वग़ैरा वग़ैरा। अगर अ़क़्लन भी देखा जाए तो **ए'तिराज़** करना ग़लत़ ही है क्यूं कि **ए'तिराज़** उस पर क़ाइम होता है जिस में कोई ख़ामी हो या जो ग़लतियां या ग़लत़ फ़ैसले वग़ैरा करता हो जब कि रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ की ज़ाते सितूदा सिफ़ात हर त़रह की ख़ामी व ख़त़ा से पाक है। हां येह बात जुदा है कि नाक़िसुल अ़क़्ल बन्दा बा'ज़ बातों की मस्लह़तें न समझ पाए। बहर ह़ाल मुसल्मान को चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हर काम को मब्नी बर ह़िक्मत ही यक़ीन करे ख़्वाह उस की अपनी अ़क़्ल में आए या न आए। ज़बान पर

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

आना कुजा दिल में भी **ए'तिराज़** को जगह न दे। इस ज़िम्न में **फ़तावा रज़विय्या शरीफ़** जिल्द 29 में मौजूद एक तफ़्सीली फ़तवे से सुर्ख़ियों और अपनी बिसात़ भर तस्हील[(1)] के साथ इक़्तिबास पेश करने की सआदत ह़ासिल करता हूं "**ए'तिराज़ करना क्यूं कुफ़्र है?**" इस का जवाब اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बहुत अच्छी त़रह़ समझ में आ जाएगा चुनान्चे **मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن **फ़रमाते हैं :**

सत्तर हज़ार जादूगर सज्दे में गिर गए !

"इब्ने जरीर" ने ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत किया कि जब सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को **मौला** عَزَّوَجَلَّ ने रसूल कर के फ़िरऔ़न की त़रफ़ भेजा, मूसा

(1) सहल करना, आसान करना।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

عَلَيْهِ السَّلَام चले तो निदा हुई, मगर **ऐ मूसा** ! फ़िरऔन ईमान न लाएगा। मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने दिल में कहा : फिर मेरे जाने से क्या फ़ाएदा है ? इस पर बारह[12] उ़लमाए मलाइकए उ़ज़्ज़ाम عَلَيْهِمُ السَّلَام ने कहा : **ऐ मूसा** ! आप को जहां का हुक्म है जाइये, येह वोह राज़ है कि बा वस्फ़े कोशिश (या'नी कोशिश के बा वुजूद) आज तक हम पर भी न खुला।

और आख़िर नफ़्ए़ बिअ़्सत (या'नी रसूल के भेजने का फ़ाएदा) सब ने देख लिया कि दुश्मनाने ख़ुदा हलाक हुए, दोस्ताने ख़ुदा ने उन की (या'नी ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की) गुलामी इख़्तियार कर के अ़ज़ाब से नजात पाई। एक जल्से में **सत्तर हज़ार साहिर सज्दे में गिर गए** और एक ज़बान बोले :

اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۲۱﴾ رَبِّ مُوْسٰى وَ هٰرُوْنَ ﴿۱۲۲﴾
(پ ۹ الاعراف ۱۲۱،۱۲۲)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : हम ईमान लाए जहान के रब पर, जो रब है मूसा और हारून का।

दर्से अ़त्तार : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मा'सूम

होते हैं वोह हरगिज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर **ए'तिराज़** नहीं करते । सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दिल में ख़याल आना مَعَاذَ الله عَزَّوَجَلَّ बर बिनाए **ए'तिराज़** नहीं हिक्मत पर ग़ौर करते हुए था, और आप عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को **हिक्मत** कानों से सुनाने बताने के बजाए आंखों से दिखाने की तरकीब फ़रमाई गई और वोह येह कि **फ़िरऔन** चूंकि शक़िय्ये अज़ली (या'नी हमेशा के लिये बद बख़्त) था इस लिये ईमान न लाया मगर आप عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के उस अज़ली काफ़िर के पास **नेकी की दा'वत** देने का सवाब कमाने के लिये तशरीफ़ ले जाने की बरकत से 70 हज़ार जादूगर ईमान ले आए।

मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن मजीद फ़रमाते हैं : **मौला** عَزَّوَجَلَّ क़ादिर था और है कि बे किसी **नबी** (और आस्मानी) **किताब** के तमाम जहान को एक आन में हिदायत (इनायत) फ़रमा दे।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

وَلَوْ شَآءَ اللّٰہُ لَجَمَعَھُمْ عَلَی الْھُدٰی فَلَا تَکُوْنَنَّ مِنَ الْجٰھِلِیْنَ ﴿۳۵﴾

(پ۷ الانعام ۳۵)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) चाहता तो उन्हें हिदायत पर इकठ्ठा कर देता तो ऐ सुनने वाले तू हरगिज़ नादान न बन।

अल्लाह चाहता तो किसी को भूक ही न लगती

मगर उस ने दुन्या को आ़लमे अस्बाब बनाया और हर ने'मत में अपनी ह़िक्मते बालिग़ा के मुत़ाबिक़ मुख़्तलिफ़ ह़िस्सा रखा है। वोह चाहता तो इन्सान वग़ैरा जानदारों को भूक ही न लगती, या भूके होते तो किसी का सिर्फ़ नामे पाक लेने से, किसी का हवा सूंघने से पेट भरता। ज़मीन जोतने (या'नी हल चलाने) से रोटी पकाने तक जो सख़्त मशक़्क़तें पड़ती हैं किसी को न होतीं। मगर उस (عَزَّوَجَلَّ) ने यूंही चाहा और इस में भी बे शुमार इख़्तिलाफ़ (फ़र्क़) रखा। किसी को इतना दिया कि लाखों पेट उस के दर से पलते हैं और किसी पर उस के अहलो इ़याल के साथ तीन तीन फ़ाक़े गुज़रते हैं। ग़रज़ हर चीज़ में,

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

اَھُمۡ یَقۡسِمُوۡنَ رَحۡمَتَ رَبِّکَ ؕ نَحۡنُ قَسَمۡنَا بَیۡنَھُمۡ مَّعِیۡشَتَھُمۡ فِی الۡحَیٰوۃِ الدُّنۡیَا (پ۲۵ الزخرف ۳۲)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या तुम्हारे रब की रह़मत वोह बांटते हैं ? हम ने उन में उन की ज़ीस्त का सामान दुन्या की ज़िन्दगी में बांटा।

की **नैरंगियां** हैं। (मगर) अह़मक़ बद अ़क़्ल, या अज्हले बद दीन (या'नी सख़्त जाहिल गुमराह) वोह उस की नामूस (बारगाहे अ़ज़्मत) में चूनो चरा करे कि "यूं क्यूं किया, यूं क्यूं न किया ?" सुनता है ! उस की शान है :

یَفۡعَلُ اللّٰہُ مَا یَشَآءُ (پ۱۳ ابرھیم ۲۷)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जो चाहे करे।

उस की शान है :

اِنَّ اللّٰہَ یَحۡکُمُ مَا یُرِیۡدُ ﴿۱﴾ (پ۶ المائدہ ۱)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हुक्म फ़रमाता है जो चाहे।

उस की शान है :

لَا یُسۡـَٔلُ عَمَّا یَفۡعَلُ وَھُمۡ یُسۡـَٔلُوۡنَ ﴿۲۳﴾ (پ۱۷ الانبیاء ۲۳)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : उस से नहीं पूछा जाता जो वोह करे और उन सब से सुवाल होगा।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

हज़ारों ईंटों की तक़्सीम की बेहतरीन मिसाल

ज़ैद ने रुपै की हज़ार ईंटें ख़रीदीं, पानसो (500) मस्जिद में लगाईं, पानसो पाख़ाने की ज़मीन और क़दम्चों[1] में। क्या उस से कोई उलझ सकता है कि एक हाथ की बनाई हुई, एक मिट्टी से बनी हुई, एक आवे (भट्टी) से पकी हुई, एक रुपै की मोल ली (या'नी ख़रीदी) हुई हज़ार ईंटें थीं, उन पानसो में क्या ख़ूबी थी कि मस्जिद में सर्फ़ (इस्ति'माल) कीं ? और उन में क्या ऐब था कि जाए नजासत (नजासत ख़ाने) में रखीं। अगर कोई अह़मक़ उस (अपने पल्ले से ईंटें ख़रीद कर लगाने वाले) से पूछे तो वोह येही कहेगा कि मेरी मिल्क थीं मैं ने जो चाहा किया।

बादशाह से उलझने वाले फ़क़ीर को कोई अ़क़्लमन्द नहीं कहता

जब मजाज़ी (ग़ैरे ह़क़ीक़ी) झूटी मिल्क का येह ह़ाल है तो ह़क़ीक़ी सच्ची मिल्क का क्या पूछना ! हमारा और हमारी जान व माल और तमाम जहां का वोह एक अकेला पाक निराला सच्चा मालिक है। उस के काम,

मदीना

(1) W.C. या खुड्डी के पाए। जिस पर पाउं रख कर क़ज़ाए ह़ाजत के लिये बैठते हैं।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ो शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

उस के अह़काम में किसी को मजाले दम ज़दन (दम मारने की जुरअत) क्या मा'ना ! क्या कोई उस का हमसर (हम पल्ला) या उस पर अफ़्सर है जो उस से "क्यूं और क्या" कहे ! मालिके अ़लल इत़्लाक़ (या'नी मालिके मुत़्लक़, हर काम का मालिको मुख़्तार) है, बे इश्तिराक है (शिर्कत से पाक), जो चाहा किया और जो चाहे करेगा। ज़लील फ़क़ीर बे हैसिय्यत ह़क़ीर अगर बादशाहे जब्बार से उलझे तो उस का सर खुजाया है, शामत ने घेरा है। उस (बादशाह से उलझने वाले) से हर आ़क़िल (या'नी अ़क़्लमन्द) येही कहेगा : ओ बद अ़क़्ल बे अदब ! अपनी ह़द पर रह। जब यक़ीनन मा'लूम है कि बादशाह कमाले आ़दिल और जमीअ़ कमाले सिफ़ात में यक्ता व कामिल है तो तुझे उस के अह़काम में दख़्ल देने की क्या मजाल !

گدائے خاک نشینی تو حافظا مخروش   نظامِ مملکتِ خویش خُسرواں دانند(1)

(तू ख़ाक नशीन गदागर है ऐ ह़ाफ़िज़ ! शोर मत कर, अपनी सल्त़नत के निज़ाम को बादशाह जानते हैं)

(1) दीवाने ह़ाफ़िज़, स. 258

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

सेठ तो दाना नोकर पर भी ए'तिराज़ नहीं किया करता

अफ़्सोस ! कि दुन्यवी, मजाज़ी (ग़ैरे ह़क़ीक़ी) झूटे बादशाहों की निस्बत तो आदमी को येह ख़याल हो और **मलिकुल मुलूक** (बादशाहों का बादशाह) बादशाहे ह़क़ीक़ी جَلَّ جَلَالُهٗ के अह़काम में राय ज़नी करे। सलात़ीन तो सलात़ीन अपना बराबर ज़ी बल्कि अपने से भी कम रुत्बा शख़्स बल्कि अपना नोकर या ग़ुलाम (भी) जब किसी सिफ़त का उस्तादे माहिर हो और ख़ुद येह शख़्स (या'नी उस नोकर का सेठ अगर) उस से आगाह नहीं तो उस के अक्सर कामों को हरगिज़ न समझ सकेगा (कि) येह सेठ उतना इदराक (शुऊ़र) ही नहीं रखता। मगर अ़क़्ल से ह़िस्सा है तो (सेठ होने के बा वुजूद) उस (नोकर) पर मो'तरिज़ भी न होगा। जान लेगा कि येह इस काम का उस्ताद व ह़कीम है, मेरा ख़याल वहां तक नहीं पहुंच सकता। ग़रज़ अपनी फ़ह्म (अ़क़्ल) को क़ासिर (नाक़िस) जानेगा न कि उस (नोकर) की ह़िक्मत को। फिर रब्बुल अरबाब, ह़कीमे ह़क़ीक़ी, आ़लिमुस्सिर्रे वल ख़फ़ी عَزَّوَجَلَّ के असरार (या'नी भेदों) में ख़ौज़ (ग़ौर) करना और जो समझ में न आए उस पर मो'तरिज़ होना अगर बे दीनी नहीं (तो) जुनून (या'नी पागल पन) है अगर जुनून नहीं (तो)

बे दीनी है। وَالْعِيَاذُ بِاللّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْن। (और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह जो तमाम जहानों का परवर्दगार है)

"मिक़्नात़ीस क़ुत़्ब तारे की त़रफ़ क्यूं !"
येह ए'तिराज़ कोई भी नहीं करता

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मज़ीद फ़रमाते हैं : **ऐ अ़ज़ीज़** ! किसी बात को ह़क़ जानने के लिये उस की ह़क़ीक़त जाननी लाज़िम नहीं होती, दुन्या जानती है कि **मिक़्नात़ीस** लोहे को खींचता है और मिक़्नात़ीसी क़ुव्वत दिया हुवा लोहा **सितारए क़ुत़्ब** की त़रफ़ तवज्जोह करता है। (या'नी मिक़्नात़ीस की ख़ासिय्यत येह है कि उस का रुख़ क़ुत़्ब तारे की त़रफ़ ही रहता है) मगर इस की ह़क़ीक़त व कुन्ह (तह) कोई नहीं बता सकता कि इस ख़ाकी (ज़मीनी) लोहे और उस अफ़्लाकी (आस्मानी) सितारे में कि यहां से **करोड़ों मील दूर** है बाहम क्या उल्फ़त ? और क्यूंकर उसे इस की जिहत (या'नी सम्त) का शुऊ़र (समझ) है ? और एक येही नहीं आ़लम में **हज़ारों ऐसे अ़जाइब** हैं कि बड़े बड़े फ़लासिफ़ा ख़ाक छान कर मर गए और उन की कुन्ह (या'नी तह) न पाई...... फिर इस (न जानने) से उन बातों (या'नी उन हज़ारों अ़जाइबात) का इन्कार नहीं हो

सकता। आदमी अपनी जान ही को (या'नी अपने ही बारे में) बताए (कि) वोह क्या शै है जिसे येह "मैं" कहता है, और क्या चीज़ जब निकल जाती है तो मिट्टी का ढेर बे ह़िस्सो ह़रकत रह जाता है!

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 29, स. 293 ता 296)

"अल्लाह ने मेरी क़िस्मत अच्छी नहीं बनाई" कहना कैसा ?

सुवाल : अगर कोई यूं कहे : "मैं बहुत परेशान हूं, पता नहीं, क्या ख़त़ा मुझ से ऐसी हुई है, जिस की मुझ को सज़ा मिल रही है ! मैं ने देखा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझ से बिल्कुल ख़ुश नहीं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी क़िस्मत अभी तक तो ज़रा भी अच्छी नहीं बनाई।" इस बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब : येह जुम्ला कि "पता नहीं, क्या ख़त़ा मुझ से ऐसी हुई है जिस की मुझ को सज़ा मिल रही है" बहुत बुरा है ऐसा हरगिज़ हरगिज़ न कहा जाए क्यूं कि हम गुनाहों से मा'सूम नहीं, हम तो ख़त़ाओं में सर ता पा डूबे हुए हैं। गुनाहों से **मा'सूम** सिर्फ़ अम्बिया व फ़िरिश्ते عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام हैं। मदनी मश्वरा है, **फ़ैज़ाने सुन्नत** (जिल्द अव्वल) सफ़ह़ा 1032 ता 1042 का

मुत़ालआ़ फ़रमा लीजिये। और दूसरा जुम्ला कि "मैं ने देखा............(اِلَخ) । इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ए'तिराज़ का पहलू नुमायां है जो कि **कुफ़्र** है। और **ए'तिराज़** ही मक़्सूद हो तो **सरीह़ कुफ़्र** है।

"अल्लाह ने मेरे नसीब में परेशानी क्यूं रखी है" कहना कैसा ?

सुवाल : अल्लाह तआ़ला ने आख़िर मेरे ही नसीब में इतनी परेशानी क्यूं रखी है? येह जुम्ला कहना कैसा है?

जवाब : इस जुम्ले में **अल्लाह** तआ़ला पर **ए'तिराज़** का पहलू नुमायां है जो कि **कुफ़्र** है। और **ए'तिराज़** ही मक़्सूद हो तो **सरीह़ कुफ़्र** है।

शह्वत परस्ती भी बुरे ख़ातिमे का सबब है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़बान को क़ाबू में रखना बेहद ज़रूरी है, कहीं ज़बान की बे एह़तियाती हमेशा के लिये **दोज़ख़** में न झोंक दे। अपने आप को हमेशा गुनाहों से बचाते रहना चाहिये कि गुनाहों की नुहूसत से ईमान बरबाद होने का ख़त़रा रहता है। **याद रखिये !** शह्वत परस्ती भी **बुरे ख़ातिमे** का एक सबब है लिहाज़ा जिन को ग़ैर औ़रतों के ख़यालात

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

तंग करें या **अम्रदे ह़सीन** (या'नी पुर कशिश लड़के) से शह्वत के बा वुजूद दोस्ती, नज़्दीकी या उन को लज़्ज़त के साथ देखने, लिपटा लेने, मज़ाक़ मस्ख़री व खींचातानी करने, गले में हाथ डालने की ख़्वाहिश हो वोह इस ह़िकायत को पढ़ लिया करें या ज़ेह्न में दोहरा लिया करें :

दो अम्रद पसन्द मुअज़्ज़िनों की बरबादी

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 472 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बयानाते अ़त्तारिय्या**" **ह़िस्सए दुमुव** सफ़ह़ा 123 ता 127 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद मुअज़्ज़िन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं त़वाफ़े का'बा में मश्ग़ूल था कि एक शख़्स पर नज़र पड़ी जो ग़िलाफ़े का'बा से लिपट कर एक ही दुआ़ की तकरार कर रहा था : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे दुन्या से मुसल्मान ही रुख़्सत करना।" मैं ने उस से पूछा : इस के इ़लावा कोई और दुआ़ क्यूं नहीं मांगते ? उस ने कहा : मेरे **दो भाई** थे, बड़ा भाई **चालीस साल** तक मस्जिद में बिला मुआ़वज़ा अज़ान देता रहा। जब उस की मौत का वक़्त आया तो उस ने **क़ुरआने पाक** मांगा,

हम ने उसे दिया ताकि इस से बरकतें ह़ासिल करे, मगर **कु़रआन शरीफ़** हाथ में ले कर वोह कहने लगा : "तुम सब गवाह हो जाओ कि मैं कु़रआन के तमाम ए'तिक़ादात व अह़कामात से बेज़ारी ज़ाहिर करता और **नसरानी** (क्रिस्चेन) मज़्हब इख़्तियार करता हूं।" फिर वोह मर गया। इस के बा'द **दूसरे भाई** ने **तीस बरस तक** मस्जिद में फ़ी सबीलिल्लाह عَزَّوَجَلَّ अज़ान दी। मगर उस ने भी आख़िरी वक़्त **नसरानी** (या'नी क्रिस्चेन) होने का इक़रार किया और मर गया। लिहाज़ा मैं अपने ख़ातिमे के बारे में बेहद फ़िक्र मन्द हूं और हर वक़्त **ख़ातिमा बिलख़ैर** की दुआ़ मांगता रहता हूं। **ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद मुअज़्ज़िन** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस से इस्तिफ़्सार फ़रमाया कि तुम्हारे **दोनों भाई** आख़िर ऐसा कौन सा गुनाह करते थे ? उस ने बताया : "**वोह ग़ैर औ़रतों में दिल चस्पी लेते थे और अमरदों** (या'नी बे रीश लड़कों) **को** (शह़वत से) **देखते थे।**"

(الرَّوضُ الفائق ص۱۷)

रिश्तेदार का रिश्तेदार से पर्दा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ज़ब हो गया ! क्या अब भी ग़ैर औ़रतों से बे पर्दगी और बे तकल्लुफ़ी से

बाज़ नहीं आएंगे ? क्या अब भी ग़ैर औ़रतों नीज़ अपनी भाभी, चची, ताई, मुमानी (कि येह भी शरअ़न सब ग़ैर औ़रतें ही हैं इन) से अपनी निगाहों को नहीं बचाएंगे ? इसी त़रह़ चचाज़ाद, तायाज़ाद, मामूंज़ाद, फूफीज़ाद और ख़ालाज़ाद का नीज़ बीवी की बहन और बहनोई का आपस में पर्दा है। **ना मह़रम पीर और मुरीदनी** का भी पर्दा है। मुरीदनी अपने ना मह़रम पीर का हाथ नहीं चूम सकती।

अम्रद को शह्वत से देखना ह़राम है

ख़बरदार! अम्रद (या'नी ख़ूब सूरत लड़का) **तो आग है आग! शह्वत के बा वुजूद अम्रद** (ख़ूब सूरत लड़के) **का क़ुर्ब, उस की दोस्ती, उस के गले में हाथ डालना उस के साथ मज़ाक़ मस्ख़री, आपस में कुश्ती, खींचातानी और लिपटा लिपटी जहन्नम में झोंक सकती है। अम्रद** (ख़ूब सूरत लड़के) से दूर रहने ही में आ़फ़िय्यत है अगर्चे उस बेचारे का कोई क़ुसूर नहीं, **अम्रद** होने के सबब उस की दिल आज़ारी भी मत कीजिये, मगर उस से अपने आप को बचाना बेह़द ज़रूरी है। हरगिज़ **अम्रद** को स्कूटर पर अपने पीछे मत बिठाइये, ख़ुद भी उस के पीछे मत बैठिये कि

आग आगे हो या पीछे उस की तपश हर सूरत में पहुंचेगी। शह्वत न हो जब भी **अम्रद** से गले मिलना मह़ल्ले फ़ितना (या'नी फ़ितने की जगह) है, और शह्वत होने की सूरत में गले मिलना बल्कि हाथ मिलाना बल्कि **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : **अम्रद की त़रफ़ शह्वत के साथ देखना भी ह़राम है।** (دُرِّمُختار ج۲ ص۹۸،تفسیراتِ احمدیہ ص۵۵۹) उस के बदन के हर हिस्से ह़त्ता कि लिबास से भी निगाहों को बचाइये। उस के तसव्वुर से अगर शह्वत आती हो तो इस से भी बचिये, उस की तह़रीर या किसी चीज़ से शह्वत भड़क्ती हो तो उस से निस्बत रखने वाली हर चीज़ से नज़र की ह़िफ़ाज़त कीजिये, ह़त्ता कि उस के मकान को भी मत देखिये। अगर उस के वालिद या बड़े भाई वग़ैरा को देखने से उस का तसव्वुर क़ाइम होता है और शह्वत चढ़ती है तो उन को भी मत देखिये।

अम्रद के साथ 70 शैत़ान

अम्रद (ख़ूब सूरत लड़के) के ज़रीए़ किये जाने वाले शैत़ाने अ़य्यारो मक्कार के तबाहकार वार से ख़बरदार करते हुए मेरे **आक़ा आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा। (ابن عدی)

फ़रमाते हैं : मन्क़ूल है : **औ़रत के साथ दो शैत़ान होते हैं और अम्रद के साथ सत्तर**(70) ।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 23, स. 721)

बहर ह़ाल अज्नबिय्या औ़रत (या'नी जिस से शादी जाइज़ हो) उस से और **अम्रद** (या'नी ह़सीन लड़के) से अपनी आंखों और अपने वुजूद को दूर रखना सख़्त ज़रूरी है वरना अभी आप ने उन **दो भाइयों** की अम्वात के तश्वीश नाक मुआ़मलात पढ़े जो ब ज़ाहिर नेक थे। मेहरबानी फ़रमा कर **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना का मत़्बूआ़ मुख़्तसर रिसाला **क़ौमे लूत़ की तबाह कारियां** पढ़ लीजिये।

नफ़्से बे लगाम तो गुनाहों पे उक्साता है
तौबा तौबा करने की भी आ़दत होनी चाहिये

"अल्लाह मेरे दुश्मनों को ख़ुशह़ाल रखता है" कहना कैसा ?

सुवाल : अगर कोई परेशानी में यूं कह बैठे : "मैं जिन लोगों से प्यार करता हूं वोह तो परेशानी में रहते हैं जब कि मेरे दुश्मनों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ख़ुशह़ाल रखता है।" ऐसे के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब : अगर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला पर ए'तिराज़ की निय्यत से कहा तो **कुफ़्र** है।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

हमारे ह़क़ में क्या बेहतर है, हमें नहीं मा'लूम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो करता है यक़ीनन वोह सह़ीह़ करता है बसा अवक़ात बा'ज़ मुआ़मलात बन्दे की समझ में नहीं आते लेकिन उस के ह़क़ में उसी में बेहतरी होती है। चुनान्चे पारह दूसरा **सूरतुल बक़रह** की आयत 216 में इर्शाद होता है :

وَعَسٰۤى اَنْ تَكْرَهُوْا شَیْــٴًـا وَّ هُوَ خَیْرٌ لَّكُمْۚ وَ عَسٰۤى اَنْ تُحِبُّوْا شَیْــٴًـا وَّ هُوَ شَرٌّ لَّكُمْؕ وَ اللّٰهُ یَعْلَمُ وَ اَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ۠ ﴿۲۱۶﴾

(پ ۲ البقرۃ ۲۱۶)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें बुरी लगे और वोह तुम्हारे ह़क़ में बेहतर हो और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें पसन्द आए और वोह तुम्हारे ह़क़ में बुरी हो और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) जानता है और तुम नहीं जानते।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बारे में कहना कि "ग़रीबों का साथ नहीं देता"

सुवाल : इस जुम्ले "**अल्लाह** ने हर मोड़ पर येह साबित किया कि मैं मजबूरों और ग़रीबों का साथ नहीं देता।" का क्या हुक्म है ?

जवाब : इस जुम्ले में अल्लाह तआ़ला की वाज़ेह़ त़ौर पर तौहीन की गई है। सरीह़ कुफ़्र है।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

"अल्लाह ज़ालिमों का साथ देता है" कहना कैसा ?

सुवाल : अगर कोई यूं कहे : "लोगों के साथ जो चाहें करें, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से उन ज़ालिमों को फुल आज़ादी है" तो इस के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब : अगर कहने वाले की निय्यत येह है कि ज़ालिमों को **अल्लाह** रब्बे इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ढील और मोहलत मिली हुई है तो कुफ़्र नहीं हां अगर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला पर **ए'तिराज़** के त़ौर पर कहा है तो **सरीह़ कुफ़्र** है। याद रहे कि किसी ज़ालिम को ढील मिलने या उस की फ़ौरी या जीते जी पकड़ न होने में भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़िक्मतें होती हैं अगर्चे हमारी समझ में न आएं। ज़ालिमों को **ढील** देने के सिल्सिले में पारह 29 **सूरतुल क़लम** की आयत नम्बर 44, 45 में इर्शाद होता है :

سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَیْثُ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۴۴﴾ وَ اُمْلِیْ لَهُمْ ؕ اِنَّ كَیْدِیْ مَتِیْنٌ ﴿۴۵﴾

(پ ۲۹ القلم ۴۴،۴۵)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क़रीब है कि हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता ले जाएंगे जहां से उन्हें ख़बर न होगी। और मैं उन्हें ढील दूंगा, बेशक मेरी **ख़ुफ़्या तदबीर** बहुत पक्की है।

पारह 4 **सूरए आले इमरान** आयत 178 में इर्शाद फ़रमाया गया है :

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوٓا اَنَّمَا نُمْلِى لَهُمْ خَيْرٌ لِّاَنْفُسِهِمْ ؕ اِنَّمَا نُمْلِى لَهُمْ لِيَزْدَادُوٓا اِثْمًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿۱۷۸﴾

(پ۴ اٰلِ عمران ۱۷۸)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हरगिज़ काफ़िर इस गुमान में न रहें कि वोह जो हम उन्हें ढील देते हैं कुछ उन के लिये भला है, हम तो इसी लिये उन्हें ढील देते हैं कि और गुनाह में बढ़ें और उन के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब है।

"अल्लाह को चाहिये कि बुरों से फ़ौरन बदला ले" कहना कैसा ?

सुवाल : "अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बुरे लोगों को फ़ौरन सज़ा दे कर बदला ले लिया करे तो कम अज़ कम लोग तो मुत़्मइन हो जाएं कि वाक़ेई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ देखता है।" ऐसा कहने वाले के लिये क्या हुक्म होगा ?

जवाब : इस जुम्ले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर येह **ए'तिराज़** है कि वोह बुरे आदमी से फ़ौरन बदला क्यूं नहीं ले लेता और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ए'तिराज़ करना **कुफ़्र** है।

आफ़त व राहत के बारे में पुर हिक्मत रिवायत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन्सान को गुस्से में या परेशानी के वक़्त ज़बान पर क़ाबू रखने की ज़ियादा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

ज़रूरत होती है कि कहीं कोई ऐसी शिकायात या ख़ुराफ़ात मुंह से न निकल जाएं जिस से **ईमान** के लाले पड़ जाएं। दुन्यवी आफ़त व मुसीबत मुसल्मान के हक़ में अक्सर बहुत बड़ी **ने'मत** होती है, जैसा कि **मन्क़ूल** है : **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : जब मैं किसी बन्दे पर **रह़्म** फ़रमाना चाहता हूं तो उस की बुराई का बदला दुन्या ही में देता हूं, कभी बीमारी से, कभी घर वालों में मुसीबत डाल कर, कभी तंगिये मआ़श से, फिर भी अगर कुछ बचता है तो मरते वक़्त उस पर सख़्ती करता हूं ह़त्ता कि जब वोह मुझ से मुलाक़ात करता है तो **गुनाहों से ऐसा पाक होता है जैसा कि उस दिन था जिस दिन कि उस की मां ने उसे जना था।** और मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम कि मैं जिस बन्दे को **अ़ज़ाब** देने का इरादा रखता हूं उस को उस की हर नेकी का बदला दुन्या ही में देता हूं, कभी जिस्म की सिह़्ह़त से, कभी फ़राख़िये रिज़्क़ से, कभी अहलो इयाल की ख़ुशह़ाली से, फिर भी अगर कुछ रह जाता है तो मरते वक़्त उस पर आसानी कर दी जाती है ह़त्ता कि जब मुझ से मिलता है तो उस की नेकियों में से कुछ भी नहीं रहता कि वोह नारे जहन्नम से बच सके।

(شرحُ الصّدور ص۲۸)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

आसाइशों पर मत फूलो !

गाड़ियों, इमारतों, दौलतों, सिह़्ह़तों और त़रह़ त़रह़ की ने'मतों की अपने ऊपर कस्रतों को देख कर डर जाना चाहिये कि कहीं येह दुन्या में नेकियों की जज़ा न हो और ग़ुर्बतों, आफ़तों, बीमारियों और त़रह़ त़रह़ की मुसीबतों का अपने ऊपर सिल्सिला देख कर सब्र करना और दिल बड़ा रखना चाहिये कि हो सकता है येह आख़िरत की राह़त सामानियों का पेश ख़ैमा हो । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से हम दोनों जहां की भलाइयां त़लब करते हैं

डर था कि इस्यां की सज़ा, अब होगी या रोज़े जज़ा

दी उन की रह़मत ने सदा, येह भी नहीं वोह भी नहीं

"अल्लाह عَزَّوَجَلَّ गुनहगारों की नहीं सुनता" कहना कैसा ?

सुवाल : येह कहना कैसा कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम गुनहगारों की नहीं सुनता।"

जवाब : "नहीं सुनता" येह जुम्ला हमारे यहां "क़बूल नहीं फ़रमाता" के मा'ना में भी बोला जाता है। लिहाज़ा यहां इस जुम्ले का मत़लब येह है कि **अल्लाह** तबारक व तआ़ला हम गुनहगारों की दुआ़ क़बूल नहीं फ़रमाता और येह जुम्ला पारह 24 **सूरतुल मुअमिन** आयत 60 के ह़िस्से "اُدْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ"

(**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** मुझ से दुआ़ करो मैं क़बूल करूंगा) के ख़िलाफ़ होने की वज्ह से गुमराही पर मुश्तमिल है इस से तौबा करना फ़र्ज़ है और आयिन्दा इस त़रह़ की बातों से एह़तिराज़ करना (या'नी बचना) ज़रूरी है। हां, अगर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला पर **ए'तिराज़** करने की निय्यत से कहा तो **सरीह़ कुफ़्र** है।

"अल्लाह ने सारी मुसीबतें मुझ पर डाल दी हैं" कहना

सुवाल : परेशानियों से तंग आ कर अगर कोई यूं बक दे : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे आज तक दिया ही क्या है? खुद तो आस्मान पर बैठा हुकूमत कर रहा है और सारी मुसीबतें और परेशानियां मेरे घर में डाल रखी हैं, ज़िन्दगी के किसी भी ह़िस्से में मुझे ख़ुशी नहीं मिली।" तो क्या हुक्म है?

जवाब : इस में वाज़ेह़ त़ौर पर **अल्लाहु** रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ की तौहीन के साथ साथ उस पर **ए'तिराज़** करना और उस के लिये **मकान** मानना पाया जा रहा है। येह कलाम कुफ़्रिय्यात से भरपूर है। कहने वाला **काफ़िर** हो गया।

हर एक को इम्तिह़ान के लिये तय्यार रहना चाहिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! ईमान के साथ ज़िन्दगी

गुज़ारने वाला ही काम्याब है, बड़ा नाज़ुक मुआमला है, शैत़ान हर वक़्त **ईमान** की घात में लगा रहता है। मुसीबत आने पर **सब्र** करते हुए हर ह़ाल में **रब्बे ज़ुल जलाल** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहना चाहिये। पाक परवर्दगार عَزَّوَجَلَّ हमारा मालिको मुख़्तार है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिसे चाहे **बे ह़िसाब जन्नत** में दाख़िल फ़रमाए और जिसे चाहे **इम्तिह़ान** में मुब्तला कर के **सब्र** की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा कर इन्आ़मो इक्राम की बारिशें फ़रमाए। मोमिने कामिल वोही है जो हर ह़ाल में रब्बे ज़ुल जलाल عَزَّوَجَلَّ का शुक्र गुज़ार बन्दा बन कर रहे। मुसीबतों की वज्ह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर **ए'तिराज़** कर के ख़ुद को हमेशा के लिये जहन्नम के ह़वाले कर देने वाला शख़्स बहुत ही बड़ा बद नसीब है। **हर मुसल्मान को इम्तिह़ान के लिये तय्यार रहना चाहिये,** ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का पारह 2 **सूरतुल बक़रह** की आयत नम्बर 214 में फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا یَاْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِیْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ ؕ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या इस गुमान में हो कि जन्नत में चले जाओगे और अभी तुम पर अगलों की सी रूदाद (ह़ालत) न आई।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

कंघियों से गोश्त नोचे गए

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान सफ़ह़ा** 53 पर मुन्दरिजए बाला आयते करीमा के तह़्त फ़रमाते हैं : और जैसी सख़्तियां उन (या'नी अगले मुसल्मानों) पर गुज़र चुकीं अभी तक तुम्हें पेश न आईं। येह आयत **ग़ज़्वए अह़ज़ाब** के मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई जहां मुसल्मानों को सर्दी और भूक वग़ैरा की सख़्त तक्लीफ़ें पहुंची थीं। इस में उन्हें **सब्र** की तल्क़ीन फ़रमाई गई और बताया गया कि **राहे ख़ुदा** (عَزَّوَجَلَّ) में तकालीफ़ बरदाश्त करना क़दीम से ख़ासाने ख़ुदा رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى का मा'मूल रहा है, अभी तो तुम्हें पहलों की सी तक्लीफ़ें पहुंची भी नहीं। **बुख़ारी शरीफ़** में ह़ज़रते सय्यिदुना **ख़ब्बाब बिन अरत** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि **हुज़ूर सय्यिदे आ़लम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सायए का'बा में अपनी चादरे मुबारक से तक्या किये तशरीफ़ फ़रमा थे। हम ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की, कि हुज़ूर हमारे लिये क्यूं दुआ़ नहीं फ़रमाते ? हमारी क्यूं मदद नहीं

करते ? फ़रमाया : **तुम से पहले लोग गिरिफ़्तार किये जाते थे, ज़मीन में गढ़ा खोद कर उस में दबा दिये जाते थे, आरे से चीर कर दो टुकड़े कर दिये जाते थे और लोहे की कंघियों से उन के गोश्त नोचे जाते थे और उन में से कोई मुसीबत उन्हें उन के दीन से रोक न सकती थी।** (بُخاری ج٤ص٣٨٦حدیث٦٩٤٣)

गुनाहों के सबब ईमान बरबाद हो गया

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه **और हज़रते सय्यिदुना शैबान राई** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه दोनों एक जगह इकठ्ठे हुए। सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه सारी रात रोते रहे। सय्यिदुना शैबान राई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सबबे गिर्या दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया : मुझे **बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़** रुला रहा है। आह ! मैं ने एक शैख़ से **चालीस साल** इल्म ह़ासिल किया। उस ने **साठ साल** तक मस्जिदुल ह़राम زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में इबादत की मगर उस का ख़ातिमा कुफ़्र पर हुवा। सय्यिदुना शैबान राई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने कहा : ऐ सुफ़्यान ! वोह उस के **गुनाहों की शामत** थी (या'नी गुनाहों के सबब उस का ईमान बरबाद हो गया)

आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी हरगिज़ मत करना। (سبع سنابل ص ٣٤) **अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

"अल्लाह ने मुसीबतों के पहाड़ तोड़े हैं" कहना

सुवाल : येह जुम्ला कहना कैसा कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझ पर मुसीबतों के पहाड़ तोड़े हुए हैं ?"

जवाब : इस जुम्ले में **ए'तिराज़** का पहलू नुमायां है इस लिये **कुफ़्र** है।

"अल्लाह के ख़ज़ाने में मेरे लिये कुछ नहीं" कहना कैसा ?

सुवाल : किसी ने कहा : "शायद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ज़ाने में मेरे लिये कुछ भी नहीं है, मेरी दुन्यावी ख़्वाहिशात उस ने कभी पूरी नहीं कीं, ज़िन्दगी भर मेरी कोई दुआ क़बूल नहीं हुई, जिस किसी से मह़ब्बत की वोह दूर चला गया, मेरा हर ख़्वाब टूटा, मेरे तमाम अरमान कुचले गए, अब आप ही बताएं मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर कैसे ईमान लाऊं ?" उस के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब : मज़्कूरा कलिमात, रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ पर शदीद ए'तिराज़ात से पुर और कुफ़्रिय्यात से भरपूर हैं नीज़ क़ाइल ने अपने **ईमान** से ख़ुद ही इन्कार भी कर दिया है। येह कलिमात कहने वाला **काफ़िर व मुरतद** है।

मुसीबत छुपाने की फ़ज़ीलत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तकालीफ़ पर शिक्वा करने के बजाए **सब्र** की आ़दत बनानी चाहिये कि शिकायत करने से मुसीबत दूर नहीं हो जाती बल्कि बे सब्री करने से **सब्र** का अज्र ज़ाएअ़ हो जाता है। बिला ज़रूरत मुसीबत का इज़्हार करना भी अच्छी बात नहीं। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना **इब्ने अ़ब्बास** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह़्तशम, शाफ़ेए़ उमम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **"जिस के माल या जान में मुसीबत आई फिर उस ने उसे पोशीदा रखा और लोगों को उस की शिकायत न की तो अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **पर ह़क़ है कि उस की मग़्फ़िरत फ़रमा दे।"**

(اَلْمُعْجَمُ الْاَ وْسَط لِلطَّبَرَانِیّ ج ۱ ص ۲۱٤ حديث ۷۳۷)

दाढ़ में दर्द का शिक्वा करने वाले को तम्बीह

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی नक़्ल करते हैं : हज़रते सय्यिदुना **अह़नफ़ बिन क़ैस** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक बार मेरी **दाढ़** में **शदीद दर्द** हुवा जिस के सबब मैं सारी रात न सो सका। मैं ने दूसरे दिन अपने **चचाजान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان की ख़िदमत में शिकायत की, कि मैं **दाढ़ के दर्द** की वज्ह से सारी रात न सो सका। इस बात को मैं ने तीन बार दोहराया। इस पर उन्हों ने **फ़रमाया** : तुम ने एक ही रात में होने वाले अपने दर्द की इतनी ज़ियादा शिकायत कर डाली ! ह़ालां कि मेरी **आंख** को ज़ाएअ़ हुए **तीस बरस** हो चुके हैं, (अगर्चे देखने वालों को मा'लूम हो मगर अपनी ज़बान से) मैं ने कभी किसी से इस की शिकायत नहीं की ! (اِحیاءُ العلوم ج ۴ ص ۱۶۴) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मुसीबत ज़दो मत घबराओ !

सुवाल : जो लोग परेशानियों और तंग दस्तियों वग़ैरा की वज्ह से **शिक्वा व शिकायत** करते बल्कि बा'ज़ अवक़ात مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ **कुफ़्रिय्या कलिमात** बक देते हैं ऐसों को किस त़रह़ समझाया जाए ?

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

जवाब : ऐसे लोगों को परवर्दगार عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा कर्दा बे शुमार ने'मतों का एह़सास दिला कर समझाया जा सकता है चुनान्चे पारह 14 **सूरतुन्नह़्ल** आयत नम्बर 18 में इर्शादे कुरआनी है

وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की ने'मतें गिनो तो उन्हें शुमार न कर सकोगे।

बन्दे को चाहिये कि उन ने'मतों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करता रहे कि इस त़रह़ ने'मतों में इज़ाफ़ा होता चला जाएगा जैसा कि हमारे प्यारे **अल्लाहु करीम** عَزَّوَجَلَّ का पारह 13 सूरए इब्राहीम आयत नम्बर 7 में इर्शादे अ़ज़ीम है :

لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ

(پ۱۳ ابراھیم ۷)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अगर एह़सान मानोगे तो मैं तुम्हें और दूंगा।

जो नादान इन्सान ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ की ने'मत व एह़सान का कुफ़्रान (या'नी नाशुक्री) करते हैं उन को **ख़ुदाए मजीद** عَزَّوَجَلَّ ने अ़ज़ाबे शदीद की वई़द भी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (ابن سنی)

इर्शाद फ़रमाई है । चुनान्चे इसी आयते करीमा में आगे बयान किया गया है :

وَلَئِنۡ كَفَرۡتُمۡ اِنَّ عَذَابِىۡ لَشَدِيۡدٌ (پ۱۳ ابراھیم ۷)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर नाशुक्री करो तो मेरा अ़ज़ाब सख़्त है ।

रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ मुअमिनीन व मुअमिनात को इम्तिहानात में मुब्तला कर के इन के सय्यिआत (या'नी गुनाहों को) मिटाता और दरजात बढ़ाता है । लिहाज़ा जब भी मुसीबत आए पारह 20 **सूरतुल अ़न्कबूत** की दूसरी आयते करीमा को ज़ेह्न में ले आइये :

اَحَسِبَ النَّاسُ اَنۡ يُّتۡرَكُوۡۤا اَنۡ يَّقُوۡلُوۡۤا اٰمَنَّا وَهُمۡ لَا يُفۡتَنُوۡنَ ۝ (پ ۲۰ العنکبوت ۲)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या लोग इस घमन्ड में हैं कि इतनी बात पर छोड़ दिये जाएंगे कि कहें : हम ईमान लाए और उन की आज़्माइश न होगी ।

अ़ाम मुसल्मान भी आज़्माए जाते हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! सिर्फ़ अम्बिया व मुरसलीन عَلَيْهِمُ السَّلَام, सहाबा व ताबिई़न رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم اَجْمَعِین और औलियाए कामिलीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن का ही इम्तिहान नहीं लिया जाता, **अ़ाम**

मुसल्मान भी आज़्माए जाते हैं । और फिर **सब्र** कर के ख़ूब अज्र कमाते हैं : चुनान्चे ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने रह़मत निशान है :

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ؕ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۵۵﴾ الَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿۱۵۶﴾ؕ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ ۟ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ ﴿۱۵۷﴾

(پ ۲ البقرۃ ۱۵۵ تا ۱۵۷)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ज़रूर हम तुम्हें आज़्माएंगे कुछ डर और भूक से और कुछ मालों और जानों और फलों की कमी से और ख़ुश ख़बरी सुना उन **सब्र** वालों को कि जब उन पर कोई मुसीबत पड़े तो कहें : हम **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के माल हैं और हम को उसी की त़रफ़ फिरना । येह लोग हैं जिन पर इन के रब (عَزَّوَجَلَّ) की दुरूदें हैं और रह़मत और येही लोग राह पर हैं ।

जे सोहना मेरे दुख विच राज़ी
ते मैं सुख नू चुल्हे पावां

ख़ुदा का हर काम ह़िक्मत भरा होता है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ के हर काम में कसीरहा कसीर ह़िक्मतें होती हैं, उन ह़िक्मतों तक हमारी अ़क़्ले नाक़िस की रसाई

नहीं। कभी बन्दे को परेशानी में मुब्तला कर के उस के गुनाहों को मिटाया या दरजात को बढ़ाया जाता है। बारहा ऐसा भी होता है कि बन्दा किसी काम में अपने लिये बेहतरी समझता है हालां कि वोह काम उस के लिये बेहतर नहीं होता। **रब्बे करीम** तबारक व तआला अपनी हिक्मते अ़ज़ीम से उसे उस से बचा लेता है। चुनान्चे पारह 2 **सूरतुल बक़रह** की आयत नम्बर 216 में ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने हिक्मत निशान है :

وَعَسٰۤى اَنْ تُحِبُّوْا شَیْــٴًـا وَّ هُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ؕ (پ٢ البقرة ٢١٦)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क़रीब है कि कोई बात तुम्हें पसन्द आए और वोह तुम्हारे ह़क़ में बुरी हो।

काश ! मेरी कोई दुआ़ न क़बूल होती

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारी जिन दुआ़ओं की क़बूलिय्यत का असर दुन्या में ज़ाहिर नहीं होता वोह भी दर ह़क़ीक़त मक़्बूल ही है चुनान्चे **अल्लाह** के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल ज़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : **दुआ़** बन्दे की, तीन बातों से ख़ाली नहीं होती ﴿1﴾ या तो जल्द ही उस की दुआ़ का नतीजा (ज़िन्दगी) में ज़ाहिर हो जाता है या

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

﴾2﴿ उस के लिये आख़िरत में भलाई जम्अ़ की जाती है या ﴾3﴿ **फिर उस जैसी कोई मुसीबत उस बन्दे से दूर फ़रमा देता है।** (مُسند امام احمد ج٤ص٣٧ حديث ١١١٣٣) **एक दूसरी रिवायत में है** (कि जब बन्दा आख़िरत में अपनी दुआ़ओं का **सवाब** देखेगा जो दुन्या में मक़्बूल न हुई थीं) तमन्ना करेगा, **काश !** दुन्या में मेरी कोई **दुआ़** क़बूल न होती (या'नी सब आख़िरत के वासिते़ जम्अ़ हो जातीं)

(اَلْمُستَدرَك لِلْحاكِم ج٢ص١٦٤ حديث ١٨٦٢)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहिये

मुसल्मान को चाहिये कि जब भी मुसीबत पहुंचे तो **सब्रो** शुक्र के साथ इस मकूले का मिस्दाक़ बना रहे कि "रिज़ाए मौला अज़ हमा औला" या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मरज़ी सब से बेहतर है। **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان **नूरुल इरफ़ान** सफ़ह़ा 531 पर फ़रमाते हैं : "बा'ज़ दीहाती लोग ईमान ले आते, अगर ईमान (लाने) के बा'द औलाद, दौलत, तन्दुरुस्ती पाते तो कहते कि इस्लाम सच्चा दीन है और अगर इस के ख़िलाफ़ होता (या'नी उन को आफ़ात और मसाइब पेश

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

आते और दुन्यवी फ़वाइद न पहुंचते) तो कहते : (مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ) इस्लाम बुरा दीन है जब से हम मुसल्मान हुए हैं तब से **मुसीबत** में पड़ गए हैं !" चुनान्चे पारह 17 **सूरतुल हज्ज** की ग्यारहवीं आयते करीमा में इर्शाद होता है :

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ۚ فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ ۣاطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ ۣانْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ۚ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةَ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ۝۱۱

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और कुछ आदमी **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की बन्दगी एक कनारे पर करते हैं फिर अगर उन्हें कोई भलाई बन गई जब तो चैन से हैं और जब कोई जांच (आज़्माइश) आ पड़ी मुंह के बल पलट गए, दुन्या और आख़िरत दोनों का घाटा येही है सरीह़ नुक़्सान।

मक्तबतुल मदीना का मत़्बूआ़ तह़रीरी बयान **ख़ुदकुशी का इलाज** (80 सफ़ह़ात) का मुत़ालआ़ मुसीबत ज़दों में **सब्र** का जज़्बा उभारने के लिये اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ बेह़द मुफ़ीद रहेगा।

है सब्र तो ख़ज़ानए फ़िरदौस भाइयो !
आ़शिक़ के लब पे शिक्वा कभी भी न आ सके

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو یعلی)

"अल्लाह पर ए'तिराज़ करना सरीह कुफ़्र है" के पच्चीस हुरूफ़ की निस्बत से ए'तिराज़ वाले कुफ़्रिय्यात की 25 मिसालें

﴾1﴿ जो शख़्स बतौरे ए'तिराज़ कहे : मैं नहीं जानता कि **अल्लाह** ने येह चीज़ कुरआने पाक में क्यूं ज़िक्र कर दी ! येह कहना **कुफ़्र** है। (مِنَحُ الرَّوض للقاری ص ٤٥٧)

﴾2﴿ अगर कोई बतौरे ए'तिराज़ कहे : "**अल्लाह** ने आख़िर अ़रबी ही में कुरआने पाक क्यूं नाज़िल किया, उर्दू या सिन्धी या फ़ुलां ज़बान में नाज़िल करना चाहिये था।" मो'तरिज़ **काफ़िर** है।

﴾3﴿ ए'तिराज़ करते हुए येह कहना : "**अल्लाह** ने फ़ज्र की नमाज़ बहुत जल्दी रख दी है" **कुफ़्र** है।

﴾4﴿ बतौरे ए'तिराज़ यूं कहना : "कभी हम फ़ुलां के साथ थोड़ा कुछ कर लें **अल्लाह** तआ़ला फ़ौरन हमें पकड़ लेता है।" येह **कलिमए कुफ़्र** है।

﴾5﴿ "वोह शख़्स लोगों के साथ कुछ भी करे **अल्लाह** की त़रफ़ से उस को फ़ुल (FULL) आज़ादी है।" येह **कलिमए कुफ़्र** है।

﴾6﴿ बतौरे ए'तिराज़ येह कहना : "**अल्लाह** को हम ग़रीबों का भी ख़याल रखना चाहिये।" येह **कलिमए कुफ़्र** है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

﴾7﴿ “**अल्लाह** ने हमेशा मेरे दुश्मनों का साथ दिया है” येह कहना **कुफ़्र** है।

﴾8﴿ “हमेशा सब कुछ **अल्लाह** पर छोड़ कर देख लिया कुछ नहीं होता” येह कहना **कुफ़्र** है।

﴾9﴿ “**अल्लाह** ने आज तक मेरी कोई दुआ़ पूरी नहीं की” येह **कलिमए कुफ़्र** है।

﴾10﴿ “एक शख़्स ने हमारी नाक में दम कर रखा है, मज़े की बात येह है कि **अल्लाह** भी ऐसों के साथ होता है” येह **कलिमए कुफ़्र** है।

﴾11﴿ “जो कुछ वोह हमारे साथ करता है **अल्लाह** ख़ुद खड़े हो कर उस के साथ हमारा तमाशा देखता है” येह **कलिमए कुफ़्र** है।

﴾12﴿ जो कहे : “मुझे नहीं मा'लूम **अल्लाह** ने जब मुझे दुन्या में कुछ न दिया तो मुझे पैदा ही क्यूं किया !” येह क़ौल **कुफ़्र** है। (مِنَحُ الرَّوض، ص ۵۲۱)

﴾13﴿ बतौरे ए'तिराज़ येह कहना : “मैं नहीं जानता **अल्लाह** ने फुलां को क्यूं पैदा कर दिया !” **कुफ़्र** है।

(مِنَحُ الرَّوض، ص ۵۲۲)

﴾14﴿ “दुन्या बनाने वाले क्या तेरे मन में समाई ! काहे को दुन्या बनाई !” येह **कलिमए कुफ़्र** है।

《15》 जिस शख़्स ने मुसीबतें पहुंचने पर कहा : "ऐ **अल्लाह** तूने माल ले लिया, फ़ुलां चीज़ ले ली, अब क्या करेगा? अब क्या चाहता है? या अब क्या बाक़ी रह गया?" येह क़ौल **कुफ़्र** है। (اَلْبَحْرُ الرَّائِق ج٥ ص ٢٠٧)

《16》 किसी मिस्कीन ने अपनी मोह़ताजी देख कर येह कहा : "ऐ ख़ुदा! फ़ुलां भी तेरा बन्दा है उसे तूने कितनी ने'मतें दे रखी हैं और मैं भी तेरा बन्दा हूं मुझे किस क़दर रन्ज व तक्लीफ़ देता है आख़िर येह क्या इन्साफ़ है?" ऐसा कहना **कुफ़्र** है।

(فتاوٰی عالمگیری ج٢ ص ٢٦٢)

《17》 "आप के **अल्लाह** ने उस ज़ालिम शख़्स को कुछ न दिखाया" येह **कलिमए कुफ़्र** है।

《18》 अगर किसी ने बीमारी, बे रोज़गारी, ग़ुर्बत या किसी मुसीबत की वज्ह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ए'तिराज़ करते हुए कहा : "ऐ मेरे रब! तू मुझ पर क्यूं ज़ुल्म करता है? ह़ालां कि मैं ने तो कोई गुनाह किया ही नहीं।" तो वोह **काफ़िर** है।

《19》 "**अल्लाह** ने हमेशा बुरे लोगों का साथ दिया है।" येह **कलिमए कुफ़्र** है।

《20》 "**अल्लाह** ने मजबूरों को और परेशान किया है" येह **कलिमए कुफ़्र** है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

﴾21﴿ जो कहे : "**अल्लाह** तआला ने ऐसा काम किया जिस में हिक्मत नहीं।" येह क़ौल **कुफ़्र** है।

(فتاوی تاتارخانیه ج ٥ ص ٤٦٢)

﴾22﴿ "**अल्लाह** ने येह हुक्म तो सरासर फ़ुज़ूल दे दिया है" येह **कलिमए कुफ़्र** है।

﴾23﴿ "खुदा के अह़काम में बे जा सख़्ती है।" येह **कलिमए कुफ़्र** है।

﴾24﴿ किसी से कहा गया : फ़ुलां तेरे साथ सह़ीह़ नहीं कर रहा। येह सुन कर उस ने कहा : "मेरे साथ तो खुदा भी सह़ीह़ नहीं कर रहा।" येह जवाब **कुफ़्रिय्या** है।

(عالمگیری ج ٢ ص ٢٦٠)

﴾25﴿ जिस ने कोई बुरा जानवर देख कर कहा : "**अल्लाह** को भी कोई और काम न था जो ऐसा जानवर पैदा कर दिया !" येह **कलिमए कुफ़्र** है। (اَیضاً ص ٢٦٢)

कुरआने पाक की तौहीन के बारे में सुवाल जवाब

सुवाल : कुरआने पाक की तौहीन करने वाले के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब : ऐसा शख़्स **काफ़िर** है।

रिश्वत को هٰذا مِنْ فَضْلِ رَبِّیْ कहना कैसा ?

सुवाल : रिश्वत को هٰذا مِنْ فَضْلِ رَبِّیْ (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** येह मेरे रब के फ़ज़्ल से है (پ ١٩ النمل ٤٠), कहना कैसा ?

जवाब : रिश्वत का लेन देन क़त्ई ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस को परवर्दगार عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल क़रार देना **कुफ़्र** है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बेबाकी और सरकशी बहुत महंगी पड़ती है। आइये एक इ़ब्रत नाक **ह़िकायत** समाअ़त फ़रमाइये चुनान्चे

फ़िरऔ़न का फ़तवा ख़ुद उसी के मुंह पर

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना **जिब्रईले** अमीन عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **फ़िरऔ़न** के पास एक इस्तिफ़्ता लाए जिस का मज़्मून येह था कि बादशाह का क्या हुक्म है ऐसे ग़ुलाम के बारे में जिस ने अपने आक़ा की दौलत व ने'मत में परवरिश पाई फिर उस की नाशुक्री की और उस के ह़क़ में न सिर्फ़ मुन्किर (या'नी इन्कार करने वाला हुवा) बल्कि ख़ुद "आक़ा" होने का मुद्दई (दा'वेदार) बन गया। इस पर **फ़िरऔ़न** ने येह जवाब दिया कि जो नमक ह़राम ग़ुलाम अपने आक़ा की ने'मतों का इन्कार करे और उस के मुक़ाबिल (या'नी मुक़ाबले पर) आए, उस की सज़ा येह है कि उस को दरिया में डबो दिया जाए। चुनान्चे **फ़िरऔ़न** जब ख़ुद दरियाए नील में डूबने लगा तो ह़ज़रते सय्यिदुना **जिब्रईले**

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा। (ابن عدی)

अमीन عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उस का वोही फ़तवा उस के सामने कर दिया और उस को उस ने पहचान लिया।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 350, تفسیر کبیر ج٦ ص٢٩٦)

मिज़ाज पुर्सी के जवाब में आयत का मज़ाक़ उड़ाना

सुवाल : एक ने त़बीअ़त पूछी तो दूसरे ने मज़ाक़ करते हुए जवाब दिया : "नस्रुम्मिनल्लाहि वफ़त्हुन क़रीब" येह जवाब कैसा है ?

जवाब : कुफ़्र है कि येह आयते कुरआनी نَصۡرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتۡحٌ قَرِیۡبٌ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की मदद और जल्द आने वाली फ़त्ह़ (پ۲۸ الصف ۱۳) से इस्तिहज़ा (या'नी मज़ाक़ उड़ाना) है।

अगर क़ुरआने पाक हाथ से छूट जाए ?

सुवाल : अगर बे ख़याली में मुस्ह़फ़ (क़ुरआन शरीफ़) हाथ से छूट कर या अलमारी से सरक कर ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए तो ?

जवाब : न गुनाह है न ही इस का कोई कफ़्फ़ारा।

क़ुरआने पाक ज़मीन पर पटख़ दिया तो ?

सुवाल : अगर किसी ने مَعَاذَ اللّٰه **क़ुरआने पाक** ज़मीन पर पटख़ दिया तो उस के लिये क्या हुक्म है ?

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

जवाब : مَعَاذَاللّٰه जान बूझ कर **कुरआने पाक** को ज़मीन पर पटख़ देना इस की तौहीन है और येह **कुफ़्र** है।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा अम्जदिय्या, जि. 4, स. 441)

हुक्मे कुरआन को ग़लत़ जानना कुफ़्र है

सुवाल : जो कुरआने पाक के बयान कर्दा अह़काम को सच्चा न माने उस के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब : जो **कुरआने पाक** की बयान कर्दा किसी भी चीज़ के सच्चा होने में शक करे वोह **काफ़िर** है।

ईमान की ह़िफ़ाज़त की मदनी सोच अपनाइये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़फ़्लत का दौर दौरा है, **मदनी माह़ोल** से दूरी, इ़ल्मे दीन से अ़दमे दिल चस्पी, सिर्फ़ दुन्या बनाने की लगन और फ़क़त़ धन कमाने की धुन इन्तिहाई तश्वीश नाक है। ग़फ़्लत की नींद से बेदार हो जाइये, ईमान की ह़िफ़ाज़त की **मदनी सोच** अपनाइये, बुरे ख़ातिमे के ख़ौफ़ से आंसू बहाइये, ख़ौफ़े ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ के बाइ़स तन्हाई में रोने की आ़दत बनाइये और ज़बान और आंखों बल्कि हर उ़ज़्वे बदन पर **कुफ़्ले मदीना** लगाइये, ग़ैर ज़रूरी बातों से बचते हुए ख़ामोशी की आ़दत

अपनाइये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **ईमान** भी सलामत रहेगा, **जहन्नम** से पनाह भी मिलेगी और **जन्नतुल फ़िरदौस** में दाख़िला भी नसीब होगा।

दोज़ख़ की कहां ताब है कमज़ोर बदन में
हर उ़ज़्व का 'अ़त्तार' लगा क़ुफ़्ले मदीना

नजात के तीन मदनी फूल

हज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! **नजात** क्या है ? फ़रमाया : ﴾1﴿ **अपनी ज़बान** को रोक रखो (या'नी अपनी ज़बान वहां खोलो जहां फ़ाएदा हो, नुक़्सान न हो) और ﴾2﴿ तुम्हारा **घर** तुम्हें किफ़ायत करे (या'नी बिला ज़रूरत घर से न निकलो) और ﴾3﴿ **गुनाहों** पर रोना इख़्तियार करो। (سُنَنُ التِّرمذی ج٤ص١٨٢حديث٢٤١٤)

रोने के फ़ज़ाइल पर दो रिवायात

(1) **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जो शख़्स **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ से **रोता** है वोह हरगिज़ जहन्नम में नहीं जाएगा ह़त्ता कि दूध थन में वापस आ जाए।

(سُنَنُ التِّرمذی، ج٣ص٢٣٦حديث١٦٣٩)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़हा करूं (या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشکوال)

(2) **हज़रते** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से एक **आंसू** का बहना मेरे नज़्दीक **एक हज़ार दीनार** सदक़ा करने से ज़ियादा पसन्दीदा है। (شُعَبُ الْاِیْمَان ج١ص٥٠٢رقم٨٤٢)

मूसीक़ी के साथ तिलावत

सुवाल : मूसीक़ी के साथ **क़ुरआन शरीफ़** पढ़ना कैसा है ?

जवाब : मज़ामीर (या'नी आलाते मूसीक़ी) के साथ **क़ुरआने पाक** पढ़ना **कुफ़्र** है। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 9, स. 182)

क्या क़ुरआन पढ़ना कुफ़्र भी हो सकता है ?

सुवाल : क्या क़ुरआन पढ़ना कभी **कुफ़्र** भी हो सकता है ?

जवाब : जी हां। मसलन शाने ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इहानत (या'नी गुस्ताख़ी) की निय्यत से कोई आयत पढ़ना। चुनान्चे

फ़ारूक़े आ'ज़म ने पेश इमाम को क़त्ल करवा दिया !

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان, अपनी अ़ज़ीमुश्शान किताब **शाने ह़बीबुर्रह़मान** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सफ़ह़ा 260 पर **रूहुल बयान** के ह़वाले से नक़्ल करते हैं

कि हज़रते उमर फ़ारूक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के ज़माने में एक **इमाम** हर नमाज़ में पारह 30 की **सूरत** عَبَسَ وَتَوَلّٰى ۝ ही पढ़ा करता था। हज़रते उमर फ़ारूक़ (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ) को ख़बर हुई तो आप (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ) ने उस इमाम को बुला कर **क़त्ल करा दिया,** क्यूं कि **हर नमाज़** में येह सूरत पढ़ने से मा'लूम फ़रमाया (या'नी उस को पहचान लिया) कि येह **मुनाफ़िक़** है और इस के दिल में **हुज़ूर** عَلَيْهِ السَّلَام से **बुग़्ज़** है, इस लिये इस सूरत को हर नमाज़ में पढ़ता है जो ब ज़ाहिर **इताब** मा'लूम होती है। (رُوحُ البیان ج۱۰ص۳۳۱)

सूरए इख़्लास पढ़ने वाले सहाबी की हिकायत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! बुरी निय्यत से कुरआने करीम की सूरत पढ़ने वाले बद नसीब गुस्ताख़े रसूल का कितना दर्दनाक अन्जाम हुवा ! अब अच्छी निय्यत से कुरआने पाक की सूरत पढ़ने वाले ख़ुश नसीब "सहाबी" رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की हिकायत पढ़ कर आंखें ठन्डी कीजिये। चुनान्चे येही **मुफ़्ती साहिब** मजीद फ़रमाते हैं : इस से मा'लूम हुवा कि बा'ज़ आयात बा'ज़ आयात से अफ़्ज़ल हैं,

एक सह़ाबी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) हर नमाज़ में قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَد (की सूरत) पढ़ते थे। **हु़ज़ूर** عَلَيْهِ السَّلَام ने पूछा कि तुम येह क्यूं करते हो ? अ़र्ज़ किया कि इस में **मेरे रब** की सिफ़ात का ज़िक्र है, इस लिये मुझे येह सूरत प्यारी मा'लूम होती है। **हु़ज़ूर** عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि इस से कह दो कि **रब तआ़ला** इस से **मह़ब्बत** फ़रमाता है।

(مشکوٰۃ، ج۲ص ٤٠١ حدیث ۲۱۲۹, शाने ह़बीबुर्रह़मान, स. 260)

कुरआने पाक पढ़ाने वाले की नक़्क़ाली

सुवाल : कुरआन शरीफ़ पढ़ाने वाले की मज़ाक़ उड़ाने के अन्दाज़ में नक़्क़ाली करना कैसा ?

जवाब : कुफ़्र है। **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : जो मज़ाक़ उड़ाने के त़ौर पर **कुरआन शरीफ़** पढ़ाने वाले उस्ताज़ की त़रह़ डन्डा पकड़ कर बच्चों को समझाता है उस पर हुक्मे **कुफ़्र** है क्यूं कि कुरआने पाक पढ़ाने वाला भी उ़लमाए शरीअ़त की त़रह़ है, पस **कुरआने करीम** या **कुरआने करीम** के पढ़ाने वाले से इस्तिहज़ा (मज़ाक़ उड़ाना) **कुफ़्र** है।

(منح الروض الازھر للقاری ص ٤٧١)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

सूरए लहब की तौहीन

सुवाल : जो पूरे क़ुरआने पाक की नहीं फ़क़त् उस के किसी हिस्से की तौहीन करे मसलन कहे : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को चाहिये था कि सूरए लहब नाज़िल न फ़रमाता।

जवाब : इस क़ौल में **रब्बे करीम** عَزَّوَجَلَّ पर **ए'तिराज़** है और येह कुफ़्र है। याद रखिये ! जो शख़्स **क़ुरआन शरीफ़** या उस में से किसी हिस्से की तौहीन करे या उस को गाली दे या उस का इन्कार करे या उस के किसी हर्फ़ का या किसी आयत का इन्कार करे या उस को झुटलाए या उस के किसी हिस्से या किसी हुक्म को झुटलाए जिस की उस में तस्रीह़ की गई है या जिस की उस में नफ़ी की गई (या'नी इन्कार किया गया) है उस को साबित करे या जिस को उस में साबित किया गया है, उस की नफ़ी (या'नी इन्कार) करे हालां कि वोह इन्कार करने वाला इस को जानता है या इस में कुछ शक करता है तो वोह बिल इज्माअ़ उ़लमाए किराम के नज़्दीक **काफ़िर** है।

आयते क़ुरआनी "न मानने" का हुक्म

सुवाल : क़ुरआने पाक की किसी आयते मुबारका को न मानने वाले के लिये क्या हुक्म है ?

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है । (عبدالرزاق)

जवाब : इस त़रह़ के एक सुवाल के जवाब में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : **आयत** को न मानना या'नी इन्कार करना **कुफ़्र** है, उस के पीछे नमाज़ कैसी ! मगर अ़वाम "न मानना" इसे भी कहते हैं कि गुनाह ख़िलाफ़े आयते क़ुरआनी वाक़ेअ़ हुवा और उसे आयत सुनाई गई और वोह अपने गुनाह से बाज़ न आया, येह बाज़ न आना अगर मह़्ज़ शामते नफ़्स से हो, (कि) आयत पर (तो) ईमान रखता है । न इस से इन्कार करता है न इस का मुक़ाबला करता है तो (अगर्चे) **गुनाह है** (मगर) **कुफ़्र नहीं** । फिर अगर वोह गुनाह ख़ुद कबीरा हो या ब वज्हे आ़दत कबीरा हो जाए और येह शख़्स ए'लान के साथ उस का मुरतकिब हो तो फ़ासिक़े मो'लिन है, उस के पीछे नमाज़ मक्रूहे तह़रीमी या'नी पढ़नी गुनाह और पढ़ी हो तो फेरनी वाजिब । وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم ।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 318)

क्या इन्जील पर भी ईमान लाना होगा ?

सुवाल : क्या इन्जील पर भी ईमान लाना ज़रूरी है ?

जवाब : जी हां । बल्कि हर आस्मानी किताब पर ईमान लाना

ज़रूरी है। चुनान्चे फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : जो शख़्स किसी आस्मानी किताब का इन्कार करे वोह **काफ़िर** है। (منح الروض ص٤٥٦)

क्या रद्दो बदल वाली इन्जील पर भी ईमान लाना ज़रूरी है ?

सुवाल : सुना है इन्जील वग़ैरा में लोगों ने काफ़ी रद्दो बदल कर डाला है क्या फिर भी उस पर ईमान लाना होगा ?

जवाब : सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى आस्मानी किताबों के बारे में इस्लामी अ़क़ीदे की वज़ाहत करते हुए मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ़ **बहारे शरीअ़त** हिस्सए अव्वल **सफ़हा** 29 पर फ़रमाते हैं : सब आस्मानी किताबें और सहीफ़े हक़ हैं और सब **कलामुल्लाह** हैं, उन में जो कुछ इर्शाद हुवा सब पर ईमान ज़रूरी है, मगर येह बात अलबत्ता हुई कि अगली किताबों की हिफ़ाज़त **अल्लाह** तआ़ला ने उम्मत के सिपुर्द की थी, उन से उस का हिफ़्ज़ (तहफ़्फ़ुज़) न हो सका, कलामे इलाही जैसा उतरा था उन के हाथों में वैसा ही बाक़ी न रहा, बल्कि उन के शरीरों ने तो येह किया कि उन में तहरीफ़ें कर दीं, या'नी अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़ घटा बढ़ा दिया। लिहाज़ा जब

कोई बात उन किताबों की हमारे सामने पेश हो तो अगर वोह हमारी किताब (क़ुरआने मजीद) के मुत़ाबिक़ है, हम उस की तस्दीक़ करेंगे और अगर मुख़ालिफ़ है तो यक़ीन जानेंगे कि येह उन की तह़रीफ़ात (तब्दीलियों) से है और अगर मुवाफ़क़त मुख़ालफ़त कुछ मा'लूम नहीं तो हुक्म है कि हम उस बात की न तस्दीक़ करें न तक्ज़ीब (न दुरुस्त मानें न झुटलाएं) बल्कि यूं कहें कि : اٰمَنْتُ بِاللّٰہِ وَمَلٰئِکَتِہٖ وَکُتُبِہٖ وَرُسُلِہٖ. "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्तों और उस की किताबों और उस के रसूलों पर हमारा ईमान है।"

मेमन क़ौम को मज़ाक़न क़ुरआन से साबित करना

सुवाल : कुछ मेमन व ग़ैर मेमन लोग मिल कर बैठे थे। उस में मेमन बिरादरी के बारे में बात छिड़ी, इस पर एक शख़्स ने मज़ाक़न कहा : मेमन भाइयों की तो बहुत बड़ी शान है देखो इन का ज़िक्र क़ुरआने मजीद में भी मौजूद है ! येह कह कर उस ने लहजे के साथ पारह 30 **सूरतुल बलद** की 18वीं आयते करीमा اُولٰٓئِكَ اَصۡحٰبُ الۡمَيۡمَنَةِ ؕ﴿۱۸﴾ तिलावत की। येह सुन कर ह़ाज़िरीन में हंसी का फ़व्वारा उबल पड़ा। इन सब के लिये क्या हुक्मे शरई है ?

जवाब : आयते क़ुरआनी का मज़ाक़ उड़ाना **कुफ़्र** है और जो जान बूझ कर बख़ुशी मुत्तफ़िक़ हो कर हंसा उस पर भी हुक्मे **कुफ़्र** है। हां जो बे इख़्तियार हंस पड़ा या जिस को समझ न पड़ी और दूसरों को देख कर हंस दिया उस पर हुक्मे **कुफ़्र** नहीं।

क़िराअत के इन्कार का क्या हुक्म है ?

सुवाल : क़िराअत की कितनी क़िस्में हैं ? अगर किसी ने किसी क़िराअत का इन्कार किया तो ?

जवाब : सात क़िराअतें मुतवातिर हैं इन में से किसी एक का भी इन्कार करना **कुफ़्र** है। इसी वज्ह से उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं : जहां जो क़िराअत राइज हो वहां वोही पढ़ें ताकि कोई शख़्स ला इल्मी में उस का इन्कार न कर दे चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ़ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल सफ़हा 33 पर सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : क़ुरआने अ़ज़ीम की **सात क़िराअतें** सब से ज़ियादा मश्हूर और मुतवातिर हैं, इन में مَعَاذَ اللّٰه कहीं इख़्तिलाफ़े मा'ना नहीं, वोह सब ह़क़ हैं, इस में उम्मत के लिये आसानी

येह है कि जिस के लिये जो क़िराअत आसान हो वोह पढ़े, और हुक्म येह है कि जिस मुल्क में जो क़िराअत राइज है अ़वाम के सामने वोही पढ़ी जाए, जैसे हमारे मुल्क में क़िराअते आ़सिम ब रिवायते ह़फ़्स, कि लोग ना वाक़िफ़ी से इन्कार करें और वोह مَعَاذَ اللّٰه **कलिमए कुफ़्र** होगा ।

कुरआनो ह़दीस को कहना "कोई चीज़ नहीं"

सुवाल : वलीद ने ग़लती की, इस पर नवीद ने उस की इस्लाह़ के लिये आयाते करीमा व अह़ादीसे मुबारका सुनाईं इस पर वलीद आयात व अह़ादीस के बारे में बोला : "येह कोई चीज़ नहीं है ।" वलीद मुसल्मान रहा या नहीं ?

जवाब : वलीद **मुसल्मान** न रहा । इसी त़रह़ के एक सुवाल के जवाब में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : इस का कुरआनो ह़दीस के मुतअ़ल्लिक़ येह कहना कि, "येह कोई चीज़ नहीं है," येह तो ख़ालिस ऐसा **कुफ़्र** है जिस पर मुरतद्दों वाले अह़काम जारी होते हैं, लिहाज़ा इस पर **तजदीदे इस्लाम** ज़रूरी है और मुसल्मान हो कर औ़रत की रिज़ा मन्दी से

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

दोबारा उस से **निकाह़** करे, अगर उस से **निकाह़** पर राज़ी न हो तो बीवी को इख़्तियार है कि वोह **इद्दत** पूरी कर के किसी और से अपनी मरज़ी के मुत़ाबिक़ निकाह़ करे। وَاللّٰہُ سُبْحَانَہٗ وَتَعَالٰی اَعْلَم।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 13, स. 654)

कुरआने पाक की तौहीन की तक़रीबन 42 मिसालें

﴾1﴿ **कुरआने करीम** या मस्जिद या इसी त़रह़ की वोह चीज़ें जो शरअ़न मुअ़ज़्ज़म (दीनी शिआ़र) हैं उन की जिस ने **तौहीन** की उस ने **कुफ़्र** किया।

(مِنَحُ الرَّوض الازہرللقاری ص۴۵۷)

﴾2﴿ **कुरआने मजीद** की किसी आयत का मज़ाक़ उड़ाना **कुफ़्र** है। (اَیضاً ص۴۵۸)

﴾3﴿ जान बूझ कर **कुरआने पाक** को ज़मीन पर फेंकना **कुफ़्र** है। (फ़तावा अम्जदिय्या, जि. 4, स. 441)

﴾4﴿ जिस ने दफ़ या किसी बाजे के साथ **कुरआन शरीफ़** पढ़ा उस ने **कुफ़्र** किया। (مِنَحُ الرَّوض ص۴۵۶)

﴾5﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के किसी वा'दे या ﴾6﴿ वई़द को झुटलाए वोह **काफ़िर** है। (اَیضاً ص۴۵۶)

﴾7﴿ जिस ने बत़ौरे तौहीन कुरआने मुबीन पर पाउं रखा वोह **काफ़िर** है। (مِنَحُ الرَّوض ص ۴۵۷)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (ابن سنی)

﴾8﴿ जिस शख़्स से कहा गया तू **क़ुरआन शरीफ़** क्यूं नहीं पढ़ता ? या ज़ियादा क़िराअत क्यूं नहीं करता ? उस ने जवाब में तह़क़ीरन कहा : "मेरा दिल भर गया" या कहा : ﴾9﴿ "मुझे ना पसन्द है" येह कहना **कुफ़्र** है । (ایضاً)

﴾10﴿ जिस ने दूसरे से कहा : "قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَد से हंडिया पकाओ ।" उस ने **कुफ़्र** किया । क्यूं कि उस ने इस से मज़ाक़ का इरादा किया, तबर्रुक का नहीं । (اَیضاً ص ٤٥٩) येह हुक्म उस सूरत में है जब इस से मज़ाक़ का इरादा हो तबर्रुक का नहीं ।

﴾11﴿ जिस ने **क़ुरआने करीम** पढ़ने का मज़ाक़ उड़ाया उस ने कुफ़्र किया अलबत्ता अगर क़ारी या उस की आवाज़ व लहजे का मज़ाक़ उड़ाया तो **कुफ़्र** नहीं ।

(اَیضاً ص ٤٥٨)

﴾12﴿ जिस ने बहुत ज़ियादा तिलावते **क़ुरआने मजीद** करने वाले से कहा : "तूने **क़ुरआन शरीफ़** या फ़ुलां सूरत का गिरेबान पकड़ लिया है ।" उस ने **कुफ़्र** किया ।

(اَیضاً ص ٤٥٩)

﴾13﴿ किसी शख़्स को नमाज़े बा जमाअ़त की त़रफ़ बुलाया गया, उस ने कहा : मैं तो तन्हा पढूंगा क्यूं कि

क़ुरआने पाक में है, اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى या'नी उस ने تَنْهٰى से उर्दू वाला "तन्हा" मुराद लिया, ऐसा कहना **कुफ़्र** है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 9, स. 182)

﴾14﴿ "जो **क़ुरआने मजीद** को ग़ैरे अ़रबी कहे" उस पर हुक्मे **कुफ़्र** है। (مِنَحُ الرَّوض ص ٤٦٣) अलबत्ता चन्द अल्फ़ाज़ ऐसे हैं जो इब्तिदाअन अ़जमी थे लेकिन फिर वोह अ़रबी में ही दाख़िल हो गए और अब वोह भी ग़ैरे अ़रबी न रहे।

﴾15﴿ **क़ुरआने करीम** की किसी आयत में तह़रीफ़ व तब्दीली करना या ﴾16﴿ ऐसा करना जाइज़ मानना **कुफ़्र** है। (माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. 6, स. 420)

﴾17﴿ हंसी मज़ाक़ की निय्यत से बे मौक़अ़ आयाते क़ुरआनिया पढ़ना **कुफ़्र** है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 9, स. 182)

﴾18﴿ जो **क़ुरआने पाक** को मख़्लूक़ माने उस ने **कुफ़्र** किया। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 1, स. 20)

﴾19﴿ अगर किसी ने **क़ुरआने मुबीन** को तौहीन की निय्यत से नजासत में डाला या

﴾20﴿ नजासत के क़रीब फेंक दिया तो **काफ़िर** है।

﴾21﴿ जो शख़्स **क़ुरआने मजीद** को नाक़िस कहे वोह **काफ़िर** है। (फ़तावा अम्जदिय्या, जि. 4, स. 442)

www.dawateislami.net

«22» अगर कोई **क़ुरआने अ़ज़ीम** में मौजूद अम्बिया के वाक़िआ़त या «23» रसूलों के मो'जिज़ात का इन्कार करे या «24» **क़ुरआने करीम** में जो च्यूंटियों और «25» हुदहुद के कलाम करने का तज़्किरा है उस में शक करे या «26» ह़ज़रते सय्यिदुना **मूसा** कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और जादूगरों के क़िस्से «27» वाक़िअ़ए अस्रा (मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़्सा तक) «28» अस्ह़ाबे फ़ील और «29» उन पर ह़म्ला करने वाले अबाबील परिन्दों के वाक़िआ़त «30» अस्ह़ाबे कह्फ़ का क़िस्सा «31» ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के आग में डाले जाने का वाक़िआ़ वग़ैरा वग़ैरा **क़िससे क़ुरआन** (या'नी क़ुरआने पाक में बयान कर्दा क़िस्सों) के सच्चा होने में शक करे वोह **काफ़िर** है । जब कि अस्ल वाक़िए़ के वुजूद ही का इन्कार करे । अलबत्ता उस की कोई ऐसी तफ़्सील जो क़ुरआने पाक में सराह़त से (या'नी साफ़ साफ़) मज़्कूर नहीं है उस के इन्कार पर हुक्मे **कुफ़्र** नहीं है ।

«32» "आयात व अह़ादीस कुछ नहीं" कहने वाला **काफ़िर व मुरतद** है । (फ़तावा रज़विय्या, जि. 13, स. 654)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (جمع الجوامع)

《33》 **कुरआने करीम** में जो मलाएका 《34》 जिन्नात और 《35》 शयातीन के वाक़िआत हैं उन को "ख़याली कहानियां" कहने वाला **काफ़िर** है।

《36》 **कुरआने मजीद** में जो किसी एक लफ़्ज़ 《37》 एक हर्फ़ या 《38》 एक नुक़्ते की कमी बेशी का भी क़ाइल है यक़ीनन **काफ़िर व मुरतद** है।

(फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 11, स. 691, माख़ूज़न)

《39》 अगर कोई येह दा'वा करे कि **कुरआने पाक** में जो कुछ है उन में बा'ज़ से बा'ज़ यक़ीनन टकराता है तो वोह **काफ़िर** है। अगर नासिख़ व मन्सूख़ के सबब कहता है तो तावील है और अगर नक़्स या'नी ख़ामी निकालता है तो **काफ़िर**।

《40》 अगर कोई **कुरआने पाक** के मो'जिज़ा होने में शक करे या 《41》 इस के **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से नाज़िल किये जाने में शक करे तो **काफ़िर** है।

《42》 अगर कोई येह कहे कि इस ज़माने में पढ़े लिखे लोग मिलजुल कर कोशिश करें तो **कुरआने करीम** की मिस्ल या **कुरआने अ़ज़ीम** से बेहतर किताब ला सकते हैं तो वोह **काफ़िर** है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

नबी की गुस्ताख़ी के बारे में सुवाल जवाब

सुवाल : नबी की गुस्ताख़ी करने वाले के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब : नबी की अदना सी **गुस्ताख़ी** करने वाला भी **काफ़िर व मुरतद** है। "**शिफ़ा शरीफ़**" सफ़्हा 215 पर है : उ़लमा का इज्माअ़ है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शान में **गुस्ताख़ी** करने वाला **काफ़िर** है और उस पर अ़ज़ाबे इलाही की वईद जारी है और उम्मत के नज़्दीक वोह वाजिबुल क़त्ल है और जो उस के कुफ़्र और अ़ज़ाब होने में शक करे वोह भी **काफ़िर** है। (اَلشِّفاج۲ص۲۱۵)

गुस्ताख़ के साथ क्या सुलूक होना चाहिये ?

सुवाल : गुस्ताख़े रसूल के साथ मुसल्मानों को क्या सुलूक करना चाहिये ?

जवाब : इस ज़िम्न में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن की ख़िदमत में किये गए सुवाल जवाब का ख़ुलासा अ़र्ज़ करता हूं : **सुवाल :** एक मुक़र्रिर ने जल्से में कहा : "**हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़याल फ़रमाया कि मेरे दांत ऐसे रोशन हैं कि आज

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو يعلى)

तक किसी के ऐसे न हुए। (مَعَاذَ اللّٰه) इस तकब्बुर की बिना पर **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दन्दाने अक्दस जंगे उहुद में शहीद हो गया था।" **अल जवाब :** उस ने हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बारे में مَعَاذَ اللّٰه "तकब्बुर" का लफ़्ज़ कहा, येह **सरीह़ कुफ़्र** है। उस का ईमान जाता रहा, उस की औ़रत उस के निकाह़ से निकल गई। उस ने जैसे मज्मअ़ में येह जुम्ला कहा उसी क़िस्म के मज्मअ़ में तौबा करे और इस्लाम लाए। अगर नए सिरे से इस्लाम न लाए तो मुसल्मानों को उस से सलाम व कलाम **ह़राम**, उस के पास बैठना **ह़राम**, उस की शादी ग़मी में शरीक होना **ह़राम**, बीमार पड़े तो उसे पूछने जाना **ह़राम**, मर जाए तो उस के जनाज़े पर जाना **ह़राम**, उसे ग़ुस्ल व कफ़न देना **ह़राम**, उस के जनाज़े की नमाज़ **ह़राम**, उसे मुसल्मानों के क़ब्रिस्तान में दफ़्न करना **ह़राम**, उसे मरने के बा'द कोई सवाब पहुंचाना **ह़राम**, बल्कि उस के कुफ़्र पर मुत्तलअ़ हो कर जो उसे मुसल्मान समझता रहे और उस के साथ मुसल्मानों का सा मुआ़मला करे, बल्कि उस के **कुफ़्र** में शक भी करे तो वोह ख़ुद भी **काफ़िर** हो जाएगा। और जिन लोगों ने इस जुम्ले को सुन कर

पसन्द किया, तो वोह सब पसन्द करने वाले भी उस की मिस्ल **काफ़िर** हो गए और उन की औ़रतें भी उन के **निकाह़** से निकल गईं।"

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 646, 647)

सह़ाबा के गुस्ताख़ों के साथ बरताव

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! गुस्ताख़ों के साथ इस क़िस्म का रविय्या इख़्तियार करने का हुक्म, सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'लीमात से ह़ासिल होता है। जैसा कि **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : मेरे **सह़ाबा** को गाली मत दो, क्यूं कि आख़िर ज़माने में एक क़ौम आएगी, जो मेरे **सह़ाबा** को गाली देगी, पस अगर वोह (गालियां देने वाले) बीमार हो जाएं तो उन की इ़यादत न करना, अगर मर जाएं तो उन की नमाज़े जनाज़ा न पढ़ना, उन से एक दूसरे का निकाह़ न करना, न उन्हें विरासत में से ह़िस्सा देना, न उन्हें सलाम करना और न ही उन के लिये रह़मत की दुआ़ करना। (تاریخ بغداد ج ۸ ص ۱۳۹)

जब सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْھُم اَجْمَعِیْن को गाली देने वाले के बारे में येह हुक्म फ़रमाया गया तो **शाहे**

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

ख़ैरुल अनाम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे आ़ली में **गुस्ताख़ी** करने वाले का मुआ़मला किस क़दर अशद होगा ?

मुरतद से हमदर्दी......?

सुवाल : क्या **मुरतद** के साथ इन्सानी नाते़ से भी हमदर्दी न की जाए ?

जवाब : ह़क़ीक़त में देखा जाए तो मुसल्मान ही "इन्सान" है। जब कि जो अपने **ख़ालिक़** व मालिक عَزَّوَجَلَّ की तौहीन और उस के प्यारे **ह़बीब** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की गुस्ताख़ी करे, वोह नाम निहाद इन्सान बिल यक़ीन बदतर अज़ ह़ैवान है। **मुरतद** के साथ हर त़रह़ के मुक़ात़आ़ (या'नी बायकाट) को भी शायद **इन मा'नों** पर एक गूना हमदर्दी कहा जा सके कि यूं वोह किसी त़रह़ बेज़ार हो कर, ताइब हो कर **दामने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में पनाह ले ले। याद रखिये ! **मुरतद** से हमदर्दी का इज़्हार ईमान के लिये ज़हरे हलाहल (या'नी ज़हरे क़ातिल) है।

मुरतद के बारे में हुक्मे शरई को ज़ुल्म कहना

मुरतद से हमदर्दी करने की पादाश में एक औ़रत के ईमान से हाथ धो बैठने के मुतअ़ल्लिक़ एक फ़तवा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

मुलाहज़ा फ़रमाइये चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن की बारगाहे आ़लीशान में कुछ इस त़रह़ **सुवाल** हुवा : सुन्नियों के मह़ल्ले में एक **क़ादियानी** नया नया रहने आया। ग़यूर सुन्नियों ने अहले मह़ल्ला को उस से मेलजोल करने और किसी क़िस्म का तअ़ल्लुक़ रखने से मन्अ़ किया। इस पर एक औ़रत ने यूं कहा : "**बड़े नमाज़िये पढ़ कर मुल्ला हो गए, हम अ़ज़ाब ही भुगत लेंगे, इस बेचारे क़ादियानी को दिक़** (या'नी तंग) **कर रखा है।**" इस औ़रत के बारे में शरई़ हुक्म क्या है? **अल जवाब :** येह औ़रत नमाज़ की तह़क़ीर करने, अ़ज़ाबे इलाही को हलका ठहराने, **क़ादियानी** (मुरतद) को इस फ़े'ले मुसल्मानां (या'नी बायकाट करने का कहने के सबब) से मज़्लूम जानने और उस से मेलजोल तर्क करने को ज़ुल्म व नाह़क़ समझने के सबब **इस्लाम से ख़ारिज हो गई।** अपने शोहर पर **ह़राम** हो गई, जब तक इन कलिमात से तौबा कर के नए सिरे से इस्लाम न लाए। (माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 654)

क्या वाक़ेई "गुस्ताख़े रसूल की तौबा क़बूल नहीं?"

सुवाल : सुना है **गुस्ताख़े रसूल** की तौबा क़बूल नहीं। अगर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

कोई **गुस्ताख़ी** का मुरतकिब वाक़ेई नादिम हुवा तो क्या करे ?

जवाब : गुस्ताख़े रसूल **काफ़िर व मुरतद** है। इस के **क़बूले तौबा** के बारे में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : हमारे अइम्मए मज़्हब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के नज़्दीक साब (या'नी गुस्ताख़े रसूल) मुरतद है और इस के सब अह़काम मिस्ले मुरतद, मुरतद अगर तौबा करे تُقْبَلُ وَلَا یُقْتَل (क़बूल करेंगे और क़त्ल न करेंगे)। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 152)

सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को चरवाहा कहना कैसा ?

सुवाल : अगर कोई शख़्स सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को "उम्मत का चरवाहा" कहे, उस के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब : येह तौहीन आमेज़ लफ़्ज़ है। कहने वाला तौबा व तजदीदे ईमान करे। इसी त़रह़ के एक सुवाल पर कि किसी मुक़र्रिर ने अपनी तक़रीर में **आक़ाए दो जहान** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शाने अ़ज़्मत निशान में कहा : "वोह उम्मत के चरवाहे थे।" सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने जवाबन इर्शाद फ़रमाया :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

येह (लफ़्ज़) निहायत मुब्तज़ल (या'नी ह़क़ीर) व ज़लील है, ऐसे अल्फ़ाज़ से एह़तिराज़ करे (या'नी बचे) और **तौबा** करे और **तजदीदे निकाह़** करे। मुसल्मान बारगाहे अक़्दस में अ़र्ज़ किया करते थे : رَاعِنَا । या'नी हमारी रिआ़यत फ़रमाइये ! **यहूद** मौक़अ़ पा कर ज़बान दबा कर इस त़रह़ कहते कि ब ज़ाहिर तो वोही (رَاعِنَا) मा'लूम होता मगर वोह कहते : "رَاعِيْنَا" या'नी "हमारे चरवाहे।" इस पर आयते करीमा नाज़िल हुई, इस लफ़्ज़ "رَاعِنَا" से मुमानअ़त फ़रमा कर येह हुक्म दिया कि "اُنْظُرْنَا" कहो या'नी "हमारी त़रफ़ नज़र फ़रमाइये" (कहा करो) तो जिस लफ़्ज़ से **राई** (या'नी चरवाहा) का ईहामे बईद (या'नी दूर का शुबा पड़ता) था उस तक से मुमानअ़त फ़रमाई गई, तो ज़ाहिर है कि खुद इस (चरवाहा कहने) की मुमानअ़त किस दरजे होगी। खुसूसन येह उर्दू का लफ़्ज़ (चरवाहा) तो निहायत सख़ीफ़ (या'नी इन्तिहाई घटिया) है। (सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बारे में) **उम्मत के निगहबान** व मुह़ाफ़िज़ वग़ैरा अल्फ़ाज़ बोलना चाहिये। وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَم ।

(फ़तावा अम्जदिय्या, जि. 4, स. 257, 260)

फ़रियाद है ऐ कश्तिये उम्मत के निगहबां
बेड़ा येह तबाही के क़रीब आन लगा है

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو یعلی)

मूए मुबारक की गुस्ताख़ी करना कैसा ?

सुवाल : सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के **मूए मुबारक** की गुस्ताख़ी करना कैसा ?

जवाब : किसी "बाल" को सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का **मूए मुबारक** तस्लीम करने के बा वुजूद अगर उस की तौहीन करे तो **काफ़िर** है। मूए मुबारक को ईज़ा देने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **व रसूल** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ईज़ा देता है। शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, सुल्ताने शीरीं मक़ाल, साहिबे जूदो नवाल, महबूबे रब्बे ज़ुल जलाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे बा कमाल है : "जिस ने मेरे मुबारक **बाल** को **ईज़ा** दी, उस ने **मुझे** ईज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी, बेशक उस ने **अल्लाह** तआला को ईज़ा दी।" (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ٥٤ ص٣٠٨)

वोह करम की घटा गेसूए मुश्क सा
लुक्कए अब्रे राफ़त (1) पे लाखों सलाम

महबूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से निस्बत रखने वाली चीज़ की गुस्ताख़ी कुफ़्र है

याद रखिये ! नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से निस्बत रखने वाली

(1) लुक्कए अब्रे राफ़त या'नी अ़ज़ीम रह़मत के बादल का टुकड़ा।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

किसी भी चीज़ की **गुस्ताख़ी** करना **कुफ़्र** है । सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى फ़रमाते हैं : "जो शख़्स **हुज़ूरे अक़्दस** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तमाम अम्बिया में आख़िरी नबी न जाने या **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की किसी चीज़ की तौहीन करे या ऐब लगाए, **आप** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के **मूए मुबारक** को तह़क़ीर (या'नी ह़क़ारत) से याद करे, **आप** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के **लिबासे मुबारक** को गन्दा और मैला बताए, **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के **नाख़ुन** बड़े बड़े कहे येह सब **कुफ़्र** है। बल्कि अगर यूंही किसी ने येह कहा : **हुज़ूरे अक़्दस** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खाना तनावुल फ़रमाने के बा'द तीन बार अंगुश्तहाए मुबारक (या'नी मुबारक उंग्लियां) चाट लिया करते थे । इस पर किसी ने कहा : येह अदब के ख़िलाफ़ है या किसी **सुन्नत** की तह़क़ीर (या'नी तौहीन) करे मसलन दाढ़ी बढ़ाना, मूंछें कम करना, इमामा बांधना या शम्ला लटकाना, इन की इहानत (या'नी गुस्ताख़ी) **कुफ़्र** है जब कि **सुन्नत** की तौहीन मक़्सूद हो।"

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 9, स. 181)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हर ऐब से पाक हैं

ख़ुदा की क़सम ! हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हर ऐब से पाक हैं, **आप** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से निस्बत रखने वाली हर चीज़ बा अ़ज़मत है, उ़श्शाक़ को अपने **आक़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हर शै में सआ़दतें और बरकतें ही नज़र आती हैं। चुनान्चे आ़शिक़ों के इमाम मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़ में फ़रमाते हैं

वोह कमाले ह़ुस्ने ह़ुज़ूर है कि गुमाने नक़्स जहां नहीं

येही फूल ख़ार से दूर है येही शम्अ़ है कि धुवां नहीं

कद्दू शरीफ़ की गुस्ताख़ी करना कैसा ?

सुवाल : क्या कद्दू शरीफ़ की तौहीन **कुफ़्र** है ?

जवाब : कद्दू शरीफ़ मक्की मदनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पसन्द था तो अगर مَعَاذَ اللہ किसी को इस ह़ैसिय्यत से ना पसन्द है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पसन्द था तो येह **कुफ़्र** है। सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : किसी के इस कहने पर कि **ह़ुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

को **कद्दू** पसन्द था कोई येह कहे : "मुझे पसन्द नहीं" तो बा'ज़ उ़लमा के नज़्दीक **काफ़िर** है। और ह़क़ीक़त येह है कि अगर इस हैसिय्यत से उसे ना पसन्द है कि **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पसन्द था तो **काफ़िर** है।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 9, स. 181)

मुझे कद्दू ना पसन्द है कहने वाले की ह़िकायत

इस ज़िम्न में एक ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत मुलाह़ज़ा फ़रमाइये चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम अबू यूसुफ़** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के सामने इस रिवायत का जब ज़िक्र आया कि हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कद्दू पसन्द था। येह सुन कर एक शख़्स ने कहा : اَنَا مَا اُحِبُّ الدُّبَّاء या'नी मैं कद्दू पसन्द नहीं करता। इस बात का सुनना था कि ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम अबू यूसुफ़** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने तलवार खींच ली और उस शख़्स से फ़रमाया : तजदीदे इस्लाम कर वरना मैं तुझे ज़रूर क़त्ल कर दूंगा। (شرحُ الشِّفا للقاری ج۲ ص ۵۱) हां अगर इस त़रह़ की सूरते ह़ाल न हो और किसी का नफ़्स कद्दू शरीफ़ को पसन्द नहीं करता इस बिना पर अगर कोई कहता है कि मुझे कद्दू पसन्द नहीं, या मुझे कद्दू नहीं भाता तो उस पर हुक्मे **कुफ़्र** नहीं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

येह कहना, क्या तुम्हारे नबी को गाली दूं ?

सुवाल : **फ़रहान** ने **रहमते आलमिय्यान** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने अ़ज़मत निशान बयान की तो **वलीद** ने गुस्से में बका : "अब क्या मैं तुम्हारे **रसूल** को गाली दूं ?" इस जुम्ले के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब : **वलीदे पलीद** का क़ौल कुफ़्र है कि इस में **वाज़ेह़ गुस्ताख़ी** मौजूद है और ऐसी जगह पर इस्तिफ़्हाम (या'नी सुवालिया अन्दाज़) **गुस्ताख़ी** से मानेअ़ नहीं, कि **गुस्ताख़ी** का दारो मदार उ़र्फ़ (रवाज) पर है और इस्तिफ़्हाम (या'नी पूछना) यहां मक़्सूद भी नहीं। चुनान्चे इस की नज़ीर **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने इस त़रह़ ज़िक्र फ़रमाई : अगर एक शख़्स ने **अल्लाह** तआ़ला का बार बार ज़िक्र किया तो दूसरे ने उस से कहा : "क्या वोह (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) तुम्हारा चचाज़ाद भाई है ?" येह कहना कुफ़्र है क्यूं कि उस ने **अल्लाहु** रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ की तौहीन की **और यूंही क़ुरआन और मस्जिद और दीगर मुअ़ज़्ज़मीन की तौहीन कुफ़्र है।** (غمزعیون البصائر ج ۱ ص ۱۰۸)

मुअ़ज़्ज़मीन की तौहीन कुफ़्र है

सुवाल : अभी आप ने बताया कि दीगर **मुअ़ज़्ज़मीन** की तौहीन

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा। (ابن عدی)

कुफ़्र है। **मुअ़ज़्ज़मीन** के मा'ना और उन की निशान देही भी कर दीजिये ताकि बचना आसान हो।

जवाब : मुअ़ज़्ज़मीन जम्अ़ है "**मुअ़ज़्ज़म**" की और यहां **मुअ़ज़्ज़म** से मुराद हर वोह शै और मक़ाम वग़ैरा है जिस की शरअ़न अ़ज़मत मुसल्लम हो। मसलन, नबी, फ़िरिश्ता, का'बए मुशर्रफ़ा, क़ुरआने करीम, ह़दीसे पाक, शरीअ़त वग़ैरा चुनान्चे इन में से किसी की भी तौहीन करना **कुफ़्र** है।

"हमारा सारा गाउं गुस्ताख़ है" कहना कैसा ?

सुवाल : बा'ज़ लोग कह दिया करते हैं कि मेरे इ़लावा हमारा पूरा घर या सारा ख़ानदान या हमारे गाउं वाले सब के सब **गुस्ताख़ाने रसूल** हैं। ऐसा कहना कैसा है ?

जवाब : अगर वाक़ेई घर या ख़ानदान या गाउं के सारे मर्द व औ़रत ऐसे ही हैं तो कहने में ह़रज नहीं, लेकिन उ़मूमन ऐसा नहीं होता। ख़ानदान और गाउं के अक्सर मर्द व औ़रत मुसल्मान ही होते हैं।

सारे शह्‌र वालों को ज़ानी कहने का शरई हुक्म

सारे गाउं या ख़ानदान भर को गुस्ताख़े रसूल कह देना तो यक़ीनन बहुत भारी बात है। मेरे आक़ा आ'ला

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن का एक मुक़र्रिर के बारे में फ़तवा मुलाह़ज़ा फ़रमाइये : जिस ने जल्से में बम्बई के सारे मुसल्मानों की त़रफ़ बुराई मन्सूब करने की नापाक सई की थी। चुनान्चे फ़रमाते हैं : उस का कहना कि "**बम्बई** में कोई मकान या गली कूचा ऐसा न होगा जिस में शबाना रोज़ (या'नी दिन रात) ज़िना न होता हो।" अगर वोह ता'मीम व तस्मीम करता (या'नी अगर वोह ऐसे अल्फ़ाज़ बोलता जिस से हर हर फ़र्द का यक़ीनी त़ौर पर ज़िना में मुलव्वस होना समझा जाता जब) तो बम्बई के लाखों मुसल्मान मर्दों, मुसल्मान पारसा बीबियों पर **सरीह़ तोह़मते मल्ऊ़नए ज़िना** थी, जिस के सबब वोह (मुक़र्रिर) **लाखों क़ज़्फ़**[1] का मुरतकिब होता और एक ही क़ज़्फ़ गुनाहे कबीरा है और क़ज़्फ़ करने वाले पर ला'नत आई है तो वोह **एक सांस में लाखों गुनाहे कबीरा का मुरतकिब होता और लाखों ला'नतों का इस्तिह़्क़ाक़ पाता** है मगर उस ने मकान और कूचे में तरदीद से ता'मीम

(1) ज़िना की तोहमत लगाना "क़ज़्फ़" कहलाता है।

को रोका और "न होगा" के लफ़्ज़ से जज़्म में फ़र्क़ डाला (या'नी लफ़्ज़ "न हो" गा कहने से कुछ बचत हो गई अगर "न होगा" के बजाए "नहीं है" के अल्फ़ाज़ बोल देता तो सरीह़ तोहमते ज़िना लगाने वाला क़रार पाता जिस का हुक्म आगे गुज़रा।) फिर भी इस क़दर में शक नहीं कि उस ने वहां के आम मुसल्मान मर्दों बीबियों की हुरमत पर धब्बा लगाया और इसे ख़ास मजलिसे वा'ज़ में कह कर मुसल्मानों को नाह़क़ बदनाम करने और उन में **इशाअ़ते फ़ाह़िशा** का बोझ अपनी गरदन पर उठाया और ब कसरत मुसल्मानों को बिला वज्हे शरई ईज़ा दी। **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

"مَنْ اٰذٰى مُسْلِمًا فَقَدْ اٰذانِيْ وَمَنْ اٰذانِيْ فَقَدْاٰذَى اللّٰه"

या'नी जिस ने किसी मुसल्मान को नाह़क़ ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ईज़ा दी।

(اَلْمُعْجَمُ الْاَ وْسَط لِلطَّبَرَانِی ج ٢ ص٣٨٧ حديث ٣٦٠٧)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِیۡنَ یُحِبُّوۡنَ اَنۡ تَشِیۡعَ الۡفَاحِشَۃُ فِی الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا لَہُمۡ عَذَابٌ اَلِیۡمٌ ۙ فِی الدُّنۡیَا وَ الۡاٰخِرَۃِ ؕ
(پ۱۸ النور ۱۹)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह लोग जो चाहते हैं कि मुसल्मानों में बुरा चरचा फैले उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है दुन्या और आख़िरत में ।

जब इस पर दोनों जहान में अ़ज़ाबे शदीद की वईद है तो येह भी कबीरा हुवा और मुरतकिबे कबीरा फ़ासिक़ है और येह फ़िस्क़ बिल ए'लान बर सरे मजलिसे वा'ज़ हुवा तो इस वज्ह से भी वोह शख़्स फ़ासिक़े मो'लिन हुवा और उस के पीछे नमाज़ मक्रूहे तह़रीमी ।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 6, स. 569, 570)

आ़म लोगों को बुरा भला कहने का शरई हुक्म

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस बात को समझने के लिये **फ़तावा रज़विय्या शरीफ़** जिल्द 14 सफ़ह़ा 604 पर मरक़ूम **सुवाल** व **जवाब** ग़ौर से पढ़िये और अगर ऐसी ग़लतियां की हैं तो तौबा कर लीजिये : **मस्अला :** क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन इस मस्अले में कि अगर कोई शख़्स उमूरे शरई की बाबत येह अल्फ़ाज़ कहे कि "शर्अ़ क्या चीज़ है ! आज कल शर्अ़ पर कौन अ़मल करता है ! येह शर्अ़ भी एक बह़्स निकाल रखी है" वोह शख़्स (या'नी ऐसा कहने

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

वाला) इन्दश्शरअ़ कैसा है ? بَیِّنُوۡا تُوۡجَرُوۡا (या'नी बयान फ़रमाइये सवाब कमाइये) **अल जवाब :** अगर उस ने वाक़ेई तौर पर येह लफ़्ज़ कहे तो **काफ़िर** हो गया और अगर लोगों पर ता'न के तौर पर कहा या'नी **आज कल लोगों ने शरअ़ को ऐसा समझ रखा है तो सख़्त गुनहगार हुवा कि "आ़म" कहा** और लफ़्ज़ भी मा'निये कुफ़्र को मूहिम हैं। (या'नी मज़्कूरा बाला जुम्ले में ज़ेहन कुफ़्रिय्या मा'ना की तरफ़ सब्क़त करता है) وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعۡلَم। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 604)

"सरकार ह़राम माल की नियाज़ भी क़बूल फ़रमा लेते हैं" कहना कैसा ?

सुवाल : ज़ैद ने **चन्दा** मांगते हुए कहा : "**सरकारे मदीना** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नियाज़ के लिये **ह़राम माल** भी चल जाएगा, **सरकार** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने गुलामों से **ह़राम माल** की नियाज़ भी क़बूल फ़रमा लेते हैं।" येह कहना कैसा ?

जवाब : ज़ैदे बे क़ैद का येह क़ौल गलत़ व बात़िल और सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह़्तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर इफ़्तिरा (या'नी झूट बांधना) है। ज़ैद अपने क़ौल से तौबा करे और उसे

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

चाहिये कि **तजदीदे ईमान** करे और अगर शादी शुदा था तो **तजदीदे निकाह़** भी करे। तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 21 सफ़ह़ा 105 ता 111 मुलाह़ज़ा फ़रमाइये।

ग़लबए ख़ौफ़ में बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا के 6 इर्शादात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! आह! काश! हम दुन्या से ईमान सलामत ले जाने में काम्याब हो जाएं। ख़ुदा की क़सम! हम नहीं जानते कि हमारे बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **ख़ुफ़्या तदबीर** क्या है! तश्वीश...... तश्वीश...... इन्तिहाई तश्वीश की बात है...... ख़ौफ़..... ख़ौफ़...... وَاللّٰهِ العظيم सख़्त ख़ौफ़ का मक़ाम है कि हम को येह नहीं मा'लूम कि हमारा ख़ातिमा ईमान पर होगा या नहीं। आह! हम ग़फ़्लत की चादर ओढ़े बे ख़बर सो रहे हैं। काश! हमें ह़क़ीक़ी मा'नों में **ख़ौफ़े ख़ुदा** नसीब हो जाता। ﴿1﴾ उम्मुल मुअमिनीन **ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा बिन्ते सिद्दीक़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने ग़लबए ख़ौफ़े ख़ुदा के वक़्त फ़रमाया : काश! मैं (बजाए इन्सान के) पथ्थर होती ﴿2﴾ कभी फ़रमाया : काश! मैं दरख़्त होती ﴿3﴾ कभी फ़रमाया :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा । (شعب الایمان)

काश ! काश ! मैं मिट्टी का एक ढेला होती ﴾4﴿ किसी मौक़अ़ पर एक दरख़्त की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया : काश ! मैं इस दरख़्त का पत्ता होती ﴾5﴿ कभी फ़रमाया : काश ! मैं घास होती और कोई क़ाबिले ज़िक्र शै न होती ﴾6﴿ ब वक़्ते विसाल फ़रमाया : काश ! **अल्लाह** तआ़ला मुझे कोई भी चीज़ न बनाता । (الطبقات الکبری لابن سعد ج ۸ ص۵۹۔۶۰)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

काश कि मैं दुन्या में पैदा न हुवा होता
क़ब्रो ह़श्र का सब ग़म ख़त्म हो गया होता

काश ! ऐसा हो जाता ख़ाक बन के त़यबा की
मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दमों से मैं लिपट गया होता

मैं बजाए इन्सां के कोई पौदा होता या
नख़्ल बन के त़यबा के बाग़ में खड़ा होता

क्या अल्लाह के लिये लफ़्ज़ "आ़शिक़" इस्ति'माल कर सकते हैं ?

सुवाल : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को **आ़शिक़** कहना कैसा ?

जवाब : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते

हैं : ना जाइज़ है। (मज़ीद वज़ाह़त करते हुए फ़रमाते हैं) मा'निये इश्क़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़क़ में मुह़ाले क़त़ई (या'नी क़त़अ़न ना मुम्किन) है और ऐसा लफ़्ज़ बे वुरूदे सुबूते शरई (या'नी शरई सुबूत के बिग़ैर) ह़ज़रते इ़ज़्ज़त (या'नी **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ) की शान में बोलना मम्नूअ़ क़त़ई। **रद्दुल मुह़तार** में है : मा'निये मुह़ाल का वह्म मुमानअ़त के लिये काफ़ी है।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 21, स. 116)

क्या किसी को आ़शिक़े रसूल कह सकते हैं ?

सुवाल : क्या किसी को आ़शिक़े इलाही या आ़शिक़े रसूल भी नहीं कह सकते ?

जवाब : अगर वोह इस का अह्ल हो तो कहने में कोई मुज़ायक़ा नहीं। **मह़ब्बत** और **इश्क़** के मा'ना में क़दरे फ़र्क़ है। दर अस्ल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **व रसूल** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत तो हर मुसल्मान करता ही है मगर "आ़शिक़" का दरजा कोई कोई पाता है। **इश्क़** का मा'ना बयान करते हुए अ़रबी लुग़त "लिसानुल अ़रब" जिल्द 2 सफ़्ह़ा 2635 पर है : اَلْعِشْقُ فَرْطُ الْحُبِّ या'नी मह़ब्बत में ह़द से तजावुज़ करना **इश्क़** है। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अह्ले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **इश्क़** की ता'रीफ़ बयान करते हुए फ़रमाते हैं : मह़ब्बत ब मा'ना लुग़वी जब पुख़्ता और मुअक्कदा (या'नी मह़ब्बत जब बहुत ज़ियादा पक्की) हो जाए तो उसी को **इश्क़** का नाम दिया जाता है फिर जिस की **अल्लाह** तआ़ला से पुख़्ता मह़ब्बत हो जाए और उस पर पुख़्तगिये मह़ब्बत के (इस त़रह़) आसार ज़ाहिर हो जाएं कि वोह हमा अवक़ात **अल्लाह** तआ़ला के ज़िक्रो फ़िक्र और उस की इत़ाअ़त में मसरूफ़ रहे तो फिर कोई मानेअ़ (या'नी रुकावट) नहीं कि उस की मह़ब्बत को **इश्क़** कहा जाए, क्यूं कि मह़ब्बत ही का दूसरा नाम **इश्क़** है।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 21, स. 115 ता 116)

आ़शिक़े रसूल की 6 निशानियां

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ने अपनी किताबे मुस्तत़ाब **शाने ह़बीबुर्रह़मान** सफ़ह़ा 295 पर "आ़शिक़" की ता'रीफ़ में शैख़ सा'दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى के दो फ़ारसी अश्आ़र नक़्ल किये हैं :

عاشقاں راشش نشاں است اے پسر آہِ سرد و رنگِ زرد و چشم تر
گر ترا پرسند سہ دیگر کدام کم خور و کم گفتن و خفتن حرام

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

तरजमा : ऐ बेटे ! आ़शिक़ों की छ6 अ़लामतें हैं (1) सर्द आहें भरना और (2) चेहरे का रंग ज़र्द होना और (3) गिर्या व ज़ारी। अगर बक़िय्या तीन निशानियां भी पूछना चाहो तो वोह येह हैं : (4) कम खाना (5) कम बोलना और (6) कम सोना।

दुन्या की लज़्ज़तों से मेरी जान छूट जाए
मुझ को बना दे या ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ *तू आ़शिक़े रसूल*

मदीने को यसरिब कहना कैसा ?

सुवाल : क्या मदीनए मुनव्वरह زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعۡظِیۡمًا को यसरिब कहना बे अदबी नहीं ?

जवाब : ज़रूर बे अदबी है। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الرَّحۡمٰن **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 21 सफ़्ह़ा 116 पर फ़रमाते हैं : **मदीनए त़य्यिबा** को यसरिब कहना, ना जाइज़ व मम्नूअ़ व **गुनाह** है और कहने वाला गुनहगार। **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जो **मदीने** को यसरिब कहे वोह **अल्लाह** तआ़ला से बख़्शिश त़लब करे, येह त़ाबह है, येह त़ाबह है। (مسند امام احمدج٦ ص ٤٠٩ حدیث ١٨٥٤٤) अ़ल्लामा मुनावी (عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی) "तैसीर शर्ह़े जामेए़ सग़ीर" में फ़रमाते

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

हैं : या'नी इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि मदीनए त़य्यिबा का यसरिब नाम रखना **ह़राम** है कि यसरिब कहने से इस्तिग़्फ़ार का हुक्म फ़रमाया और इस्तिग़्फ़ार **गुनाह** ही से होता है। (التّیسیر شرح الجامع الصَّغیر ج۲ ص ٤٢٤)

मज़ीद तफ़्सील के लिये **फ़तावा रज़विय्या** के मज़्कूरा बाला सफ़ह़ा का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

बे अ़त़ाए इलाही इल्मे ग़ैब का मानना कैसा ?

सुवाल : येह अ़क़ीदा रखना कैसा कि **सरकारे मदीना** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा के बिग़ैर **इल्मे ग़ैब** ह़ासिल है।

जवाब : ऐसा अ़क़ीदा रखना **सरीह़ कुफ़्र** है, अहले सुन्नत का अ़क़ीदा येह है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से **इल्मे ग़ैब** ह़ासिल है। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 10 पर सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : कोई शख़्स ग़ैरे ख़ुदा के लिये **ज़ाती** (या'नी बिग़ैर **अल्लाह** के दिये) **इल्मे ग़ैब**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

माने वोह **काफ़िर** है। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा : 1, स. 10) यूंही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता के बिग़ैर किसी के लिये एक ज़र्रे का इ़ल्म या एक ज़र्रे की मिल्किय्यत साबित करने वाला **काफ़िर** है। **अहले सुन्नत** का येही अ़क़ीदा है कि अम्बिया व औलिया को जो ग़ैब का इ़ल्म है या इन में दीगर जो भी सिफ़ात पाई जाती हैं वोह सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से हैं।

"नबिय्ये पाक का गुस्ताख़ दोज़ख़ में जाएगा" के छब्बीस हुरूफ़ की निस्बत से सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की गुस्ताख़ी के मुतअ़ल्लिक़ कुफ़्रिय्यात की 26 मिसालें

﴾1﴿ जो येह माने कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द किसी को **नुबुव्वत** मिली या

﴾2﴿ इसे जाइज़ जाने वोह **काफ़िर** है। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 1, स. 40, मक्तबतुल मदीना)

﴾3﴿ आयते ख़ातमुन्नबिय्यीन के मश्हूर मा'ना में किसी क़िस्म की तावील या तख़्सीस **कुफ़्र** है।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 333)

﴾4﴿ जो नुबुव्वत का दा'वा करने वाले से मो'जिज़ा त़लब करे वोह **काफ़िर** है अलबत्ता अगर उस के इ़ज्ज़ (या'नी बे बसी) के इज़्हार के लिये हो तो **कुफ़्र** नहीं। (اَلْبَحْرُ الرَّائِق ج ٥ ص ٢٠٣، عالمگیری ج٢ ص ٢٦٣) या'नी

उस को यक़ीनी तौर पर झूटा नबी मानते हुए महूज़ उस की रुस्वाई की ख़ातिर मो'जिज़ा तलब करना कुफ़्र नहीं कि नुबुव्वत का झूटा दा'वा करने वाला कभी मो'जिज़ा ज़ाहिर नहीं कर सकता।

﴾5﴿ शहीद को रसूलुल्लाह पर फ़ज़ीलत देना **कुफ़्र** है।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 640)

﴾6﴿ येह कहना कि मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की तरफ़ नमाज़ में ख़याल ले जाना अपने बैल या गधे के तसव्वुर में हमातन डूब जाने से ब दरजहा बदतर है। **कुफ़्र** और सख़्त **गुस्ताख़ी** है। (माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 200, बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 1, स. 113)

﴾7﴿ शैताने लईन का इल्म नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इल्मे ग़ैब से ज़ियादा मानना **ख़ालिस कुफ़्र** है।

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, हिस्सए अव्वल, स. 120)

﴾8﴿ हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इल्मे शरीफ़ को बच्चों, जानवरों और पागलों के इल्म की तरह कहना **सरीह़ कुफ़्र** है। (ऐज़न)

﴾9﴿ प्यारे आक़ा मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ बुग़्ज़ रखना। या ﴾10﴿ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नामे मुबारक। या ﴾11﴿ रिसालत या ﴾12﴿ सीरत। या ﴾13﴿ सुन्नत की तह़क़ीर करना **कुफ़्र** है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

﴾14﴿ रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के किसी अ़मल मसलन इमामा बांधने या शम्ला लटकाने वग़ैरा इन की तौहीन कुफ़्र है जब कि सुन्नत की तौहीन मक़्सूद हो। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 9, स. 181)

﴾15﴿ जो शहन्शाहे ज़मन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ एक लम्ह़े के लिये भी पागल पन मन्सूब करे वोह **काफ़िर** है। हां ग़शी या बेहोशी मन्सूब करने से काफ़िर नहीं होगा। (فتاوٰی تاتارخانیہ ج٥ ص ٤٨٠)

﴾16﴿ जो कहे कि "ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से हम पर कोई ने'मत नहीं है" वोह **काफ़िर** है। (اَلْبَحْرُ الرَّائِق ج٥ ص ٢٠٤)

﴾17﴿ ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की **बशरिय्यत** का मुत़्लक़न इन्कार **कुफ़्र** है। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 358)

﴾18﴿ बल्कि इस में शक करना भी **कुफ़्र** है क्यूं कि नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बशरिय्यत क़ुरआने मजीद की नस्से क़त़्ई से साबित है। हां अपने जैसा बशर न कहे ख़ैरुल बशर, सय्यिदुल बशर कहे। "बशर" के मस्अले पर तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद

यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان की इश्क़े रसूल में डूबी हुई किताब **शाने ह़बीबुर्रह़मान** सफ़ह़ा 130 ता 137 का मुत़ालआ़ फ़रमाइये।

﴾19﴿ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को एलची **कहना** कुफ़्र है। (माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 685)

﴾20﴿ ख़ाली रसूल रसूल कहना अगर ब क़स्दे तर्के ता'ज़ीम है तो **कुफ़्र** है। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 99)

﴾21﴿ जो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वासित़े के बिग़ैर ख़ुदा तक पहुंचने का दा'वा करे वोह **काफ़िर** है। (माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 578)

﴾22﴿ जो कहे : "**अल्लाह** तक मैं बे वासित़ए रसूल पहुंचा देता हूं" वोह **काफ़िर** है।

﴾23﴿ मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बहरूपिया कहना **कुफ़्रे शदीद** है।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 308)

﴾24﴿ जो सुल्त़ाने मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मख़्लूक़ न माने वोह **काफ़िर** है।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा अम्जदिय्या, जि. 4, स. 434)

﴾25﴿ जो सरवरे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़ुदा कहे या

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

﴿26﴾ दोनों (या'नी **अल्लाह** और उस के रसूल) को **बिऐ़निही** एक ज़ात माने वोह **काफ़िर** है।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा अम्जदिय्या, जि. 4, स. 465)

मे'राज शरीफ़ के बारे में सुवाल जवाब

मे'राज शरीफ़ का इन्कार करना कैसा ?

सुवाल : मे'राज शरीफ़ का इन्कार करने वाले के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब : सफ़रे मे'राज के तीन हिस्से हैं (1) **अस्रा** (2) **मे'राज** (3) **ए'राज या उ़रूज**। हि़स्सए अव्वल **अस्रा** क़ुरआने पाक की नस्से क़त़्ई से साबित है चुनान्चे पारह 15 **सूरतुल अस्रा** (इस को सूरए बनी इस्राईल भी कहते हैं) की इब्तिदाई आयत में इर्शाद होता है :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
سُبْحٰنَ الَّذِیْۤ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَیْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِیْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِیَهٗ مِنْ اٰیٰتِنَاؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ ①

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेह्रबान रह़्म वाला। पाकी है उसे जो रातों रात अपने बन्दे को ले गया मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़्सा तक जिस के गिर्दा गिर्द हम ने बरकत रखी कि हम उसे अपनी अ़ज़ीम निशानियां दिखाएं, बेशक वोह सुनता देखता है।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡهَادِی फ़रमाते हैं : सत्ताईसवीं रजब को **मे 'राज** हुई। मक्कए मुकर्रमा से **हुज़ूरे पुरनूर** (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का बैतुल मुक़द्दस तक शब के छोटे ह़िस्से में तशरीफ़ ले जाना नस्से क़ुरआनी से साबित है। इस का मुन्किर (इन्कार करने वाला) **काफ़िर** है और आस्मानों की सैर और मनाज़िले क़ुर्ब में पहुंचना अह़ादीसे सह़ीह़ा मो'तमदा मश्हूरा से साबित है जो ह़द्दे तवातुर के क़रीब पहुंच गई हैं इस का मुन्किर (इन्कार करने वाला) **गुमराह** है। **मे 'राज** शरीफ़ ब ह़ालते बेदारी जिस्म व रूह़ दोनों के साथ वाक़ेअ़ हुई, येही जम्हूर अहले इस्लाम का अ़क़ीदा है और अस्ह़ाबे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की कसीर जमाअ़तें और **हुज़ूर** (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के अजिल्लाए अस्ह़ाब इसी के मो'तक़िद हैं। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 451) उ़रूज या ए'राज या'नी सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सर की आंखों से दीदारे इलाही करने और फ़ौक़ल अ़र्श (अ़र्श से ऊपर) जाने का मुन्किर (इन्कार करने वाला) ख़ाती़ या'नी **ख़ता़कार** है।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

जागते में दीदारे इलाही के दा'वेदार का शरई हुक्म

सुवाल : अगर कोई दा'वा करे कि "मैं ने जागती आंखों से **अल्लाह** तआ़ला की ज़ात का दीदार किया है" उस के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब : दुन्या में जागती आंखों से परवर्दगार عَزَّوَجَلَّ का दीदार सिर्फ़ व सिर्फ़ सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़ास्सा है। लिहाज़ा अगर कोई शख़्स दुन्या में जागती ह़ालत में दीदारे इलाही का दा'वा करे उस पर **हुक्मे कुफ़्र** है जब कि एक क़ौल इस बारे में **गुमराही** का भी है चुनान्चे सय्यिदुना मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی **मिनहुर्रौज़** में लिखते हैं : अगर किसी ने कहा मैं **अल्लाह** तआ़ला को दुन्या में आंख से देखता हूं येह कहना **कुफ़्र** है। मज़ीद लिखते हैं : जिस ने अपने लिये दीदारे ख़ुदावन्दी का दा'वा किया और येह बात सराह़त के साथ (या'नी बिल्कुल वाज़ेह़ तौर पर) की और किसी तावील की गुन्जाइश नहीं छोड़ी तो उस का येह ए'तिक़ाद फ़ासिद और दा'वा ग़लत़ है वोह गुमराही के गढ़े में है और दूसरे को गुमराह करता है। (مِنَحُ الرّوض ص۳۵٤،۳٥٦)

क्या ख़्वाब में दीदारे इलाही मुम्किन है ?

सुवाल : क्या ख़्वाब में **दीदारे इलाही** عَزَّوَجَلَّ हो सकता है ?

जवाब : हो सकता है। इमामे आ'ज़म, फ़क़ीहे अफ़ख़म, शम्सुल अइम्मा, सिराजुल उम्मह ह़ज़रते **सय्यिदुना इमाम अबू ह़नीफ़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ **ने ख़्वाब में सो बार परवर्दगार** عَزَّوَجَلَّ **का दीदार किया।** चुनान्चे मन्क़ूल है : आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ ने **अल्लाह** तआ़ला की 99 मरतबा ख़्वाब में ज़ियारत की तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अपने दिल में कहा कि अगर मैं **अल्लाहु** ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ का पूरे सो बार दीदार करूंगा तो उस से अ़र्ज़ करूंगा कि **या अल्लाह** ! तू मख़्लूक़ को अपने अ़ज़ाब से किस त़रह़ नजात देगा ? चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ ने **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त की जब 100वीं बार ज़ियारत की तो उस से सुवाल अ़र्ज़ किया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जवाब इर्शाद फ़रमाया। (الخیرات الحسان ص ۹۵) (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क्या जवाब इर्शाद फ़रमाया येह मुह़व्वला किताब में मन्क़ूल नहीं) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو یعلی)

हिकायत

एक और हिकायत मुलाहज़ा हो चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना **यहूया** बिन सईद क़त्तान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ख़्वाब में देखा, अ़र्ज़ की : इलाही عَزَّوَجَلَّ ! मैं अक्सर **दुआ़** करता हूं। और तू क़बूल नहीं फ़रमाता ? हुक्म हुवा : "ऐ **यहूया** ! मैं तेरी आवाज़ को दोस्त रखता हूं।" (इस वासिते तेरी दुआ़ की क़बूलिय्यत में ताख़ीर करता हूं) (الرّسالةُ القُشيرية ص ٢٩٧،اَحسَنُ الوِعَاء ص ٣٥)

हम्द व ना'त, मन्क़बत और शुअ़रा के बारे में सुवाल जवाब

हम्द व ना'त और मन्क़बत किसे कहते हैं ?

सुवाल : हम्द व ना'त और मन्क़बत के मा'ना बता दीजिये।

जवाब : तीनों के लफ़्ज़ी मा'ना क़रीब क़रीब एक ही हैं या'नी ता'रीफ़ो तौसीफ़। मगर मजाज़ी मा'ना जुदा जुदा हैं। लिहाज़ा **हम्द** का लफ़्ज़ ख़ुदा की ता'रीफ़ के लिये बोला जाता है। सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'रीफ़ को **ना'त** और सहाबए किराम व औलियाए उ़ज़्ज़ाम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की ख़ूबियों के बयान को **मन्क़बत** कहते हैं।

आज कल आ़म शुअ़रा "ना'त" कम ही लिखते हैं । उ़मूमन इन के कलाम हिज्रो फ़िराक़, मदीनए मुनव्वरह की हाज़िरी की तड़प या "इस्तिग़ासा" या'नी फ़रियाद पर मुश्तमिल होते हैं । बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में फ़रियाद करना और इमदाद त़लब करना बेशक जाइज़ है। मुतज़क्करा तमाम कलाम उ़र्फ़े आ़म में **ना'त** ही कहलाते हैं और इस में ह़रज भी नहीं। **ना'त** के मा'नवी ए'तिबार से ना'तिया अश्आ़र लिखना बहुत दुश्वार होता है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن इस फ़न में भी माहिर थे। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़क़ीक़ी मा'नों में भी मुतअ़द्दद ना'तें लिखी हैं मसलन "सब से औला व आ'ला हमारा नबी" "ज़मीनो ज़मां तुम्हारे लिये" वग़ैरा । नीज़ दीगर कलामों में भी बे शुमार ना'तिया अश्आ़र पाए जाते हैं । ना'त लिखने का उस्लूब भी कैसा ला जवाब है चुनान्चे फ़रमाते हैं

तूबा[1] में जो सब से ऊंची नाज़ुक निकली सीधी शाख़
मांगूं ना'ते नबी लिखने को रूहे क़ुदुस से ऐसी शाख़

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

---

(1) जन्नत के सब से ऊंचे दरख़्त का नाम तूबा है ।

www.dawateislami.net

ना'तिया शाइ़री करना कैसा ?

सुवाल : ना'तिया शाइ़री करना कैसा है ?

जवाब : सुन्नते सह़ाबा عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان है या'नी बा'ज़ सह़ाबा मसलन ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वग़ैरहुमा से ना'तिया अश्आ़र लिखना साबित है। ताहम येह ज़ेह्न में रहे कि **ना'त शरीफ़** लिखना निहायत मुश्किल फ़न है, इस के लिये माहिरे फ़न आ़लिमे दीन होना चाहिये, वरना आ़लिम न होने की सूरत में रदीफ़, क़ाफ़िया और बह़्र (या'नी शे'र का वज़्न) वग़ैरा को निभाने के लिये ख़िलाफ़े शान अल्फ़ाज़ तरतीब पा जाने का ख़दशा रहता है। अ़वामुन्नास को **शाइ़री** का शौक़ चराना मुनासिब नहीं कि नस्र के मुक़ाबले में नज़्म में **कुफ़्रिय्यात** के सुदूर का ज़ियादा अन्देशा रहता है। अगर शरई अग़लात़ से कलाम मह़फ़ूज़ रह भी गया तो ''फ़ुज़ूलिय्यात'' से बचने का ज़ेह्न बहुत कम लोगों का होता है। जी हां आज कल जिस त़रह़ आ़म गुफ़्त्गू में फ़ुज़ूल अल्फ़ाज़ की भरमार पाई जाती है इसी त़रह़ ''बयान'' और ''ना'तिया कलाम'' में भी होता है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे । (شعب الایمان)

क्या ग़ैरे आ़लिम ना'त नहीं लिख सकता ?

सुवाल : क्या ग़ैरे आ़लिम ना'त शरीफ़ नहीं लिख सकता ? और उस की ना'त पढ़नी सुननी भी नहीं चाहिये ?

जवाब : जो उ़लमाए अहले सुन्नत का सोह़बत याफ़्ता हो, शरीअ़त के ज़रूरी अह़काम जानता हो और हर हर मिस्रअ़ की शरई तफ़्तीश किसी आ़लिम से करवा लिया करता हो उस के लिखने और उस का लिखा हुवा उ़लमा का तफ़्तीश शुदा कलाम पढ़ने में ह़रज नहीं । मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ग़ैरे आ़लिम के ना'तिया शाइरी करने के सख़्त ख़िलाफ़ थे । चुनान्चे **फ़तावा रज़विय्या शरीफ़** से जाहिल ना'त गोयों की मज़म्मत के **दो इक़्तिबासात** मुलाह़ज़ा हों :

﴿1﴾ वोह पढ़ना सुनना जो मुन्कराते शरइय्या (या'नी शरई मुमानअ़तों) पर मुश्तमिल हो, ना जाइज़ है, जैसे रिवायाते बातिला (या'नी मन घड़त रिवायतों) व ह़िकायाते मौज़ूआ़ (या'नी बनावटी ह़िकायतों) व अश्आ़रे ख़िलाफ़े शर्अ़ ख़ुसूसन जिन में तौहीने अम्बिया व मलाएका عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हो कि आज कल के **जाहिल ना'त गोयों** के कलाम में येह बलाए अ़ज़ीम ब कसरत है ह़ालां कि वोह (या'नी नबियों और फ़िरिश्तों की तौहीन) **सरीह़ कलिमए कुफ़्र** है । العِيَاذُ بِاللّٰهِ تَعَالٰى । وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم ।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 23, स. 722) ﴾2﴿ (जाहिल ना'त ख़्वान जब) अश्आ़र गाएं तो शुअ़राए बे शुऊ़र (या'नी नादान शाइ़रों) के (कि जिन में) अम्बिया की तौहीन, ख़ुदा पर इत्तिहाम (तोहमत) और (फिर) ना'त व मन्क़बत का नाम बदनाम, जब तो (ऐसी मह़फ़िल में) जाना भी गुनाह, भेजना भी **ह़राम** और अपने यहां (ऐसी मह़फ़िल का) इन्इ़क़ाद मज्मए़ आसाम, (या'नी गुनाहों भरा इज्तिमाअ़) आज कल अक्सर मवाइ़ज़ व मजालिसे अ़वाम का येही ह़ाले पुर मलाल। فَاِنَّالِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رَاجِعُوْن

(ऐज़न, जि. 22, स. 231)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के इर्शादाते आ़लिय्या का ख़ुलासा येही है कि **जाहिल ना'त गो शाइ़रों के कलाम बसा अवक़ात कुफ़्रिय्यात से भरपूर होते हैं** लिहाज़ा ऐसे कलाम पढ़ने वालों को मह़फ़िले ना'त में बुलाना भी **ना जाइज़**, ऐसी ना'त ख़्वानी में किसी को भेजना भी **ह़राम** और ऐसे कलाम का सुनना भी **गुनाह**।

आ'ला ह़ज़रत दो के इ़लावा क़स्दन किसी का (उर्दू) कलाम न सुनते

सुवाल : आ'ला ह़ज़रत कौन कौन से शुअ़रा का ना'तिया कलाम सुनना पसन्द फ़रमाते थे?

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा। (ابن عدی)

जवाब : ना'त गो शाइरों की अक्सरिय्यत अपने कलाम में चूंकि अह़कामे शरीअ़त का लिह़ाज़ नहीं करती इस वज्ह से आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ क़स्दन सिर्फ़ दो शुअ़राए किराम (1) ह़ज़रत मौलाना किफ़ायत अ़ली काफ़ी और (2) ह़ज़रत मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान رَحِمَهُمَا اللّٰهُ تَعَالٰی का कलाम समाअ़त फ़रमाते थे। चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 561 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत**" सफ़्ह़ा 225 पर है : एक साहि़ब, (ह़ज़रत) शाह नियाज़ अह़मद साहि़ब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के उ़र्स में बरेली तशरीफ़ लाए थे। **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए, कुछ अश्आ़र ना'त शरीफ़ के सुनाने की दरख़्वास्त (या'नी ना'ते पाक पढ़ने की ख़्वाहिश ज़ाहिर) की। (आ'ला ह़ज़रत ने) इस्तिफ़्सार फ़रमाया : किस का कलाम ? उन्हों ने (कलाम लिखने वाले का नाम) बताया इस पर इर्शाद फ़रमाया : सिवा दो (शुअ़रा) के कलाम के किसी का कलाम मैं क़स्दन (या'नी इरादतन अपनी ख़्वाहिश से) नहीं सुनता, (फ़क़त़ इन दो या'नी) मौलाना (किफ़ायत अ़ली) **काफ़ी** और (मेरे भाई) **ह़सन मियां** मर्ह़ूम का कलाम (सुनता हूं)। सफ़्ह़ा 227 पर मज़ीद फ़रमाते हैं : **और ह़क़ीक़तन**

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है । (ابن عساکر)

ना'त शरीफ़ लिखना निहायत मुश्किल है जिस को लोग आसान समझते हैं, इस में तलवार की धार पर चलना है! अगर बढ़ता है तो उलूहिय्यत में पहुंचा जाता है और कमी करता है तो तन्क़ीस (या'नी तौहीन) होती है। अलबत्ता **ह़म्द** आसान है कि इस में रास्ता साफ़ है जितना चाहे बढ़ सकता है। ग़रज़ **ह़म्द** में एक जानिब अस्लन ह़द नहीं और **ना'त शरीफ़** में दोनों जानिब सख़्त ह़द बन्दी है।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत)

ना'तिया शाइ़री हर एक का काम नहीं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! अगर किसी मह़फ़िल में ग़ैर शरई कलाम पढ़ा जा रहा हो तो जो मा'लूमात रखता हो उस पर वाजिब है कि इस्लाह़ करे जब कि येह ज़न्ने ग़ालिब हो कि ग़लती करने वाला मान जाएगा और अगर मानने की उम्मीद न हो तो फ़ौरन उठ जाए, अगर केसिट वग़ैरा में ना जाइज़ अल्फ़ाज़ या मआ़नी वाला शे'र सुनें तो फ़ौरन टेप रेकॉर्डर बन्द कर दीजिये और आयिन्दा भी केसिट में उस शे'र को सुनने से परहेज़ कीजिये और मुम्किना सूरत में केसिट और ना'त ख़्वान व ना'त गो शाइ़र वग़ैरा की इस्लाह़ की तदबीर भी कीजिये।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

किस किस का कलाम पढ़ना चाहिये ?

सुवाल : किस किस शाइर की लिखी हुई ना'तें पढ़ना सुनना चाहिये ?

जवाब : हर उस मुसल्मान की लिखी हुई ना'त शरीफ़ पढ़नी सुननी जाइज़ है जो शरीअ़त के मुत़ाबिक़ हो। अब चूंकि कलाम को शरीअ़त की कसोटी पर परखने की हर एक में सलाहिय्यत नहीं होती लिहाज़ा आ़फ़िय्यत इसी में है कि मुस्तनद उ़लमाए अहले सुन्नत का कलाम सुना जाए। उर्दू कलाम सुनने के लिये मश्वरतन "ना'ते रसूल" के सात हुरूफ़ की निस्बत से सात अस्माए गिरामी हाज़िर हैं : ﴾1﴿ इमामे अहले सुन्नत, **मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ﴾2﴿ उस्ताज़े ज़मन ह़ज़रत मौलाना **ह़सन रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان ﴾3﴿ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत मद्दाहुल ह़बीब ह़ज़रत मौलाना **जमीलुर्रह़मान रज़वी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ﴾4﴿ शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, ताजदारे अहले सुन्नत **हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे** हिन्द मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ﴾5﴿ शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते मौलाना **ह़ामिद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان ﴾6﴿ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत **सदरुल** अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى ﴾7﴿ **मुफ़स्सिरे**

शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان वग़ैरा ।

सुवाल : क्या ग़ैरे आ़लिम शाइ़र का कलाम पढ़ने सुनने की भी कोई सूरत है ?

जवाब : अगर ग़ैरे आ़लिम शाइ़र का कलाम पढ़ना सुनना चाहें तो किसी माहिरे फ़न सुन्नी आ़लिम से उस कलाम की पहले तस्दीक़ करवा लीजिये । इस त़रह़ اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ईमान की ह़िफ़ाज़त में मदद मिलेगी, वरना कहीं ऐसा न हो कि किसी कुफ़्रिय्या शे'र के मा'ना समझने के बा वुजूद उस की ताईद करते हुए झूमने और ना'रहाए दादो तह़सीन बुलन्द करने के सबब ईमान के लाले पड़ जाएं । ग़ैरे आ़लिम को ना'तिया शाइ़री से अव्वलन बचना ही चाहिये और इन अहम मसाइल के इ़ल्म से क़ब्ल अगर कुछ कलाम लिख भी लिया है तो जब तक अपने तमाम कलाम के हर हर शे'र की किसी फ़न्ने शे'री के माहिर आ़लिमे दीन से तफ़्तीश न करवा ले उस वक़्त तक पढ़ने और छापने से मुज्तनिब (दूर) रहे । मेरे **आक़ा आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه चूंकि पाए के आ़लिमे दीन थे, आप के शे'र का हर मिस्रअ़ ऐन क़ुरआनो ह़दीस के मुत़ाबिक़ हुवा करता था लिहाज़ा बत़ौरे तह़दीसे ने'मत अपने मुबारक कलाम के बारे में एक रुबाई इर्शाद फ़रमाते हैं :

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

हूं अपने कलाम से निहायत महज़ूज़ — *बेजा से है अल मिन्नतु लिल्लाह महफ़ूज़*
कुरआन से मैं ने ना'त गोई सीखी — *या'नी रहे अहकामे शरीअ़त मल्हूज़*

(ख़ुलासा : मैं अपने कलाम से ख़ूब लुत्फ़ अन्दोज़ हो रहा हूं क्यूं कि मुझ पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एहसान है कि मेरा कलाम फ़ुज़ूल बातों से महफ़ूज़ है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ मैं ने कुरआने पाक से ना'त गोई सीखी है। मत़लब येह कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہ मेरा कलाम शरीअ़त के ऐन मुत़ाबिक़ है)

सय्यिदी अहमद रज़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ *ने ख़ूब लिखा है कलाम*
उन के सारे ना'तिया अश्आ़र पर लाखों सलाम

कमल्या वाला कहना कैसा ?

सुवाल : ना'तिया अश्आ़र में **सरकारे मदीना** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को **कमल्या वाला** बोल सकते हैं या नहीं ?

जवाब : नहीं बोल सकते। येह क़ाइदा याद रख लीजिये कि जिस किसी चीज़ की निस्बत **ताजदारे ह़रम**, शहन्शाहे अ़रबो अ़जम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से हो वोह मुअ़ज़्ज़म व मोह़तरम है लिहाज़ा उस की तसग़ीर मुत़्लक़न मम्नूअ़ है। मसलन येही कम्मल की तसग़ीर **कमल्या**, मुख की **मुखड़ा**, आंखों की **अंखड़ियां**, नगर की **नगरया** है। बारगाहे मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल عَزَّوَجَلَّ में इस तरह़ के तसग़ीर वाले अल्फ़ाज़ का इस्ति'माल मम्नूअ़ है। **कमल्या वाला** कहने के बारे में मज़ीद मा'लूमात

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

दरकार हो तो **फ़तावा अम्जदिय्या** जिल्द 4 सफ़ह़ा 260 पर फ़तवा मुलाह़ज़ा फ़रमा लीजिये।

मन्क़बत में "मुखड़ा" बोलना कैसा ?

सुवाल : बुज़ुर्गों की मनाक़िब में तसग़ीर वाले अल्फ़ाज़ मसलन मुख के बजाए **मुखड़ा**, आंख के बजाए **अंखड़ी** वग़ैरा लिखना बोलना कैसा ?

जवाब : मन्अ़ है। बुज़ुर्गों की शान में भी आदाब का ख़याल रखना ज़रूरी है। चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمةُ الرَّحْمٰن की ख़िदमत में **सुवाल** हुवा : (इस मिस्रअ़) "मुझे अपना **मुखड़ा** दिखा शाहे जीलां" में **मुखड़ा** का इस्ति'माल ठीक है या नहीं ? بَيِّنُوا تُوجَرُوا (बयान फ़रमाइये अज्र पाइये) **जवाबन** इर्शाद फ़रमाया : येह लफ़्ज़ तसग़ीर का है, अकाबिर (या'नी बुज़ुर्गों) की मद्ह़ (या'नी ता'रीफ़ो तौसीफ़) में **मन्अ़** है। وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم। (इरफ़ाने शरीअ़त, स. 39) "चेहरा" और "जल्वा" येह दोनों **मुखड़ा** के हम वज़्न अल्फ़ाज़ हैं, लिहाज़ा "मुझे अपना **जल्वा** दिखा शाहे जीलां" कहने से अदब भी बर क़रार रहेगा और कलाम का हुस्न भी दोबाला हो जाएगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

शे'र "मुझे बता ओ जहां के मालिक......"

सुवाल : येह **शे'र** कैसा है ?

मुझे बता ओ जहां के मालिक येह क्या नज़ारे दिखा रहा है

तेरे समुन्दर में क्या कमी थी जो आज मुझ को रुला रहा है

जवाब : इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ए'तिराज़ का पहलू पाया जा रहा है और येह **कुफ़्र** है।

"तू न हम को भूल जा" कहना कैसा ?

सुवाल : दुआ़ में येह अश्आ़र पढ़ना कैसा है ?

या ख़ुदा ! अपने न आईने करम को भूल जा   हम तुझे भूले हैं लेकिन तू न हम को भूल जा

है दुआ़ए बिस्मिले नीम जां, कि मेरी ख़ताओं को भूल जा

है मुझे तो तेरा ही आसरा, तू ग़फ़ूर है तू रह़ीम है

जवाब : "भूलना" के अस्ल मा'ना "याद न रहना" है। तो अगर क़ाइल की येही मुराद है तब तो कुफ़्र है और कहने वाले ने लफ़्ज़ "भूलना" को "छोड़ना" के मा'ना में इस्ति'माल किया तो **कुफ़्र** नहीं।

"अ़र्शे आ'ज़म पे रब" वाला शे'र पढ़ना कैसा ?

सुवाल : येह शे'र दुरुस्त है या नहीं ?

अ़र्शे आ'ज़म पे रब सब्ज़ गुम्बद में तुम क्यूं कहूं मेरा कोई सहारा नहीं
मैं मदीने से लेकिन बहुत दूर हूं येह ख़लिश मेरे दिल को गवारा नहीं

जवाब : इस शे'र के इब्तिदाई अल्फ़ाज़ "अ़र्शे आ'ज़म पे रब" عَزَّوَجَلَّ में ब ज़ाहिर مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ अ़र्शे आ'ज़म पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मकान माना गया है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के लिये मकान मानना कुफ़्रे लुज़ूमी है।** अगर इस शे'र की इब्तिदा में "अ़र्शे आ'ज़म का रब" عَزَّوَجَلَّ पढ़ें तो शे'र शरई गिरिफ़्त से निकल जाएगा।

"जब रोज़े ह़श्र तख़्त पे बैठेगा किब्रिया" कहना कैसा ?

सुवाल : नमाज़ की तल्क़ीन से मुतअ़ल्लिक़ एक नज़्म केसिट में सुनी जाती है, उस में बे नमाज़ी की मज़म्मत में पढ़े जाने वाले इस **शे'र** के बारे में हुक्मे शरई क्या है ?

जब रोज़े ह़श्र तख़्त पे बैठेगा किब्रिया उस वक़्त क्या कहोगे तुम्हें आएगी ह़या
शर्मो ह़या से उस घड़ी सर को झुकाओगे जन्नत तो क्या मिलेगी जहन्नम में जाओगे

जवाब : "जब रोज़े ह़श्र तख़्त पे बैठेगा किब्रिया" येह अल्फ़ाज़ **कुफ़्रिय्या** हैं। फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : जो कहे : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **इन्साफ़ के लिये बैठा या खड़ा हो गया उस पर हुक्मे कुफ़्र है।** (فتاوٰی تاتار خانیه ج٥ ص ٤٦٦) इस मिस्रअ़ को अगर यूं पढ़ लें तो शे'र दुरुस्त हो जाएगा : "तुम को बरोज़े ह़श्र जो पूछेगा किब्रिया"

अम्बियाए किराम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की गुस्ताख़ी के बारे में सुवाल जवाब

ग़ैरे नबी के साथ عَلَیْهِ السَّلَام बोलना कैसा ?

सुवाल : ग़ैरे नबी के साथ "عَلَیْهِ السَّلَام" लिखना और बोलना कैसा है ?

जवाब : मन्अ़ है। चुनान्चे ह़ज़रते सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی की ख़िदमत में **सुवाल** हुवा : **या हुसैन** عَلَیْهِ السَّلَام कहना जाइज़ है या नहीं और ऐसा लिखना भी कैसा है और पुकारना कैसा है ? **अल जवाब :** येह सलाम जो नाम के साथ ज़िक्र किया जाता है येह (या'नी येह عَلَیْهِ السَّلَام कहना लिखना) सलामे तह़िय्यत (या'नी मुलाक़ात का सलाम) नहीं जो बाहम मुलाक़ात के वक़्त कहा जाता है या किसी ज़रीए़ से कहलाया

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

जाता है बल्कि इस (या'नी عَلَیْہِ السَّلَام) से मक़्सूद साहिबे इस्म (या'नी जिस का नाम है उस) की **ता'ज़ीम** है। उ़र्फ़े अहले इस्लाम ने इस सलाम (या'नी عَلَیْہِ السَّلَام लिखने बोलने) को अम्बिया व मलाएका के साथ ख़ास कर दिया है। मसलन ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام ह़ज़रते मीकाईल عَلَیْہِ السَّلَام। लिहाज़ा ग़ैरे नबी व मलक (नबी और फ़िरिश्ते के इलावा) के नाम के साथ عَلَیْہِ السَّلَام नहीं कहना चाहिये। وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم। (फ़तावा अम्जदिय्या, जि. 4, स. 243, 245)

मो'जिज़ाते अम्बिया का इन्कार करने वाले का हुक्म

सुवाल : अम्बियाए किराम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के **मो'जिज़ात** को ग़लत़ बताने वाला कैसा है ?

जवाब : मो'जिज़ात को मुत़्लक़न ग़लत़ बताने वाला **काफ़िर व मुरतद** है। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 323)

नबी के इ़ल्मे ग़ैब का मुन्किर मुसल्मान है या काफ़िर ?

सुवाल : नबी के इ़ल्मे ग़ैब का मुन्किर मुसल्मान है या काफ़िर ?

जवाब : इ़ल्मे ग़ैब का इन्कार करना बा'ज़ सूरतों में कुफ़्र है बा'ज़ सूरतों में गुमराही, बा'ज़ सूरतों में न कुफ़्र,

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

न गुमराही, न फ़िस्क़ या'नी कुछ भी हुक्म नहीं इन तमाम सूरतों की तफ़्सील दर्जे ज़ैल है चुनान्चे हज़रते अ़ल्लामा सय्यिद अ़ब्दुर्रहमान عَلَیۡہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن लिखते हैं :

﴾1﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही आ़लिम बिज़्ज़ात है बे उस के बताए एक हर्फ़ कोई नहीं जान सकता।

﴾2﴿ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और दीगर अम्बियाए किराम عَلَیۡھِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने **बा'ज़ ग़ुयूब** का इ़ल्म दिया।

﴾3﴿ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इ़ल्म औरों से ज़ाइद है (जैसा कि मुसल्मानों का अ़क़ीदा है), इब्लीस का इ़ल्म مَعَاذَ اللّٰہ इ़ल्मे अक़्दस से हरगिज़ वसीअ़ तर नहीं (बल्कि उस का इ़ल्मे अक़्दस के साथ कोई मुक़ाबला ही नहीं)।

﴾4﴿ जो इ़ल्म **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सिफ़ते ख़ास्सा (या'नी मख़्सूस सिफ़त) है जिस में उस के हबीब मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को शरीक करना भी शिर्क हो वोह हरगिज़ इब्लीस के लिये नहीं हो सकता जो ऐसा माने क़त्अ़न मुश्रिक **काफ़िर** मल्ऊ़न बन्दए इब्लीस है।

﴾5﴿ ज़ैद व अ़म्र, हर बच्चे, पागल, चौपाए को **इ़ल्मे ग़ैब** में मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुमासिल

(बराबर) कहना हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सरीह़ (खुली) तौहीन और **खुला कुफ़्र** है। येह (या'नी ऊपर बयान कर्दा पांचों नम्बरों के) सब मसाइल ज़रूरिय्याते दीन से हैं और इन का मुन्किर (इन्कार करने वाला), इन में अदना (मा'मूली) शक लाने वाला **क़त्अ़न** काफ़िर। येह **क़िस्मे अव्वल** हुई।

《6》 औलियाए किराम نَفَعَنَا اللّٰهُ تعالٰی بِبَرَکَاتِهِم فِی الدَّارَیْن (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दोनों जहां में इन की बरकतों से हमें मालामाल करे) को भी कुछ उ़लूमे ग़ैब मिलते हैं मगर ब वसात़ते रुसुल عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام (या'नी रसूलों के ज़रीए़)। मो'तज़िला (नामी बात़िल फ़िर्क़ा) خَذَلَهُمُ اللّٰهُ تعالٰی (**अल्लाह** तआ़ला इन को ग़ारत करे) कि सिर्फ़ रसूलों के लिये **इत्त़िलाए़ ग़ैब** मानते और औलियाए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم का **उ़लूमे ग़ैब** का अस्लन (बिल्कुल) हि़स्सा नहीं मानते गुमराह व मुब्तदिअ़ (बिदअ़ती) हैं।

《7》 **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने मह़बूबों ख़ुसूसन सय्यिदुल मह़बूबीन صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی عَلَیْهِ وَعَلَیْهِمْ وَسَلَّم को **ग़ुयूबे ख़म्सा** (पांच उ़लूमे ग़ैबिय्या) से बहुत जुज़्इय्यात का इ़ल्म बख़्शा जो येह कहे कि ख़म्स (या'नी पांच) में से किसी फ़र्द (हि़स्से) का इ़ल्म किसी को न दिया गया हज़ारहा अह़ादीसे **मुतवातिरतुल मा'ना** का मुन्किर (इन्कार

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

करने वाला) और बद मज़्हब ख़ासिर (नुक़्सान उठाने वाला) है। येह **क़िस्मे दुवुम** हुई।

《8》 रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ता'यीने वक़्ते **क़ियामत** (या'नी कब आएगी इस) का भी इल्म मिला।

《9》 हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बिला इस्तिस्ना जमीअ़ जुज़्इय्याते **ख़म्स** (या'नी किसी इस्तिस्ना के बिग़ैर पांचों उ़लूम के तमाम हिस्सों) का इल्म है।

《10》 जुम्ला मक्नूनाते क़लम व मक्तूबाते लौह़ बिल जुम्ला रोजे़ अव्वल से रोजे़ आख़िर तक तमाम माकान व मा यकून मुन्दरजए लौह़े मह़फ़ूज़ और इस से बहुत ज़ाइद का इल्म है जिस में मा वराए क़ियामत तो जुम्ला अफ़रादे ख़म्स दाख़िल और दरबारए क़ियामत अगर साबित हो कि इस की ता'यीने वक़्त भी दर्जे लौह़ है तो इसे भी शामिल।

(ख़ुलासा : लौह़े मह़फ़ूज़ पर दर्ज कर्दा जो कुछ छुपा और ज़ाहिर और जो कुछ हो चुका और आयिन्दा होने वाला है उस का भी और इस से बहुत ज़ियादा चीज़ों का इल्म है और इस में क़ियामत के इ़लावा दीगर पांच उ़लूम के तो तमाम अफ़राद का इल्म दाख़िल है और अगर क़ियामत आने का वक़्त भी लौह़े मह़फ़ूज़ पे लिखा हुवा है तो इस का भी इल्म इस में आ गया है)।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

﴾11﴿ हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़क़ीक़ते रूह़ का भी इ़ल्म है।

﴾12﴿ जुम्ला मुतशाबहाते क़ुरआनिया का भी इ़ल्म है। येह पांचों मसाइल **क़िस्मे सिवुम** से हैं कि इन में ख़ुद उ़लमा व अइम्मए अहले सुन्नत मुख़्तलिफ़ (एक दूसरे से इख़्तिलाफ़ करने वाले) रहे हैं जिस का बयान बि औनिही तआ़ला वाज़ेह़ होगा इन में मुस्बत व नाफ़ी (या'नी तस्लीम करने वाले और इन्कार करने वाले) किसी पर مَعَاذَ الله कुफ़्र क्या मा'ना ज़लाल (गुमराही) या फ़िस्क़ का भी हुक्म नहीं हो सकता जब कि पहले सात मस्अलों पर ईमान रखता हो। الخ

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 29, स. 414 ता 416)

क्या ह़ज़रते ईसा मुर्दे ज़िन्दा करते थे ?

सुवाल : ज़ैद ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहु़ल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से मुर्दों को ज़िन्दा करने और ग़ैब की ख़बरें देने के मो'जिज़ों का इन्कार करता है इस का क्या हुक्म है ?

जवाब : ज़ैदे बे क़ैद का ए'तिक़ादे शैत़नत बुन्याद कुफ़्रिय्यात से भरपूर है और वोह क़ुरआने पाक की वाज़ेह़ आयात का इन्कारी है। चुनान्चे मरीज़ों के शिफ़ा देने और मुर्दे ज़िन्दा करने के मो'जिज़े का बयान पारह 3 **सूरए आले**

इमरान की आयत नम्बर 49 में मुलाहज़ा फ़रमा लीजिये। **ख़ुदाए रह़मान** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मुक़द्दस क़ुरआन में **ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का येह फ़रमाने अ़ज़मत निशान बयान किया गया है :

وَ اُبْرِیُٔ الْاَكْمَهَ وَ الْاَبْرَصَ وَ اُحْیِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ
(پ ۳ اٰلِ عمران ۴۹)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और मैं शिफ़ा देता हूं मादर ज़ाद अन्धे और सपेद दाग़ वाले (या'नी कोढ़ी) को और मैं मुर्दे जिलाता हूं **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के हुक्म से।

देखा आप ने ? ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام **साफ़ साफ़ ए'लान फ़रमा रहे हैं कि मैं अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की बख़्शी हुई क़ुदरत से मादर ज़ाद अन्धों को बीनाई और कोढ़ियों को शिफ़ा देता हूं ह़त्ता कि मुर्दों को भी ज़िन्दा कर दिया करता हूं।**

ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام का इल्मे ग़ैब

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के **इल्मे ग़ैब शरीफ़** के बारे में उन ही का क़ौल बयान करते हुए इर्शाद होता है :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

وَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ ۙ فِیْ بُیُوْتِكُمْ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ۚ﴿۴۹﴾

(پ ٣ ال عمران ٤٩)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हें बताता हूं जो तुम खाते और जो अपने घरों में जम्अ़ कर रखते हो । बेशक इन बातों में तुम्हारे लिये बड़ी निशानी है अगर तुम ईमान रखते हो ।

मुन्दरिजए बाला आयते मुबारका में ह़ज़रते सय्यिदुना **ईसा** रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का साफ़ साफ़ ए'लान नक़्ल किया गया है कि तुम जो कुछ खाते हो वोह मुझे मा'लूम हो जाता है और जो कुछ घर में बचा कर रखते हो उस का भी पता चल जाता है । प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अब येह **इल्मे ग़ैब** नहीं तो और क्या है ? ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की जब येह शान है तो **आक़ाए ईसा, मीठे मीठे मौला, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इल्मे ग़ैब शरीफ़ की क्या शान होगी ? आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से आख़िर क्या छुपा रह सकता है ? आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को भी जो कि ग़ैबुल ग़ैब है चश्माने सर (या'नी सर की आंखों) से मुलाह़ज़ा फ़रमा लिया,

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहां हो भला

जब न ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ *ही छुपा तुम पे करोड़ों दुरूद*

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام और इसराईली बच्चे

सुवाल : क्या येह दुरुस्त है कि **ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा** रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام बच्चों को उन के घर के खानों की तफ़्सीलात इर्शाद फ़रमा दिया करते थे।

जवाब : जी हां। तफ़्सीरे जमल में है कि (ह़ज़रते सय्यिदुना) ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अपने मक्तब में बनी इसराईल के बच्चों को उन के मां बाप जो कुछ खाते और जो कुछ घरों में छुपा कर रखते वोह सब बता दिया करते थे। जब वालिदैन ने बच्चों से दरयाफ़्त किया कि तुम्हें इन बातों की कैसे ख़बर हो जाती है? तो बच्चों ने बता दिया कि हम को (ह़ज़रते सय्यिदुना) ईसा (रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) मक्तब में बता देते हैं। येह सुन कर मां बाप ने बच्चों को मक्तब जाने से रोक दिया। और कहा कि (ह़ज़रते)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

ईसा (مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ) जादूगर हैं। जब (हज़रते सय्यिदुना) ईसा (रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) बच्चों की तलाश में बस्ती के अन्दर दाख़िल हुए तो बनी इसराईल ने अपने बच्चों को एक मकान के अन्दर छुपा दिया और कह दिया कि बच्चे यहां नहीं हैं। आप (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) ने पूछा कि घर में कौन हैं ? तो शरीरों ने कह दिया कि घर में ख़िन्ज़ीर बन्द हैं। तो आप (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) ने फ़रमाया कि अच्छा **ख़िन्ज़ीर** ही होंगे। चुनान्चे लोगों ने इस के बा'द जब मकान का दरवाज़ा खोला तो मकान में से **सुवर** ही निकले ! इस बात का बनी इसराईल में चरचा हो गया और उन लोगों ने ग़ैज़ो ग़ज़ब में भर कर आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को शहीद करने का मन्सूबा बना लिया। येह देख कर (हज़रते सय्यिदुना) ईसा (रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) की वालिदा (हज़रते सय्यिदतुना बीबी) मरयम (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) आप (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) को साथ ले कर मिस्र को हिजरत कर गईं और इस तरह आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام शरीरों के शर से महफ़ूज़ रहे।

(تفسیر جمل ج ١ ص ٤٢٠, अ़जाइबुल क़ुरआन, स. 73)

ग़ौसे आ'ज़म का इल्मे ग़ैब

बहर हाल ख़ुदाए ज़ुल जलाल عَزَّوَجَلَّ ने ब शुमूल हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तमाम अम्बियाए किराम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को इल्मे ग़ैब से नवाज़ा है। अम्बियाए किराम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की तो बड़ी शान है, ब अ़ताए रब्बुल अनाम, ब फ़ैज़ाने अम्बियाए किराम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام भी ग़ैब की ख़बरें बता सकते हैं। चुनान्चे हज़रते **सय्यिदुना शाह अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी** عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی ने **अख़्बारुल अख़्यार** में हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का येह इर्शाद नक़्ल किया है : **अगर शरीअ़त ने मेरे मुंह में लगाम न डाली होती तो मैं तुम्हें बता देता कि तुम ने घर में क्या खाया है और क्या रखा है, मैं तुम्हारे ज़ाहिर व बातिन को जानता हूं क्यूं कि तुम मेरी नज़र में** (आर पार नज़र आने वाले) **शीशे** (कांच की बोतल) **की त़रह़ हो।**

(اخبار الاخیار ص ۱۵)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

हज़रते मौलाना रूमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **मस्नवी शरीफ़** में फ़रमाते हैं

لَوحِ محفوظ اَست پیشِ اولیاء
اَز چہ محفوظ اَست محفوظ اَز خطا

या'नी लौहे महफ़ूज़ औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی के पेशे नज़र होता है जो कि हर ख़ता से महफ़ूज़ होता है।

बछड़े की बोली समझने वाले बुज़ुर्ग

मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अहमद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 13 सफ़हा नम्बर 603 ता 604 पर एक **ईमान अफ़्रोज़ हिकायत** नक़्ल करते हैं कि इमाम शहाबुद्दीन सोहर वर्दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक दिन मैं **हज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ाहिर ज़ियाउद्दीन सोहर वर्दी** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हुज़ूर में हाज़िर था कि एक देहक़ानी (या'नी दीहाती) एक **बछड़ा** लाया और अ़र्ज़ की : येह हमारी त़रफ़ से हज़रत की नज़्र है, और चला गया। **बछड़ा** आ कर हज़रत के सामने खड़ा हुवा, हज़रत ने फ़रमाया : येह **बछड़ा** मुझ से कहता है : "मैं आप की नज़्र नहीं हूं, मैं

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

ह़ज़रते शैख़ अ़ली बिन हैती की नज़्र हूं, आप की नज़्र मेरा भाई है।" कुछ देर न हुई थी कि वोह देहक़ानी एक और **बछड़ा** लाया जो सूरत में उस के मुशाबेह (मिलता जुलता) था और अ़र्ज़ की : ऐ मेरे सरदार ! मैं ने हुज़ूर की नज़्र येह बछड़ा माना था और वोह **बछड़ा** जो पहले मैं ह़ाज़िर लाया था वोह मैं ने **ह़ज़रते शैख़ अ़ली बिन हैती** की नज़्र माना है, मुझे धोका हो गया था। येह कह कर पहले **बछड़े** को ले लिया और वापस चला गया। (بہجۃ الاسرار ص ٤٣٧)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ **अ़ब्दुल क़ाहिर सोहर वर्दी** عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی **बछड़े** की बोली भी समझ गए ! रहा येह कि **बछड़े** का आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से कलाम करना तो येह **बछड़े** की नहीं आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की **करामत** थी। वरना बे ज़बान हैवान को क्या पहचान और वोह लेने देने के मुआ़मलात को क्या समझे !

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे । (شعب الایمان)

जब **वली** की येह शान है तो **नबी** की क्या शान होगी और फिर **सय्यिदुल अम्बिया** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का क्या मक़ाम होगा !

चाहें तो इशारों से अपने काया ही पलट दें दुन्या की
येह शान है ख़िदमत गारों की सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم *का आ़लम क्या होगा*

क्या ईसा عَلَيْهِ السَّلَام वफ़ात पा चुके हैं ?

सुवाल : क्या हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام वफ़ात पा चुके हैं ?

जवाब : जी नहीं । आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अभी ज़ाहिरी वफ़ात नहीं पाई । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को ज़िन्दा आस्मान पर उठा लिया है। चुनान्चे सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **ईसा** عَلَيْهِ السَّلَام को **अल्लाह** तआ़ला ने ज़िन्दा आस्मान पर उठा लिया । (पारह 6 सूरतुन्निसाअ आयत नम्बर 157 में है :) وَمَا قَتَلُوْهُ وَمَا صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ؕ (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और है येह कि उन्हों ने न उसे क़त्ल किया और न उसे सूली दी बल्कि उन के लिये उस की शबीह का एक

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोजे़ जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

बना दिया गया। ((پ٦النساء ١٥٧)) (मजी़द इसी सूरत की आयत नम्बर 158 में इर्शाद होता है :) بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ ط (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** बल्कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने उसे अपनी त़रफ़ उठा लिया। ((پ٦النسآء ١٥٨))

(फ़तावा अम्जदिय्या, जि. 4, स. 42)

हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के आस्मान पर उठाए जाने का ईमान अफ़्रोज़ वाक़िआ़

सुवाल : हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के आस्मान पर उठाए जाने का वाक़िआ़ बयान कर दीजिये।

जवाब : हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने जब यहूदियों के सामने अपनी नुबुव्वत का ए'लान फ़रमाया तो चूंकि यहूदी **तौरात शरीफ़** में पढ़ चुके थे कि "हज़रते **ईसा** मसीह़ (عَلَيْهِ السَّلَام) इन के दीन के बा'ज़ अह़काम को मन्सूख़ कर देंगे। इस लिये वोह आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दुश्मन हो गए। यहां तक कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना **ईसा** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने येह मह़सूस फ़रमा लिया कि यहूदी अपने **कुफ़्र** पर अड़े रहेंगे और वोह मुझे शहीद करने के दरपै होंगे तो एक दिन आप (عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ने लोगों को मुख़ात़ब

कर के फ़रमाया :

مَنْ اَنْصَارِیْۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ
(پ۲۸ الصف ۱٤)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : कौन हैं जो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की त़रफ़ हो कर मेरी मदद करें ?

बारह या उन्नीस ह़वारियों ने येह कहा :

نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ
(پ۲۸ الصف ۱٤)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : हम दीने ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) के मददगार हैं।

बाक़ी तमाम यहूदी अपने **कुफ़्र** पर जमे रहे। यहां तक कि जोशे अ़दावत में उन लोगों ने आप (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) को **शहीद** करने का मन्सूबा बना लिया और "तैत़ानूस" नामी एक शख़्स को आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मकान में आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को **शहीद** कर देने के लिये भेजा। **अल्लाह** तआ़ला ने आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को आस्मान की त़रफ़ उठाने के लिये ह़ज़रते **जिब्राईल** عَلَیْہِ السَّلَام को एक बदली के साथ भेजा। आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की वालिदए माजिदा सय्यिदतुना **बीबी मरयम** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا जोशे मह़ब्बत में आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के साथ चिमट गईं तो आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : **अम्मीजान ! अब**

क़ियामत के दिन हमारी मुलाक़ात होगी और बदली ने आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام **को आस्मान पर पहुंचा दिया ।** येह वाक़िआ़ बैतुल मुक़द्दस में शबे क़द्र में वुक़ूअ़ पज़ीर हुवा। उस वक़्त तै़त़ानूस जब बहुत देर तक मकान से बाहर न निकला तो यहूदी मकान में घुस गए तो **अल्लाह** तआ़ला ने तै़त़ानूस को ह़ज़रते सय्यिदुना **ईसा** रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की शक्ल का बना दिया। यहूदियों ने तै़त़ानूस को ह़ज़रते **ईसा** समझ कर सूली पर चढ़ा दिया। इस के बा'द जब तै़त़ानूस के घर वालों ने ग़ौर से देखा तो सिर्फ़ चेहरा ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام जैसा था बाक़ी सारा बदन तै़त़ानूस ही का था तो उस के अहले ख़ानदान ने कहा कि अगर येह मक़्तूल ह़ज़रते ईसा हैं तो हमारा आदमी तै़त़ानूस कहां है ? और अगर येह तै़त़ानूस है तो ह़ज़रते ईसा कहां गए ? इस पर ख़ुद यहूदियों में जंगो जिदाल की नौबत आ गई और उन्हों ने एक दूसरे को क़त्ल करना शुरूअ़ कर दिया और यूं बहुत से यहूदी मारे गए।"

(تفسیر جمل ج۱ ص ٤٢٢۔٤٢٨, अ़जाइबुल क़ुरआन, स. 73, 75)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

आदम عَلَيْهِ السَّلَام को कुरबानी का बकरा कहना कैसा ?

सुवाल : येह कहना कैसा कि जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आदमियों को दुन्या में बसाना ही था तो फिर ह़ज़रते सय्यिदुना **आदम** عَلَيْهِ السَّلَام को कुरबानी का बकरा क्यूं बनाया ?

जवाब : ऐसा कहना **सरीह़ कुफ़्र** है। इस क़ौले बदतर अज़ बौल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भी **ए'तिराज़** है और ह़ज़रते सय्यिदुना **आदम** सफ़िय्युल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की भी **गुस्ताख़ी**।

"ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने ना फ़रमानी की" कहना कैसा ?

सुवाल : "सब से पहले **ह़ज़रते आदम** عَلَيْهِ السَّلَام ने ना फ़रमानी की" येह कहना कैसा ?

जवाब : तिलावते क़ुरआने करीम या क़िराअते ह़दीसे पाक के सिवा अपनी त़रफ़ से ह़ज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ख़्वाह किसी नबी को मा'सियत की त़रफ़ मन्सूब करना **सख़्त ह़राम** बल्कि एक जमाअ़ते उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने इसे **कुफ़्र** बताया। चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ग़ैरे तिलावत में अपनी त़रफ़ से **सय्यिदुना आदम** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ ना

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़ह़ा करूं (या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشکوال)

फ़रमानी व गुनाह की निस्बत **ह़राम** है। अइम्मए दीन (رحمهم الله المبين) ने इस की तसरीह़ फ़रमाई बल्कि एक जमाअ़ते उ़लमाए किराम (رحمهم الله السلام) ने उसे कुफ़्र बताया। **मौला** (عَزَّوَجَلَّ) को शायां है कि अपने मह़बूब बन्दों को जिस इ़बारत से ता'बीर (या'नी जो चाहे) फ़रमाए (मगर) दूसरा कहे तो उस की ज़बान गुद्दी के पीछे से खींची जाए। وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की शान सब से बुलन्द। (پ ٤ النحل ٦٠)) बिला तश्बीह यूं ख़याल करो कि **ज़ैद** ने अपने बेटे **अ़म्र** को उस की किसी लग़्ज़िश या भूल पर मुतनब्बेह (या'नी ख़बरदार) करने, अदब देने, ह़ज़्मो अ़ज़्म व एह़तियाते़ अतम (या'नी आदाब व एह़तियात़) सिखाने के लिये मसलन बेहूदा, ना लाइक़, अह़मक़ वग़ैरहा अल्फ़ाज़ से ता'बीर किया (कि) बाप को इस का इख़्तियार था। अब क्या **अ़म्र** का बेटा बक्र या ग़ुलाम ख़ालिद इन्हीं अल्फ़ाज़ को सनद बना कर अपने बाप और आक़ा **अ़म्र** को येह अल्फ़ाज़ कह सकता है ? ह़ाशा ! (हरगिज़ नहीं) अगर कहेगा (तो) सख़्त गुस्ताख़ व मरदूदो ना सज़ा व मुस्तह़िक़्क़े अ़ज़ाब व ता'ज़ीरो सज़ा होगा। जब यहां येह ह़ालत (या'नी आ़म बाप बेटों का येह मुआ़मला) है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रीस कर के अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की शान

में ऐसे लफ़्ज़ का बकने वाला क्यूंकर सख़्त शदीद व मदीद अ़ज़ाबे जहन्नम व ग़ज़बे इलाही का मुस्तह़िक़ न होगा। وَالعِيَاذُ بِاللّٰهِ تَعَالٰی। **सरकारे आ'ला ह़ज़रत,** इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने मज़ीद आगे चल कर येह नक़्ल फ़रमाया है कि इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद अ़ब्दरी इब्नुल ह़ाज **मदख़ल** में फ़रमाते हैं : हमारे उ़लमा رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं कि जो शख़्स **अम्बिया** عَلَيْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में से किसी नबी के बारे में ग़ैरे तिलावत व ह़दीस में येह कहे कि उन्हों ने **ना फ़रमानी** या **ख़िलाफ़ वर्ज़ी** की तो उस का येह कहना **कुफ़्र** है। इस (त़रह़ की बातों) से हम ख़ुदा की पनाह मांगते हैं।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 1-ب, स. 1119, 1120)

आदम عَلَيْهِ السَّلَام गन्दुम न खाते तो......

सुवाल : येह कहना कैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना **आदम** عَلَيْهِ السَّلَام गन्दुम न खाते तो हम बद बख़्त न होते।

जवाब : ऐसा कहना **कुफ़्र** है। (فتاوی عالمگیری ج۲ ص۲٦٥)

क्या नबी का बदन मिट्टी खा सकती है ?

सुवाल : क्या नबी का बदन मिट्टी खा सकती है ?

जवाब : हरगिज़ नहीं खा सकती। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के

मह्बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीमुश्शान है :

اِنَّ اللّٰہَ حَرَّمَ عَلَی الْاَرضِ اَنْ تَاکُلَ اَجسَادَ الْاَنْبِیَاءِ فَنَبِیُّ اللّٰہِ حَیٌّ یُّرْزَقُ.

"बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन पर ह़राम फ़रमा दिया है कि वोह अम्बियाए किराम के बदन खाए। **अल्लाह** के नबी ज़िन्दा हैं और उन को रोज़ी दी जाती है।" (سُنَنِ اِبنِ ماجہ ج٢ ص٢٩١ حدیث ١٦٣٦) सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی फ़रमाते हैं : अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلام और औलियाए किराम व उ़लमाए दीन व शुहदा व ह़ाफ़िज़ाने क़ुरआन कि क़ुरआने मजीद पर अ़मल करते हों, और वोह जो मन्सबे मह़ब्बत पर फ़ाइज़ हैं, और वोह जिस्म जिस ने कभी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मा'सियत न की, और वोह कि अपने अवक़ात दुरूद शरीफ़ में मुस्तग़रक़ (या'नी निहायत मसरूफ़) रखते हैं उन के बदन को मिट्टी नहीं खा सकती। **जो शख़्स अम्बियाए किराम** عَلَیْہِمُ السَّلام **की शान में येह ख़बीस कलिमा कहे कि मर कर मिट्टी में मिल गए, गुमराह, बद दीन, ख़बीस, मुर्तकिबे तौहीन है।** (बहारे शरीअ़त, हिस्सए अव्वल, स. 57)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

क्या ह़यातुन्नबी कहना जाइज़ है ?

सुवाल : क्या ह़यातुन्नबी कहना जाइज़ है ?

जवाब : बेशक जाइज़ है, बिला शक जाइज़ है, बिला शुबा जाइज़ है। **वल्लाह बिल्लाह तल्लाह** मेरे मक्की मदनी आक़ा **मीठे मीठे मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और तमाम **अम्बियाए किराम** عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ह़यात हैं। येह ह़दीसे पाक बहुत ही मश्हूर है और इस को बे शुमार मुह़द्दिसीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين ने रिवायत किया है चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : اَلْاَنْبِیَاءُ اَحْیَاءٌ فِیْ قُبُوْرِهِمْ یُصَلُّوْنَ या'नी अम्बियाए किराम अपनी अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं और नमाज़ पढ़ते हैं। (مُسنَدُ ابی یعلٰی ج۳ ص ۲۱۶ حدیث ۳۴۱۲)

तू ज़िन्दा है वल्लाह तू ज़िन्दा है वल्लाह
मेरे चश्मे आ़लम से छुप जाने वाले

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

क्या अम्बियाए किराम आमदो रफ़्त भी करते हैं ?

सुवाल : जब अम्बियाए किराम ज़िन्दा हैं तो क्या वोह कहीं आ जा भी सकते हैं या फ़क़त़ अपने मज़ारात ही में तशरीफ़ फ़रमा रहते हैं ?

जवाब : अम्बियाए किराम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام बेशक अपनी

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

क़ब्रों में ज़िन्दा हैं मगर वहां क़ैद नहीं। **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की इनायत से आते जाते, इ़बादत फ़रमाते हैं। इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी ख़ातिमे हुफ़्फ़ाज़ुल ह़दीस (رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) फ़रमाते हैं : "तमाम अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को इख़्तियार मिला है कि अपने मज़ाराते त़य्यिबात से बाहर तशरीफ़ लाएं और जुम्ला आ़लम आस्मानो ज़मीन में जहां जो चाहें तसर्रुफ़ फ़रमाएं।" (الحاوی للفتاوی ج۲ص۲۶۳, फ़तावा रज़विय्या, जि. 29, स. 282) इस ज़िम्न में **दो ईमान अफ़रोज़ अह़ादीसे मुबारका** पढ़िये और आंखें ठन्डी कीजिये।

(1) मूसा व यूनुस عَلَیْہِمَا السَّلَام को देखा

नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم "वादिये अज़्रक़" से गुज़रे तो फ़रमाया : येह कौन सी वादी है? अ़र्ज़ की गई **वादिये अज़्रक़**। फ़रमाया : गोया कि मैं (ह़ज़रते) **मूसा** (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) **को बुलन्दी से उतरते हुए देख रहा हूं,** वोह बुलन्द आवाज़ में **तल्बिया** कह रहे हैं। फिर सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم "वादिये हरशा" पर आए। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : येह कौन सी वादी है ? लोगों ने अ़र्ज़ की : येह **"वादिये हरशा"** है। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : गोया कि मैं (ह़ज़रते) **यूनुस बिन मत्ता** (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) **को देख रहा हूं कि वोह एक त़ाक़त वर सुर्ख़ ऊंटनी पर सुवार हैं,** उन्हों ने एक ऊनी जुब्बा पहना हुवा है, ऊंटनी की नकील खजूर की छाल की है और वोह **तल्बिया** पढ़ रहे हैं। (صحیح مُسلِم حدیث ۲٦٨ ص ۱۰۳) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(2) सह़ाबए किराम ने किस का दस्ते मुबारक देखा ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है : हम **सरकारे दो आ़लम,** नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़्तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह थे कि अचानक हम ने एक **हाथ** देखा तो हम ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह **हाथ** कैसा है जो हम ने

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

देखा ? आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या तुम ने उस हाथ को देखा ? हम ने अ़र्ज़ की : जी। फ़रमाया : **येह ईसा बिन मरयम हैं जिन्हों ने मुझे सलाम किया था।** (الخصائص الکبری ج۲ص۱۵۲) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़िफ़रत हो।**

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अम्बियाए किराम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की पाक शानें तो बहुत ही बड़ी हैं। **औलियाए उ़ज़ाम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام भी ज़ाहिरी वफ़ात के बा'द ह़यात होते हैं और जिन पर ख़ुसूसी करम हो वोह इ़बादत भी बजा लाते हैं। ह़ुसूले बरकत के लिये एक **ह़िकायत** पेश की जाती है पढ़िये और झूमिये।

क़ब्र में जूं ही उतारा नमाज़ पढ़ने लगे !

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी** قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मूसा बिन माहीन ज़ौली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه "मारदीन" में रहते थे, वहीं वफ़ात पाई और उसी मक़ाम पर आप

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार ज़ियारत गाहे ख़वास व अ़वाम है। **जूं ही आप** رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **को लह़द में रखा गया तो क़ब्र वसीअ़ हो गई और आप** رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **खड़े हो कर नमाज़ पढ़ने लगे !** जो शख़्स आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की लह़द में उतरा था वोह येह मन्ज़र देख कर बेहोश हो गया। (الطبقات الکبری للشعرانی ج ١ ص ١٩٦) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

"एक लाख 24 हज़ार अम्बिया" कहना कैसा ?

सुवाल : क्या येह दुरुस्त है कि एक लाख चौबीस हज़ार अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام दुन्या में तशरीफ़ लाए ?

जवाब : ता'दाद मुअ़य्यन न की जाए। कहना ही हो तो इस त़रह़ कहे : "कमो बेश एक लाख चौबीस हज़ार......" सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : **अम्बिया** عَلَيْهِمُ السَّلَام की कोई ता'दाद मुअ़य्यन करना जाइज़ नहीं, कि ख़बरें इस बाब में मुख़्तलिफ़ हैं और ता'दादे मुअ़य्यन पर ईमान रखने में

नबी को नुबुव्वत से ख़ारिज मानने, या ग़ैरे नबी को नबी जानने का एह़तिमाल (या'नी पहलू) है, और येह दोनों बातें (या'नी नबी को नुबुव्वत से ख़ारिज मानना, या ग़ैरे नबी को नबी जानना) **कुफ़्र** हैं। लिहाज़ा येह ए'तिक़ाद चाहिये कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के हर नबी पर हमारा ईमान है। (बहारे शरीअ़त, हिस्सए अव्वल, स. 37)

गौतम बुध को नबी कहना कैसा है ?

सुवाल : गौतम बुध को नबी तसव्वुर करना कैसा है ?

जवाब : बहुत सख़्त जहालत व गुमराही है। ह़ज़रते फ़क़ीहे मिल्लत मुफ़्ती जलालुद्दीन अह़मद अमजदी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "राम क्रिश्न, गौतम बुध वग़ैरा हरगिज़ नबी नहीं। इन्हें नबी व रसूल ख़याल करना सख़्त जहालत व गुमराही है।" (फ़तावा फ़क़ीहे मिल्लत, जि. 1, स. 24) मज़ीद तफ़्सीलात के लिये **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الْحَنَّان की किताबे मुस्तत़ाब **शाने ह़बीबुर्रह़मान** सफ़ह़ा 197 ता 198 का मुत़ालआ़ फ़रमाइये।

नुबुव्वत सिर्फ़ अल्लाह की इनायत से मिली है

सुवाल : क्या मह़्ज़ इबादत व रियाज़त के ज़रीए़ भी किसी को नुबुव्वत मिली है ?

जवाब : जी नहीं। नुबुव्वत कस्बी या'नी अपनी कोशिश से ह़ासिल की हुई नहीं होती, वह्बी या'नी अ़त़ाई होती है। दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 36 पर सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : नुबुव्वत कस्बी नहीं कि आदमी इ़बादतो रियाज़त के ज़रीए़ से ह़ासिल कर सके बल्कि मह़्ज़ अ़त़ाए इलाही है कि जिसे चाहता है अपने फ़ज़्ल से देता है। हां देता उसी को है जिसे इस मन्सबे अ़ज़ीम के क़ाबिल बनाता है। जो क़ब्ले ह़ुसूले नुबुव्वत तमाम अख़्लाक़े रज़ीला से पाक और तमाम अख़्लाक़े फ़ाज़िला से मुज़य्यन हो कर जुम्ला मदारिजे विलायत (विलायत के तमाम दरजात) त़ै कर चुकता है और अपने नसब व जिस्म व क़ौलो फ़े'ल व ह़रकातो सकनात में हर ऐसी बात से मुनज़्ज़ह (पाक) होता है जो बाइ़से नफ़्रत हो। उसे अ़क़्ले कामिल अ़त़ा की जाती है जो औरों की अ़क़्ल से ब दरजहा ज़ाइद है किसी ह़कीम और किसी फ़ल्सफ़ी की अ़क़्ल उस के लाखवें ह़िस्से तक नहीं पहुंच सकती (क़ुरआने ह़कीम पारह 8 **सूरतुल अन्आ़म** आयत नम्बर 124 में फ़रमाने अ़ज़ीम है :)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهٗ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ख़ूब जानता है जहां अपनी रिसालत रखे। (پ۸ الانعام ۱۲۴)

ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿۲۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : येह **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) बड़े फ़ज़्ल वाला है। (پ۲۷ الحدید ۲۱). **मज़ीद** फ़रमाते हैं : जो इसे कस्बी (या'नी कोशिश से ह़ासिल की हुई) माने कि आदमी अपने कस्ब व रियाज़त (मेह़नतो मशक़्क़त) से मन्सबे नुबुव्वत तक पहुंच सकता है **काफ़िर** है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा : 1, स. 36)

नबी को बन्दा कहने से इन्कार करने वाले का हुक्म

सुवाल : उस के लिये क्या हुक्म है जो येह कहे कि मैं **हुज़ूरे अकरम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का **बन्दा** नहीं मानता।

जवाब : ऐसा शख़्स **मुरतद** है। क़ुरआने पाक में मुतअ़द्दद मक़ामात पर ऐसी आयात हैं जिन में **सरवरे काएनात** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का **बन्दा** कहा गया है। हर नमाज़ी पांचों वक़्त नमाज़ के क़ा'दे में कलिमए शहादत पढ़ता और इक़रार करता है : اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) या'नी मैं गवाही देता हूं बेशक ह़ज़रते **मुह़म्मद**

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के **बन्दे** और صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रसूल हैं। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : जो येह कहे कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** तआ़ला के बन्दे नहीं वोह क़त़्अ़न **काफ़िर** है। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 357)

डाकिये का अपने आप को पैग़म्बर कहना

सुवाल : अगर कोई **डाकिया** अपने आप को **पैग़म्बर** कहे और येह तावील करे कि पैग़म्बर के मा'ना पैग़ाम पहुंचाने वाला और मैं भी तो डाक या'नी पैग़ाम पहुंचाता हूं। इस के बारे में क्या हुक्मे शरई है?

जवाब : ऐसा कहने वाला **काफ़िर** है। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 186 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा 9 सफ़ह़ा 181 पर सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : जो अपने आप को **पैग़म्बर** कहे और तावील येह करे कि मैं पैग़ाम पहुंचाता हूं वोह **काफ़िर** है। येह तावील मस्मूअ़ नहीं

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

(या'नी ज़ाहिरी बचाव की येह दलील नहीं सुनी जाएगी) क्यूं कि उ़र्फ़ में येह लफ़्ज़े (पैग़म्बर) रसूल व नबी के मा'ना में है।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 9, स. 181, عالمگیری ج ۲ ص ۲۶۳)

"अम्बियाए किराम का गुस्ताख़ काफ़िर मुरतद है" के अट्ठाईस हुरूफ़ की निस्बत से अम्बिया की गुस्ताख़ी के बारे में कुफ़्रिय्यात की 28 मिसालें

﴾1﴿ जो कहे : ह़ज़रते सय्यिदुना **ईसा** रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام **अल्लाह** के बेटे हैं वोह **काफ़िर** है।

﴾2﴿ ग़ैरे अम्बिया के लिये वह़्ये नुबुव्वत मानना **कुफ़्र** है।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सए अव्वल, स. 31)

﴾3﴿ जो कहे कि नुबुव्वत इ़बादतो रियाज़त कर के ह़ासिल की जा सकती है वोह **काफ़िर** है। (ऐज़न, स. 32)

﴾4﴿ जो शख़्स नबी से नुबुव्वत ज़ाइल हो जाने को जाइज़ जाने वोह **काफ़िर** है। (ऐज़न, स. 32)

﴾5﴿ जो शख़्स येह कहे कि किसी नबी ने **अल्लाह** तआ़ला के किसी हुक्म को छुपाया और लोगों तक न पहुंचाया वोह **काफ़िर** है। (ऐज़न, स. 33)

﴾6﴿ जो ग़ैरे नबी को नबी से अफ़्ज़ल या ﴾7﴿ उस के

बराबर माने वोह **काफ़िर** है।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 1, स. 34)

《8》 **अइम्मए** अहले बैत को अम्बियाए किराम से अफ़्ज़ल जानना **कुफ़्र** है। (ऐज़न, स. 109)

《9》 अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیۡم को जो नबियों से अफ़्ज़ल या बराबर बताए काफ़िर है।

(ऐज़न, स. 34)

《10》 जिस ने तौहीन या 《11》 दुश्मनी के तौर पर तमन्ना की, कि अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में से कोई (फ़ुलां) नबी न होता उस ने **कुफ़्र** किया।

(فتاوٰی عالمگیری ج۲ص ۲۶۵)

《12》 किसी नबी की **अदना तौहीन** या 《13》 तक्ज़ीब (या'नी झुटलाना) **कुफ़्र** है। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 1, स. 35)

《14》 येह कहना कि कोई छोटा हो या बड़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की शान के आगे चमार से भी ज़लील है येह **कलिमए कुफ़्र** है। (फ़तावा अम्जदिय्या, जि. 4, स. 411)

《15》 ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को नाकारे लोग कहना **ख़ालिस कुफ़्र** है।

《16》 जो कहे कि मैं उस के कलाम की तस्दीक़ न करूंगा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

अगर्चे वोह नबी ही क्यूं न हो, वोह **काफ़िर** है।

(عالمگیری ج۲ص ۲۶۵)

17 किसी से कहा : नबी और फ़िरिश्ते भी तेरे सामने गवाही दें क्या तब भी तू उन की तस्दीक़ न करेगा ? उस ने कहा : हां। जवाब देने वाला **काफ़िर** है।

(اَلْبَحْرُ الرَّائِق ج۵ ص ۲۰۴)

18 जो किसी नबी से बुग़्ज़ रखे वोह **काफ़िर** है।

(عالمگیری ج۲ص ۲۶۳)

19 किसी नबी पर ऐ़ब लगाना **कुफ़्र** है।

(فتاوٰی تاتار خانیه ج ۵ ص ۴۷۹)

20 अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की जनाब में **गुस्ताख़ी** करना या

21 इन को फ़वाहिश व बे ह़याई की त़रफ़ मन्सूब करना **कुफ़्र** है। मसलन

22 مَعَاذَ اللّٰه ! यूसुफ़ عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ज़िना की त़रफ़ निस्बत करना **कुफ़्र** है।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 9, स. 181, عالمگیری ج۲ص ۲۶۳)

23 ह़ज़रते **सय्यिदुना यूसुफ़** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **ज़ुलैख़ा** के इ़श्क़ में दर ब दर फिरते रहे। येह कहना **कुफ़्र** है।

24 अगर किसी ने अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के नामों को किसी काग़ज़ में लिखा और फिर जान बूझ कर उस काग़ज़ को नजासत में फेंका तो वोह **काफ़िर** है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

﴾25﴿ जो मो'जिज़ाते अम्बिया का मुत़्लक़न इन्कार करे वोह **काफ़िर** है। (माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 323)

﴾26﴿ "अगर फुलां नबी होता तो मैं उस पर ईमान न लाता" ऐसा कहने वाला **काफ़िर** है। (اَلْبَحْرُ الرَّائِق ج ٥ ص ٢٠٣)

﴾27﴿ जो कहे : "मैं नहीं जानता कि **आदम** عَلَيْهِ السَّلَام नबी हैं या नहीं" वोह **काफ़िर** है। (اَلْبَحْرُ الرَّائِق ج ٥ ص ٢٠٣)

﴾28﴿ ह़ज़राते सय्यिदैना ख़िज़्र व ज़ुल किफ़्ल عَلَيْهِمُ السَّلَام की **नुबुव्वत** का इन्कार **कुफ़्र** नहीं क्यूं कि येह **इज्माअ़** से साबित नहीं। (अगर्चे सह़ीह़ क़ौल येही है कि येह दोनों ह़ज़रात नबी हैं) (اَلْبَحْرُ الرَّائِق ج ٥ ص ٢٠٣)

सादाते किराम की तौहीन के बारे में सुवाल जवाब

सय्यिद की तौहीन करना कैसा ?

सुवाल : सय्यिद की तौहीन करना कैसा ?

जवाब : सय्यिद की बत़ौरे **सय्यिद** या'नी वोह सय्यिद है इस लिये तौहीन करना **कुफ़्र** है। (ماخوذ از مَجْمَعُ الْاَنْهُر ج ٢ ص ٥٠٩)

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द **22** सफ़्ह़ा **420** पर फ़रमाते हैं :

सादाते किराम की ता'ज़ीम **फ़र्ज़** है और उन की तौहीन **ह़राम**, बल्कि उ़लमाए किराम ने इर्शाद फ़रमाया : जो किसी आ़लिम को मौलविया या किसी **मीर** (या'नी सय्यिद) को **मीरवा** बर वज्हे तह़क़ीर (या'नी ह़क़ारत से) कहे **काफ़िर** है।

"आज कल के सय्यिद बस ऐसे ही होते हैं" कहना कैसा ?

सुवाल : बा'ज़ लोग कहते सुनाई देते हैं कि आज कल के सय्यिद बस ऐसे ही (या'नी बुरे) होते हैं। उन के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब : येह क़ौल बहुत ही बुरा है अगर इस जुम्ले से येह मुराद है कि उन को अहले बैत तस्लीम करने के बा वुजूद बत़ौरे सय्यिद उन की तौहीन कर रहे हैं तो येह **कुफ़्र** है। "**सय्यिद**" की ह़क़ीक़त को समझने की कोशिश कीजिये। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "सय्यिद ह़सनैने करीमैन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا की औलाद को कहते हैं।"

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. 13, स. 361)

अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक और एक सय्यिद साह़िब की ह़िकायत

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक बार कहीं तशरीफ़ लिये जा रहे थे

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

कि इस्नाए राह एक **सय्यिद साह़िब** मिल गए और कहने लगे : आप के भी क्या ख़ूब ठाठ बाठ हैं और एक मैं भी हूं कि **सय्यिद** होने के बा वुजूद मुझे कोई नहीं पूछता ! आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : मैं ने आप के जद्दे आ'ला मक्की मदनी **मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों को अपनाया तो ख़ूब इ़ज़्ज़त पाई मगर आप ने अपने नानाजान की सुन्नतों को न अपनाया तो बे अ़मली के सबब पीछे रह गए ! सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ रात जब सोए तो ख़्वाब में जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई, चेहरए अन्वर पर नाराज़गी के आसार थे, कुछ इस त़रह़ फ़रमाया : तुम ने मेरी आल को बे अ़मली का त़ा'ना क्यूं दिया ! आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बे क़रार हो कर बेदार हो गए। सुब्ह़ मुआ़फ़ी मांगने के लिये उस **सय्यिद साह़िब** की तलाश में रवाना हुए, मौसूफ़ भी इन्हीं को ढूंड रहे थे। दोनों की मुलाक़ात हुई। **सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपना ख़्वाब सुनाया। **सय्यिद साह़िब** ने सुन कर कहा : मुझे भी रात **मेरे नानाजान** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर कुछ इस त़रह़ इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारे आ'माल

अच्छे होते तो **अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक** तुम्हारी क्यूं बे अदबी करते ! ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बसद नदामत **सय्यिद साह़िब** से मुआ़फ़ी मांगी और **सय्यिद साह़िब** ने भी गुनाहों से तौबा कर के नेकियां करने की अच्छी अच्छी निय्यतें कीं । (ماخوذ از تذکرۃ الاولیاء جزء اول ص ۱۷۰) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰی علیه واٰلهٖ وسلَّم

सादात से हुस्ने सुलूक की फ़ज़ीलत

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द **10** सफ़ह़ा **105** पर सादाते किराम के फ़ज़ाइल बयान करते हुए नक़्ल करते हैं : **इब्ने अ़साकिर** अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खु़दा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रावी, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जो मेरे अहले बैत में से किसी के साथ अच्छा सुलूक करेगा, मैं रोज़े

क़ियामत इस का सिला उसे अ़ता फ़रमाऊंगा। (اَلْجامِعُ الصَّغِیر ص ۵۳۳ حدیث ۸۸۲۱) **ख़तीब बग़दादी** अमीरुल मुअमिनीन उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रावी, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जो शख़्स औलादे अ़ब्दुल मुत्त़लिब में से किसी के साथ दुन्या में नेकी (भलाई) करे उस का सिला देना मुझ पर लाज़िम है जब वोह रोज़े क़ियामत मुझ से मिलेगा। (تاریخ بغداد ج ۱۰ ص ۱۰۲)

हम को सारे सय्यिदों से प्यार है
इन् शाءَ اللّٰه अपना बेड़ा पार है

सादाते किराम की ता'ज़ीम की अस्ल वज्ह

सुवाल : सादाते किराम की ता'ज़ीम की अस्ल वज्ह क्या है ?

जवाब : ता'ज़ीम की अस्ल वज्ह येही है कि सादात ह़ज़रात रसूले काएनात, शहन्शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जिस्मे अत़्हर का जुज़ (या'नी बदने मुनव्वर का टुकड़ा, ह़िस्सा) हैं। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 22 सफ़ह़ा 423 पर फ़रमाते हैं : सय्यिद सुन्निय्युल मज़्हब की ता'ज़ीम लाज़िम है अगर्चे उस के आ'माल कैसे ही हों,

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

उन आ'माल के सबब उस से तनफ़्फ़ुर न किया (या'नी नफ़रत न की) जाए, नफ़्से आ'माल से तनफ़्फ़ुर (फ़क़त़ उस की बुराइयों से नफ़रत) हो। आगे चल कर इसी सफ़्हे पर मज़ीद फ़रमाते हैं : सादाते किराम की इन्तिहाए नसब हु़ज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर है, (या'नी इन के जद्दे आ'ला तो मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं !) इस फ़ज़्ले इन्तिसाब (या'नी इस शरफ़े निस्बत) की ता'ज़ीम (आ़म से मुसल्मान तो क्या) हर मुत्तक़ी पर (भी) **फ़र्ज़** है (क्यूं) कि वोह इस (सय्यिद साहि़ब) की ता'ज़ीम नहीं (बल्कि ख़ुद) हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम है। وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم ।

आ'ला ह़ज़रत सादाते किराम की ता'ज़ीम क्यूं करते थे ?

सुवाल : मश्हूर है कि आ'ला ह़ज़रत सादाते किराम की बहुत ज़ियादा ता'ज़ीम बजा लाते थे इस की अस्ल वज्ह क्या है ?

जवाब : मलिकुल उ़लमा मौलाना ज़फ़रुद्दीन क़ादिरी रज़वी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : सादाते किराम **जुज़्ए रसूल** (या'नी नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जिस्मे मुनव्वर का टुकड़ा) होने की वज्ह से सब से ज़ियादा

www.dawateislami.net

मुस्तह़िक़े तौक़ीरो ता'ज़ीम हैं। और इस पर पूरा अ़मल करने वाला मैं ने **आ'ला ह़ज़रत** قُدِّسَ سِرُّہُ الْعَزِیْز को पाया। इस लिये कि किसी **सय्यिद साह़िब** को वोह उस की ज़ाती हैसिय्यतो लियाक़त से नहीं देखते बल्कि इस हैसिय्यत से मुलाह़ज़ा फ़रमाते कि **सरकारे दो आ़लम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का "जुज़" हैं। फिर इस ए'तिक़ाद व नज़रिये के बा'द जो कुछ इन (सादाते किराम) की ता'ज़ीमो तौक़ीर की जाए सब दुरुस्त व बजा है। आ'ला ह़ज़रत अपने **क़सीदए नूर** में अ़र्ज़ करते हैं :

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का
तू है ऐने नूर तेरा सब घराना नूर का

(ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 179)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

अहले बैत पर ज़ुल्म करने वाले पर जन्नत ह़राम है

सुवाल : सय्यिदों पर ज़ुल्म करना कैसा है ?

जवाब : ह़राम है और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। चुनान्चे **सरवरे दो आ़लम**, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है । (ابن عساکر)

आदम, रसूले मुह़्तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस शख़्स ने मेरे अहले बैत पर ज़ुल्म किया और मुझे मेरी इत्रते पाक (या'नी औलाद) के बारे में अज़िय्यत दी, उस पर जन्नत ह़राम कर दी गई ।"

(الشرف المؤبد لآل محمد للنبهانی ص ٢٥٩)

अहले बैत से लड़ने वाले की शामत

तिरमिज़ी शरीफ़ में है कि हुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए़ मह़शर, मदीने के ताजवर, बि इज़्ने रब्बे अक्बर ग़ैबों से बा ख़बर, मह़बूबे दावर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली, ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मा, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन और ह़ज़रते सय्यिदुना हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के बारे में फ़रमाया : "जो इन से जंग करेगा मैं उस से जंग करूंगा और जो इन से सुल्ह़ रखेगा मैं उस से सुल्ह़ रखूंगा ।"

(سُنَنُ التِّرمِذِی ج٥ ص٤٦٥ حدیث ٣٨٩٦)

सय्यिद को मारने की अ़जीब ह़िकायत

सय्यिदी अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : सय्यिद शरीफ़ ने ह़ज़रते ख़त्ताब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़ानक़ाह में बयान किया कि काशिफ़ुल बुहै़रा ने एक **सय्यिद साहि़ब** को मारा तो

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

उसे उसी रात ख़्वाब में जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इस हाल में ज़ियारत हुई कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस से ए'राज़ फ़रमा रहे (या'नी रुख़े अन्वर फेर रहे) हैं। उस ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरा क्या गुनाह है ? फ़रमाया : तू मुझे मारता है, ह़ालां कि मैं क़ियामत के दिन तेरा शफ़ीअ़ (या'नी शफ़ाअ़त करने वाला) हूं। उस ने अ़र्ज़ की, **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे याद नहीं कि मैं ने आप को मारा हो। इर्शाद फ़रमाया : क्या तूने मेरी औलाद को नहीं मारा ? उस ने अ़र्ज़ की : हां। फ़रमाया : तेरी ज़र्ब मेरी ही कलाई पर लगी। फिर **आप** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी मुबारक कलाई निकाल कर दिखाई जिस पर वरम था जैसे कि शह्द की मख्खी ने डंक मारा हो। हम **अल्लाह** तआ़ला से आ़फ़िय्यत का सुवाल करते हैं।

(الشرف المؤبد لآل محمد للنبهانی ص ٢٦٨)

क्या सय्यिद शागिर्द को उस्ताद मार सकता है ?

सुवाल : तो क्या **सय्यिद** त़ालिबे इ़ल्म को उस्ताद भी मार नहीं सकता ?

जवाब : उस्ताद भी **सय्यिद** को मारने से परहेज़ करे। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़ह़ा करूं (या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشکوال)

इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن की ख़िदमत में **सुवाल** हुवा : **सय्यिद** के लड़के से, जब शागिर्द हो या मुलाज़िम हो दीनी या दुन्यवी ख़िदमत लेना और उस को मारना जाइज़ है या नहीं ? **अल जवाब :** ज़लील ख़िदमत उस से लेना जाइज़ नहीं, न ऐसी ख़िदमत पर उसे मुलाज़िम रखना जाइज़। और जिस ख़िदमत में ज़िल्लत नहीं उस पर मुलाज़िम रख सकता है, बहाले शागिर्द भी जहां तक उ़र्फ़ और मा'रूफ़ हो (ख़िदमत लेना) शरअ़न जाइज़ है, ले सकता है और उसे (या'नी सय्यिद को) मारने से मुत़लक़ एह़तिराज़ (या'नी बिल्कुल परहेज़) करे। وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 22, स. 568)

सय्यिद मुलाज़िम के साथ सुलूक का अन्दाज़

जनाब सय्यिद अय्यूब अ़ली साह़िब (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) का बयान है : एक कम उ़म्र साह़िब ज़ादे ख़ानादारी के कामों में इमदाद के लिये (आ'ला ह़ज़रत के) काशानए अक़्दस में मुलाज़िम हुए। बा'द में मा'लूम हुवा कि येह **सय्यिद ज़ादे** हैं। लिहाज़ा (हु़ज़ूर आ'ला ह़ज़रत ने) घर वालों को ताकीद फ़रमा दी कि "साह़िब ज़ादे से ख़बरदार कोई काम न लिया जाए कि मख़्दूम ज़ादे हैं।

(या'नी आक़ा के फ़रज़न्द हैं इन से ख़िदमत लेनी नहीं, इन की ख़िदमत करनी है लिहाज़ा) खाना वग़ैरा और जिस शै की ज़रूरत हो (इन की ख़िदमत में) हाज़िर की जाए।" जिस तनख़्वाह का वा'दा है वोह बतौरे नज़राना पेश होती रहे। चुनान्चे हस्बुल इर्शाद ता'मील होती रही। कुछ अ़र्से के बा'द वोह साहिब ज़ादे ख़ुद ही तशरीफ़ ले गए। (ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 179) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

अहले बैत का दुश्मन दोज़ख़ी है

सुवाल : जो ब ज़ाहिर नेक नमाज़ी हो मगर बिला वज्ह सय्यिदों से चिड़ता हो उस के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब : ऐसा शख़्स जहन्नम का ह़क़दार है। चुनान्चे एक त़वील ह़दीसे पाक में येह भी है कि अगर कोई शख़्स **बैतुल्लाह शरीफ़** के एक कोने और **मक़ामे इब्राहीम** के दरमियान जाए और नमाज़ पढ़े और रोज़े रखे और फिर वोह **अहले बैत** की दुश्मनी पर मर जाए तो वोह जहन्नम में जाएगा। (اَلْمُسْتَدْرَك لِلْحاكِم ج٤ ص١٢٩۔١٣٠ حديث ٤٧٦٦)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

हौज़े कौसर पर चाबुक मारे जाएंगे

सुवाल : क्या येह दुरुस्त है कि **सय्यिद** से बिला वज्ह ह़सद करने वाले **हौज़े कौसर** से हटा दिये जाएंगे ?

जवाब : जी हां एक रिवायत से येही मुस्तफ़ाद है। चुनान्चे अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم का फ़रमाने इब्रत निशान है : हम से बुग़्ज़ मत रखना कि **रसूले पाक,** साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **जो शख़्स हम से बुग़्ज़ या ह़सद करेगा, उसे क़ियामत के दिन हौज़े कौसर से आग के चाबुकों से दूर किया जाएगा।**

(الشرف المؤبد لآل محمد للنبهانی ص ٢٥٩)

सय्यिद अगर कोई वारिदात कर बैठे तो ?

सुवाल : अगर सय्यिद مَعَاذَ الله ऐसी वारिदात कर बैठे जिस से उस पर ह़द लाज़िम आती हो तो क्या तब भी उस को कुछ न कहेंगे ?

जवाब : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : क़ाज़ी जो हुदूदे इलाहिय्यह क़ाइम करने पर मजबूर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

है, उस के सामने अगर किसी **सय्यिद** पर ह़द साबित हुई तो बा वुजूद कि उस पर ह़द लगाना फ़र्ज़ है और वोह ह़द लगाएगा, लेकिन उस को हुक्म है कि सज़ा देने की निय्यत न करे बल्कि दिल में येह निय्यत रखे कि **शहज़ादे के पैर में कीचड़ लग गई है उसे साफ़ कर रहा हूं।** (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, ह़िस्सए सिवुम, स. 396)

सय्यिद अगर कुफ़्र बक दे तो सय्यिद रहेगा या नहीं ?

सुवाल : अगर कोई सय्यिद **सरीह़ कुफ़्र** बकने के बाइ़स مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **मुरतद** हो जाए तो अब वोह **सय्यिद** रहा या नहीं ?

जवाब : इरतिदाद से सियादत जाती रहती है या'नी अब वोह **सय्यिद** न रहा। ह़ज़रते **सय्यिदुना नूह़** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का ना फ़रमान बेटा **किन्आ़न** जो कि मुनाफ़िक़ था, ख़ुद को साह़िबे ईमान ज़ाहिर करता मगर ह़क़ीक़तन ईमान नहीं लाया था लिहाज़ा वोह भी **तूफ़ान** में डूब कर हलाक हो गया। उस बेटे के बारे में **ख़ुदाए वदूद** عَزَّوَجَلَّ पारह 12 **सूरए हूद** आयत नम्बर 46 में इर्शाद फ़रमाता है :

يٰنُوۡحُ اِنَّهٗ لَيۡسَ مِنۡ اَهۡلِكَ‌ۚ
(پ۱۲ ھود ٤٦)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ नूह़ ! वोह तेरे घर वालों में नहीं।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى इस आयते करीमा के तह़त फ़रमाते हैं : इस से साबित हुवा कि नसबी क़राबत से दीनी क़राबत ज़ियादा क़वी है।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 363)

सय्यिद अफ़्ज़ल या आ़लिम ?

सुवाल : आ़लिम अफ़्ज़ल है या ग़ैरे आ़लिम सय्यिद ?

जवाब : सुन्नी **आ़लिम** अफ़्ज़ल है। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 29 सफ़्ह़ा 274 पर ग़ैरे आ़लिम सय्यिद से **आ़लिम** को अफ़्ज़ल क़रार देते हुए येह दो आयाते क़ुरआनी नक़्ल फ़रमाई हैं :

قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ؕ
(پ ۲۳ الزمر ۹)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ क्या बराबर हैं जानने वाले और अन्जान।

يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ؕ
(پ ۲۸ المجادلة ۱۱)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) तुम्हारे ईमान वालों के और उन के जिन को इ़ल्म दिया गया दरजे बुलन्द फ़रमाएगा।

येह आयाते करीमा ज़िक्र करने के बा'द सफ़हा 275 पर फ़रमाते हैं : तो इन्दल्लाह फ़ज़्ले इल्म फ़ज़्ले नसब (या'नी **अल्लाह** के नज़्दीक इल्म का रुत्बा रिश्तेदारी) से अशरफ़ व आ'ज़म है। येह मीर (सय्यिद) साहिब (जब) कि आलिम न हों अगर्चे सालेह (नेक आदमी) हों (मगर) आज कल के आलिम सुन्नी सहीहुल अक़ीदा के मर्तबे को शरअ़न नहीं पहुंचते। **तन्वीरुल अब्सार व दुर्रे मुख़्तार** में है : नौ जवान आलिम को बूढ़े जाहिल पर तक़द्दुम (या'नी आगे बढ़ने) का हक़ हासिल है अगर्चे वोह (जाहिल शख़्स) क़ुरशी (बल्कि सय्यिद) हो। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआला आलिमों के दरजे बुलन्द फ़रमाएगा। चूंकि बुलन्दी अ़ता फ़रमाने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है लिहाज़ा जो इस को घटाएगा **अल्लाह** तआला उस को जहन्नम में डालेगा। (تَنوِیرُ الْاَبْصار، دُرِّمُختار ج۱۰ص۵۲۲)

अ़रबों की गुस्ताख़ी के बारे में सुवाल जवाब

क्या अहले अ़रब को बुरा भला कहना कुफ़्र है

सुवाल : अ़रब ममालिक में काम करने वाले बा'ज़ लोग **अ़रबों** को बुरा भला कहते रहते हैं और बा'ज़ हुज्जाज भी। क्या इस में कोई **कुफ़्र** का पहलू निकलता है?

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

जवाब : वाक़ेई आज कल अक्सर मुसल्मानों में येह बला आ़म है इस से बचना ज़रूरी है। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 205 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" हिस्सा 6 सफ़ह़ा 31 पर सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "सब अ़रबिय्यों से बहुत नरमी के साथ पेश आए, अगर वोह सख़्ती करें अदब से तह़म्मुल (या'नी बरदाश्त) करे इस पर शफ़ाअ़त नसीब होने का वा'दा फ़रमाया है ख़ुसूसन अहले ह़रमैन, ख़ुसूसन अहले मदीना। अहले अ़रब के अफ़्आ़ल पर ए'तिराज़ न करे, न दिल में कदूरत (या'नी मैल) लाए, इस में दोनों जहां की सआ़दत है।" (बहारे शरीअ़त) बिला मस्लह़ते शरई किसी भी मुसल्मान को बुरा भला कहने की इजाज़त नहीं चे जाएकि अहले अ़रब ह़ज़रात को कि येह तो सरकारे काएनात صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हम क़ौम हैं। बिलफ़र्ज़ कोई अहले अ़रब को सुल्त़ाने अ़रब, मह़बूबे रब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निस्बत की वज्ह से बुरा कहे तो उस पर हुक्मे **कुफ़्र** है मगर मुसल्मान से ऐसा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह्मतें भेजता है। (مسلم)

मुतसव्वर नहीं (या'नी सोचा भी नहीं जा सकता)। अहले अ़रब के बा'ज़ फ़ज़ाइल सुनिये : महबूबे रब, ताजदारे अ़रब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : **अ़रब** की मह़ब्बत **ईमान** है और इन का बुग़्ज़ **कुफ़्र** है, जिस ने **अ़रब** से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने इन से बुग़्ज़ रखा उस ने मुझ से बुग़्ज़ रखा। (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج٢ ص٦٦ حديث ٢٥٣٧) तीन वुजूह की बिना पर **अ़रब** से मह़ब्बत रखो, इस लिये कि ﴾1﴿ मैं अ़रबी हूं ﴾2﴿ कुरआने मजीद अ़रबी है ﴾3﴿ अहले जन्नत का कलाम अ़रबी है।

(شُعَبُ الْاِيْمَان ج٢ ص٢٣٠ حديث ١٦١٠)

अ़रब से बुग़्ज़ कब कुफ़्र है

ह़ज़रते अ़ल्लामा मुनावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के फ़रमाने गिरामी का ख़ुलासा है : सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अ़रबी हैं और कुरआन भी अहले अ़रब की ज़बान में है, इन निस्बतों की वज्ह से अगर कोई **अ़रबों** से बुग़्ज़ रखे तो इस से सुल्ताने अ़रब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बुग़्ज़ लाज़िम आएगा जो कि **कुफ़्र** है। (فيض القدير لِلمناوى ج٣ ص٢٣١ تحت الحديث ٢٢٥)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

महबूब से मन्सूब हर चीज़ महबूब होती है

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : **हुज़ूर** (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से निस्बत रखने वाली चीज़ों को महबूब रखना **हुज़ूर** (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की महब्बत में दाख़िल है । कुदरती त़ौर पर इन्सान जिस से महब्बत रखता है उस से निस्बत रखने वाली तमाम चीज़ें इस को महबूब (या'नी प्यारी) हो जाती हैं । **हुज़ूर सय्यिदे आ़लम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से महब्बत रखने वाले भी **हुज़ूर** (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के वत़ने पाक के रहने वालों और **हुज़ूर** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से निस्बत रखने वाली हर चीज़ को जानो दिल से महबूब रखते हैं । (सवानेहे करबला, स. 9)

फिर उठा वल्वलए यादे मुग़ीलाने[1] अ़रब

फिर खिंचा दामने दिल सूए बयाबाने अ़रब

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

क्या कुफ़्फ़ारे अ़रब से भी महब्बत रखनी होगी ?

सुवाल : क्या कुफ़्फ़ारे अ़रब से भी महब्बत रखनी होगी ?

(1) या'नी कांटों का दरख़्त ।

जवाब : जी नहीं। मह़ब्बत ईमान के साथ मश्रूत़ है। कुफ़्फ़ार व मुरतद्दीने अ़रब से मह़ब्बत तो दूर की बात है उन से अ़दावत रखनी वाजिब है। जैसा कि ह़ज़रते अ़ल्लामा मुनावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : जो अहले अ़रब काफ़िर या मुनाफ़िक़ हैं उन से बुग़्ज़ रखना बुरा नहीं बल्कि वाजिब है।

(فیض القدیر شرح الجامع الصغیرج ۱ ص ۲۳۱ تحت الحدیث ۲۲۵)

कुफ़्फ़ारे अ़रब से नफ़रत ज़रूरी है

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان ह़दीसे मुबारक के इस ह़िस्से, "**अ़रब** से मह़ब्बत रखो" के तह़्त फ़रमाते हैं : अ़रब से मुराद **अ़रब** के **मोमिनीन** हैं। कुफ़्फ़ारे अ़रब और अ़रब के यहूदो नसारा से नफ़रत व अ़दावत ज़रूरी है कि येह नफ़रत उन के **कुफ़्र** से है न कि अ़रबी होने से। (येही हुक्म मुरतद्दीन का है) **मोमिनीने अ़रब** हमारे सरों के ताज हैं कि **ह़ुज़ूर** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पड़ोसी हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 333, 334)

सब के सब अ़रबी मुसल्मानों से हम को प्यार है
اِنْ شَآءَ اللہ दो जहां में अपना बेड़ा पार है

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

अहले अ़रब अ़रबी आक़ा के हम क़ौम हैं

अ़रबी लोग क़ौमिय्यत के ए'तिबार से चूंकि **अ़रबी आक़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से निस्बत रखते हैं लिहाज़ा मह़ब्बत का तक़ाज़ा भी येही है कि जो **अहले अ़रब** मुसल्मान हैं उन को बुरा भला कहने से ज़बान को रोका जाए, हां इन में जो कुफ़्फ़ार और मुरतद्दीन हैं यक़ीनन वोह बुरे हैं और उन को बुरा ही कहा जाएगा। देखिये ! अबू लहब भी अ़रबी था मगर उस की मज़म्मत में कुरआने पाक की एक पूरी सूरत **सूरए लहब** मौजूद है। बहर ह़ाल अगर **अ़रबिय्यों** में से किसी की त़रफ़ से बिलफ़र्ज़ आप को कोई ज़ाती तक्लीफ़ पहुंच भी गई हो तब भी सब्र से काम लीजिये। यक़ीनन इस एक की ईज़ा देही की वज्ह से सब **अ़रब** हरगिज़ बुरे नहीं बन गए। अहले अ़रब से मह़ब्बत के लिये हम ग़ुलामाने मुस्त़फ़ा के लिये येही बात काफ़ी है कि हमारे प्यारे प्यारे मीठे मीठे **आक़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अ़रबी** हैं।

हाए किस वक़्त लगी फांस अलम की दिल में
कि बहुत दूर रहे ख़ारे मुग़ीलाने अ़रब

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर सुब्ह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

अ़रबिय्यों के फ़ज़ाइल पर 6 अह़ादीसे मुबारका

सुवाल : अहले अ़रब के फ़ज़ाइल पर कुछ अह़ादीसे मुबारका बयान कीजिये ताकि जो नादान मुसल्मान ख़्वाह म ख़्वाह बुरा भला कहते हैं उन की आंखें खुलें।

जवाब : अ़रबिय्यों के फ़ज़ाइल पर मब्नी 6 अह़ादीसे मुबारका पेश की जाती हैं :

﴾1﴿ मह़बूब के कुत्ते से भी प्यार हुवा करता है

"जिस ने **अ़रब** से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की।" (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج۲ ص٦٦ حديث ۲۰۳۷) अ़ल्लामा मुनावी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : सच्ची मह़ब्बत की अ़लामत येह है कि हर उस चीज़ से मह़ब्बत रखी जाए जो मह़बूब की त़रफ़ मन्सूब हो, क्यूं कि जो शख़्स किसी इन्सान से मह़ब्बत रखता है उस के **मह़ल्ले के कुत्ते** को भी अच्छा जानता है।

(فيض القدير ج۳ ص٤٨٨ تحت الحديث ٣٦٦٦)

रज़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه *किसी सगे त़यबा के पाउं भी चूमे*

तुम और आह ! कि इतना दिमाग़ ले के चले

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

﴾2﴿ अ़रबों से बुग़्ज़ रखने वाला शफ़ाअ़त से महरूम

ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़स्मान** बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **रसूले अकरम,** रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, नबिय्ये मुह़्तशम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने अहले अ़रब से बुग़्ज़ व कुदूरत रखी मेरी **शफ़ाअ़त** में दाख़िल न होगा और न ही उसे मेरी मह़ब्बत नसीब होगी।

(تِرمِذی ج٥ ص٤٨٧ حدیث ٣٩٥٤)

﴾3﴿ अ़जमी सह़ाबी को अ़रबी के बुग़्ज़ से बचने की ताकीद

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, सुल्ताने दो जहान, मदीने के सुल्तान, रह़मते आ़लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **ऐ सलमान !** मुझ से बुग़्ज़ न रखना, वरना तुम अपने दीन से जुदा हो जाओगे। मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं आप से किस तरह़ बुग़्ज़ रख सकता हूं ? आप के तुफ़ैल ही तो मुझे **अल्लाह** तआ़ला ने हिदायत इनायत फ़रमाई है। फ़रमाया : (अगर) तुम **अ़रब** से बुग़्ज़ रखोगे तो (गोया) मुझ से ही बुग़्ज़ रखोगे। (اَیضاً حدیث ٣٩٥٣)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

﴿4﴾ अ़रब से बुग़्ज़ निफ़ाक़ की अ़लामत है

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं, नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम, मह़बूबे रब्बे ह़कीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : **अ़रब** से वोही बुग़्ज़ रखेगा जो मुनाफ़िक़ होगा।

(اَلْمُعْجَمُ الْكَبِيرلِلطَّبَرَانِی ج ١١ ص ١١٨ حديث ١١٣١٢)

﴿5﴾ बरोज़े क़ियामत अ़रब सब से ज़ियादा क़रीब

मह़बूबे रब, सुल्ताने अ़रब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीमुश्शान है : क़ियामत के दिन लिवाउल ह़म्द (या'नी ह़म्द का परचम) मेरे हाथ में होगा और उस दिन अ़रब, तमाम मख़्लूक़ की निस्बत मुझ से ज़ियादा क़रीब होंगे। (شُعَبُ الْاِيْمَان ج٢ ص٢٣١ حديث ١٦١٣)

﴿6﴾ अ़रब से मह़ब्बत ईमान की अ़लामत है

नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : حُبُّ الْعَرَبِ اِيْمَانٌ وَّ بُغْضُهُمْ نِفَاق या'नी अ़रब की मह़ब्बत ईमान है और इन का बुग़्ज़ मुनाफ़क़त। (اَلْجامِعُ الصَّغِير ص٢٢٣ حديث ٣٦٦٤) इस की शर्ह़ में **इमाम**

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

मुनावी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی ने फ़रमाया : "जब कोई इन्सान **अ़रब** से महब्बत रखता है तो येह उस के **ईमान** की अ़लामत है और जब इन से बुग़्ज़ रखता है तो येह उस के **निफ़ाक़** की निशानी है क्यूं कि येह दीन अहले अ़रब ही में से ज़ाहिर हुवा और इस दीन का क़ियाम इन्ही की तलवारों और हौसलों से था। ज़ाहिर है कि जो इन से बुग़्ज़ रखता है वोह इसी बिना पर बुग़्ज़ रखता है और येह **कुफ़्र** है।"

(فیض القدیر شرح الجامع الصغیر ج۳ ص۴۸۸ تحت الحدیث ۳٦٦٤)

हुस्ने यूसुफ़ पे कटीं मिस्र में अंगुश्ते ज़नां
सर कटाते हैं तेरे नाम पे मर्दाने अ़रब

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

फ़िरिश्तों की तौहीन के बारे में सुवाल जवाब

सुवाल : फ़िरिश्तों के वुजूद का इन्कार करना कैसा है ?

जवाब : कुफ़्र है। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 1, स. 49)

"मलकुल मौत को बुरा भला" कहना कैसा ?

सुवाल : मलकुल मौत को बुरा भला कहना कैसा है ?

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइ़स है। (ابو يعلى)

जवाब : बहारे शरीअ़त में है : दुश्मन व **मबग़ूज़** (या'नी जिस से बुग़्ज़ हो उस) को देख कर येह कहना : **मलकुल मौत** आ गए या कहा : "इसे वैसा ही दुश्मन जानता हूं जैसा **मलकुल मौत** को" इस में अगर **मलकुल मौत** को बुरा कहना (मक़्सूद) है तो **कुफ़्र** है और मौत की ना पसन्दीदगी की बिना पर है तो **कुफ़्र** नहीं। यूंही **जिब्रईल** عَلَيْهِ السَّلَام या **मीकाईल** عَلَيْهِ السَّلَام या किसी **फ़िरिश्ते** को जो ऐ़ब लगाए या तौहीन करे **काफ़िर** है।

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 9, स. 182)

हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द की ह़िकायत

कहा जाता है : एक बार किसी जल्से में ताजदारे अहले सुन्नत, शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत **हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे** हिन्द ह़ज़रत मौलाना शाह मुह़म्मद मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن मन्च पर तशरीफ़ फ़रमा थे। एक शो'ला बयान मुक़र्रिर ने ख़ुफ़्या पोलीस को मुख़ात़ब करते हुए जोशे ख़ित़ाबत में कह दिया : "अगर हुकूमत के **किरामन कातिबीन** मौजूद हैं तो लिख लें कि......" येह सुनते ही **हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़म** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم ने फ़ौरन उस को टोका और तौबा का हुक्म दिया। इस पर उस मुक़र्रिर ने फ़ौरन बयान रोक कर अ़लल ए'लान तौबा की।

www.dawateislami.net

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! **हुज़ूर** मुफ़्तिये आ'ज़म عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْاَکرَم के टोकने का सबब येह था कि मुक़र्रिर ने गवर्नमेन्ट की "खुफ़्या पोलीस" को مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ किरामन कातिबीन या'नी बन्दों के आ'माल लिखने वाले बुज़ुर्ग और मा'सूम फ़िरिश्तों के नाम से मौसूम कर दिया!

पैकरे रुश्दो हिदायत मुफ़्तिये आ'ज़म رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़ात
आ़मिले कुरआनो सुन्नत मुफ़्तिये आ'ज़म رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़ात

"इस बात का तो मेरे फ़िरिश्तों को भी इ़ल्म नहीं" कहना कैसा ?

सुवाल : "इस बात का तो मेरे फ़िरिश्तों को भी इ़ल्म नहीं" कहना कहीं कुफ़्र तो नहीं ?

जवाब : येह **कुफ़्र** नहीं है। येह फ़िरिश्तों की तौहीन नहीं, येह उर्दू ज़बान का **मुहा़वरा** है। कहने वाले का मन्शा येह होता है कि येह बात तो मेरे वह्‌मो गुमान में भी नहीं, या इस के बारे में मैं ने कभी सोचा तक नहीं, अगर मैं ने इस सिल्सिले में ज़ेह्‌न के अन्दर भी कोई तरकीब बनाई होती तो "किरामन कातिबीन" को यक़ीनन मा'लूम हो जाता वग़ैरा। येह बात ज़ेह्‌न में रखिये कि उ़मूमन

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

फ़िरिश्तों को ह़स्बे ह़ाजत उन के शो'बे के मुतअ़ल्लिक़ **इल्मे ग़ैब** तफ़्वीज़ किया जाता है । मसलन बादलों को चलाने और बारिश बरसाने वाले मलाएका को इन उमूर के मुतअ़ल्लिक़ **इल्मे ग़ैब** दिया जाता है । इसी त़रह़ **जनीन** या'नी मां के रेह़्म में जो बच्चा होता है उस के पैदा होने न होने, उस के रिज़्क़ वग़ैरा ह़त्ता कि **क़ब्र** के मक़ाम तक का इल्म उस पर मामूर फ़िरिश्तों को इनायत फ़रमाया जाता है । इसी त़रह़ **मलकुल मौत** सय्यिदुना इ़ज़राईल عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और इन के मुआ़विनीन मलाएका को तमाम ज़ुल अरवाह़ की अम्वात के अवक़ात व मक़ामात से बा ख़बर किया जाता है । यूंही **मुह़ाफ़िज़ीन** आ'माल लिखने वालों को । पारह 30 **सूरतुल इन्फ़ित़ार** आयत नम्बर 10 ता 12 में इर्शादे रब्बुल इ़बाद है :

وَ اِنَّ عَلَیْكُمْ لَحٰفِظِیْنَۙ(۱۰) كِرَامًا كَاتِبِیْنَۙ(۱۱) یَعْلَمُوْنَ مَا تَفْعَلُوْنَ(۱۲)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक तुम पर कुछ निगहबान (मुक़र्रर) हैं, मुअ़ज़्ज़ज़ लिखने वाले, कि जानते हैं जो कुछ तुम करो ।

क्या किरामन कातिबीन दिलों का ह़ाल भी जान लेते हैं ?

सुवाल : क्या किरामन कातिबीन दिल की निय्यतों को भी जान लेते और उन को तह़रीर फ़रमा लेते हैं ?

www.dawateislami.net

जवाब : जी हां। इस ज़िम्न में ह़दीसे क़ुदसी मुलाह़ज़ा फ़रमाइये चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी हुवा कि मदीने के सुल्त़ान, सरदारे दो जहान, रह़मते आ़लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "जब मेरा बन्दा किसी **गुनाह का इरादा** करे और उस पर अ़मल न करे तो उस को मत लिखो और अगर वोह उस पर अ़मल करे तो उस का एक गुनाह लिख लो। और अगर वोह **नेकी का इरादा** करे और उस पर अ़मल न करे तो एक नेकी लिख लो और अगर वोह उस पर अ़मल करे तो दस नेकियां लिख लो।" एक और रिवायत के मुत़ाबिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब, त़बीबों के त़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **मलाएका** अ़र्ज़ करते हैं : **परवर्दगार** ! तेरा बन्दा गुनाह करने का इरादा कर रहा है। ह़ालां कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को इस बात पर ख़ूब बसीरत है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "इस का इन्तिज़ार करो, अगर येह उस गुनाह को करे तो उस का गुनाह लिखो और अगर उस को तर्क कर दे तो इस की एक नेकी लिख लो, क्यूं कि इस ने मेरी वज्ह से इस गुनाह को तर्क किया है।" (صَحِیح مُسلِم ص٧٩ حدیث ٢٠٣، ٢٠٥)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

गुनाह का इरादा तर्क करने पर नेकी मिलने की सूरत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से **किरामन कातिबीन** दिलों की निय्यतें भी जान लेते हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कितना बड़ा करम है कि नेकी की सिर्फ़ **निय्यत** करने पर एक नेकी का सवाब मिल जाता है और अगर बन्दा गुनाह की **निय्यत** करे तो कुछ नहीं लिखा जाता ह़त्ता कि अगर गुनाह का इरादा तर्क कर दे तो इस पर एक नेकी लिखी जाती है। यहां येह बात याद रहे कि बुराई का इरादा तर्क करने वाले को नेकी उसी सूरत में मिलती है जब कि **ख़ौफ़े ख़ुदा** की वज्ह से ऐसा करे अगर किसी मजबूरी के तह़्त गुनाह से बाज़ रहा तो उस को नेकी नहीं मिलेगी। (ماخوذاز تفہیم البخاری ج۹ ص۷۸۲)

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ **बहारे शरीअ़त** ह़िस्सा 16 सफ़्ह़ा 258 पर फ़रमाते हैं : "मा'सियत का इरादा किया मगर उस को किया नहीं तो गुनाह नहीं बल्कि इस में भी एक क़िस्म का सवाब है, जब कि येह समझ कर बाज़ रहा कि येह गुनाह का काम है, नहीं करना चाहिये। अहादीस से ऐसा ही साबित है और अगर गुनाह के काम

का बिल्कुल पक्का इरादा कर लिया जिस को अ़ज़्म कहते हैं तो येह भी एक गुनाह है अगर्चे जिस गुनाह का अ़ज़्म किया था उसे न किया हो ।" (عالمگیری ج٥، ص٣٥٢)

जब फ़िरिश्तों का येह मक़ाम है तो आक़ा की क्या शान होगी !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब किरामन कातिबीन को दिल की बातों का ह़ाल मा'लूम हो जाता है तो उन फ़िरिश्तों बल्कि सारी काएनात के वाली सरकारे आ़ली صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से किसी के दिल की बात कैसे छुपी रह सकती है ! मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ करते हैं

सरे अ़र्श पर है तेरी गुज़र दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र
मलकूतो मुल्क में कोई शै नहीं वोह जो तुझ पे इयां नहीं

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

"जैसी रूह़ वैसे फ़िरिश्ते" कहना कैसा ?

सुवाल : "जैसी रूह़ वैसे फ़िरिश्ते" येह मुह़ावरा बोलना कैसा है ?

जवाब : येह जुम्ला बत़ौरे कहावत बोला जाता है इस लिये हुक्मे कुफ़्र न होगा कि यहां मक़्सूद फ़िरिश्तों की तौहीन नहीं । फ़ीरोज़ुल्लुग़ात सफ़्ह़ा 533 पर इस के मा'ना

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

लिखे हैं : "इन्सान ख़ुद बुरा होता है तो अपने ही जैसे बुरे लोग और बुरी चीज़ें पसन्द करता है।" इस त़रह़ के जुम्लों से एह़तिराज़ (या'नी बचना) चाहिये।

हर शख़्स पर रोज़ाना 20 फ़िरिश्तों की ज़िम्मादारियां

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बा'ज़ लोग किस क़दर ना क़दरे होते हैं कि मलाएका तक को भी مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ तन्क़ीद का निशाना बनाते और इन की **तौहीन** पर उतर आते हैं। यक़ीनन **फ़िरिश्ते मा'सूम** हैं और इन के ज़रीए **रब्बे काएनात** عَزَّوَجَلَّ ने हम पर अ़ज़ीम एह़सानात फ़रमाए हैं। इन्सान पर कुछ फ़िरिश्ते मुक़र्रर किये गए हैं, मुख़्तलिफ़ रिवायात में इन की जुदा जुदा ता'दाद बयान की गई है। इन में एक ईमान अफ़रोज़ ह़दीसे पाक येह भी है। चुनान्चे अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान, सरदारे दो जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते वाला शान में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुए : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे बताइये

कि बन्दे के साथ कितने फ़िरिश्ते होते हैं ? हुज़ूर सरापा नूर, फ़ैज़ गन्जूर, शाहे ग़यूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ उ़स्मान ! **एक फ़िरिश्ता** तेरी दाईं (सीधी) त़रफ़ है जो तेरी नेकियों पर मामूर है और येह बाईं (उलटी) त़रफ़ वाले **फ़िरिश्ते** का अमीन है। जब तुम **एक** नेकी करते हो तो उस की **दस** नेकियां लिखी जाती हैं, जब तुम कोई गुनाह करते हो तो बाईं (उलटी) त़रफ़ वाला फ़िरिश्ता दाईं (सीधी) जानिब वाले फ़िरिश्ते से पूछता है : (क्या) मैं (इस का येह गुनाह) लिख लूं ? तो वोह कहता है : नहीं, शायद येह (अपने गुनाह पर) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस्तिग़्फ़ार करे और **तौबा** करे। तो जब बाईं त़रफ़ वाला फ़िरिश्ता **तीन मरतबा** गुनाह लिखने की इजाज़त मांगता है तो (दाईं त़रफ़ वाला) कहता है : हां (अब लिख लो) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें इस से मह़फ़ूज़ रखे, येह कैसा बुरा साथी है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुतअ़ल्लिक़ कितना कम सोचता है और हम से किस क़दर कम ह़या करता है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ ﴿۱۸﴾
(پ ۲٦ ق ۱۸)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : कोई बात वोह ज़बान से नहीं निकालता कि उस के पास एक मुहाफ़िज़ तय्यार न बैठा हो।

और दो फ़िरिश्ते तुम्हारे सामने और पीछे हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ؕ
(پ۱۳ الرعد ۱۱)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : आदमी के लिये बदली वाले फ़िरिश्ते हैं उस के आगे और पीछे कि ब हुक्मे ख़ुदा उस की हिफ़ाज़त करते हैं।

और **एक फ़िरिश्ते** ने तुम्हारी पेशानी को थामा हुवा है, जब तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये तवाज़ोअ़ (या'नी इन्किसारी) करते हो तो वोह तुम्हें बुलन्द करता है और जब तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर तकब्बुर का इज़्हार करते हो तो वोह तुम्हें तबाही में डाल देता है। और **दो फ़िरिश्ते** तुम्हारे होंटों पर (मुतअ़य्यन) हैं, वोह तुम्हारे लिये सिर्फ़ **मुहम्मद** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर **दुरूद** पढ़ने को महफ़ूज़ करते हैं और एक **फ़िरिश्ता** तुम्हारे मुंह पर मुक़र्रर है वोह तुम्हारे मुंह में सांप दाख़िल होने नहीं देता। और **दो फ़िरिश्ते** तुम्हारी आंखों पर मुक़र्रर हैं। येह कुल दस **फ़िरिश्ते** हैं जो हर इन्सान पर मुक़र्रर हैं। रात के **फ़िरिश्ते**

दिन के फ़िरिश्तों पर उतरते हैं, क्यूं कि रात के फ़िरिश्ते दिन के फ़िरिश्तों के इलावा होते हैं। येह **बीस फ़िरिश्ते** हर आदमी पर मुक़र्रर हैं।"

(تفسیرالطّبری ج۷ ص۳۵۰حدیث ۲۰۲۱۱)

मलकुल मौत को सख़्त दिल कहना कैसा ?

सुवाल : एक औ़रत कह रही थी : **अल्लाह** तआ़ला ने जब **ह़ज़रते इज़राईल** عَلَيْهِ السَّلَام को हुक्म दिया कि लोगों की रूह़ तुम क़ब्ज़ किया करोगे। तो उन्हों ने इन्कार कर दिया ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दोबारा हुक्म दिया। उन्हों ने फिर इन्कार करते हुए अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं येह काम नहीं कर सकता, मेरा दिल बहुत नर्म है, मैं किसी को तक्लीफ़ नहीं दे सकता। हुक्म हुवा : तुम्हें येह काम करना ही होगा और रूह़ क़ब्ज़ करना कोई बुरा काम भी नहीं। चुनान्चे **ह़ज़रते इज़राईल** عَلَيْهِ السَّلَام लोगों की रूह़ें क़ब्ज़ करने लगे, यहां तक कि आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का दिल बेह़द सख़्त हो गया। मज़ीद वोह औ़रत कहती है : जब **ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सफ़रे मे'राज पर तशरीफ़ ले गए तो वहां भी **ह़ज़रते इज़राईल** عَلَيْهِ السَّلَام इस्तिक़्बाल

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है । (مسند احمد)

के लिये खड़े न हुए क्यूं कि उन का दिल सख़्त हो गया था । क्या येह वाक़िआ़ किसी मुस्तनद किताब से साबित है ?

जवाब : दोनों रिवायात क़त़्अ़न वाहियात और मिन जुम्ला ख़ुराफ़ात और नुसूसे शरइय्या के बिल्कुल ख़िलाफ़ हैं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के तमाम फ़िरिश्ते मा'सूम हैं, इन से गुनाह का सुदूर होना मुह़ाल (या'नी ना मुम्किन) है । येह जुम्ला **कुफ़्रिय्या** है जिस में कहा गया है : "**ह़ज़रते इज़राईल** عَلَیْهِ السَّلَام रूह़ क़ब्ज़ करने लगे यहां तक कि مَعَاذَ الله عَزَّوَجَلَّ इन का दिल सख़्त हो गया ।"

याद रखिये ! सिर्फ़ **मलकुल मौत** ह़ज़रते **सय्यिदुना इज़राईल** عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ही नहीं सब के सब फ़िरिश्ते मा'सूम हैं । वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करते ही नहीं । चुनान्चे पारह 14 **सूरतुन्नह़्ल** आयत नम्बर 50 में इर्शादे रब्बुल इ़बाद है :

يَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ۩ ﴿٥٠﴾
(پ ١٤ النحل ٥٠)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अपने ऊपर अपने रब का ख़ौफ़ करते हैं और वोही करते हैं जो उन्हें हुक्म हो ।

पारह 17 **सूरतुल अम्बियाअ** आयत नम्बर 27 में ख़ुदाए रह़मान का फ़िरिश्तों के बारे में फ़रमाने आ़लीशान है :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

لَا يَسْبِقُوْنَهٗ بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِاَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٧﴾

(پ١٧ الانبياء ٢٧)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बात में इस से सब्क़त नहीं करते और वोह उसी के हुक्म पर कारबन्द होते हैं।

येह तो जिब्रईल भूल गए...... कहना कैसा ?

सुवाल : येह जुम्ला कहने वाले के बारे में क्या हुक्म है कि येह तो **जिब्रईल** भूल गए, जाना था **अ़ली** (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) के पास और वह्य ले कर पहुंच गए **मुहम्मद** (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के पास।

जवाब : इस क़ौल पर **इल्तिज़ामे कुफ़्र** का हुक्म है। बोलने वाला कहते ही इस्लाम से ख़ारिज हो कर **काफ़िर व मुरतद** हो गया। (رَدُّالْمُحتارج٦ ص ٣٦٤ ماخوذاً)

"तौहीने मलक कुफ़्र है" के तेरह हुरूफ़ की निस्बत से फ़िरिश्तों के मुतअ़ल्लिक़ कुफ़्रिय्यात की 13 मिसालें

﴾1﴿ येह कहना : "**फ़िरिश्ते अल्लाह** की बेटियां हैं" **सरीह़ कुफ़्र** है।

﴾2﴿ येह कहना : "**अल्लाह** तआ़ला को ख़बर नहीं और **फ़िरिश्ते** रूह़ निकालने आ गए" **सरीह़ कुफ़्र** है।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 602)

﴾3﴿ "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने किसी और की रूह़ क़ब्ज़ करने

का हुक्म दिया था और **मलकुल मौत** ग़लती से दूसरे की रूह क़ब्ज़ करने पहुंच गए।'' कहना **कुफ़्र** है। (ऐज़न)

﴾4﴿ किसी भी **फ़िरिश्ते** को ऐब लगाना या ﴾5﴿ उस की **तौहीन** करना **कुफ़्र** है।

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 9, स. 182)

﴾6﴿ अगर किसी ने **जिब्रईल**[1], मीकाईल, इसराफ़ील, और इज़्राईल عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के नामों को किसी काग़ज़ में लिखा फिर इन की **तौहीन** और ह़क़ारत की वज्ह से गन्दगी में फेंका तो **काफ़िर** है।

﴾7﴿ फ़िरिश्तों को क़दीम (या'नी हमेशा से) मानना या ﴾8﴿ ख़ालिक़ जानना **कुफ़्र** है।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 1, स. 48)

﴾9﴿ फ़िरिश्तों के वुजूद का इन्कार करना या ﴾10﴿ कहना : ''**फ़िरिश्ता** नेकी की कुव्वत को कहते हैं और इस के सिवा कुछ नहीं'', येह दोनों बातें **कुफ़्र** हैं।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 1, स. 49)

﴾11﴿ किसी ने कहा : ''फ़ुलां की गवाही क़बूल नहीं करूंगा अगर्चे वोह जिब्रईल व मीकाईल عَلَیْہِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ही क्यूं न हों।'' येह क़ौल **कुफ़्र** है। (اَلْبَحْرُ الرَّائِق ج ٥ ص ٢٠٥)

मदीना

1 : इस के तीन तलफ़्फ़ुज़ हैं (1) जिब्रील (2) जिब्रईल और (3) जिब्राईल।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोजे़ जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

﴾12﴿ जो कहे : "ह़ज़रते **जिब्राईले अमीन** عَلَیْہِ السَّلَام ने वह़्य लाने में ग़लत़ी की" वोह **काफ़िर व मुरतद** है।

(رَدُّالْمُحتار ج٦ ص ٣٦٤)

﴾13﴿ जिस ने कहा : ह़ज़रते **इज़्राईल** عَلَیْہِ السَّلَام ने रूह़ क़ब्ज़ करने में ग़लत़ी की उस का येह क़ौल **कुफ़्र** है।

(مَجْمَعُ الْاَنْھُر ج٢ ص٥٠٧)

जिन्नात के बारे में सुवाल जवाब

जिन्नात के वुजूद का इन्कार करना कैसा ?

सुवाल : बा'ज़ लोगों का येह कहना कैसा है कि **जिन्नात** का वुजूद ही नहीं, येह सब यूंही क़िस्से कहानियां हैं !

जवाब : जिन्नात के वुजूद का इन्कार **कुफ़्र** है। इन का वुजूद क़ुरआनो ह़दीस से साबित है। क़ुरआने मजीद की कमो बेश 25 सूरतों में **जिन्नात** का तज़्किरा है ह़त्ता कि पारह 29 की एक पूरी सूरत का नाम ही **सूरतुल जिन्न** है ! सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی फ़रमाते हैं : **जिन्न** के वुजूद का इन्कार या बदी की क़ुव्वत का नाम **जिन्न** या

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा। (ابن عدی)

शैत़ान रखना **कुफ़्र** है। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 1, स. 50) इसी त़रह़ येह कहना कि **जिन्न** कोई चीज़ नहीं बल्कि बदी की त़ाक़त का नाम ही "**जिन्न**" है या कहना कि **शैत़ान** कोई चीज़ नहीं बल्कि बदी की त़ाक़त का नाम ही "शैत़ान" है येह **कुफ़्र** है।

क्या भूत और चुड़ैल का भी वुजूद है ?

सुवाल : क्या आसेब, भूत और चुड़ैल वग़ैरा का भी वुजूद है ?

जवाब : जी हां। **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 21 सफ़ह़ा 218 पर मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن के फ़रमाने वाला शान का ख़ुलासा है : हां **जिन्न** और नापाक रूहें मर्द व औ़रत, अह़ादीस से साबित हैं और वोह अक्सर नापाक मौक़ओं पर होती हैं। इन्हीं से पनाह के लिये इस्तिन्जा ख़ाने जाने से पहले येह दुआ़ पढ़ना वारिद हुई : "اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الْخُبُثِ وَ الْخَبَائِث." या'नी मैं गन्दी और नापाक चीज़ों से **अल्लाह** की पनाह मांगता हूं।" (येह या इस त़रह़ की और कोई मासूर दुआ़ पढ़ कर जाने से इस्तिन्जा ख़ाने में रहने वाले गन्दे जिन्नात नुक़्सान नहीं पहुंचा सकते)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

क्या इन्सान पर औलिया की सुवारी आ सकती है ?

सुवाल : मश्हूर है, बा'ज़ जगह मर्द या औरत पर शहीद या वलिय्युल्लाह की "सुवारी" आती है इस की शरई हैसिय्यत क्या है ?

जवाब : बा'ज़ अवक़ात तो येह निरा ढोंग होता है जो कि हुब्बे जाह और सस्ती शोहरत के भूके मर्द व औरत अवाम को अपनी तरफ़ मुतवज्जेह करने और भीड़ जमाने के लिये ऐसा करते हैं और बसा अवक़ात येह शरीर जिन्नात होते हैं जो कि किसी इन्सान पर ग़लबा पा कर ऐसी बातें करते हैं। चुनान्चे मेरे **आक़ा आ'ला हज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अहमद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "येह (या'नी शरीर जिन्नात) सख़्त झूटे कज़्ज़ाब होते हैं, अपना नाम कभी शहीद बताते हैं और कभी कुछ। इस वज्ह से जाहिलाने बे ख़िरद (या'नी बे अ़क़्ल जाहिलों) में "शहीदों का सर पर आना" मश्हूर हो गया, वरना शुहदाए किराम (और औलियाए उ़ज़्ज़ाम) ऐसी ख़बीस हरकात से पाको साफ़ होते हैं।"

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. 21, स. 218)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

जिन्नात की ह़ाज़िरी

सुवाल : बा'ज़ मर्द व औ़रत को **जिन्नात** की "ह़ाज़िरी" आती है। उन से सुवाल जवाब करना कैसा है ?

जवाब : जिन्नात से आइन्दा की बात पूछनी **ह़राम** है। मसलन पूछना, मेरा बच्चा कब तन्दुरुस्त होगा ? मैं मुक़द्दमा जीतूंगा या नहीं ? मेरी फ़ुलां जगह शादी होगी या नहीं ? मैं इम्तिह़ान में काम्याबी पाऊंगा या नहीं ? वग़ैरा सुवालात करना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाले काम हैं। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "**ह़ाज़िरात** कर के मुवक्कलान जिन्न से पूछते हैं फ़ुलां मुक़द्दमे में क्या होगा ? फ़ुलां काम का अन्जाम क्या होगा ? **येह ह़राम है।**" (फ़तावा अफ़्रीक़ा, स. 177, 178)

क्या जिन्न को आइन्दा की बातों का पता चल जाता है ?

सुवाल : जिन्न की आइन्दा की बताई हुई ग़ैब की ख़बर पर यक़ीन कर सकते हैं या नहीं ?

जवाब : नहीं कर सकते। मेरे **आक़ा आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "**ह़ाज़िरात** कर के मुवक्कलान **जिन्न** से (आइन्दा की बातें) पूछते हैं, फ़ुलां मुक़द्दमे में

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन में उस से मुसाफ़ह़ा करूं (या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشکوال)

क्या होगा ? फ़ुलां काम का अन्जाम क्या होगा ? **येह ह़राम है।''........ जिन्न ग़ैब से निरे** (या'नी मुकम्मल त़ौर पर) **जाहिल हैं।** उन से आयिन्दा की बात पूछनी अ़क़्लन ह़माक़त और शरअ़न **ह़राम** और उन की ग़ैबदानी का ए'तिक़ाद हो तो (या'नी येह अ़क़ीदा रखना कि जिन्न को इ़ल्मे ग़ैब है येह) **कुफ़्र** है। (फ़तावा अफ़्रीक़ा, स. 178)

जिन्नात को एक साल तक **ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान** عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُوَالسَّلَام की वफ़ाते ज़ाहिरी का इ़ल्म न हो सका। चुनान्चे **अल्लाहु आ़लिमुल ग़ैब** جَلَّ جَلَالُہٗ की सच्ची किताब क़ुरआने पाक में इर्शाद होता है :

فَلَمَّا خَرَّ تَبَیَّنَتِ الْجِنُّ اَنْ لَّوْ كَانُوْا یَعْلَمُوْنَ الْغَیْبَ مَا لَبِثُوْا فِی الْعَذَابِ الْمُهِیْنِ ﴿۱۴﴾
(پ۲۲ سبا ۱۴)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब सुलैमान (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) ज़मीन पर आया, जिन्नों की ह़क़ीक़त खुल गई। अगर ग़ैब जानते होते तो इस ख़्वारी के अ़ज़ाब में न होते।

मज़्कूरा बाला आयते करीमा से साबित हुवा कि **जिन्नात** इ़ल्मे ग़ैब नहीं जानते।

वफ़ाते सुलैमान عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ह़िकायत

सुवाल : इस आयते करीमा में **ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान** عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُوَالسَّلَام और **जिन्नात** के जिस वाक़िए

की त़रफ़ इशारा है अगर वोह भी इर्शाद फ़रमा दिया जाए तो मदीना मदीना।

जवाब : ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُوَالسَّلَام की उ़म्र शरीफ़ 53 साल की हुई, 13 बरस की उ़म्र में आप عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُوَالسَّلَام को बादशाहत मिली, 40 बरस तक आप عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُوَالسَّلَام तख़्ते सल्त़नत पर जल्वा अफ़रोज़ रहे। आप عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُوَالسَّلَام का मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार **बैतुल मुक़द्दस** में है। आप عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُوَالسَّلَام की मिसाली वफ़ाते ज़ाहिरी का **ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़** भी सुन लीजिये :

मुल्के शाम में जिस जगह **ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُوَالسَّلَام का ख़ैमा गाड़ा गया था ठीक उसी (बरकत वाली) जगह ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُوَالسَّلَام ने **बैतुल मुक़द्दस** की बुन्याद रखी। मगर इमारत पूरी होने से क़ब्ल ही **ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद** عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُوَالسَّلَام की वफ़ाते ज़ाहिरी का वक़्त आ गया चुनान्चे अपने फ़रज़न्दे अरजुमन्द **ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान** عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُوَالسَّلَام को उस इमारत की तक्मील की वसिय्यत फ़रमाई। **ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने **जिन्नात** के एक गुरौह को इस काम पर लगा दिया। इमारत अभी ता'मीरी मराह़िल से गुज़र रही थी कि आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की वफ़ाते ज़ाहिरी का वक़्त भी क़रीब आ गया। आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने दुआ़ मांगी : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी वफ़ात इन **जिन्नात** पर ज़ाहिर न फ़रमा और वोह बराबर इमारत की तक्मील में मसरूफ़े अ़मल रहें और इन सभों को जो **इ़ल्मे ग़ैब** का दा'वा है वोह भी बाति़ल ठहर जाए। येह दुआ़ मांग कर आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام मेह़राब में दाख़िल हो गए और ह़स्बे आ़दत अपना अ़सा मुबारक टेक कर इ़बादत में खड़े हो गए और इसी ह़ालत में आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की **वफ़ात** हो गई। मगर मज़दूर **जिन्नात** बराबर काम में मसरूफ़ रहे। अ़र्सए दराज़ तक आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का इसी ह़ालत में रहना **जिन्नात** के लिये कोई नई बात नहीं थी, क्यूं कि वोह बारहा देख चुके थे कि आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام एक एक माह बल्कि कभी कभी दो दो माह बराबर इ़बादत में खड़े रहा करते हैं। **अल**

ग़रज़ ज़ाहिरी इन्तिक़ाल के बा'द एक साल तक आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام **अपनी मुबारक लाठी से टेक लगाए खड़े रहे** यहां तक कि ब हुक्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ दीमक ने आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के अ़सा शरीफ़ (या'नी मुबारक लाठी) को खा लिया और यूं आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का जिस्मे नाज़नीन ज़मीन पर तशरीफ़ ले आया। अब **जिन्नात** और इन्सानों को आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की **ज़ाहिरी वफ़ात** का इल्म हुवा। (मुलख़्ख़स अज़ अ़जाइबुल क़ुरआन, स. 189, 192, ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 773, 774) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ह़यातुल अम्बिया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! इस क़ुरआनी **हि़कायत** से दर्स मिला कि ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मुक़द्दस अज्साम बा'दे रिह़लत भी सलामत रहते हैं, बा'दे वफ़ात क़ब्र की मिट्टी इन्हें नहीं खा सकती। "सुनने इब्ने माजह" में है : सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सुल्ताने मक्कए मुकर्रमा

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन पर ह़राम फ़रमा दिया है कि वोह अम्बिया (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) के जिस्मों को खाए। **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के नबी **ज़िन्दा** हैं और उन को रोज़ी दी जाती है।" (اِبنِ ماجه حديث١٦٣٧ ج ٢ ص ٢٩١)

दो अम्बियाए किराम लब्बैक पढ़ रहे थे

अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपने मज़ाराते त़य्यिबात से निकल कर ज़मीनो आस्मान के अत़राफ़ में आते जाते और तसर्रुफ़ फ़रमाते हैं। चुनान्चे "सह़ीह़ मुस्लिम" में है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वादिये अज़्रक़ से गुज़रे तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह कौन सी **वादी** है ? लोगों ने बताया : येह वादिये अज़्रक़ है। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : गोया मैं मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को सनिय्या (घाटी) से उतरते हुए देखता हूं और वोह बुलन्द आवाज़ से तल्बिया (या'नी लब्बैक) कह रहे हैं। फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक घाटी हरशा पर तशरीफ़ लाए आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह कौन सी घाटी है ? लोगों ने अ़र्ज़ की :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

येह हरशा घाटी है। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : गोया कि मैं यूनुस (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) को देख रहा हूं वोह एक त़ाक़त वर सुर्ख़ ऊंटनी पर सुवार हैं जिस की लगाम खजूर की छाल से बनी हुई है, उन्हों ने ऊनी जुब्बा पहना हुवा है और वोह लब्बैक पढ़ते हुए जा रहे हैं।

(صَحِیح مُسلِم ص۱۰۳ حدیث ۲۶۸، ۲۶۹)

जिन्नात का गुज़श्ता ह़ालात बता देना

सुवाल : बेशक क़ुरआने पाक से साबित है कि जिन्नात **इ़ल्मे ग़ैब** नहीं रखते। मगर बा'ज़ अवक़ात "ह़ाज़िरात के जिन्नात" गुज़श्ता ह़ालात दुरुस्त बता देते हैं, इस में क्या राज़ है ?

जवाब : यक़ीनन बसा अवक़ात शरीर **जिन्नात** गुज़श्ता ह़ालात की दुरुस्त इत्तिलाआत देने में काम्याब हो जाते हैं मसलन आप को दस साल क़ब्ल सख़्त बुख़ार आ गया था या आप 15 साल क़ब्ल फ़ुलां क़ब्रिस्तान में डर गए थे या आप के बच्चे को सर पर चोट आ गई थी वग़ैरा वग़ैरा। आप के बारे में गुज़श्ता ह़ालात बताने की वज्ह येह है कि येह बातें वोह "ह़ाज़िरी का जिन्न" आप के **हमज़ाद** से पूछ लेता

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

है। तो **हमज़ाद** के ज़रीए़ मिली हुई इत्तिलाअ़ को "इल्मे ग़ैब" नहीं कहते। हर शख़्स के साथ एक हमज़ाद भी पैदा होता है जो कि **काफ़िर जिन्न** होता है और वोह हर वक़्त साथ रहने की वज्ह से इस त़रह़ की बातें देखता रहता है। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن **फ़्रेमसीन या'नी जादूगरों के एक मख़्सूस टोले** के बारे में फ़रमाते हैं : एक **शैत़ान** अ़लानिया उस (जादूगर) के साथ रहता है जिसे वोह देखता है और उस से बातें करता है और वोह (शैत़ान) उसे येह राज़ ज़ाहिर करने से हर वक़्त मानेअ़ रहता है और येही सबब है कि **फ़्रेमसीन** (या'नी उन्हीं मख़्सूस जादूगरों में का कोई फ़र्द) अगर शह्र के एक कनारे से गुज़रे तो दूसरे (जादूगर) को जो शह्र के दूसरे कनारे पर है इत्तिलाअ़ हो जाती है, क्यूं कि एक का शैत़ान दूसरे के शैत़ान को इत्तिलाअ़ कर देता है। وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم ।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 21, स. 223)

हमज़ाद कौन होता है ?

सुवाल : हमज़ाद के बारे में कुछ तफ़्सीलात बता दीजिये।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

जवाब : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 21 **सफ़ह़ा** 216 ता 217 पर फ़रमाते हैं : **हमज़ाद** अज़ क़िस्मे शयात़ीन है, वोह शैत़ान कि हर वक़्त आदमी के साथ रहता है वोह मुत़लक़न काफ़िर मल्ऊ़ने अबदी है सिवा उस के जो **ह़ुज़ूरे अक़्दस** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर था वोह बरकते सोह़बते अक़्दस से मुसल्मान हो गया। **सह़ीह़ मुस्लिम** में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : लोगो ! तुम में कोई शख़्स नहीं कि जिस के साथ **हमज़ाद जिन्न** और **हमज़ाद फ़िरिश्ता** न हो। लोगों ने अ़र्ज़ की **ऐ अल्लाह तआ़ला के रसूल !** (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) क्या आप के साथ भी है ? इर्शाद फ़रमाया कि हां मेरे साथ भी है लेकिन **अल्लाह** तआ़ला ने मेरी मदद फ़रमाई कि वोह (हमज़ाद शैत़ान) **मुसल्मान** हो गया लिहाज़ा वोह मुझे सिवाए भलाई के कुछ नहीं कहता। (صحیح مسلم ص ۱۵۱۲ حدیث ۲۸۱٤) मज़ीद मा'लूमात के लिये **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 21 सफ़ह़ा 216 ता 219 का मुत़ालआ़ फ़रमा लीजिये।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

क़ियामत के बारे में सुवाल जवाब

सुवाल : मर कर आदमी मिट्टी में मिल कर हमेशा के लिये ख़त्म हो जाता है अब **क़ियामत** में क्या उठना था ! येह जुम्ला कैसा है ?

जवाब : येह ख़ालिस कुफ़्फ़ार का अ़क़ीदा है। **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "मरने के बा'द उठाए जाने का इन्कार **कुफ़्र** है।" (فتاوٰی عالمگیری ج ۲ ص ۲۷٤)

"क़ियामत की भीड़ में छुप जाऊंगा" कहना

सुवाल : ज़ैद ने बक्र को बे क़ुसूर चांटा मारा। **बक्र** ने बे क़रार हो कर कहा : **क़ियामत** के दिन तुम से बदला लूंगा। इस पर **ज़ैद** ने बका : मैं **भीड़** में छुप जाऊंगा ! **ज़ैद** के बारे में हुक्मे शरई बयान कर दीजिये।

जवाब : ज़ैदे बे क़ैद का येह क़ौल **कुफ़्र** है। फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : जो मज़्लूम से कहे : तू **क़ियामत** की भीड़ में मुझे कहां तलाश कर सकता है ! येह क़ौल **कुफ़्र** है। (مِنَحُ الرَّوض ص ٥٢٠)

"क़ियामत में दुगना दे दूंगा" कहना

सुवाल : वलीद ने सईद का क़र्ज़ा दबा लिया, इस पर **सईद** ने उस को ख़ौफ़े आख़िरत दिलाया तो इस पर **वलीद**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

कहने लगा : “मुझे और भी रक़म दे दे, **क़ियामत** में दुगनी दे दूंगा।” **वलीद** का येह क़ौल कैसा है ?

जवाब : वलीदे पलीद का येह क़ौले बदतर अज़ बौल **कुफ़्रिय्या** है । **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : जो क़र्ज़ ख़्वाह से कहे : “**दस** (रुपै) और दे दे **क़ियामत** में **बीस** ले लेना” येह क़ौल **कुफ़्र** है । (مِنَحُ الرَّوض ص ۵۲۱)

“आख़िरत में जो सब का होगा वोह अपना होगा” कहना कैसा ?

सुवाल : ज़ैद को नेकी की दा'वत दी गई तो कहने लगा : “मैं तो भाई गुनहगार हूं, आख़िरत में जो सब का होगा वोह अपना होगा।” ऐसा कहना कैसा है ?

जवाब : ऐसा कहना निहायत सख़्त बात और गुनाह पर दिलेरी है । हर शख़्स को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पकड़ से डरते रहना चाहिये । अलबत्ता अगर उस ने येह जुम्ला अ़ज़ाबे आख़िरत को हलका जानते हुए कहा तो **कुफ़्र** है ।

“क़ियामत में रिश्वत देनी पड़ेगी” कहना कैसा ?

सुवाल : किसी मालदार को जम्ए माल में ज़ियादा वक़्त सर्फ़ करने के बजाए नेक आ'माल के लिये वक़्त निकालने की दरख़्वास्त की गई तो कहने लगा : “**भाई** ! दौलत की तो **क़ियामत** के रोज़ भी ज़रूरत पड़ेगी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

क्यूं कि जन्नत में दाख़िले के लिये भी **रिश्वत** देनी पड़ेगी !" इस जुम्ले के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब : इस मुंहफट मालदारे ज़लीलो ख़्वार का येह जुम्ला **कुफ़्रिय्या** है। **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : अगर कहा : "**क़ियामत** में रिज़्वाने जन्नत (या'नी निगरान फ़िरिश्ते) को कोई चीज़ न दी तो वोह जन्नत का दरवाज़ा न खोलेंगे" येह **कलिमए कुफ़्र** है।

(فتاوٰی عالمگیری ج ۲ ص ۲۷۵)

क़ियामत के मुतअ़ल्लिक़ कुफ़्रिय्यात की 8 मिसालें

﴾1﴿ क़ियामत का इन्कार करने वाला **काफ़िर** है।

(فتاوٰی عالمگیری ج۲ ص۲۷٤, बहारे शरीअ़त, हिस्सए अव्वल, स. 67)

﴾2﴿ किसी से कहा गया : "**दुन्या** छोड़ ताकि तुझे **आख़िरत** मिले।" उस ने कहा : "मैं उधार के बदले नक़्द नहीं छोड़ता" येह क़ौल **कुफ़्र** है। (اَلْبَحْرُ الرَّائِق ج ٥ ص ٢٠٤)

﴾3﴿ जो कहे : "मुझे **गन्दुम** दे दे मैं **क़ियामत** में तुझे जव दे दूंगा" येह क़ौल **कुफ़्र** है क्यूं कि इस में **क़ियामत** का मज़ाक़ उड़ाया गया है। (مِنَحُ الرَّوض ص ٥٢١)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

4 मुत़्लक़न इस त़रह़ कहना : "मेरा **मह़शर** से क्या तअ़ल्लुक़ ! या कहा 5 मैं **मह़शर** (या'नी मरने के बा'द ज़िन्दा हो कर जम्अ़ होने की जगह) से नहीं डरता या कहा : 6 मैं **क़ियामत** से नहीं डरता" येह तीनों अक़्वाल **कुफ़्रिय्या** हैं।

(الفتاوی البزازیة علی ھامش الفتاویٰ الھند یة ج٦ ص ٣٤٣)

7 जिस ने कहा : **दुन्या** में रोटी होनी चाहिये, **आख़िरत** में जो चाहे हो। येह **कलिमए कुफ़्र** है।

(مِنَحُ الرَّوض ص ٥٢٢)

8 हि़साबे **क़ियामत** के मुन्किर (इन्कार करने वाले) पर हुक्मे **कुफ़्र** है।

(مِنَحُ الرَّوض ص ٥٢٠ , बहारे शरीअ़त, हिस्सए अव्वल, स. 73)

शरीअ़त की तौहीन के बारे में सुवाल जवाब

सुवाल : शरीअ़त की तौहीन करना कैसा है ?

जवाब : कुफ़्र है। **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : जिस शख़्स ने **शरीअ़त** या इस के मसाइल की तौहीन की उस ने **कुफ़्र** किया।

(مِنَحُ الرَّوض الْاَزْھَر ص ٤٧٣)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

शरीअ़त पर अ़मल कर के क्या भूका मरूं ! कहना कैसा ?

सुवाल : किसी से कहा गया : **शरीअ़त** पर अ़मल करो। तो उस ने कहा : "क्या **शरीअ़त** पर अ़मल कर के भूका मरूं !" उस का येह जवाब देना कैसा है ?

जवाब : कुफ़्र है।

"हम को शरीअ़त ना मन्ज़ूर" कहना कैसा ?

सुवाल : विरासत की तक़्सीम पर गुफ़्त्गू हो रही थी। ज़ैद ने ख़ालिद से कहा कि हम तुम और सभी मुसल्मान शरीअ़त के पाबन्द हैं लिहाज़ा शरीअ़त के मुताबिक़ फ़ैसला होना चाहिये। ख़ालिद जो विरासत के माल पर क़ब्ज़ा किये हुए था उस ने कहा : "हम को शरीअ़त ना मन्ज़ूर है बल्कि रवाज मन्ज़ूर" इस जुम्ला कहने की वज्ह से ख़ालिद पर क्या हुक्म है ?

जवाब : ख़ालिद पर हुक्मे **कुफ़्र** है और येह कि उस का **निकाह़** फ़स्ख़ हो गया (या'नी निकाह़ टूट गया) उस पर **तौबा** फ़र्ज़ है, नए सिरे से इस्लाम लाए। इस के बा'द अगर औ़रत राज़ी हो उस से दोबारा **निकाह़** करे।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 691)

शरई मसाइल की किताब की तौहीन

सुवाल : किसी ने ह़दीस या **शरई मसाइल की किताब** बत़ौरे तौहीन ज़मीन पर दे मारी उस के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब : ऐसा करना **कुफ़्र** है। अगर किसी ने ह़दीस या शरई मसाइल या सीरते (रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की किताब को तौहीन और ह़क़ारत की निय्यत से फेंका या फाड़ दिया तो उस पर हुक्मे **कुफ़्र** है। (ईमान की हिफ़ाज़त, स. 80) **फुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : **फ़िक़्ह** की किताब की तौहीन **कुफ़्र** है।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 285, مِنَحُ الرَّوض ص ٤٧٣)

जो फ़िक़्ह का बिल्कुल ही इन्कार करे उस का हुक्म

सुवाल : **फ़िक़्ह** किसे कहते हैं और जो सिरे ही से **फ़िक़्ह** को तस्लीम न करे उस के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब : **फ़िक़्ह** के लुग़वी मा'ना कलाम करने वाले के कलाम से उस की ग़रज़ (मक़्सद) को समझना है (كتابُ التعريفات ص ١١٩) इस्तिलाह़ में اَلْعِلْمُ بِاَحْكَامِ الشَّرِيْعَةِ या'नी शरीअ़त के फ़ुरूई अह़काम के इल्म को **फ़िक़्ह** कहते हैं। (اَلْمُفْرَدات ص ٦٤٢) **फ़िक़्ह** के इन्कार करने वाले के मुतअ़ल्लिक़ **फ़तावा** रज़विय्या जिल्द 14 सफ़्ह़ा नम्बर 622 पर मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान**

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : जो मुसल्मान कहला कर **फ़िक़्ह** (या'नी दीन की समझ ह़ासिल करने) को अस्लन (बिल्कुल भी) न माने (तो) न किताबी (है) न ख़ारिजी बल्कि **मुरतद** है, इस्लाम से ख़ारिज। और अगर कोई तावील करता है तो कम अज़ कम बद दीन गुमराह। (फ़िक़्ह या'नी "दीन की समझ" का ज़िक्र क़ुरआने पाक में मौजूद है) قَالَ اللّٰهُ تَعالٰى या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَآىٕفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا فِي الدِّيْنِ
(پ ١١ التوبه ١٢٢)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो क्यूं न हुवा कि इन के हर गुरौह में से एक जमाअ़त निकले कि दीन की समझ ह़ासिल करें।

(फ़िक़्ह या'नी "दीन की समझ" का तज़्किरा ह़दीसे पाक में भी है चुनान्चे)

और **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे गिरामी है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस से भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे **दीन की समझ** अ़त़ा फ़रमाता है وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم। (بُخارِی ج ١ ص ٤٢ حديث ٧١)

ह़दीस का इन्कार करना कैसा ?

सुवाल : क्या ह़दीस का इन्कार **कुफ़्र** होता है ?

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

जवाब : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ह़दीसे मुतवातिर के इन्कार पर तक्फ़ीर की जाती (या'नी हुक्मे कुफ़्र लगाया जाता) है ख़्वाह मुतवातिर बिल्लफ़्ज़ हो या मुतवातिरुल मा'ना और ह़दीस ठहरा कर जो कोई इस्तिख़्फ़ाफ़ करे तो येह मुत़्लक़न **कुफ़्र** है अगर्चे ह़दीस अह़ाद बल्कि ज़ईफ़ बल्कि फ़िल वाक़ेअ़ इस से भी नाज़िल (या'नी कम दरजा) हो। وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 280)

ह़दीस ठहरा कर इन्कार करने का मा'ना येह है कि क़ाइल येह मुराद ले कि फुलां बात सरकारे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ग़लत़ इर्शाद फ़रमा दी तो **येह क़ाइल क़त़्ई काफ़िर व मुरतद** है।

मुन्किरे ह़दीस के बारे में हुक्म

सुवाल : जो मुत़्लक़न ह़दीस का मुन्किर हो और कहता हो मैं सिर्फ़ **कुरआने मजीद** को मानता हूं "**ह़दीस** का कोई ए'तिबार नहीं" उस के बारे में शरीअ़त का क्या हुक्म है ?

जवाब : ऐसे मुन्किरे ह़दीस के बारे में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو یعلی)

अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : जो शख़्स **ह़दीस** का मुन्किर है वोह नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुन्किर है और जो **नबी** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुन्किर है वोह **क़ुरआने मजीद** का मुन्किर और जो क़ुरआने मजीद का मुन्किर है **अल्लाह** वाह़िदे क़हहार का मुन्किर है और जो **अल्लाह** का मुन्किर है **सरीह़ मुरतद काफ़िर** है।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 312)

ह़दीस, ख़बर और मुतवातिर की ता'रीफ़ात

सुवाल : बराए मेहरबानी, "ह़दीस" "ख़बर" और "मुतवातिर" की ता'रीफ़ात बयान कर दीजिये।

जवाब : शारेह़े बुख़ारी, नाइबे मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى, **नुज़्हतुल क़ारी शर्हे़ सह़ीह़ बुख़ारी** जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा 31 पर इन की ता'रीफ़ात यूं बयान फ़रमाते हैं : **ह़दीस :** हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़ौल, फ़े'ल, ह़ाल और तक़रीर को कहते हैं। बा'ज़ ह़ज़रात इस में ता'मीम करते हैं कि सह़ाबी और ताबेई के अक़्वालो अफ़्आ़ल, अह़वाल व तक़रीरात भी **ह़दीस** हैं। लेकिन आ़म शाएअ़ ज़ाएअ़ पहला ही मुह़ावरा है। लफ़्ज़े **ह़दीस** से अव्वल वहला

(या'नी पहली ही बार) में ज़ेहन इसी त़रफ़ जाता है कि येह **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का क़ौल या फ़े'ल या ह़ाल या तक़रीर है। "तक़रीर" से मुराद येह है कि हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने किसी सह़ाबी ने कुछ किया या कहा और हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सुकूत (या'नी ख़ामोशी को) इख़्तियार फ़रमाया येह "तक़रीर" है, **ख़बर :** ख़बर और ह़दीस अस्ल में मुरादिफ़ (या'नी हम मा'ना ही) हैं। मगर कुछ लोग (या'नी कुछ मुह़द्दिसीने किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام) हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सह़ाबा व ताबिईन رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن के अक़्वालो अफ़्आ़ल ही को **ह़दीस** कहते हैं और सलात़ीन, उमरा, हु़क्काम और गुज़श्ता ज़माने के अह़वाल को **ख़बर** कहते हैं। **ह़दीसे मुतवातिर :** वोह ह़दीस है जिस के रावी हर दौर में इतने ज़ियादा हों कि आ़दत इन सब के झूट पर मुत्तफ़िक़ होने को मुह़ाल (या'नी ना मुम्किन) क़रार दे।

ख़बरे वाह़िद की ता'रीफ़

सुवाल : "ख़बरे वाह़िद" किसे कहते हैं ?

जवाब : जिस ह़दीस में "ख़बरे मुतवातिर" की कोई एक शर्त़ न पाई जाए वोह **ख़बरे वाह़िद** है।

(شرح نخبة الفکر للعسقلانی ص ۳۱)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

"हम पर रब का करम है" के तेरह हुरूफ़ की निस्बत से पिछली उम्मतों के आ'माल की 13 झल्कियां

(1 ता 9 अहकाम ख़ास यहूद के लिये थे और बक़िय्या में कई दूसरी उम्मतें भी शामिल थीं।)

﴾1﴿ **ज़कात** में चौथाई माल अदा करना फ़र्ज़ था[1] ﴾2﴿ **चरबी** हराम थी[2] ﴾3﴿ **ऊंट** का गोश्त हराम था[3] ﴾4 ता 6﴿ जिस उ़ज़्व से **गुनाह** होता था उस को काट दिया जाता था, क़िसास में **क़त्ल** करना लाज़िम था, **दियत** (या'नी ख़ून बहा) मशरूअ़ न थी[4] ﴾7, 8﴿ **नजिस** कपड़ा काटे बिग़ैर पाक नहीं होता था। बा'ज़ गुनाहों की सज़ा में उन की सूरतों को मस्ख़ कर के **बन्दर** और **ख़िन्ज़ीर** बना दिया जाता था[5] ﴾9﴿ **हफ़्ते** के दिन शिकार की इजाज़त न थी[6] ﴾10 ता 12﴿ **माले ग़नीमत** हलाल नहीं था, **मस्जिद** के सिवा किसी और जगह नमाज़ नहीं पढ़ सकते थे, **तयम्मुम** की सहूलत नहीं थी[7]

---

(1)تفسیر بغوی، البقرۃ، زیر آیت ۲۸۶، ج۱ص۲۰۹ (2) بخاری ج۲ ص۴۶۲ حدیث ۳۴۶۰ (3) دُرِّمنثور، الانعام زیر آیت ۱۴۶ ج۳ ص۳۷۷ (4) روح المعانی، الاعراف،زیر آیت۱۵۷، ج۹، ص ۱۰۹ (5) تفسیر کبیر، البقرۃ زیر آیت ۲۸۶ ج۳ ص ۱۲۱ (6) دُرِّمنثور، البقرۃ زیر آیت ۶۵ ج۱ ص۱۸۵ (7) بخاری ج ۱ ص ۱۳۳۔۱۳۴ حدیث ۳۳۵ مراۃ ج۸ ص ۹

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الايمان)

﴿13﴾ **बा'ज़ कुरबानियों** का गोश्त दूसरे दीनों में खाया नहीं जाता था।

नेकी की दा'वत की तौहीन

सुवाल : एक मुबल्लिग़ ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए बे नमाज़ी को नमाज़ की दा'वत दी इस पर मुबल्लिग़ को किसी ने दा'वते नमाज़ से मन्अ़ किया और दा'वते नमाज़ के बारे में कहा : इस में रखा ही क्या है ! इस तरह कहने वाले का क्या हुक्म है ?

जवाब : इसी तरह के एक सुवाल के जवाब में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : اَمرٌ بِا لْمَعرُوف وَ نَهْىٌ عَنِ الْمُنْكَر (या'नी नेकी का हुक्म करना और बुराई से मन्अ़ करना) फ़र्ज़ है, (और) फ़र्ज़ से रोकना शैत़ानी काम है। बनी इसराईल में जिन्हों ने मछली का शिकार किया था वोह भी **बन्दर** कर दिये गए और जिन्हों ने उन्हें नसीह़त करने को मन्अ़ किया था कि

لِمَ تَعِظُوْنَ قَوْمَاۙ اللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ اَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًاؕ

(तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्यूं नसीह़त करते हो उन

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

लोगों को जिन्हें **अल्लाह** हलाक करने वाला है या उन्हें सख़्त अ़ज़ाब देने वाला। (پ۹الاعراف۱٦٤) येह भी तबाह हुए और नसीहत करने वालों ने नजात पाई। और येह कहना कि "इस में रखा ही क्या है" सब से **सख़्त कलिमा** है। इस कहने वाले को **तजदीदे इस्लाम व तजदीदे निकाह** चाहिये। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 5, स. 117)

शरीअ़त की तौहीन के मुतअ़ल्लिक़ कुफ़्रिय्यात की 38 मिसालें

﴾1﴿ जो शख़्स किसी हुक्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ के बारे में कहे : "इस पर कौन क़ादिर है जो इसे बजा लाए" ऐसे पर हुक्मे कुफ़्र है। (مِنَحُ الرَّوض ص ٤٧١)

﴾2﴿ जो कहे : मुझे **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ का हुक्म या ﴾3﴿ नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की **शरीअ़त** पसन्द नहीं या ﴾4﴿ उसे कहा गया कि **अल्लाह** तआ़ला ने बयक वक़्त चार बीवियां रखना ह़लाल की हैं। उस ने कहा : मुझे येह हुक्म पसन्द नहीं येह तीनों कलिमाते **कुफ़्र** हैं। (عالمگیری ج۲ ص ۲٦١)

﴾5﴿ **शरीअ़त** का मज़ाक़ उड़ाना या ﴾6﴿ तौहीन करना **कुफ़्र** है।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 9, स. 183, فتاوی خیریہ ج۱ص۱۰۵)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा। (ابن عدی)

《7》 किसी के सामने शरीअ़त की बात की। उस ने कहा : "**शरीअ़त** गई भाड़ में ! क्या हर वक़्त **शरीअ़त शरीअ़त** करते रहते हो।" ऐसा कहने वाला **काफ़िर** है।

《8》 किसी से कहा गया : तू कौन से मज़्हब पर है शाफ़ेई या ह़नफ़ी ? उस ने जवाब दिया : "मैं दोनों मज़्हबों पर ला'नत भेजता हूं" येह **कलिमए कुफ़्र** है।

(حاشیۃ الطّحطاوی علی الدّرالمختارج۲ ص ۴۷۹)

《9》 जो कहे : "सारी **शरीअ़त** ह़ीलों और धोकेबाज़ी का नाम है।" वोह **काफ़िर** है। (البحرُ الرّائق ج۵ ص ۲۰۷)

《10》 जिस शख़्स के सामने **शरीअ़त** का ज़िक्र किया गया, उस ने ना पसन्दीदगी की आवाज़ निकाली या इज़्हार किया या कहा : येह तो शर है। उस ने **कुफ़्र** किया।

(مِنَحُ الرَّوض ص۴۷۵)

《11》 अगर किसी को ह़दीस सुनाई जाए तो वोह कहे : "मैं ने स्टोरियां बहुत सुनी हैं बस करो।" कहने वाले पर हुक्मे **कुफ़्र** है।

《12》 जिस के सामने ह़दीस पढ़ी गई तो उस ने कहा : "(ऐसी ह़दीसें तो) बहुत सुनी हैं।" अगर बतौ़रे तह़क़ीर कहा है तो **कुफ़्र** है। (فتاوٰی بزازیہ ج۶ ص ۳۲۸)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

«13» अगर किसी ने ह़दीसे पाक या तफ़्सीर की किताबों को तौहीन और ह़क़ारत की निय्यत से फेंका या फाड़ दिया तो **काफ़िर** है।

«14» मस्अलए शरीअ़त सुन कर कहना : "येह फ़ुज़ूल घड़न्त और ज़बर दस्ती का लठ चलाना है।" येह **कलिमए कुफ़्र** है।

«15» अगर कोई गुमान करे कि "मुसल्मान इस्लाम ही की वज्ह से काफ़िरों से पीछे रह गए हैं।" तो ऐसा शख़्स **काफ़िर** है।

«16» अगर कोई ख़ालिस दीनी ता'लीमात के बारे में कहे : "मुसल्मान तरक़्क़ी उसी वक़्त कर सकते हैं जब कि अपनी दीनी बोसीदा ता'लीमात को छोड़ दें" ऐसा कहने वाला **काफ़िर** है।

«17» "हम को **शरीअ़त** मन्ज़ूर नहीं, रवाज मन्ज़ूर है" कहना **कलिमए कुफ़्र** है।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 691)

«18» **शरीअ़त** को फ़र्ज़ी और ख़ुद साख़्ता कहना **कुफ़्र** है।

(ऐज़न, जि. 15, स. 278)

«19» "**शरीअ़त** तो मौलवियों की घड़ी हुई बातें हैं" ऐसा कहना **कुफ़्र** है।

«20» इद्दत का इन्कार करना **कुफ़्र** है मसलन येह कहना कि इद्दत की कुछ ज़रूरत नहीं।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 653)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

《21》 जो **तयम्मुम** करने वाले पर हंसे उस पर हुक्मे **कुफ़्र** है। (مِنَحُ الرَّوض ص٤٧٣)

《22》 मुत़्लक़न **तयम्मुम** का इन्कार **कुफ़्र** है नीज़

《23》 **तयम्मुम** को जाहिलों का फ़े'ल समझना भी **कुफ़्र** है।

《24》 येह कहा : "मैं शरअ़ वरअ़ नहीं जानता" या 《25》 कहा : मैं **शरीअ़त** का क्या करूं ! दोनों **कुफ़्रिय्यात** हैं। (مجمع الأنهُر ج٢ ص ٥١٠)

《26》 अगर कोई येह दा'वा करे कि मैं दरजात त़ै करते करते ऐसे दरजे तक पहुंच गया हूं कि अब मैं अह़कामाते इलाहिय्यह का मुकल्लफ़ (या'नी पाबन्द) नहीं रहा। मेरे लिये ह़लाल व ह़राम, इत़ाअ़त व मा'सियत सब बराबर हैं तो ऐसा मुद्दई (या'नी दा'वा करने वाला) **काफ़िर** है।

《27》 "**शरीअ़त** सिर्फ़ मौलवियों के लिये है।" ऐसा कहना **कुफ़्र** है।

《28》 अगर कोई बुलन्द जगह पर बैठे और उस के इर्द गिर्द लोग हों जो उस से मसाइल पूछें और हंसें और उसे तकिये से मारें या'नी शरीअ़त का मज़ाक़ उड़ाएं तो सब पर हुक्मे **कुफ़्र** है। (مِنَحُ الرَّوض ص٤٧١)

《29》 किसी शख़्स को **शरीअ़त** का हुक्म बताया कि इस मुआ़मले में येह हुक्म है। उस ने कहा : "**शरीअ़त** पर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़हा करूं (या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشکوال)

अ़मल नहीं करेंगे हम तो रस्मो रवाज की पाबन्दी करेंगे" ऐसा कहना बा'ज़ मशाइख़ के नज़्दीक **कुफ़्र** है।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 9, स. 183, عالمگیری ج ۲ ص ۲۷۲)

《30》 जो कहे : इल्मे शरीअ़त में तौह़ीद नहीं या 《31》 कहे : इल्मे ह़क़ीक़त, इल्मे **शरीअ़त** से आ'ला है जब कि मक़्सूद शरीअ़त की तौहीन हो या 《32》 कहे : "इल्मे **शरीअ़त** की कोई ह़क़ीक़त नहीं" येह सब कुफ़्रिय्या कलिमात हैं। (مَجْمَعُ الْاَنْهُر ج ۲ ص ۵۱۱)

《33》 जिस ने तौहीन की निय्यत से किसी आ़लिमे बरह़क़ का सह़ीह़ फ़तवा ज़मीन पर फेंका या 《34》 कहा : **शरीअ़त** क्या है ! दोनों चीज़ें **कुफ़्र** हैं।

(مِنَحُ الرَّوض ص ۴۷۲)

《35》 जिस ने कहा : "आ़लिम शोहर पर ला'नत हो" येह क़ौल **कुफ़्र** है क्यूं कि उस ने इल्म के वस्फ़ (या'नी इल्म) पर ला'नत की और **शरीअ़त** की तौहीन की।

(اَیضاً)

《36》 जो कहे : उ़लमा जो इल्म सिखाते हैं मह़ज़ क़िस्से कहानियां हैं या 《37》 ख़्वाहिशात हैं या मह़ज़ धोका हैं या 《38》 कहा : मैं ह़ीलों के इल्म का मुन्किर हूं। येह तमाम **कुफ़्रिय्या कलिमात** हैं।

(عالمگیری ج ۲ ص ۲۷۰)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

आ़लिम व इ़ल्मे दीन की तौहीन के बारे में सुवाल जवाब

सुवाल : "मैं इ़ल्मे दीन क्यूं ह़ासिल करूं !" कहना कैसा है ?

जवाब : इ़ल्मे दीन को घटिया जानते हुए ऐसा कहना **कुफ़्र** है। ह़ज़रते **मुल्ला अ़ली क़ारी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : अगर किसी ने कहा : "मैं क्यूं इ़ल्म सीखूं !" येह **कुफ़्रिय्या क़ौल** है जब कि कहने वाले ने इ़ल्म को ह़क़ीर समझा या उस ने ए'तिक़ाद किया कि इसे इ़ल्म की कोई ह़ाजत नहीं। (مِنَحُ الرَّوض ص٤٧٢) यहां "इ़ल्म" से मुराद **इ़ल्मे दीन** है। जो लोग इ़ल्मे दीन को अहम्मिय्यत नहीं देते उन के लिये इस में इ़ब्रत ही इ़ब्रत है।

कौन कौन से मसाइल किस किस पर सीखना फ़र्ज़ है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अफ़्सोस ! आज कल सिर्फ़ों सिर्फ़ दुन्यावी उ़लूम ही की त़रफ़ हमारी अक्सरिय्यत का रुज्ह़ान है इ़ल्मे दीन की त़रफ़ बहुत ही कम मैलान है। **ह़दीसे पाक** में है। طَلَبُ العِلْمِ فَرِيضَةٌ عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ या'नी इ़ल्म का त़लब करना हर मुसल्मान मर्द (व औ़रत) पर फ़र्ज़ है। (سُنَن ابن ماجه ج١ ص ١٤٦ حديث ٢٢٤) इस ह़दीसे पाक के तह़त मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत,

मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن ने जो कुछ फ़रमाया उस का आसान लफ़्ज़ों में मुख़्तसरन ख़ुलासा अ़र्ज़ करने की कोशिश करता हूं। सब में अव्वलीन व अहम तरीन फ़र्ज़ येह है कि **बुन्यादी अ़क़ाइद** का इल्म ह़ासिल करे जिस से आदमी सह़ीह़ुल अ़क़ीदा सुन्नी बनता है और जिन के इन्कार व मुख़ालफ़त से **काफ़िर** या **गुमराह** हो जाता है। इस के बा'द मसाइले **नमाज़** या'नी इस के फ़राइज़ व शराइत़ व मुफ़्सिदात (नमाज़ तोड़ने वाली चीज़ें) सीखे ताकि नमाज़ सह़ीह़ तौर पर अदा कर सके। फिर जब **रमज़ानुल मुबारक** की तशरीफ़ आवरी हो तो रोज़ों के मसाइल, मालिके निसाबे नामी (या'नी ह़क़ीक़तन या ह़ुक्मन बढ़ने वाले माल के निसाब का मालिक) हो जाए तो **ज़कात** के मसाइल, साह़िबे इस्तित़ाअ़त हो तो मसाइले **ह़ज, निकाह़** करना चाहे तो इस के ज़रूरी मसाइल, **ताजिर** हो तो ख़रीदो फ़रोख़्त के मसाइल, **मुज़ारेअ़** या'नी काश्त कार (और ज़मीन दार) पर खेतीबाड़ी के मसाइल, **मुलाज़िम** बनने और मुलाज़िम रखने वाले पर इजारे के मसाइल। وَعَلٰی ھٰذَاالْقِیاس (या'नी और इसी पर क़ियास करते हुए) **हर मुसल्मान आ़क़िल व बालिग़ मर्द व औ़रत पर उस की मौजूदा ह़ालत के मुत़ाबिक़ मस्अले सीखना फ़र्ज़े ऐ़न है।** इसी त़रह़ हर एक के लिये मसाइले **ह़लाल**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ़ और रोजे़ जुमुआ़ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

व **ह़राम** भी सीखना **फ़र्ज़** है। नीज़ **मसाइले क़ल्ब** (बाति़नी मसाइल) या'नी फ़राइजे़ क़ल्बिय्या (बाति़नी फ़राइज़) मसलन **आ़जिज़ी** व **इख़्लास** और **तवक्कुल** वगै़रहा और इन को ह़ासिल करने का त़रीक़ा और **बाति़नी गुनाह** मसलन **तकब्बुर, रियाकारी, ह़सद** वगै़रहा और **इन का इलाज** सीखना हर मुसल्मान पर अहम फ़राइज़ से है।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. 23, स. 623, 624)

"ईद का चांद निकालना तो मौलवियों का काम है" कहना कैसा ?

सुवाल : बा'ज़ लोग कहते हैं : "रमज़ानुल मुबारक या **ईद का चांद** निकालना तो मुल्ला मौलवियों का काम है।" क्या ऐसा कहना जाइज़ है ?

जवाब : इस जुम्ले में **उ़लमा की तौहीन** का पहलू भी है अगर वाक़ेई तौहीन के तौ़र पर कहा तो **कुफ़्र** है।

उ़लमा की तौहीन के ह़यासोज़ अन्दाज़

आज कल बा'ज़ लोग बात बात पर **उ़लमाए किराम** के बारे में तौहीन आमेज़ कलिमात बक दिया करते हैं, मसलन कहते हैं : भई ज़रा बच कर रहना "अ़ल्लामा साहि़ब" हैं, उ़लमा लालची होते हैं, हम से जलते हैं, हमारी वज्ह से अब इन का कोई भाव नहीं पूछता, छोड़ो छोड़ो येह तो **मौलवी** है। (مَعَاذَاللّٰه आ़लिमों

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

को बा'ज़ लोग ह़क़ारत से कह देते हैं) येह मुल्ला लोग। उ़लमा ने (مَعَاذَاللّٰه) सुन्निय्यत का कोई काम नहीं किया। (बा'ज़ अवक़ात मुबल्लिग़ का बयान सुन कर ना पसन्दीदगी का इज़्हार करते हुए مَعَاذَاللّٰه कह दिया जाता है) **फुलां का अन्दाज़े बयान तो मौलवियों वाला है** वग़ैरा वग़ैरा।

आ़लिम की तौहीन कब कुफ़्र है और कब नहीं

आ़लिम की तौहीन की तीन सूरतें और इन के बारे में हुक्मे शरई बयान करते हुए मेरे **आक़ा आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 21 सफ़ह़ा 129 पर फ़रमाते हैं : ﴾1﴿ अगर आ़लिमे (दीन) को इस लिये बुरा कहता है कि वोह "आ़लिम" है जब तो **सरीह़ काफ़िर** है और ﴾2﴿ अगर ब वज्हे इ़ल्म उस की ता'ज़ीम फ़र्ज़ जानता है मगर अपनी किसी दुन्यवी ख़ुसूमत (या'नी दुश्मनी) के बाइ़स बुरा कहता है, गाली देता (है और) तह़क़ीर करता है तो सख़्त फ़ासिक़ फ़ाजिर है और ﴾3﴿ अगर बे सबब (या'नी बिला वज्ह) रन्ज (बुग़्ज़) रखता है तो مَرِيْضُ الْقَلْبِ وَ خَبِيْثُ الْبَاطِن (या'नी दिल का मरीज़ और नापाक बात़िन वाला) है और उस (या'नी ख़्वाह म ख़्वाह बुग़्ज़ रखने वाले) के **कुफ़्र** का अन्देशा है।

"ख़ुलासा" में है : مَــنْ اَبْــغَـضَ عَـالِماً مِّنْ غَيْرِ سَبَبٍ ظَاهِرٍ خِيفَ عَلَيْهِ الْكُفْر या'नी जो बिला किसी ज़ाहिरी वज्ह के आ़लिमे दीन से बुग़्ज़ रखे उस पर **कुफ़्र** का ख़ौफ़ है।

(خُلاصَةُ الفتاوٰی ج ٤ ص ٣٨٨)

आ़लिमे बे अ़मल की तौहीन

सुवाल : क्या आ़लिमे बे अ़मल की तौहीन भी **कुफ़्र** है ?

जवाब : ब सबबे इ़ल्मे दीन आ़लिमे बे अ़मल की **तौहीन** करना भी **कुफ़्र** है। **आ़लिमे बे अ़मल** भी इ़ल्मे दीन की वज्ह से जाहिल इ़बादत गुज़ार से ब दरजहा अफ़्ज़ल व बेहतर है। मेरे **आक़ा आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : और क़ुरआन शरीफ़ इन्हें (या'नी उ़लमाए ह़क़ को) मुत़्लक़न **वारिस** बता रहा है, ह़त्ता कि इन (में) के बे अ़मल (आ़लिम) को भी या'नी जब कि अ़क़ाइदे ह़क़ पर मुस्तक़ीम (या'नी सह़ीहुल अ़क़ीदा सुन्नी) और हिदायत की त़रफ़ दाई (बुलाने वाला) हो कि **गुमराह** (आ़लिम) **और गुमराही की त़रफ़ बुलाने वाला** (मौलवी) **वारिसे नबी नहीं नाइबे इब्लीस है।** وَالعِيَاذُ بِاللّٰهِ تَعَالٰى। हां, रब عَزَّوَجَلَّ ने तमाम **उ़लमाए शरीअ़त** को कहां **वारिस** फ़रमाया है ? यहां

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

तक कि इन के **बे अ़मल** को भी ! हां, वोह हम से पूछिये, **मौला** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

ثُمَّ اَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِیْنَ اصْطَفَیْنَا مِنْ عِبَادِنَاۚ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖۚ وَ مِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌۚ وَ مِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَیْرٰتِ بِاِذْنِ اللّٰهِؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِیْرُؕ ﴿۳۲﴾

(پ ۲۲ فاطر ۳۲)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर हम ने किताब का वारिस किया अपने चुने हुए बन्दों को तो इन में कोई अपनी जान पर ज़ुल्म करता है और इन में कोई मियाना चाल पर है और इन में कोई वोह है जो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के हुक्म से भलाइयों में सब्क़त ले गया येही बड़ा फ़ज़्ल है।

मज़्कूरा बाला आयते करीमा **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द **21** सफ़ह़ा **530** पर नक़्ल करने के बा'द मेरे **आक़ा आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن मजीद फ़रमाते हैं : **देखो बे अ़मल** (उ़लमा जो) **कि गुनाहों से अपनी जान पर ज़ुल्म कर रहे हैं उन्हें भी किताब का वारिस बताया और निरा** (या'नी फ़क़त़) **वारिस ही नहीं बल्कि अपने चुने हुए बन्दों में गिना।**

अह़ादीस में आया, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस आयत की **तफ़्सीर** में फ़रमाया : हम में का

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

जो सब्क़त (बरतरी) ले गया वोह तो सब्क़त ले ही गया और जो मुतवस्सित (या'नी दरमियाना) हाल का हुवा वोह भी नजात वाला है और जो अपनी जान पर ज़ालिम (या'नी गुनहगार) है उस की भी **मग़्फ़िरत** है। (تفسیر دُرِّمنثور ج۷ ص۲۵) आलिमे शरीअ़त अगर अपने इ़ल्म पर आ़मिल भी हो (जब तो वोह मिस्ले) **चांद** है (जो) कि आप (ख़ुद भी) ठन्डा और तुम्हें (भी) रोशनी दे वरना (आ़लिमे बे अ़मल मिस्ले) **शम्अ़** है कि ख़ुद (तो) जले मगर तुम्हें नफ़्अ़ दे। **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : उस शख़्स की मिसाल जो लोगों को ख़ैर (या'नी भलाई) की ता'लीम देता और अपने आप को भूल जाता है उस फ़तीले (या'नी चराग़ की बत्ती) की त़रह़ है कि लोगों को रोशनी देता है और ख़ुद जलता है।

(اَلتَّرْغِیب وَالتَّرْهِیب ج۱ ص۹۳ حدیث ۲۱۸)

बद मज़्हब आ़लिम की तौहीन

सुवाल : तो क्या बद मज़्हब आ़लिम की भी तौहीन **कुफ़्र** है ?

जवाब : बद मज़्हब आ़लिम, आ़लिमे दीन नहीं। सिर्फ़ आ़लिमे दीन की तौहीन **कुफ़्र** है। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 14

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

सफ़ह़ा 611 ता 612 पर फ़रमाते हैं : आ़लिमे दीन सुन्नी सह़ीहुल अ़क़ीदा दाइये इलल्लाह (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ बुलाने वाले) की तौहीन कुफ़्र है। **मज्मउ़ल अन्हर** में है : **उ़लमा** और **सादात** की तौहीन **कुफ़्र** है। (مجمع الانھر ج ۲ ص ۵۰۹) इसी में है : जो किसी आ़लिम को ह़क़ारत से "मौलविया" कहे वोह **काफ़िर** (اَیضاً)। मगर येह ऊपर बता दिया गया और वाजिबुल्लिह़ाज़ है कि **आ़लिम वोही है जो सुन्नी सह़ीहुल अ़क़ीदा हो, बद मज़्हबों के उ़लमा उ़लमाए दीन नहीं,** यूं तो हिन्दूओं में (भी) पंडित और नसारा (क्रिस्चेनों) में (भी) पादरी होते हैं और इब्लीस कितना बड़ा आ़लिम था जिसे मुअ़ल्लिमुल मलकूत (या'नी फ़िरिश्तों का उस्ताज़) कहा जाता है। قَالَ اللّٰہُ تعالٰی (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है) : اَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** ने उसे बा वस्फ़ इ़ल्म के गुमराह किया। (پ ۲۵ الجاثیہ ۲۳)

ऐसों की तौहीन **कुफ़्र** नहीं बल्कि ता ह़द्दे मक़्दूर **फ़र्ज़** है। **ह़दीस शरीफ़** में है नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : क्या फ़ाजिर के ज़िक्र से बचते हो, उस को लोग कब पहचानेंगे, फ़ाजिर का ज़िक्र उस चीज़ के साथ

करो जो उस में है, ताकि लोग उस से बचें।

(اَلسُّنَنُ الکُبری ج١٠ ص ٣٥٤ حدیث ٢٠٩١٤)

आ़लिम ही आ़लिम की तौहीन करे तो ?

सुवाल : अगर एक **आ़लिम** दूसरे **आ़लिम** को बुरा भला कहे तो क्या हुक्म है ?

जवाब : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : आ़लिमे दीन को बुरा कहना अगर उस के आ़लिमे दीन होने के सबब है तो **कुफ़्र** है और औ़रत निकाह़ से बाहर। **ख़्वाह बुरा कहने वाला ख़ुद आ़लिम हो या जाहिल,** और आ़लिम, सुन्निय्युल अ़क़ीदा की तौहीन जाहिल को जाइज़ नहीं अगर्चे उस (आ़लिमे बे अ़मल) के अ़मल कैसे ही हों। और बद मज़्हब व गुमराह, अगर्चे आ़लिम कहलाता हो उसे बुरा कहा जाएगा मगर उसी क़दर जितने का वोह मुस्तह़िक़ है, और फ़ोह़्श कलिमा (या'नी गन्दी गाली) से हमेशा इज्तिनाब (बचना) चाहिये। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 21, स. 294)

अ़वाम को उ़लमा से बद ज़न करना बहुत सख़्त गुनाह है

सुन्नी आ़लिम का सुन्नी आ़लिम की मुख़ालफ़त करने

के ह़वाले से हुक्मे मुमानअ़त बयान करते हुए सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं **: अफ़्सोस** कि इस ज़माने में जब कि गुमराही शाएअ़ हो रही है और बद मज़्हबी ज़ोर पर है ज़ैद जो एक सुन्नी आ़लिम है जैसा कि सुवाल में ज़ाहिर किया गया है, तअ़ज्जुब है कि उस के रुफ़क़ाए कार ख़ुद उ़लमाए अहले सुन्नत को सब्बो सख़ीफ़ (या'नी गाली और बेहूदा) अल्फ़ाज़ से याद कर के उ़लमा के ए'ज़ाज़ वक़ार को मिटाएं और ज़ैद ख़ामोश रहे बल्कि अपने त़र्ज़े अ़मल से इस पर रिज़ा मन्दी ज़ाहिर करे अगर वाक़ेई वोह सुन्नी आ़लिम है तो उस का या उस के रुफ़क़ा का येह फ़े'ल बिना बर ह़सद होगा, **अ़वाम को उ़लमा से बद ज़न करना बहुत सख़्त गुनाह है कि जब बद ज़न होंगे** (तो) **उन** (या'नी उ़लमा) **से बेज़ार होंगे और हलाकत में पड़ेंगे।** बिल जुम्ला ज़ैद का येह त़र्ज़े अ़मल बिल्कुल जाइज़ नहीं। जब उ़लमाए अहले सुन्नत का वक़ार जाता रहेगा और उन से बद ज़न्नी पैदा होगी तो ख़ुद ज़ैद जिस को सुन्नी आ़लिम बताया जाता है (वोह ख़ुद भी) इस से कब मह़फ़ूज़ रहेगा ! وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم ।

(फ़तावा अम्जदिय्या, जि. 4, स. 515)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

काश मैं दरख़्त होता !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ़लिमे दीन की शाने अ़ज़मत निशान में बे अदबी से बचना बहुत ज़रूरी है। ख़ुदा न ख़्वास्ता कोई ऐसी भूल हो गई जिस के सबब ईमान से हाथ धोना पड़ गया तो **ख़ुदा की क़सम** ! बहुत रुस्वाई होगी कि बरोज़े क़ियामत काफ़िरों को मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में झोंक दिया जाएगा जहां उन्हें हमेशा हमेशा अ़ज़ाब में रहना पड़ेगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें ज़बान की लग़्ज़िशों से भी बचाए और हमारे ईमान की ह़िफ़ाज़त फ़रमाए। आमीन। हमारे सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان क़ब्रो आख़िरत के मुआ़मले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से बहुत डरते थे, ग़लबए ख़ौफ़ के वक़्त इन ह़ज़रात की ज़बान से बसा अवक़ात इस त़रह़ के कलिमात अदा होते थे : काश ! हमें दुन्या में बत़ौरे इन्सान न भेजा जाता कि इन्सान बन कर दुन्या में आने के बाइ़स अब ख़ातिमा बिल ईमान, क़ब्र व क़ियामत के इम्तिह़ान वग़ैरा के कठिन मराह़िल दरपेश हैं। एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में डूब कर फ़रमाया : अगर तुम वोह जान लो जो मौत के बा'द होना है तो तुम पसन्दीदा

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

खाना पीना छोड़ दो, सायादार घरों में न रहो बल्कि वीरानों का रुख़ कर जाओ और तमाम उ़म्र आहो ज़ारी में बसर कर दो" इस के बा'द फ़रमाने लगे : काश ! मैं दरख़्त होता जिसे काट दिया जाता ।

(الزھد للامام احمد بن حنبل ص١٦٢، رقم ٧٤٠)

मैं बजाए इन्सां के कोई पौदा होता या
नख़्ल[1] बन के त़यबा के बाग़ में खड़ा होता

काश मुझे ज़ब्ह़ कर दिया जाता

इब्ने अ़साकिर ने "तारीख़े दिमश्क़" जिल्द 47 सफ़ह़ा 193 पर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से येह कलिमात नक़्ल किये हैं : **काश** ! मैं दुम्बा होता, मुझे किसी मेहमान के लिये ज़ब्ह़ कर दिया जाता, मुझे खाते और खिला देते ।

मुर्ग़ बन के त़यबा में ज़ब्ह़ हो गया होता
जां कनी[2] की तक्लीफ़ें ज़ब्ह़ से हैं बढ़ कर काश !
गिर्दे शम्अ़ फिर फिर कर काश ! जल गया होता
मर्ग़ज़ारे[3] त़यबा का कोई होता परवाना
काश ! ख़र[4] या ख़च्चर या घोड़ा बन कर आता और
मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने खूंटे से बांध कर रखा होता

मदीना

1 : खजूर का दरख़्त, आम दरख़्त 2 : नज़्अ़ का आ़लम, इन्सान की रूह़ निकलने का अ़मल, 3 : सब्ज़ा ज़ार 4 : गधा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा । (جمع الجوامع)

जाहिल को आ़लिम से बेहतर जानना कैसा ?

सुवाल : जाहिल को आ़लिम से बेहतर समझना कैसा ?

जवाब : अगर इल्मे दीन से नफ़रत के सबब जाहिल को आ़लिम से बेहतर समझता है तो येह **कुफ़्र** है । **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : इस त़रह कहना : "इल्म से जहालत बेहतर है या आ़लिम से जाहिल अच्छा होता है ।" **कुफ़्र** है । (مَجْمَعُ الْاَنْهُر ج٢ ص٥١١) जब कि इल्मे दीन की तौहीन मक़्सूद हो ।

त़ालिबे इल्मे दीन को कूंएं का मेंडक कहना

सुवाल : दीनी त़ालिबे इल्म या आ़लिमे दीन को ब नज़रे ह़क़ारत **कूंएं का मेंडक** कहना कैसा है ?

जवाब : कुफ़्र है ।

"मौलवी लोग क्या जानते हैं" कहना कैसा ?

सुवाल : एक शख़्स ने किसी बात पर ह़क़ारत के साथ कहा : **"मौलवी लोग क्या जानते हैं !"** उस का इस त़रह कहना कैसा ?

जवाब : कुफ़्र है । मेरे **आक़ा आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "मौलवी लोग क्या जानते हैं !" कहना **कुफ़्र** है (फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 244) जब कि उ़लमा की तह़क़ीर मक़्सूद हो ।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

"दीन पर अ़मल को मौलवियों ने मुश्किल बना दिया है" कहना कैसा ?

सुवाल : येह कहना कैसा है कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दीन को आसान उतारा था मगर मौलवियों ने मुश्किल बना दिया !"

जवाब : येह उ़लमा की तौहीन की वज्ह से **कलिमए कुफ़्र** है। क्यूं कि **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : اَلْاِسْتِخْفَافُ بِالْاَشْرَافِ وَالْعُلَمَاءِ كُفْرٌ. या'नी अशराफ़ (सादाते किराम) और उ़लमा की तह़क़ीर (इन्हें घटिया जानना) **कुफ़्र** है। (مَجْمَعُ الْاَنْهُر ج۲ ص۵۰۹)

सुन्नी आ़लिम के बयान की तह़क़ीर

सुवाल : कुरआनो ह़दीस की रोशनी में किये जाने वाले बद मज़्हबों के रद पर मुश्तमिल उ़लमाए अहले सुन्नत के बयान को बतौरे तह़क़ीर "हड़ाहूड़ी" कहना कैसा है ?

जवाब : **कुफ़्र** है। हां अगर सिर्फ़ अन्दाज़े बयान को ना मुनासिब कहना मक़्सूद हो तो **कुफ़्र** नहीं।

मौलवियों वाला अन्दाज़

सुवाल : सुन्नी आ़लिमे दीन की त़र्ज़ पर कुरआनो सुन्नत के

मुत़ाबिक़ किये जाने वाले किसी मुबल्लिग़ के बयान को ह़क़ारतन "मौलवियों वाला अन्दाज़" कहना कैसा ?

जवाब : कुफ़्र है। क्यूं कि इस में उ़लमाए ह़क़ की **तौहीन** है।

"आ़लिम सारे ज़ालिम" कहने का हुक्मे शरई

सुवाल : "आ़लिम सारे ज़ालिम" येह मक़ूला कैसा है ?

जवाब : मुत़्लक़न उ़लमाए ह़क़्क़ा के बारे में ऐसा जुम्ला कहना **कुफ़्र** है।

आ़लिमे दीन को ह़क़ारत से मुल्ला कहना

सुवाल : जो उ़लमाए किराम को तह़क़ीर की निय्यत से "मुल्ला मुल्ला" या "मुल्ला लोग" कहे उस के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब : अगर ब सबबे इल्मे दीन उ़लमाए किराम की तह़क़ीर की निय्यत से कहा तो **कलिमए कुफ़्र** है। चुनान्चे मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं : जिस ने (तौहीन की निय्यत से) **आ़लिम** को उ़वैलिम या अ़लवी (या'नी मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की औलाद) को उ़लैवी कहा उस ने **कुफ़्र** किया। (مِنَحُ الرَّوض ص ٤٧٢) उर्दू ख़्वां "उ़वैलिम" या "उ़लैवी" नहीं बोलते। अलबत्ता बा'ज़ अवक़ात बेबाकों की ज़बानों से **मौलवा, मुल्लड़** वग़ैरा अल्फ़ाज़ सुनना (सगे मदीना को) याद पड़ता है। बहर ह़ाल **आ़लिमे**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

दीन की ब सबबे इल्मे दीन तौहीन करना या अ़लवी साहिबान या सादाते किराम की शराफ़ते ह़सब नसब के सबब किसी क़िस्म का तौहीन आमेज़ लफ़्ज़ बोलना **कुफ़्र** है।

"मौलवी बनोगे तो भूके मरोगे" कहना

सुवाल : "दुन्यवी ता'लीम ह़ासिल करोगे तो ऐ़श करोगे, इल्मे दीन सीख कर मौलवी बनोगे तो भूके मरोगे" येह कहना कैसा ?

जवाब : इस जुम्ले में इल्मे दीन की तौहीन का पहलू नुमायां है इस लिये **कुफ़्र** है। क़ाइल पर **तौबा व तजदीदे ईमान** लाज़िम है और अगर इ़ल्म व उ़लमा की तौहीन ही मक़्सूद थी तो **क़त़ई कुफ़्र** है क़ाइल **काफ़िर व मुरतद** हो गया और उस का निकाह़ भी टूटा और पिछले नेक आ'माल भी ज़ाएअ़ हुए।

तौहीने उ़लमा के मुतअ़ल्लिक़ 10 पैरे

(1) जितने **मौलवी** हैं सब बद मआ़श हैं कहना **कुफ़्र** है जब कि ब सबबे इल्मे दीन, उ़लमाए किराम की तह़क़ीर की निय्यत से कहा हो।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा अम्जदिय्या, जि. 4, स. 454)

(2) येह कहना : "**आ़लिम** लोगों ने देस ख़राब कर दिया।" **कलिमए कुफ़्र** है।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 605)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

(3) येह कहना **कुफ़्र** है कि "मौलवियों ने दीन के टुकड़े टुकड़े कर दिये।"

(4) जो कहे : "इल्मे दीन, को क्या करूंगा ! जेब में रुपै होने चाहिएं।" कहने वाले पर हुक्मे **कुफ़्र** है।

(5) किसी ने **आ़लिम** से कहा : "जा और इल्मे दीन को किसी बरतन में संभाल कर रख।" येह **कुफ़्र** है।

(فتاوىٰ عالمگیری ج ۲ ص ۲۷۰-۲۷۱)

(6) जिस ने कहा : "उ़लमा जो बताते हैं उसे कौन कर सकता है !" येह क़ौल **कुफ़्र** है। क्यूं कि इस कलाम से लाज़िम आता है कि शरीअ़त में ऐसे अह़काम हैं जो त़ाक़त से बाहर हैं या उ़लमा ने अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर झूट बांधा है। مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ !

(مِنَحُ الرَّوض ص۴۷۰-۴۷۱)

(7) येह कहना : "सरीद का पियाला इल्मे दीन से बेहतर है।" **कलिमए कुफ़्र** है। (مِنَحُ الرَّوضِ ص۴۷۲)

(8) **आ़लिमे** दीन से उस के इल्मे दीन की वज्ह से बुग़्ज़ रखना **कुफ़्र** है या'नी इस वज्ह से कि वोह आ़लिमे दीन है। (ईमान की हिफ़ाज़त, स. 103)

(9) जो कहे : "फ़साद करना **आ़लिम** बनने से बेहतर है" ऐसे शख़्स पर हुक्मे **कुफ़्र** है।

(فتاوىٰ عالمگیری ج ۲ ص ۲۷۱)

﴾10﴿ **याद रहे!** सिर्फ़ **उ़लमाए अहले सुन्नत** ही की ता'ज़ीम की जाएगी। रहे बद मज़्हब उ़लमा, तो उन के साए से भी भागे कि उन की ता'ज़ीम **ह़राम,** उन का बयान सुनना उन की कुतुब का मुत़ालआ़ करना और उन की सोह़बत इख़्तियार करना **ह़राम** और ईमान के लिये ज़ह्‌रे हलाहल है।

अज़ान की तौहीन के बारे में सुवाल जवाब

सुवाल : अज़ान की **तौहीन** करना कैसा ?

जवाब : अज़ान शआ़इरे इस्लाम में से है। किसी भी शिआ़रे इस्लाम की तौहीन कुफ़्र है।

حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ का मज़ाक़ उड़ाना

सुवाल : अज़ान में حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ (या'नी आओ नमाज़ की त़रफ़) या حَیَّ عَلَی الْفَلَاح (या'नी आओ भलाई की त़रफ़) सुन कर मज़ाक़ में येह कहना कैसा कि **"आओ सिनेमा घर की त़रफ़ वरना टिकिटें ख़त्म हो जाएंगी!"**

जवाब : कुफ़्र है। क्यूं कि مَعَاذَاللّٰه येह अज़ान का मज़ाक़ उड़ाना हुवा। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत,

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن की ख़िदमते बा बरकत में **सुवाल** हुवा : जनाब का क्या इर्शाद है इस मस्अले में कि ज़ैद ने मुअज़्ज़िने मस्जिद की अज़ान के साथ तमस्ख़ुर (या'नी मज़ाक़) किया या'नी लफ़्ज़ حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ सुन कर यूं मुज़्हका (या'नी मज़ाक़) उड़ाया : (भय्या लठ चला) आया ज़ैद के लिये हुक्मे इरतिदाद व सुकूते निकाह़ साबित हुवा या नहीं ? और ज़ैद का निकाह़ टूटा या नहीं ? اِلٰخ ।

अल जवाब : अज़ान से इस्तिह्ज़ा (या'नी मज़ाक़ करना) ज़रूर **कुफ़्र** है अगर अज़ान ही से उस ने इस्तिह्ज़ा (या'नी मज़ाक़) किया तो बिला शुबा **काफ़िर** हो गया, उस की औ़रत उस के **निकाह़** से निकल गई, येह अगर फिर मुसल्मान हो और औ़रत उस से निकाह़ करे उस वक़्त वत़ी (या'नी हम बिस्तरी) ह़लाल होगी वरना ज़िना। और औ़रत अगर बिला इस्लाम व निकाह़ उस से कुर्बत पर राज़ी हो वोह भी ज़ानिया है। और अगर **अज़ान** से इस्तिह्ज़ा (या'नी मज़ाक़ उड़ाना) मक़्सूद न था बल्कि ख़ास उस मुअज़्ज़िन से ब ई वज्ह (या'नी इस वज्ह से) कि वोह ग़लत़ पढ़ता है इस्तिह्ज़ा (या'नी मज़ाक़ उड़ाया) किया तो इस ह़ालत में (न काफ़िर होगा न निकाह़ टूटेगा मगर) ज़ैद को तजदीदे

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा। (ابن عدی)

इस्लाम व तजदीदे निकाह़ का हुक्म दिया जाएगा।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 21, स. 215) وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم ।

अज़ान के मुतअ़ल्लिक़ कुफ़्रिय्या कलिमात की 8 मिसालें

﴾1﴿ जो **अज़ान** का मज़ाक़ उड़ाए वोह **काफ़िर** है।

(فتاوٰی قاضی خان ج٤ ص ٤٦٧)

﴾2﴿ **अज़ान** की तह़क़ीर करते हुए कहना कि "घन्टी की आवाज़ नमाज़ की इत्तिलाअ़ देने के लिये ज़ियादा अच्छी है" **कुफ़्र** है।

﴾3﴿ जो **अज़ान** देने वाले को **अज़ान** देने पर कहे : "तूने झूट बोला" ऐसा शख़्स **काफ़िर** हो गया।

(फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, जि. 4, स. 467)

﴾4﴿ जिस ने किसी मुअज़्ज़िन के बारे में **अज़ान** के मज़ाक़ के तौर पर कहा : येह कौन मह़रूम है जो अज़ान कह रहा है? या ﴾5﴿ **अज़ान** के बारे में कहा : ग़ैर मा'रूफ़ सी आवाज़ है या कहा : ﴾6﴿ अज्नबियों की आवाज़ है, येह तमाम अक़्वाल **कुफ़्र** हैं। या'नी जब कि बतौरे तह़क़ीर (ह़क़ारत) कहे। (مِنَحُ الرَّوض الْاَزہَر للقاری ص ٤٩٥)

﴾7﴿ एक ने **अज़ान** कही दूसरा मज़ाक़ उड़ाने के लिये दोबारा **अज़ान** कहे तो उस पर हुक्मे **कुफ़्र** है।

(مَجْمَعُ الْاَنْھُر ج٢ ص٥٠٩)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

8 **अज़ान** सुन कर येह कहना : क्या शोर मचा रखा है ! अगर येह क़ौल ख़ुद अज़ान को ना पसन्द करने की वज्ह से कहा हो तो **कुफ़्र** है। (عالمگیری ج۲ ص۲۶۹)

नमाज़ की तौहीन के बारे में सुवाल जवाब

बे वुज़ू नमाज़ पढ़ना कैसा ?

सुवाल : जान बूझ कर **बे वुज़ू नमाज़** पढ़ना कैसा है ?

जवाब : बिला उ़ज़्र जान बूझ कर **बिग़ैर वुज़ू** के **नमाज़** पढ़ना **कुफ़्र** है। जब कि इसे जाइज़ समझे या इस्तिहज़ाअन (या'नी मज़ाक़ उड़ाते हुए) येह फ़े'ल करे।

(مِنَحُ الرَّوض الْاَزْهَر للقاری ص٤٦٨)

"नमाज़ की वज्ह से मुसीबतें आती हैं" कहना कैसा ?

सुवाल : किसी ने नमाज़ी से कहा : "तू **नमाज़** पढ़ता है इस लिये तुझ पर मुसीबतें आती हैं अब तू ही भुगत।" येह क़ौल कैसा है ?

जवाब : ऐसा कहना **कुफ़्र** है। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो नमाज़ियों, रोज़ादारों पर उन के **नमाज़**, रोज़े की वज्ह से ता'नो तश्नीअ़ करे वोह **काफ़िर** है।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 356)

कुत्ते की त़रफ़ से अ़मली नसीह़त

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नमाज़ की वज्ह से मुसीबतें आती नहीं दूर हो जाती हैं। अगर कभी कोई मुसीबत आ भी जाए तो नमाज़ को उस का सबब क़रार नहीं दिया जा सकता कि बे नमाज़ियों पर भी तो सख़्त सख़्त मुसीबतें आती हैं। जो मुसीबत से घबरा कर शैत़ान के बहकावे में आ कर बग़ावत पर आमादा हो जाता है वोह कुत्ते से भी गया गुज़रा है। **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : ख़्वाजा ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : तुम्हारा पाला हुवा कुत्ता तुम्हारे हाथ से सो बार मार खाए फिर तुम उसे टुकड़ा दिखाओ तो दुम हिलाता (हुवा) आ जाता है, येह सिफ़त है ख़ाशिईन (रब से डरने वालों) की। ऐ बन्दे ! अगर तुझ पर रब हज़ार बार सख़्ती (आज़्माइश) करे मगर तू حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ की आवाज़ पर दौड़ा हुवा मस्जिद में आ जा। (तफ़्सीरे नईमी, जि. 9, स. 230)

मालिक दा दर नीं छडते पावें मारे सो सो जुत्ते
उठ बुल्हिया चल यार मना ले नईं ते बाज़ी ले गए कुत्ते

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़हा करूं (या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشکوال)

नमाज़ को "टक्करें मारना" कहना कैसा ?

सुवाल : नमाज़ के लिये मस्जिद की त़रफ़ जाते हुए कहा : ज़रा टक्करें मार कर आता हूं। क्या हुक्म है ?

जवाब : नमाज़ के लिये जाते हुए येह कहना कि "टक्करें मार कर आता हूं" अगर नमाज़ की तौहीन के त़ौर पर है तो यक़ीनन **कुफ़्र** है। हां अगर उस ने इन्किसारन अपनी नमाज़ के लिये येह अल्फ़ाज़ कहे तो **कुफ़्र** नहीं होगा।

नमाज़ को बोझ समझना

सुवाल : नमाज़ को बोझ तसव्वुर करना कैसा है ?

जवाब : नमाज़ को ना पसन्द समझते हुए बोझ तसव्वुर करना **कुफ़्र** है। **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : जो शख़्स **फ़र्ज़ नमाज़** को ना पसन्द करे वोह **काफ़िर** है। (مِنَحُ الرَّوْض ص٤٦٦). मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : रमज़ान ख़ुसूसन गर्मियों के रोज़े, **नमाज़** ख़ुसूसन जाड़ों (या'नी सर्दियों) में सुब्ह़ व इशा की नफ़्से अम्मारा पर शाक़ (दुश्वार) होती है, इस से **काफ़िर** नहीं होता जब कि दिल से अह़काम को ह़क़ व नाफ़ेअ़ (नफ़्अ़ बख़्श) जानता है।

हां अगर दिल से (या'नी ज़बान से कहे या न कहे सिर्फ़ दिल में भी अगर) **नमाज़** को बेकार और **रोज़े** को मुफ़्त का फ़ाक़ा जाने तो ज़रूर **काफ़िर** है।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 365)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **नमाज़** व अह्कामे शरीअ़त के मुआ़मले में ज़बान और दिल को बहुत क़ाबू में रखने की ज़रूरत है कहीं ऐसा न हो कि मा'मूली सी लग़्ज़िश हमेशा के लिये जहन्नम में पहुंचा दे।

"आप लोग अल्लाह का पेट भरें" कहना कैसा ?

सुवाल : एक मुक़र्रिर ने नमाज़ की तरग़ीब दिलाते हुए कहा : **"अगर आप लोग अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **का पेट भरेंगे तो अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **आप का पेट भरेगा।"** जब उस को इस जुम्ले की त़रफ़ तवज्जोह दिलाई गई तो उस ने कहा : "**अल्लाह** का पेट भरने से मुराद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करना" है। उस मुक़र्रिर के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब : येह जुम्ला **कुफ़्रिय्या** है। "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **का पेट भरना**" के मा'ना "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत" करना जो उस ने बताए येह भी सरासर ग़लत़ हैं। जो आ़लिम न हो उसे बयान करने की शरअ़न इजाज़त

नहीं। उस को चाहिये कि उ़लमाए अहले सुन्नत की किताबों से ज़रूरतन फ़ोटो कॉपियां करवा कर अपनी डायरी में चस्पां कर ले और देख देख कर बयान सुनाए। पढ़ कर सुनाते हुए भी अपनी त़रफ़ से अगर "चूंकि चुनान्चे" करता रहा या'नी ख़ुलासा करने बैठ गया तो ख़त़रा है कि क्या का क्या बोल जाए ! लिहाज़ा अपने आप को गुनाह से बचाना और सवाब कमाना चाहता है तो उ़लमाए किराम ने जो लिखा है सिर्फ़ वोही पढ़ दे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम सब का ईमान सलामत रखे। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالیٰ علیه واٰله وسلَّم

"कौन से गुनाह किये जिन्हें बख़्शवाने के लिये नमाज़ पढ़ें !" कहना

सुवाल : नमाज़ की दा'वत देने पर किसी ने कहा : "हम ने कौन से गुनाह किये हैं जिन को बख़्शवाने के लिये नमाज़ पढ़ें !" इस त़रह़ के जुम्ले कहना कैसा है ?

जवाब : मज़्कूरा जुम्ले में **नमाज़** की तौहीन और इस की फ़र्ज़िय्यत का इन्कार पाया जा रहा है और येह **कुफ़्र** है।

"आमीन" का मज़ाक़ उड़ाना

सुवाल : बा जमाअ़त नमाज़ में शवाफ़ेअ़ या ह़नाबिला मुक़्तदियों ने **सूरतुल फ़ातिह़ा** के इख़्तिताम पर **आमीन** बिल

जह्र (या'नी बुलन्द आवाज़ से आमीन) कही। येह सुन कर अगर किसी ने मज़ाक़ उड़ाते हुए आवाज़ को खींच कर "अम.....मी" कहा, तो उस के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब : अगर مَعَاذَاللهعَزَّوَجَلَّ **आमीन** का मज़ाक़ उड़ाना मक़्सूद हो तो **कुफ़्र** है।

क़िब्ला रू थूकना

सुवाल : अगर किसी ने **का'बा शरीफ़ की त़रफ़ थूक दिया,** उस के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब : अगर ख़ानए का'बा की तौहीन मक़्सूद हो तो ऐसा शख़्स काफ़िर व मुरतद हो गया लेकिन येह किसी मुसल्मान से मुतसव्वर नहीं (या'नी मुसल्मान के बारे में ऐसा गुमान नहीं किया जा सकता) और अगर तह़क़ीर की निय्यत न हो तो **काफ़िर** न होगा मगर फिर भी **क़िब्ला रू थूकने** से बचना चाहिये। इस ज़िम्न में एक **सबक़ आमोज़ ह़िकायत** मुलाह़ज़ा फ़रमाइये। चुनान्चे

क़िब्ला की त़रफ़ थूकने वाले की ह़िकायत

मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू यज़ीद बिस्त़ामी**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक क़ीरात् अज्र लिखता है और क़ीरात् उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

رَحِمَھُمَا اللّٰہ تعالٰی ने अमी बिस्तामी के वालिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : चलो उस शख़्स को देखें जिस ने अपने आप को बनामे विलायत मश्हूर किया है। वोह शख़्स मर्जए नास व मश्हूरे ज़ोह्द था, (या'नी अ़क़ीदत मन्दों का उस के पास हुजूम रहता था और दुन्या से बे रग़्बती में उस की शोहरत थी) जब वहां तशरीफ़ ले गए इत्तिफ़ाक़न **उस ने क़िब्ले की त़रफ़ थूका**, ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू यज़ीद बिस्त़ामी** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़ौरन वापस आए और उस से सलाम अ़लैक न की और फ़रमाया : येह शख़्स **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आदाब से एक अदब पर तो अमीन है नहीं, जिस चीज़ का इद्दिआ़ (या'नी दा'वा करना) रखता है उस पर क्या अमीन होगा। (الرِّسالۃُ القُشَیرِیّہ ص ۳۸, फ़तावा रज़विय्या, जि. 21, स. 539) और दूसरी रिवायत में है, **फ़रमाया :** येह शख़्स शरीअ़त के एक अदब पर तो अमीन है नहीं असरारे इलाहिय्यह (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के राज़ों) पर क्यूंकर अमीन होगा ! (ऐज़न, स. 292, ऐज़न, स. 540) ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू यज़ीद बिस्त़ामी** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : अगर तुम किसी शख़्स को ऐसी करामत दिया गया भी देखो कि हवा पर चार ज़ानू बैठ सकता है तब भी उस से फ़रेब (धोका) न खाना जब तक कि फ़र्ज़ व वाजिब, मक्रूह व ह़राम और मुह़ाफ़ज़ते ह़ुदूद व

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

आदाबे शरीअ़त में उस का ह़ाल न देख लो।

(ऐज़न, स. 38, ऐज़न, स. 540)

क़िब्ला रू थूकने वाला पेश इमाम

रसूले करीम, रऊफुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم ने एक शख़्स को देखा कि उस ने क़िब्ले की त़रफ़ मुंह कर के थूका है तो **आप** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : لَا يُصَلِّىْ لَكُمْ कि येह तुम्हारी जमाअ़त न कराए। उस ने फिर जमाअ़त कराने का इरादा किया तो लोगों ने उस को मन्अ़ किया और उस को ख़बर दी कि **रसूले करीम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तुम्हारे पीछे नमाज़ पढ़ने से मन्अ़ फ़रमाया है। फिर **हुज़ूर** सरापा नूर, फ़ैज़ गन्जूर, शाहे ग़यूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में येह वाक़िआ़ पेश हुवा। तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हां (मैं ने मन्अ़ किया है) اِنَّكَ اٰذَيْتَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ कि तूने (क़िब्ले की त़रफ़ थूक कर) **अल्लाह** और उस के **रसूल** को ईज़ा दी।

(سُنَنُ اَبِی دَاوٗد ج۱ ص ۲۰۳ حديث ٤٨١)

का'बे के का'बे की बे अदबी करने वाला क्यूंकर इमाम हो सकता है !

ह़ज़रते फ़क़ीहे आ'ज़म, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत

अ़ल्लामा मौलाना अबू यूसुफ़ मुह़म्मद शरीफ़ कोट्लवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی मज़्कूरा बाला ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : यहां से मा'लूम कर लेना चाहिये कि दीन में अदब की किस क़दर ज़रूरत है। और **सरवरे आ़लम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **क़िब्ला शरीफ़** की बे अदबी करने के सबब मन्अ़ फ़रमाया कि येह शख़्स **नमाज़** न पढ़ाए। तो जो शख़्स सर से पाउं तक बे अदब हो, **सरवरे आ़लम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़क़ में गुस्ताख़ हो, अइम्मए दीन की बे अदबी करता हो, **ह़ज़राते मशाइख़** पर त़रह़ त़रह़ से तमस्ख़ुर करे। क्या ऐसा शख़्स इमाम बनने का शरअ़न ह़क़ रखता है? हरगिज़ नहीं। (अख़्लाकुस्सालिह़ीन, स. 13)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان मज़्कूरा ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि येह इमाम सह़ाबी थे मगर इत्तिफ़ाक़न उन से येह ख़त़ा हो गई फिर तौबा कर ली क्यूं कि कोई सह़ाबी फ़ासिक़ नहीं, जब इत्तिफ़ाक़न ख़त़ा पर इमामत से मा'ज़ूल कर दिया गया तो जान बूझ कर बे अदबी करने वाला ज़रूर मा'ज़ूल कर दिया जाएगा। (मिरआत, जि. 1, स. 459)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ बके जाने वाले कुफ़्रिय्यात की 52 मिसालें

﴾1﴿ जिस ने कहा : "**अल्लाह** ने मेरा माल कम किया, अब मैं भी उस के ह़क़ में कमी करूंगा और **नमाज़** न पढ़ूंगा।" ऐसा कहना **कुफ़्र** है। (مِنَحُ الرَّوض ص٤٦٤)

﴾2﴿ किसी से कहा गया कि **नमाज़** पढ़ ले। उस ने जवाब में कहा : "मैं पागल हूं जो **नमाज़** पढ़ूं और अपने ऊपर काम बढ़ाऊं !" ऐसा जवाब देना **कुफ़्र** है।

﴾3﴿ किसी ने कहा नमाज़ पढ़ो। उस ने जवाब दिया : "अ़क़्ल मन्द को ऐसे काम में न पड़ना चाहिये जिस को आख़िर तक निबाह न सके।" या येह कहा : ﴾4﴿ "मेरे वासिते और लोग कर लेते हैं।" येह दोनों **कलिमाते कुफ़्र** हैं। (فتاوٰی عالمگیری ج٢ ص ٢٦٨)

﴾5﴿ किसी ने कहा : "**नमाज़** पढ़ने से मुझे कोई सरफ़राज़ी नहीं मिल जाती" कहने वाले पर हुक्मे **कुफ़्र** है।

﴾6﴿ जो सिर्फ़ रमज़ानुल मुबारक में **नमाज़** पढ़ता है और इस के इ़लावा नहीं पढ़ता और कहता है : "येही बहुत है क्यूं कि हर फ़र्ज़ **नमाज़** सत्तर गुना है।" ऐसा कहना **कुफ़्र** है। (مِنَحُ الرَّوض ص٤٦٥)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

﴾7﴿ पीर से कहा गया : **नमाज़** पढ़ो। उस ने कहा : "मेरे मुरीद पढ़ रहे हैं येही काफ़ी है।" येह **कलिमए कुफ़्र** है।

﴾8﴿ किसी से कहा गया : **नमाज़** पढ़ो। उस ने कहा : "नमाज़ तो ग़रीबों के लिये है हमारे लिये नहीं।" येह **कलिमए कुफ़्र** है।

﴾9﴿ किसी से कहा गया : **नमाज़** पढ़ो। उस ने जवाबन कहा : "अगर जन्नत में जाना होगा तो जन्नत में चले जाएंगे और अगर जहन्नम में जाना होगा तो जहन्नम में चले जाएंगे, **नमाज़** से क्या होता है !" ऐसा कहना **कुफ़्र** है।

﴾10﴿ किसी से कहा गया : "नमाज़ पढ़ो।" उस ने कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमें क्या दिया है जो नमाज़ पढ़ें !" येह **कलिमए कुफ़्र** है।

﴾11﴿ **नमाज़** की फ़र्ज़िय्यत और इन की रक्अ़तों की ता'दाद पर ए'तिराज़ करना **कुफ़्र** है।

﴾12﴿ **नमाज़** "पढ़ने" का हुक्म कहीं नहीं, "क़ाइम" करने का हुक्म है वोह हम ने दिल में क़ाइम की हुई है। ऐसा कहना **कुफ़्र** है।

﴾13﴿ अगर किसी ने येह कहा : "हम से तो क्रिस्चेन अच्छे हैं कि हफ़्ते में एक मरतबा पढ़ते हैं, हमें तो रोज़ाना पांच बार नमाज़ पढ़नी पड़ती है।" येह **कलिमए कुफ़्र** है।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

﴾14﴿ किसी ने कहा : "एक दो नमाज़ होती तो बन्दा पढ़ भी लेता येह पांच कौन पढ़े !" येह **कलिमए कुफ़्र** है।

﴾15﴿ "मैं **नमाज़** नहीं पढ़ता, मेरे पीर ने **नमाज़ें** बख़्शवा दी हैं" ऐसा कहना **कुफ़्र** है।

﴾16﴿ नमाज़ में क़िब्ले की सम्त के ज़रूरी होने का मुत़्लक़न इन्कार करना **कुफ़्र** है।

﴾17﴿ **नमाज़** दिल की होती है ज़ाहिरी **नमाज़** में क्या रखा है ! येह कहना **कुफ़्र** है।

﴾18﴿ "हम फ़क़ीर लोग हैं हम पर **नमाज़** मुआफ़ है।" ऐसा कहना **कुफ़्र** है।

﴾19﴿ ज़ाहिरी **नमाज़ रोज़ा** कुछ नहीं दिल पाक होना चाहिये। येह **कुफ़्र** है।

﴾20﴿ "लोग हमारे लिये ही **नमाज़** पढ़ते हैं" कहना **कुफ़्र** है क्यूं कि कहने वाले ने **नमाज़** को फ़र्ज़े किफ़ाया ए'तिक़ाद किया या इस का मज़ाक़ उड़ाने का इरादा किया। (مِنَحُ الرَّوض ص٤٦٦)

﴾21﴿ "मैं "सय्यिद" हूं **नमाज़** वग़ैरा तो तुम्हारे लिये है।" येह **कलिमए कुफ़्र** है।

﴾22﴿ बाप से **नमाज़** पढ़ने का कहा गया, उस ने कहा : मेरे लड़के पढ़ते हैं येह हमारे लिये काफ़ी है। येह **कलिमए कुफ़्र** है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

《23》 जिस ने कहा : "**नमाज़** वोही पढ़े जिस के बीवी बच्चे हों।" उस ने **कुफ़्र** किया।

《24》 जिस ने कहा : कितनी ज़ियादा **नमाज़ें** हैं ! मेरा तो दिल उक्ता गया है या मैं तंग आ चुका हूं। ऐसा कहना **कुफ़्र** है क्यूं कि कहने वाले ने **नमाज़** पर **ए'तिराज़** किया। (مِنَحُ الرَّوض ص٤٦٦)

《25》 कोई शख़्स थका हुवा था और **नमाज़** का वक़्त आ गया तो उस ने **नमाज़** के बारे में कहा : "एक तो येह मुसीबत जान नहीं छोड़ती" उस का येह कहना **कुफ़्र** है।

《26》 "इतनी **नमाज़ें** पढ़ने पर कौन क़ादिर है ?" कहना **कुफ़्र** है क्यूं कि इस ने येह ए'तिक़ाद किया कि **अल्लाह** तआला ने इस की ताक़त से ज़ियादा इस पर **बोझ** डाला। (اَیضاً)

《27》 किसी ने दूसरे से **नमाज़** पढ़ने का कहा। उस ने जवाब में कहा : "**नमाज़** से तिजारत में कोई नफ़्अ नहीं होता।" येह **कलिमए कुफ़्र** है। (اَیضاً ص٤٦٧)

《28》 येह कहना : "**नमाज़** कोई कारोबार थोड़ी है जो करूं ! मैं तो कारोबारी आदमी हूं।" येह **कलिमए कुफ़्र** है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

﴾29﴿ अगर किसी ने कहा : "**एक** मरतबा **नमाज़** पढ़ी थी तो बकरी मर गई, अब कुछ और न हो जाए !" उस ने **कुफ़्र** किया।

﴾30﴿ "**नमाज़** पढ़ना और न पढ़ना दोनों बराबर है।" कहना **कुफ़्र** है। (عالمگیری ج۲ ص ۲٦٨)

﴾31﴿ जो कहे : "कितना अच्छा है वोह आदमी जो **नमाज़** नहीं पढ़ता।" इस कहने वाले पर **हुक्मे कुफ़्र** है। (اَیضاً)

﴾32﴿ "**नमाज़** न पढ़ना बहुत अच्छा है।" कहना **कुफ़्र** है। (اَیضاً)

﴾33﴿ जो कहे : **नमाज़** मुझे मुवाफ़िक़ नहीं बैठती या ﴾34﴿ हलाल मुझे मुवाफ़िक़ नहीं रहता या कहा : ﴾35﴿ नमाज़ को एक त़रफ़ रखो। येह तीनों **कलिमाते कुफ़्र** हैं। (اَیضاًص ۲٧٠)

﴾36﴿ "हम को कलिमा व **नमाज़** की ज़रूरत नहीं" येह **कलिमए कुफ़्र** है।

﴾37﴿ नमाज़ के मा'रूफ़ मा'ना का इन्कार करना **कुफ़्र** है। मसलन येह कहना कि नमाज़ से मुराद मह़ज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को याद करना है। (ईमान की ह़िफ़ाज़त, स. 88)

﴾38﴿ "बहुत **नमाज़** पढ़ ली क्या फ़ाएदा हुवा !" कहना **कलिमए कुफ़्र** है। (عالمگیری ج۲ ص ۲٦٨)

﴾39﴿ अगर किसी से कहा गया : नमाज़ पढ़ तेरी हाजतें पूरी होंगी। उस ने कहा : "बहुत **नमाज़ें** पढ़ी हैं कोई हाजत पूरी नहीं होती।" अगर येह क़ौल **नमाज़** की तह़क़ीर और इस पर त़न्ज़ की वज्ह से है तो **कुफ़्र** है। (اَیضاً)

﴾40﴿ जो शख़्स येह कहे : "मैं सिर्फ़ जन्नत ह़ासिल करने और दोज़ख़ से बचने के लिये इ़बादत करता हूं अगर येह न होता तो मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत न करता" ऐसे शख़्स पर हुक्मे **कुफ़्र** है। (مِنَحُ الرَّوض ص٤٦٥)

﴾41﴿ ग़ैरे ख़ुदा को इ़बादत की निय्यत से सज्दा करना **कुफ़्र** है। (عالمگیری ج ٢ ص ٢٨١) और ﴾42﴿ बुत को सज्दा करने वाला काफ़िर है।

﴾43﴿ जो शिफ़ा की निय्यत से ग़ैरे ख़ुदा की इ़बादत करे वोह **काफ़िर** है और ﴾44﴿ इसे जाइज़ समझने वाला भी **काफ़िर** है। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 363)

﴾45﴿ जो शख़्स कहे : "अगर **अल्लाह** तआ़ला मुझे दस **नमाज़ों** का हुक्म देता तो मैं **नमाज़** न पढ़ता" (مِنَحُ الرَّوض ص٤٦٥) या कहे : ﴾46﴿ "अगर फ़ुलां त़रफ़ क़िब्ला होता तो मैं **नमाज़** न पढ़ता" ऐसे शख़्स पर हुक्मे **कुफ़्र** है। (اَلْبَحْرُ الرَّائِق ج٥ ص ٢٠٤)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

﴾47﴿ जिस ने किसी इबादत गुज़ार से कहा : "बस कर कहीं जन्नत से आगे न गुज़र जाना" येह क़ौल **कुफ़्र** है क्यूं कि उस ने इबादत का मज़ाक़ उड़ाया। (مِنَحُ الرَّوض ص٤٧٤)

﴾48﴿ जान बूझ कर **ग़ैरे क़िब्ला** की त़रफ़ या ﴾49﴿ **बिग़ैर त़हारत** के **नमाज़** पढ़ना **कुफ़्र** है। जब कि इसे जाइज़ समझे या इस्तिह्ज़ाअन (या'नी मज़ाक़ उड़ाते हुए) येह फ़े'ल करे। (مِنَحُ الرَّوض ص٤٦٨)

﴾50﴿ ब वज्हे तह़क़ीर या ﴾51﴿ इस ज़ेहन से कि **अल्लाह** ने इस पर **नमाज़** फ़र्ज़ नहीं की या ﴾52﴿ इस नज़रिये से कि **नमाज़** फ़र्ज़ ही नहीं, जो शख़्स कहे : मैं **नमाज़** नहीं पढ़ता उस पर हुक्मे **कुफ़्र** है। (ایضاً ص٤٦٤)

रमज़ान की तौहीन के बारे में सुवाल जवाब

रोज़ए रमज़ान की फ़र्ज़िय्यत का इन्कार

सुवाल : जो रोज़ए रमज़ान की फ़र्ज़िय्यत का इन्कार करे वोह कैसा है ?

जवाब : काफ़िर है।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 356)

रोज़ादार को बुरा भला कहना कैसा ?

सुवाल : जो रमज़ानुल मुबारक के रोज़े रखने की वज्ह से किसी मुसल्मान को बुरा भला कहे उस के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब : ऐसे के बारे में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "जो रोज़ा रखने वाले पर रोज़ा रखने के सबब ता'नो तश्नीअ़ करे (या'नी बुरा भला कहे) वोह **काफ़िर** है।"

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 356)

"रोज़ा वोह रखे जिस के पास खाना न हो" कहना कैसा ?

सुवाल : वलीद एक बार रमज़ानुल मुबारक में कहने लगा : "रोज़ा तो वोह रखे जिस के पास खाने पीने को न हो !" क्या वलीद ने येह **कुफ़्र** नहीं बका ?

जवाब : ज़रूर **कुफ़्र** बका। इस क़ौले बदतर अज़ बौल में रोज़ए रमज़ानुल मुबारक की तह़क़ीर के साथ साथ इस की फ़र्ज़िय्यत का भी इन्कार पाया जा रहा है। सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह, अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **रोज़ए**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

रमज़ान नहीं रखता और कहता येह है कि **रोज़ा** वोह रखे जिसे खाना न मिले या कहता है : जब ख़ुदा ने खाने को दिया है तो भूके क्यूं मरें या इसी क़िस्म की और बातें जिन से **रोज़े** की हतक व तह़क़ीर हो कहना **कुफ़्र** है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 9, स. 183)

रमज़ान शरीफ़ को भारी महीना कहना

सुवाल : रमज़ानुल मुबारक की आमद पर इस त़रह़ कहना कैसा कि बहुत भारी महीना आ गया !

जवाब : फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : जो रमज़ानुल मुबारक की तौहीन की निय्यत से कहे : "बड़ा भारी महीना आ गया।" वोह **काफ़िर** है। (اَلْبَحْرُ الرَّائِق ج٥ ص ٢٠٦) हां अगर **रोज़ा** रखना उस पर मुश्किल है और इस वज्ह से येह कहता है और **रोज़े** की तौहीन उस का मक़्सद नहीं तो **कुफ़्र** नहीं। लेकिन इस त़रह़ कहना नहीं चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत से दिलतंग होना बुरा है।

रोज़े की ता'दाद से बेज़ारी का इज़्हार

सुवाल : रमज़ानुल मुबारक के रोज़ों की ता'दाद के बारे में येह कहना कैसा कि अब तो **रोज़े** रख रख कर मैं **बोर** हो गया हूं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو یعلی)

जवाब : इस जुम्ले में कुफ़्रिय्या पहलू मौजूद है। चुनान्चे **फ़तावा आलमगीरी** में है : जो **रोज़ए रमज़ान** के बारे में कहे : "कितने ज़ियादा हैं मेरा तो दिल उक्ता गया है।" येह क़ौल **कुफ़्र** है। (عالمگیری ج۲ ص ۲۷۰)

मुरतद्दीन के साथ सुलूक की झल्कियां

सुवाल : ज़ैदे बे क़ैद ने रमज़ानुल मुबारक की आमद पर कहा : **काफ़िर** होते तो बेहतर था कि येह **30 रोज़े** तो न रखने पड़ते ! येह सुन कर **बक्र** ने बका : हां भई ! **अल्लाह** पाक ने येह जो **30 रोज़े** बनाए हैं, पूरी क़ैद है, भूक प्यास ले कर आते हैं, बड़ा ज़ुल्म है, रमज़ान के रोज़े बड़े ज़ालिम हैं, लेकिन जो ज़ुल्म करता है थोड़े दिन रहता है। इन वाही तबाही कलिमात बकने वालों के बारे में क्या शरई अह़कामात हैं ?

जवाब : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن इसी त़रह़ के सुवाल के जवाब में इर्शाद फ़रमाते हैं : येह दोनों शख़्स यक़ीनन **काफ़िर मुरतद** हैं (और तमाम मुरतद्दीन के लिये येह अह़काम हैं कि) अगर औरत रखते हों तो इन की औरतें इन के निकाह़ से निकल

गई, औ़रतों को इख़्तियार है कि बा'दे इद्दत जिस से चाहें निकाह़ कर लें। येह **काफ़िर** अगर तौबा न करें (और) अज़ सरे नौ इस्लाम न लाएं तो मुसल्मानों को इन (मुरतद्दीन) से मेलजोल **ह़राम**, सलाम कलाम **ह़राम**, बीमार पड़ें तो इन्हें पूछने जाना **ह़राम**, मर जाएं तो इन के जनाज़े में शिर्कत **ह़राम**, इन्हें गु़स्ल देना **ह़राम**, इन पर नमाज़ पढ़ना **ह़राम**, इन का जनाज़ा कन्धे पर रखना **ह़राम**, जनाज़े के साथ जाना **ह़राम**, मक़ाबिरे मुस्लिमीन (या'नी मुसल्मानों के क़ब्रिस्तान) में दफ़्न करना **ह़राम**, इन के अक़ारिब (या'नी रिश्तेदार) अगर हु़क्मे शरीअ़त मानें तो इन (मुरतद्दीन) की मौत (वाक़ेअ़ हो जाने) पर इन की लाशें दफ़्ए़ उ़फ़ूनत (या'नी गन्दगी दूर करने) के लिये भंगी चमारों से ठेले पर डलवा कर मुसल्मानों और काफ़िरों सब की मक़ाबिर (क़ब्रों) से जुदा किसी तंग गढ़े में **कुत्ते** की त़रह़ फिंकवा कर ऊपर से पाट दें। وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۹﴾ (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और बे इन्साफ़ों की येही सज़ा है। (پ٦ المائدہ ٢٩) وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَم।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 635, 636)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

ज़कात के इन्कार के बारे में सुवाल जवाब

जो ज़कात को फ़र्ज़ न माने वोह काफ़िर है

सुवाल : ज़कात की फ़र्ज़िय्यत का इन्कार करने वाले के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब : ज़कात की फ़र्ज़िय्यत का इन्कार करने वाला **काफ़िर व मुरतद** है।

ढाई फ़ीसद से ज़ाइद ज़कात का हुक्म होता तो......

सुवाल : "अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ढाई फ़ीसद से ज़ाइद **ज़कात** अदा करने का हुक्म फ़रमाता तो मैं न देता" ऐसा बोलने वाला कैसा है ?

जवाब : ऐसे शख़्स पर हुक्मे **कुफ़्र** है। **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : अगर किसी ने कहा कि "**अल्लाह** तआला मुझे पांच से ज़ियादा नमाज़ों का या रमज़ानुल मुबारक के इलावा रोज़ों का या माल के चालीसवें हिस्से से ज़ियादा **ज़कात** का अगर हुक्म देता तो मैं उस पर अमल न करता।" ऐसे शख़्स पर **हुक्मे कुफ़्र** है। (مِنَحُ الرَّوض ص٤٦٨)

ज़कात को ज़ुल्म कहना

सुवाल : ज़कात को ज़ुल्म कहना कैसा ?

जवाब : **कुफ़्र** है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

ज़कात को ह़क़ारतन टेक्स कहना

सुवाल : **ज़कात** को ह़क़ारतन **टेक्स** कहना कैसा है ?

जवाब : **कुफ़्र** है। ह़ज़रते सय्यिदुना **मुल्ला अ़ली क़ारी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْبَارِى फ़रमाते हैं : जिस पर **ज़कात** फ़र्ज़ है उसे कहा गया : तू **ज़कात** क्यूं नहीं देता ? उस ने कहा : "येह **टेक्स** मैं नहीं देता।" या बत़ौरे इन्कार कहा : "मैं नहीं जानता" ऐसे पर हुक्मे **कुफ़्र** है।

(مِنَحُ الرَّوض ص۵۰۹)

ख़ूबरू दूल्हा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दिये हुए माल से फ़र्ज़ हो जाने की सूरत में ख़ुशदिली के साथ **ज़कात** अदा करनी चाहिये कि इस में दुन्या व आख़िरत की बे शुमार भलाइयां हैं। इस ज़िम्न में ह़ज़रते सय्यिदुना फ़क़ीह अबुल्लैस समर क़न्दी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى एक **ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत** नक़्ल करते हुए फ़रमाते हैं : ह़ज़रते **सय्यिदुना दावूद** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ख़िदमते बा बरकत में एक **ख़ूबरू दूल्हा** ज़ियारत के लिये ह़ाज़िर हुवा। ह़ज़रते सय्यिदुना **मलकुल मौत** عَلَيْهِ السَّلَام ने जो कि वहीं

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

मौजूद थे इस्तिफ़्सार किया कि येह जवान कौन है ? फ़रमाया : इस की आज ही शादी हुई है चूंकि मुझ से बे पनाह महब्बत करता है इस लिये इस ने मुझ से मुलाक़ात के बिग़ैर अपनी **दुल्हन** के पास जाना गवारा न किया लिहाज़ा मिलने आया है। ह़ज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : **ऐ दावूद ! इस दूल्हे की उ़म्र सिर्फ़ छ 6 दिन बाक़ी रह गई है !** येह सुन कर ह़ज़रते **सय्यिदुना दावूद** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام रन्जीदा हो गए। इस वाक़िए़ को सात माह गुज़र गए मगर वोह नौ जवान फ़ौत न हुवा। दर ईं अस्ना मलकुल मौत आए तो ह़ज़रते **सय्यिदुना दावूद** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : **ऐ मलकुल मौत !** वोह नौ जवान अभी तक ज़िन्दा है ! **मलकुल मौत** ने जवाबन कहा : जब मैं ने छ 6 दिन के बा'द उस की रूह़ क़ब्ज़ करनी चाही तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : **ऐ मलकुल मौत !** मेरे बन्दे को छोड़ दो क्यूं कि जब येह (ह़ज़रते) **दावूद** (عَلَيْهِ السَّلَام) के पास से हो कर बाहर निकला और उस ने एक लाचार फ़क़ीर को पाया तो उस को अपनी **ज़कात** दे दी, उस मोह़ताज ने ख़ुश हो कर उस को दराज़िये उ़म्र बिलख़ैर और जन्नत में (ह़ज़रते) **दावूद** (عَلَيْهِ السَّلَام) का पड़ोसी

बनाए जाने की दुआ़ से नवाज़ा। **मैं ने वोह दुआ़ क़बूल फ़रमा ली और मैं ने उस के लिये उन छ 6 दिन को साठ साल लिख दिया और मज़ीद दस साल बढ़ा दिये और उस के लिये जन्नत में** (ह़ज़रते) **दावूद (عَلَیْہِ السَّلَام) का पड़ोस लिख दिया है। लिहाज़ा तुम येह** (70 सालह) **मुद्दत पूरी होने से क़ब्ल उस की रूह़ क़ब्ज़ मत करना।** (قرۃ العیون مع الروض الفائق ص ۳۹۸). **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

गुनाहों के ज़रीए होने वाले कुफ़्रिय्यात के बारे में सुवाल जवाब

गुनाह की ता'रीफ़

सुवाल : गुनाह की क्या ता'रीफ़ है ? नीज़ गुनाहे सग़ीरा और कबीरा कौन कौन से हैं ?

जवाब : सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی पारह 27 सूरतुन्नज्म आयत नम्बर 32 के जुज़ اَلَّذِیْنَ یَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓىٕرَ الْاِثْمِ وَ الْفَوَاحِشَ (**तरजमए कन्ज़ुल**

ईमान : वोह जो बड़े गुनाहों और बे हयाइयों से बचते हैं) के तह़्त फ़रमाते हैं : **गुनाह** वोह अ़मल है जिस का करने वाला अ़ज़ाब का मुस्तह़िक़ हो और बा'ज़ अहले इ़ल्म ने फ़रमाया कि **गुनाह** वोह है जिस का करने वाला सवाब से मह़रूम हो बा'ज़ का क़ौल है : ना जाइज़ काम करने को **गुनाह** कहते हैं ।

(ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, स. 840)

फ़क़ीहे मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद जलालुद्दीन अमजदी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "किसी वाजिब का एक बार तर्क करना **गुनाहे सग़ीरा** है बशर्ते़ कि बिला उ़ज़्रे शरई हो । जैसे एक बार तर्के जमाअ़त करना या एक बार दाढ़ी मुंडाना वग़ैरा और गुनाहे सग़ीरा इसरार से गुनाहे कबीरा हो जाता है । शिर्क और कुफ़्र और हर ह़रामे क़त़ई का इरतिकाब गुनाहे कबीरा है और किसी फ़र्ज़े क़त़ई जैसे नमाज़, रोज़ा और ज़कात वग़ैरा का न अदा करना भी **गुनाहे कबीरा** है ।" وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم (फ़तावा फ़ैज़ुर्रसूल, जि. 2, स. 510, 511)

गुनाहे सग़ीरा पर इसरार के मा'ना

सुवाल : गुनाहे सग़ीरा **इसरार** से गुनाहे कबीरा हो जाता है" इस में **इसरार** से क्या मुराद है ?

जवाब : "इसरार" का मा'ना है मज़बूत़ बांधना, मज़बूत़ हो

जाना, किसी के साथ ऐसा वाबस्ता होना कि उस से जुदा न हो सकना (तफ़्सीरे नईमी, जि. 4, स. 193) "**गुनाह** पर इसरार करना" के मा'ना के मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं : शैख़े मुह़क़्क़िक़, मुह़क़्क़िक़ अ़लल इत़्लाक़, ख़ातिमुल मुह़द्दिसीन, ह़ज़रते अ़ल्लामा **शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देह्लवी** عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : बा'ज़ **उ़लमाए** किराम ने फ़रमाया कि : **इसरार** की ह़द येह है कि गुनाह को बार बार करे और दिल में **बेबाकी** मह़सूस करे। (اشعۃ اللّمعات ج۲ ص ۲۵۸) फ़तावा **शामी** में है : **इसरार** की ह़द येह है कि वोह **गुनाह** की परवाह किये बिग़ैर बार बार **सग़ीरा** का इरतिकाब करे। (فتاوٰی شامی ج۳ ص۵۲۰) जो गुनाहे सग़ीरा किया उस से तौबा कर लेने से **इसरार** से बाहर निकल आता है चुनान्चे अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि ताजदारे ह़रम, शाफ़ेए़ उमम, नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुअ़ज़्ज़म है : जिस शख़्स ने **इस्तिग़फ़ार** कर लिया उस ने अपने **गुनाह** पर **इसरार** नहीं किया अगर्चे वोह दिन में **सत्तर बार गुनाह** करे।

(سُنَنُ ابی داؤد ج ۲ ص ۱۲۱،۱۲۰ حدیث ۱۵۱٤)

मुफ़स्सिरे शहीर **हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡحَنَّان इस हदीस के तहत फ़रमाते हैं : ब वक़्ते तौबा गुनाह से बाज़ रहने का पूरा इरादा हो और अगर **तौबा** के वक़्त ही येह ख़याल है कि **गुनाह** करता ही रहूंगा, तो येह तौबा नहीं बल्कि (مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ) इस्लाम का मज़ाक़ है। (मिरआतुल मनाजीह, जि. 3, स. 364)

गुनाह को हलाल समझना

सुवाल : गुनाह को हलाल समझना कैसा ?

जवाब : किसी भी **सग़ीरा या कबीरा** गुनाह को हलाल समझना **कुफ़्र** है जब कि उस का गुनाह होना दलीले क़त्ई से साबित हो इसी तरह गुनाह को हलका समझना भी **कुफ़्र** है । (مِنَحُ الرَّوض ص ٤٢٣)

सुवाल : जवाब में आप ने दलीले क़त्ई लफ़्ज़ लिखा है, इसी तरह कहीं नस्से क़त्ई लिखा होता है, मेहरबानी कर के इन के मा'ना बयान कर दीजिये ।

जवाब : दलीले क़त्ई और नस्से क़त्ई दोनों एक ही चीज़ हैं । नस्से क़त्ई (दलीले क़त्ई) से मुराद कुरआने पाक की आयत या हदीसे मुतवातिर होती है और अगर आयत व हदीसे मुतवातिर की दलालत भी क़त्ई हो तो इस से क़त्ई तौर पर फ़र्ज़िय्यत साबित होती है ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी । (مجمع الزوائد)

"गुनाह कर के तौबा करना अल्लाह की सुन्नत है" कहना कैसा ?

सुवाल : ज़ैद ने कहा कि **गुनाह** कर के तौबा करना ख़ुद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सुन्नत है । क्या ऐसा कहना **कुफ़्र** नहीं ?

जवाब : ज़रूर **कुफ़्र** है । इस **क़ौले बद तर अज़ बौल**[1] का ज़ाहिर व वाज़ेह़ मफ़्हूम रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ के लिये **गुनाह** व तौबा का इस्बात (या'नी इक़रार) और **अल्लाहुल मुबीन** عَزَّوَجَلَّ की सख़्त तरीन तौहीन है और येह **सरीह़ कुफ़्र** है । कहने वाला इस्लाम से ख़ारिज हो गया ।

गुनाह को अच्छा जानना कैसा ?

सुवाल : गुनाह को अच्छा जानना कैसा ?

जवाब : सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی इर्शाद फ़रमाते हैं : "जो शख़्स मा'सियत (या'नी **अल्लाह** व रसूल की ना फ़रमानी) करे उस को अच्छा बताना इस के येह मा'ना होते हैं कि गुनाह गुनाह नहीं और जिस गुनाह का सुबूत नस्से क़त़्ई से हो उस के मा'सियत होने का इन्कार **कुफ़्र** है मसलन शराबी, जूआरी, चोर वग़ैरहुम सब ही

1 : बौल या'नी पेशाब ।

अच्छे हों तो येह अफ़्आ़ल गुनाह न हुए और इन को गुनाह न जानना कुरआने मजीद का इन्कार है।"

(फ़तावा अम्जदिय्या, जि. 4, स. 455)

"झूट बोला तो क्या बुरा किया !" कहना कैसा ?

सुवाल : एक शख़्स ने किसी बात पर बिला इजाज़ते शरई झूट बोला। इस पर जब उस को किसी ने टोका तो उस मुंहफट ने बका : "आज कल सच्चाई का ज़माना नहीं है मैं ने झूट बोला तो क्या बुरा किया !" इस त़रह़ कहने वाले के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब : इस त़रह़ कहने वाले पर हुक्मे **कुफ़्र** है। मेरे **आक़ा आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن की ख़िदमत में इस्तिफ़्ता पेश हुवा : अ़म्र ने जान बूझ कर कचहरी (कोर्ट) में **झूटी गवाही** दी। लोगों ने इस पर ए'तिराज़ किया तो कहने लगा : कचहरी में आज कल सच कौन बोलता है ! जितने जाते हैं सभी वहां झूट ही बोलते हैं, **अगर मैं ने झूट कहा तो क्या बुरा किया !** **अल जवाब :** ह़दीस में फ़रमाया : झूटी गवाही देने वाला वहां से क़दम हटाने नहीं पाता ह़त्ता कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जहन्नम वाजिब फ़रमा देगा (اِبنِ ماجہ ج ۳ حدیث۲۳۷۳) यहां तक तो **गुनाहे कबीरा** ही

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

था जो आदमी की हलाकत व बरबादी को बस है। आगे इस का कहना कि "मैं ने **झूट** बोला तो क्या बुरा किया !" **सरीह़ कलिमए कुफ़्र** है। इस पर लाज़िम है कि **तजदीदे इस्लाम** करे और अगर औ़रत रखता हो तो अज़् सरे नौ इस्लाम लाने के बा'द उस से **तजदीदे निकाह़ ज़रूरी** है।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 149, 150)

"छोटी मोटी बातें तो चल जाएंगी" कहना

सुवाल : मुरीद से झूट बोलने का गुनाह सादिर हुवा, इस पर उस के पीर साहि़ब ने टोका। मुरीद कहने लगा : "**हुज़ूर** ! आप जैसी कामिल हस्ती से मेरी निस्बत है, इस त़रह़ की **छोटी मोटी बातें तो चल जाएंगी**।" हुक्मे शरई बयान कीजिये।

जवाब : मुरीदे बेबाक का येह जुम्लए नापाक **कुफ़्र** है क्यूं कि इस ने ऐसे गुनाह को हलका जाना जिस का मा'सियत (ना फ़रमानी) होना ज़रूरिय्याते दीन में से है।

इमामे आ'ज़म का ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो लोग दुन्या ही को अपना सब कुछ बना बैठते, मौत को भुला बैठते और नेक लोगों से रिश्ता तुड़ा बैठते हैं वोह आ़म तौ़र पर

बे लगाम हो जाते हैं, उन की ज़बान गोया उन के दिल के आगे होती है, दिल की त़रफ़ रुजूअ़ करने की नौबत ही नहीं आती बस जो कुछ ज़बान की नोक पर आया फिसल कर बाहर आ जाता है और वोह हर दम बक बक करते रहते हैं और फिर इस त़रह़ مَعَاذَاللّٰہعَزَّوَجَلَّ ज़बान से **कुफ़्रिय्यात** सरज़द होने का इम्कान भी बढ़ता चला जाता है। हमें अपने अन्दर **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ पैदा करना चाहिये। करोड़ों ह़नफ़िय्यों के पेश्वा और मेरे आक़ा व मौला ह़ज़रते इमामे आ'ज़म, **फ़क़ीहे अफ़्ख़म, इमाम अबू ह़नीफ़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का **ख़ौफ़े ख़ुदा** मुलाह़ज़ा हो। चुनान्चे मन्क़ूल है, एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना **इमामे आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ किसी से गुफ़्तगू फ़रमा रहे थे कि किसी बात पर अचानक उस शख़्स ने इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा : اِتَّقِ اللّٰہ! या'नी ख़ुदा से डरो ! इन अल्फ़ाज़ का उस के मुंह से निकलना था कि **सय्यिदुना इमामे आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का चेहरा ज़र्द पड़ गया, सर झुका लिया और फ़रमाने लगे : "भाई ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को जज़ाए ख़ैर दे, इल्म पर जिस वक़्त किसी को नाज़ होने लगे उस वक़्त वोह इस बात का ज़रूरत मन्द होता है कि कोई उस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की याद दिला दे।"

(عقود الجمان ص ۲۲۷)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو یعلی)

गुनाहे सग़ीरा कब कुफ़्र होता है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यहां **मल्फ़ूज़ाते आ'ला हज़रत** हिस्सए चहारुम सफ़्हा 369 ता 370 से चन्द सुतूर पेश करता हूं जिन में **मा'लूमात का बेश बहा ख़ज़ाना** है। चुनान्चे मेरे **आक़ा आ'ला हज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह अहमद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना **इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली** عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی ने लिखा है **तवाजुद** (या'नी वज्द की नक़्क़ाली) से **वज्द** पैदा होता है। तशब्बोह (या'नी नक़्क़ाली) की सूरत येह है कि ब तकल्लुफ़ **वज्द** बनाए (कि) होते होते (सहीह वज्द भी) हो जाएगा। हां येह निय्यत न हो कि लोग मेरी ता'रीफ़ करें (कि) येह **रिया** है और **हराम** है। **अ़र्ज़ :** (क्या) **सग़ीरा** का इस्तिख़्फ़ाफ़ (या'नी हलका जानना) कबीरा है ? इर्शाद : (बल्कि) बा'ज़ अवक़ात **सग़ीरा** का इस्तिख़्फ़ाफ़ (या'नी हलका जानना) **कुफ़्र** हो जाएगा जब कि उस का गुनाह होना **ज़रूरिय्याते दीन** से हो। उ़लमा फ़रमाते हैं : किसी ने कोई गुनाह किया, उस से लोगों ने कहा : तौबा कर। जवाब दिया :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

چہ کردہ ام کہ توبہ کنم؟ (या'नी "मैं ने क्या किया है जो तौबा करूं ?" उस का येह जवाब) **कुफ़्र** (है)। बहुत से **सग़ाइर** (या'नी छोटे गुनाह) ऐसे हैं जिन का मा'सियत (ना फ़रमानी) होना **ज़रूरिय्याते दीन** से है मसलन अज्नबिय्या से मस व तक़्बील (या'नी ग़ैर औ़रत को छूना और बोसा लेना गुनाहे) सग़ीरा है। اِلَّا اللَّمَم में दाख़िल है मगर ह़लाल जाने **काफ़िर** है (फिर फ़रमाया) जिस को समझा कि येह **हलका** गुनाह है फ़ौरन **सग़ीरा** से **कबीरा** हो गया। **औलियाए किराम** (رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام) फ़रमाते हैं : इस **गुनाह** को दूसरे **गुनाह** से निस्बत देता है कि उस से छोटा है, येह नहीं देखता कि गुनाह किस का कर रहा है ! अगर देखता तो येह फ़र्क़ न करता।"

नाह़क़ माल छीन कर लाने वाले की ता'रीफ़ करना कैसा ?

सुवाल : जो किसी का माल चुरा कर या नाह़क़ छीन कर लाए। उस से ता'रीफ़न येह कहना कैसा कि तूने बहुत अच्छा किया ?

जवाब : ख़ुद चोरी और ग़स्ब के फ़े'ल को अच्छा कहने के त़ौर पर चोर या ग़ासिब को अच्छा कहना **कुफ़्र** है।

नेकियों को अच्छा न मानना कैसा ?

सुवाल : जो नेकियों को अच्छा और गुनाहों को बुरा न माने वोह कैसा है ?

जवाब : ऐसे शख़्स पर हुक्मे **कुफ़्र** है। चुनान्चे **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का फ़रमाने इब्रत निशान है : जो नेकियों को अच्छा, गुनाहों को बुरा, नेकियों पर सवाब, गुनाहों पर इस्तिह़क़ाक़े अ़ज़ाब और इबादत का वुजूब (या'नी वाजिब व ज़रूरी होना) न माने उस पर हुक्मे **कुफ़्र** है। (مَجمَعُ الْاَنْهُر ج٢ص٥٠٩)

इन जुज़्इय्यात को देखते हुए **ईमान की ह़िफ़ाज़त** की फ़िक्र कीजिये। ख़ुदा न ख़्वास्ता कुफ़्र पर ख़ातिमा हो गया तो कहीं के न रहेंगे। हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين **ईमान की ह़िफ़ाज़त** की बहुत फ़िक्र रखते थे। चुनान्चे **दो ह़िकायात** मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

(1) **ह़िकायत :** ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब अ़जमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : जिस शख़्स का ख़ातिमा لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه (कलिमए तौह़ीद) पर होता है वोह जन्नत में दाख़िल होता है। फिर रोने लगे और फ़रमाया : कौन मेरे लिये ज़मानत देता है कि मेरा ख़ातिमा لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه पर होगा। (تَنبِيهُ الْمُغْتَرِّين ص١٦١)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिगै़र उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الايمان)

(2) **ह़िकायत :** ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाया करते थे : हमें येह बात पहुंची है कि एक शख़्स **एक हज़ार साल** बा'द जहन्नम से निकलेगा। फिर फ़रमाया : काश ! वोह शख़्स मैं होता क्यूं कि जहन्नम से उस का निकलना यक़ीनी है। (या'नी उस का ईमान पर ख़ातिमा होना तै शुदा है) **ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़** अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى येह ह़िकायत बयान करने के बा'द फ़रमाते हैं : **ऐ भाई !** अपने नफ़्स को दुन्यवी उमूर में सिर्फ़ ज़रूरिय्याते शरइय्या के मुत़ाबिक़ मश्ग़ूल रख, हो सकता है तुझे ग़फ़्लत की ह़ालत में मौत आ जाए, तो यूं तुझे दोनों जहानों में नुक़्सान उठाना पड़े। وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ تعالٰى।

(تَنْبِيْهُ الْمُغْتَرِّيْن ص ١٦١)

मुसल्मान का क़त्ल ह़लाल जानना कैसा ?

सुवाल : किसी मुसल्मान के ज़ुल्मन क़त्ल करने को जाइज़ क़रार देने वाले के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब : ऐसा शख़्स काफ़िर है। **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : वज्हे शरई के बिगै़र कहना कि "फ़ुलां का क़त्ल ह़लाल है" **कुफ़्र** है। (مِنَحُ الرَّوض ص ٤٨٥)

बद फ़े'ली को जाइज़ समझना कैसा ?

सुवाल : जो बद फ़े'ली को जाइज़ समझे या जाइज़ कहे क्या वोह मुसल्मान ही रहेगा ?

जवाब : नहीं, वोह **काफ़िर** हो जाएगा। **फुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : जिस ने **ह़रामे इज्माई** की हुरमत का इन्कार किया या उस के ह़राम होने में शक किया वोह **काफ़िर** है जैसे शराब (ख़म्र), ज़िना, लिवात़त, सूद वग़ैरह। (مِنَحُ الرَّوض ص ۵۰۳)

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن लिवात़त के ह़लाल होने के क़ाइल के बारे में इर्शाद फ़रमाते हैं : "ह़िल्ले लिवात़त का क़ाइल काफ़िर है।"

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 23, स. 694)

"काश ! बद फ़े'ली जाइज़ होती" कहना कुफ़्र है

सुवाल : उस शख़्स के लिये क्या हुक्म है जो जाइज़ तो न कहे मगर येह तमन्ना करे कि **काश ! बद फ़े'ली जाइज़ होती।**

जवाब : येह तमन्ना भी **कुफ़्र** है। **अल बह़्रुर्राइक़** जिल्द 5 सफ़्ह़ा 208 पर है : जो ह़राम काम कभी ह़लाल न हुए उन के बारे में ह़लाल होने की तमन्ना करना **कुफ़्र** है

मसलन तमन्ना करना कि काश ! ज़ुल्म, ज़िना और क़त्ले नाह़क़ **ह़लाल** होते।

अज्नबिय्या का बोसा लेने को जाइज़ कहना

सुवाल : ग़ैर मह़रमा का बोसा लेने को जाइज़ समझे उस के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब : ऐसा बे ह़या शख़्स **काफ़िर** है। **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं : जो अजनबी औ़रत का बोसा लेना जाइज़ समझे वोह **काफ़िर** है।

(مِنَحُ الرَّوض ص ۵۰۹)

गुनाहों के ज़रीए दीन की ख़िदमत

सुवाल : बा'ज़ लोग दीन का काम करने के लिये ना जाइज़ ज़राएअ़ इस्ति'माल करते हैं अगर कोई ए'तिराज़ करे तो कहते हैं कि आज कल दीन का काम इसी त़रह़ होता है। उन का येह जवाब कहां तक दुरुस्त है ?

जवाब : सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक शख़्स **गुनाह** करता है, लोगों ने उसे मन्अ़ किया, तो कहने लगा : "इस्लाम का काम इसी त़रह़ करना चाहिये" या'नी जो गुनाह व मा'सियत (या'नी **अल्लाह** व रसूल की ना फ़रमानी) को इस्लाम कहता है वोह **काफ़िर** है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 9, स. 179)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

मा 'सियत के ज़रीए़ दीन की ख़िदमत बाइ़से हलाकत है

यहां उन लोगों के लिये काफ़ी दर्से इ़ब्रत है जो दीन के काम के नाम पर धम्कियां दे कर ज़बर दस्ती "चन्दा" निकलवाते, हड़तालें कर के जब्रन मुसल्मानों की दुकानें बन्द करवाते, गाड़ियां और इम्लाक जलाते, मुसल्मानों में ख़ौफ़ो हिरास फैलाते, बसों पर पथ्थर बरसाते, इस त़रह़ की ह़रकात से आ़म मुसल्मानों पर त़रह़ त़रह़ से ज़ुल्म ढाते और फिर مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह कहते सुनाई देते हैं कि क्या करें ह़ालात ही ऐसे हैं, अगर हम यूं न करें तो दीन का काम नहीं हो सकता ! याद रखिये ! **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ बे नियाज़ है उसे इस बात की क़त़्अ़न ह़ाजत नहीं कि कोई दीन का काम करे ही करे। हम ख़ुद उस के मोह़ताज हैं लिहाज़ा हमें रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ और शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अह़कामात की रोशनी ही में इ़बादात और दीन की ख़िदमात बजा लानी चाहिएं। बिलफ़र्ज़ कोई मा'सियत के ज़रीए़ दीन की ख़िदमत में ज़ाहिरी ज़ियादत (या'नी ब ज़ाहिर तरक़्क़ी) मह़सूस करे भी तो उसे

ख़ुश फ़हमी में पड़ जाने के बजाए इस ह़दीसे मुबारक को बार बार पढ़ना और फ़िक्रे आख़िरत में कुढ़ना चाहिये चुनान्चे सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, बि इज़्ने परवर्दगार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे इब्रत बुन्याद है : **बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस दीन की मदद ऐसी क़ौम के ज़रीए़ (भी) लेता है जिन का दीन में कोई ह़िस्सा नहीं होता ।**

(مَجْمَعُ الزَّوائِد ج٥ ص٥٤٨ حديث٩٥٦٤)

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासिते हो
कर इख़्लास ऐसा अ़ता या इलाही عَزَّوَجَلَّ

शरीअ़त से ज़िना की इजाज़त मांगना कुफ़्र है

सुवाल : एक औ़रत के बारे में सुवाल है कि क्या सख़्त तंगदस्ती के आ़लम में शरीअ़त उस औ़रत को ज़िना के ज़रीए़ गुज़र अवक़ात करने की इजाज़त देती है ?

जवाब : शरीअ़त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **व रसूल** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अह़कामात का नाम है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **व रसूल** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ज़िना की इजाज़त मांगनी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

कुफ़्र है। (इस ज़िम्न में तफ़्सीली सुवाल जवाब फ़तावा रज़विय्या जिल्द 13 सफ़ह़ा 474 पर मुलाह़ज़ा फ़रमाइये)

ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की नाराज़गी को हलका जानना कैसा ?

सुवाल : येह जुम्ला कहना अज़ रूए शरअ़ कैसा कि "**अल्लाह** नाराज़ होता है तो हो।" ?

जवाब : कुफ़्र है कि इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की नाराज़गी को हलका जानना पाया जा रहा है। अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाराज़ होने की सूरत में बन्दा अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार होता है, और इस जुम्ले से क़ाइल का अपने आप को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से बे ख़ौफ़ ज़ाहिर करने का पहलू भी निकल रहा है और येह भी **कुफ़्र** है। सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "किसी से कहा कि गुनाह न कर वरना **ख़ुदा** तुझे **जहन्नम** में डालेगा।" उस ने कहा : मैं **जहन्नम** से नहीं डरता या कहा, **ख़ुदा के** अ़ज़ाब की कुछ परवा नहीं। या एक ने दूसरे से कहा : "तू **ख़ुदा** से नहीं डरता ?" उस ने गुस्से में कहा : "नहीं।" या कहा : "**ख़ुदा** क्या कर सकता है ? इस के सिवा क्या कर सकता है कि **दोज़ख़** में डाल दे या कहा : **ख़ुदा** से

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

डर। उस ने कहा : **ख़ुदा** कहां है ? येह सब **कलिमाते कुफ़्र** हैं।" (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 9, स. 180)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ व रसूल के हुक्म पर दूसरे के हुक्म को तरजीह़ देना कैसा ?

सुवाल : जो शख़्स गुनाह पर ज़िद करे और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ और रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म पर दूसरे आदमी के हुक्म को तरजीह़ दे वोह कैसा है ?

जवाब : तरजीह़ का एक मत़लब तो येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म के बजाए किसी दूसरे के हुक्म पर अ़मल करे येह तो कुफ़्र नहीं जब कि तरजीह़ का दूसरा मा'ना येह है कि किसी के हुक्म को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म से बड़ा समझा लेकिन कोई गुनहगार से गुनहगार मुसल्मान ऐसा सोच भी नहीं सकता कि वोह किसी और के हुक्म को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **व रसूल** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म से बड़ा समझे। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن इसी त़रह़ के एक इस्तिफ़्ता का जवाब देते हुए फ़रमाते हैं : और हुक्म सुन कर गुनाह पर हट (या'नी ज़िद) करना इस्तिह़्क़ाक़े अ़ज़ाबे नार है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

وَ اِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ ؕ وَ لَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۲۰۶﴾

(پ۲ البقرہ ۲۰۶)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब उस से कहा जाए कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) से डर तो उसे और ज़िद चढ़े गुनाह की ऐसे को दोज़ख़ काफ़ी है और वोह ज़रूर बहुत बुरा बिछोना है।

इब्लीस की पैरवी से हुक्मे **ख़ुदा व रसूल** पर न चलना और ज़ालिम के हुक्म पर चलना गुनाहे कबीरा है, इस्तिह़्क़ाक़े जहन्नम है। मगर कोई मुसल्मान कैसा ही फ़ासिक़ फ़ाजिर हो येह ख़याल नहीं करता कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **व रसूल** के हुक्म पर उस (या'नी ज़ालिम) के हुक्म को तरजीह़ है। ऐसा समझे तो आप (या'नी ख़ुद) ही **काफ़िर** है। وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ تَعَالٰی । وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَم ।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 24, स. 348)

डान्स को जाइज़ कहना कैसा ?

सुवाल : "मुरव्वजा डान्स को जाइज़ कहना" कैसा है ?

जवाब : फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : जो **रक़्स** करने को जाइज़ समझे उस पर हुक्मे **कुफ़्र है।** (دُرِّمُختار ج ۶ ص ۳۹۶) यहां **रक़्स** से मुराद लचके तोड़े के साथ किया जाने वाला वोह नाच (डान्स) है जो कि

शरअ़न **ना जाइज़** है। इ़श्के ह़क़ीक़ी के बाइ़स बेख़ुदी में झूमना, **वज्द** त़ारी होना या **तवाजुद** या'नी आ़शिक़ाने ख़ुदा व रसूल के वज्दे सादिक़ की मुख़्लिसाना नक़्क़ाली مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **कुफ़्र** नहीं बल्कि ऐन सआ़दत है।

इन्सान को शैत़ान कहना कैसा ?

सुवाल : इन्सान को शैत़ान कहना कैसा है ?

जवाब : आज कल येह लफ़्ज़ अक्सर लोग बत़ौरे गाली इस्ति'माल करते हैं। शरारती बच्चे को भी **शैत़ान** बोल देते हैं। इस की सूरतें बयान करते हुए मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 13 **सफ़्ह़ा** 656 पर फ़रमाते हैं : गुमराह बद दीन को **शैत़ान** कहा जा सकता है और उसे भी जो लोगों में फ़ितना परदाज़ी करे, इधर की उधर लगा कर फ़साद डलवाए, जो किसी को गुनाह की तरग़ीब दे कर ले जाए वोह उस का **शैत़ान** है, और मोमिने सालेह़ को **शैत़ान** कहना **शैत़ान** का काम है। मज़ीद सफ़्ह़ा 652 पर तह़रीर करते हैं : मुसल्मानों को बिला वज्हे शरई **मरदूद** या **इब्लीस** कहना **सख़्त ह़राम** है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَالَّذِیْنَ یُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَیْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّ اِثْمًا مُّبِیْنًا ﴿۵۸﴾ (پ۲۲ الاحزاب ۵۸)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो ईमान वाले मर्दों और औरतों को बे किये सताते हैं उन्हों ने बोहतान और खुला गुनाह अपने सर लिया।

नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जिस ने किसी मुसलमान को (नाहक़) ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) को ईज़ा दी। (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج۲ ص۳۸۶ حدیث۳۶۰۷)

"गुनाह" के मुतअ़ल्लिक़ कुफ़्रिय्यात की 11 मिसालें

﴾1﴿ किसी ने कहा : "**अल्लाह** तआ़ला जहन्नम में भेजने के इलावा क्या कर सकता है ?" येह क़ौल **कुफ़्र** है। (عالمگیری ج۲ ص۲۶۲)

﴾2﴿ किसी से कहा गया : **गुनाह** न कर **अल्लाह** तआ़ला अ़ज़ाब देगा। उस ने कहा : "मैं एक हाथ से सारा अ़ज़ाब उठा लूंगा।" येह कहने वाला **काफ़िर** है। (عالمگیری ج۲ ص۲۶۰)

﴾3﴿ अगर किसी फ़ासिक़ के बच्चे ने पहली मरतबा शराब पी और उस के रिश्तेदार उसे मुबारक बाद दे रहे हैं,

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو یعلی)

उस पर पैसे लुटा रहे हैं। उन सब पर हुक्मे **कुफ़्र** है।

(مِنَحُ الرَّوض ص ۵۰۷)

﴾4﴿ किसी आदमी ने सग़ीरा **गुनाह** किया। दूसरे ने कहा : तौबा कर। उस ने कहा : "मैं ने क्या किया है जो तौबा करूं !" येह कहने वाला **काफ़िर** है।

(مَجْمَعُ الْاَنْهُر ج ۲ ص ۵۱۲)

﴾5﴿ ज़ालिम से कहा गया कि तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और मुसल्मानों को ईज़ा देता है। उस ने कहा : "हां मैं देता हूं" या ﴾6﴿ कहा : "अच्छा करता हूं" ऐसे पर हुक्मे **कुफ़्र** है। (اَیضاً)

﴾7﴿ जो शैतान से कहे : "ऐ इब्लीस ! मेरा काम संवार दे फिर तू जो मुझे कहे मैं करूंगा और जिस से मन्अ़ करेगा उस से बाज़ रहूंगा।" येह क़ौल **कुफ़्र** है।

(عالمگیری ج ۲ ص ۲۶۰)

﴾8﴿ एक आदमी ने झूट बोला, दूसरे ने कहा : **अल्लाह** तआ़ला तेरे झूट में बरकत दे। येह कहना **कुफ़्र** है।

(اَیضاً)

﴾9﴿ जो कहे : "मैं सवाब व अ़ज़ाब से बेज़ार हूं" उस पर हुक्मे **कुफ़्र** है। (البحر الرائق ج ۵ ص ۲۰۹) और ﴾10﴿ सवाब व अ़ज़ाब का इन्कार भी **कुफ़्र** है।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 278)

﴾11﴿ जो कहे : "ख़ियानत करने से **काफ़िर** होना बेहतर है।" उस पर हुक्मे **कुफ़्र** है। (الفتاوی البزازیة علی ھامش الفتاوی الھندیة ج٦ ص ٣٣٣)

हराम को हलाल कहने के बारे में सुवाल जवाब

पराए माल को ह़लाल समझना कैसा ?

सुवाल : बा'ज़ मन चले पराया माल हड़प कर जाते और फिर चोरी और सीना ज़ोरी के मिस्दाक़ यूं कहते सुनाई देते हैं कि "अपने को सब ह़लाल है" ऐसों के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब : बिग़ैर इजाज़ते शरई किसी का माल खा जाने को ह़लाल कहना **कुफ़्र** है। (ماخوذازمنح الروض٤٨٥)

ह़राम फ़े'ल से क़ब्ल बिस्मिल्लाह पढ़ना कैसा ?

सुवाल : जेब कतरे ने बिस्मिल्लाह पढ़ कर किसी की जेब काटी हो तो क्या हुक्म है ?

जवाब : ऐसा करना कुफ़्र है। **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : **ह़रामे क़त़ई** फ़े'ल करते वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़ना **कुफ़्र** है। (عالَمگیری ج٢ ص٢٧٣)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

ह़राम माल से ख़ैरात करना कैसा ?

सुवाल : सूद या रिश्वत या जूआ या चोरी की रक़म से ब निय्यते सवाब **ख़ैरात** करना कैसा ?

जवाब : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, **मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के फ़रमाने आ़लीशान का ख़ुलासा है : जिस ने **माले ह़राम** को अपना ज़ाती माल तसव्वुर कर के ब रिज़ा व रग़बत सवाब की निय्यत से **ख़ैरात** किया उस को हरगिज़ सवाब नहीं मिलेगा बल्कि इस की बा'ज़ सूरतों को **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने **कुफ़्र** क़रार दिया है। और अगर उस **ह़राम माल** को **ह़राम** ही समझा, उस पर नादिम हुवा, तौबा भी की मगर शरीअ़त के हुक्म के मुत़ाबिक़ उस के मालिकान या वुरसा तक पहुंचाना मुम्किन न रहा और चूंकि ऐसी सूरत में अब उस को **ख़ैरात** कर देने का शरअ़न हुक्म है लिहाज़ा इसी हुक्मे शरई की बजा आवरी की निय्यत से उस ने उस **माले ह़राम** को **ख़ैरात** कर दिया। तो अगर्चे उस माल की **ख़ैरात** का सवाब न मिलेगा मगर **ख़ैरात** कर देने के "हुक्मे शरई" पर अ़मल करने के सवाब का ह़क़दार होगा बल्कि उस का येह फ़े'ल उस की तौबा की तक्मील का बाइ़स है। (इस की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये फ़तावा रज़विय्या जिल्द 19 सफ़ह़ा 656 ता 661 मुलाह़ज़ा फ़रमाइये)

ख़ैरात में ह़राम माल ले कर फ़क़ीर का दुआ़ देना कैसा ?

सुवाल : किसी ने फ़क़ीर को ह़रामे क़त़्ई माल ख़ैरात किया, इस पर फ़क़ीर का दुआ़ में جَزاكَ اللّٰهُ خيراً (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे बेहतरीन जज़ा दे) कहना कैसा ?

जवाब : अगर फ़क़ीर को ख़ैरात में मिलने वाले माल के **ह़रामे क़त़्ई** होने का इ़ल्म है और جَزاكَ اللّٰهُ خيراً कहते वक़्त इस के दुआ़इया मा'ना भी समझता है तो उस ने **कुफ़्र** किया। **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : **ह़रामे क़त़्ई** माल सदक़ा कर के सवाब की उम्मीद रखना **कुफ़्र**, फ़क़ीर का इसे **ह़रामे क़त़्ई** जानते हुए दुआ़ देना **कुफ़्र**, और देने वाले का उस की दुआ़ पर आमीन कहना भी **कुफ़्र** है। (مَجمَعُ الاَنْہُر ج ۲ ص ۵۱۲)

"अल्लाह ने मेरी रोज़ी ही ह़राम में रखी है" कहना कैसा ?

सुवाल : मिलावट वाला माल धोके से बेचने वाले से कहा गया कि आप इस त़रह़ न किया करें। तो जवाब दिया : "क्या करूं ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी रोज़ी इसी में रखी है।" कहीं येह **कलिमए कुफ़्र** तो नहीं ?

जवाब : अगर क़ाइल अपने काम को **ह़राम** ही समझता है तो चूंकि वोह अपने इस ना जाइज़ काम के लिये तक़्दीर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोजे़ जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

को आड़ बनाता है इस लिये उस का इस त़रह़ कहना सख़्त बे अदबी और बे दीनी की बात है, येह जुम्ला क़ाइल के मुंहफट होने और **अल्लाहु तव्वाब** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से बे ख़ौफ़ होने पर दाल (अ़लामत) है। अगर उसे सह़ीह़ मा'नों में **ख़ौफ़े ख़ुदा** होता हरगिज़ उस के मुंह से ऐसा जुम्ला न निकलता। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अ़क़्ल दी है, ख़ैर व शर और ह़लाल व ह़राम को जुदा व मुमताज़ बयान फ़रमा दिया गया है। बन्दे को जो एक नौए़ इख़्तियार दी गई है उसे बरूए कार लाते हुए कोई तो अच्छे काम अपनाता है, और कोई अपने आप को बुराई के अ़मीक़ (या'नी गहरे) गढ़े में गिराता है, कोई ह़लाल रोज़ी कमाता है तो कोई ह़राम खाता खिलाता है। बरोजे़ क़ियामत आ'माल का ह़िसाब होना है, नेकी की जज़ा मिलेगी और बुराई की सज़ा। क़ाइल पर अपने इस जुम्ले से **तौबा** ज़रूरी है और उसे **ह़राम** से बचना **फ़र्ज़** है।

हुजूम में रह कर दीन की ह़िफ़ाज़त की दुश्वारी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़राम माल की नुहूसतें बे शुमार हैं, हमेशा **ईमान की ह़िफ़ाज़त** की फ़िक्र करते रहना चाहिये, न जाने कौन सी ऐसी भूल हो

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा। (ابن عدی)

जाए कि مَعَاذَ اللّٰه **ईमान** बरबाद हो जाए। ईमान की हिफ़ाज़त और रिज़्क़े ह़लाल की फ़राहमी की दुश्वारी के मुतअ़ल्लिक़ एक **इब्रत अंगेज़ ह़दीस** मुलाह़ज़ा फ़रमाइये। चुनान्चे **सरकारे दो आ़लम,** नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह़्तशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है :

लोगों पर ऐसा ज़माना आएगा कि किसी दीनदार का दीन मह़फ़ूज़ न रहेगा सिवाए उस शख़्स के जो अपने दीन को ले कर (या'नी उस की ह़िफ़ाज़त की ख़ातिर) एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ और एक सूराख़ (या'नी ग़ार) से दूसरे सूराख़ (या'नी ग़ार) की त़रफ़ भाग जाए। उस वक़्त मईशत का ह़ुसूल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को नाराज़ किये बिग़ैर न होगा। फिर जब येह सूरते ह़ाल होगी तो आदमी अपने बीवी बच्चों के हाथों हलाक होगा अगर उस के बीवी बच्चे न होंगे तो वालिदैन के हाथों हलाक होगा और अगर उस के वालिदैन भी न होंगे तो उस की हलाकत रिश्तेदारों या पड़ोसियों के हाथों होगी। **सह़ाबए किराम** عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह कैसे होगा ? सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

"वोह उसे माल की कमी का ता'ना देंगे, उस वक़्त वोह अपने आप को ऐसी जगहों पर ले जाएगा जहां वोह अपनी जान को हलाक कर लेगा।" (तो गोया इन्हीं के हाथों हलाक हुवा)। (الزھد للبیھقی ص ۱۸۳ رقم ۴۳۹)

बहन से निकाह़ को जाइज़ समझना कैसा ?

सुवाल : अपनी बहन के साथ निकाह़ को ह़लाल जानने वाले के लिये क्या हुक्मे शरई है ?

जवाब : ऐसा शख़्स **काफ़िर** है। **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं : **मुह़र्रमात** (मसलन मां, बहन, बेटी, भान्जी, भतीजी वग़ैरा) से निकाह़ को ह़लाल समझना, बिला ज़रूरते शरई शराब (ख़म्र) पीने या मुर्दार खाने या ख़ून पीने या ख़िन्ज़ीर का गोश्त खाने को ह़लाल समझना **कुफ़्र** है। (مِنَحُ الرَّوض ص ۵۰۳)

सूद को ह़लाल जानना

सुवाल : सूद को ह़लाल जानने वाला कैसा है ?

जवाब : काफ़िर है। **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं : (बिला इजाज़ते शरई) क़त्ले नफ़्स (या'नी क़त्ले मुस्लिम) को या यतीम का माल खा जाने को या सूद को ह़लाल समझना **कुफ़्र** है। (مِنَحُ الرَّوض ص ۴۶۸)

हर ह़ाल में गोश्त को ह़राम कहने वाले का हुक्म

सुवाल : उस के लिये क्या हुक्म है जो येह कहे : गोश्त खाना किसी भी सूरत में ह़लाल नहीं।

जवाब : मुत़्लक़न गोश्त को ह़राम कहना **कुफ़्र** है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़लाल कर्दा को ह़राम ठहराना है। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : नमाज़ का मुन्किर **काफ़िर** है, रोज़े का मुन्किर **काफ़िर** है, जो नमाज़ पढ़ने को बुरा कहे, नमाज़ी पर नमाज़ पढ़ने की वज्ह से त़ा'नो तश्नीअ़ करे **काफ़िर** है, रोज़ा रखने को जो बुरा कहे, रोज़ादार पर रोज़े की वज्ह से त़ा'न करे वोह **काफ़िर** है, **गोश्त खाने को मुत़्लक़न ह़राम कहना कुफ़्र है,** क़ुरबानी को ज़ुल्म कहने वाला **काफ़िर** है, इन ए'तिक़ादों वाले मुत़्लक़न कुफ़्फ़ार हैं। फिर अगर इस के साथ अपने आप को मुसल्मान कहते या कलिमा पढ़ते हों तो **मुरतद** हैं कि (मुरतद्दीन) दुन्या में सब से **बदतर काफ़िर** हैं, इन से मेलजोल **ह़राम,** इन के पास बैठना **ह़राम**, बीमार पड़ें तो इन को पूछने जाना **ह़राम,** मर जाएं तो इन के जनाज़े की नमाज़ **ह़राम**। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 356)

ग़स्ब को ह़लाल कहना कैसा ?

सुवाल : ज़ैद ने वालिद साहिब के इन्तिक़ाल के बा'द वुरसा को उन का ह़क़ देने के बजाए सारे माल पर ग़ासिबाना क़ब्ज़ा कर लिया। समझाने की कोशिश करने पर उस ने बिग़ैर किसी ह़ीलए शरइय्या के मुत़्लक़न इस **ग़स्ब** को **ह़लाल** क़रार दिया। **ज़ैद** के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब : मज़्कूरा **ग़स्ब** ह़राम है, **ग़स्ब** की हुरमत ज़रूरिय्याते दीन में से है लिहाज़ा अगर वाक़ेई ज़ैद ने **ग़स्ब** को ह़लाल क़रार दिया है तो उस पर हुक्मे **कुफ़्र** है। ऐसे ही एक **सुवाल** के **जवाब** में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "अगर मा'लूम हो जाए कि उस ने **ह़राम** को ह़लाल जाना तो उस वक़्त **लुज़ूमे कुफ़्र** होगा बल्कि इन्दत्तह़क़ीक़ बिला शुबा **कुफ़्र** होगा, क्यूं कि कुफ़्र का दारो मदार ज़रूरिय्याते दीन के इन्कार पर है और इस में शक नहीं कि बिग़ैर ह़ीलए शरइय्या मसलन किसी से अपने ह़क़ के बदले लेना जब कि वोह मुन्किर हो और बिग़ैर ऐसी ज़रूरत जो

इस को **मख़्मसा** (मसलन भूक की इज़्तिरारी ह़ालत) में मुब्तला कर दे। ग़ुस्ब की ह़ुरमत **ज़रूरिय्याते दीन** में से है।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 19, स. 675)

ह़राम को ह़लाल कहने के मुतअ़ल्लिक़ कुफ़्रिय्यात की 11 मिसालें

1 जिस ने कहा : "मैं ह़लाल व **ह़राम** को नहीं पहचानता" उस पर हुक्मे **कुफ़्र** है जब कि कहने वाला ह़राम व ह़लाल को बराबर या'नी एक त़रह़ का समझे। (مِنَحُ الرَّوض ص ٤٧٣)

2 जिस ने किसी **ह़राम** को ह़लाल या ह़लाल को **ह़राम** मान लिया तो वोह **काफ़िर** हो जाएगा, येह इस सूरत में है कि वोह **ह़राम** लि ज़ातिही हो और उस की ह़ुरमत दलीले क़त़्ई से साबित हो। (माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 147, خلاصةُ الفتاوی ج ٤ ص ٣٨٣) और वोह ज़रूरिय्याते दीन की ह़द तक हो।

3 रिज़्क़े ह़राम खाने के बा'द उस पर اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहना **कुफ़्र** है कि येह रिज़्क़े **ह़राम** खाने को पसन्द करना है अलबत्ता अगर मुत़्लक़ रिज़्क़ पर اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहा क़त़्ए नज़र इस के कि येह **ह़राम** है या **ह़लाल** तो हुक्मे **कुफ़्र** नहीं। (مِنَحُ الرَّوض ص ٤٦٢)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

﴾4﴿ मर्द के लिये रेशम के **ह़राम** होने का इन्कार **कुफ़्र** है। (اَیضاً ص۴۰۳۔۴۰۴)

﴾5﴿ इजाज़ते शरई के बिग़ैर कहे : फ़ुलां का क़त्ल **ह़लाल** है इस पर हुक्मे **कुफ़्र** है। **(مِنَحُ الرَّوض ص۴۸۵)**

﴾6﴿ जिस ने ह़रामे इज्माई की हुरमत का इन्कार किया या उस की हुरमत में शक किया तो **काफ़िर** है। जैसे शराब (ख़म्र), ज़िना, लिवात़त, सूद वग़ैरहा। (ایضاً ص۵۰۳)

﴾7﴿ जो **ह़राम** काम करने वाले को बत़ौरे तह़सीन कहे : तूने बहुत अच्छा किया मसलन किसी के क़त्ले नाह़क़ या चोरी करने पर कहे : तूने अच्छा किया येह कहना **कुफ़्र** है। **(مِنَحُ الرَّوض ص۴۸۵)**

﴾8﴿ जिस ने कहा : "माल होना चाहिये ह़लाल हो या **ह़राम**" ऐसे शख़्स पर **कुफ़्र** का ख़ौफ़ है। (اَیضاً ص۵۰۱)

﴾9﴿ बिग़ैर किसी तावील के जिस ने कहा : "**ह़राम** मेरे लिये ह़लाल है।" येह क़ौल **कुफ़्र** है। (اَیضاً ص۵۰۱)

﴾10﴿ किसी से कहा गया : तू ह़लाल खा। उस ने कहा : "**ह़राम** मुझे ज़ियादा पसन्द है।" येह क़ौल **कुफ़्र** है। (اَیضاً ص۵۰۱)

﴾11﴿ किसी से कहा गया : ह़लाल खा। उस ने कहा : "मुझे **ह़राम** ही चाहिये" ऐसे पर हुक्मे **कुफ़्र** है। (عالمگیری ج۲ ص ۲۷۲)

सुन्नतों की तौहीन के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल जवाब

सुवाल : एक अ़मल जो कि **सुन्नत** है, किसी ने उस की तौहीन कर दी, मगर उस को येह मा'लूम नहीं कि येह **सुन्नत** है, तो इस बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब : जिन बातों का **सुन्नत** होना मश्हूरो मा'रूफ़ न हो उन की अन्जाने में की जाने वाली तौहीन **कुफ़्र** नहीं लेकिन अगर उस का **सुन्नत** होना मा'लूम हो चुकने के बा'द फिर तौहीन आमेज़ कलिमात **सुन्नत** की तौहीन की निय्यत से कहे तो अब **कुफ़्र** है।

दाढ़ी को चमगादड़ के पर कहना कैसा ?

सुवाल : ज़ैद ने एक मरतबा शिआ़रे इस्लामिय्या **दाढ़ी** के मुतअ़ल्लिक़ कहा कि मैं **दाढ़ी** नहीं रखूंगा मुझे इन खुफ़्फ़ाश (या'नी चमगादड़) के परों की ज़रूरत नहीं। येह भी दीन के साथ इस्तिहज़ा और मूजिबे इरतिदाद व सुकूते निकाह है या नहीं ? और ज़ैद का उ़ज़्र कि हम को मस्अला मा'लूम न था लिहाज़ा हमारा निकाह बाक़ी है, शरीअ़त में मक़्बूल है या नहीं ?

जवाब : मेरे आक़ा **आ'ला हज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

की बारगाह में इसी त़रह़ का **सुवाल हुवा तो जवाब में इर्शाद फ़रमाया :** दाढ़ी के साथ इस्तिह्ज़ा भी ज़रूर कुफ़्र है। ज़ैद का ईमान ज़ाइल (बरबाद) और निकाह़ बाति़ल और उ़ज़्रे जहल (मस्अला मा'लूम न होने का उ़ज़्र) ग़लत़ व आ़ति़ल (या'नी बेकार) कि ज़ैद न किसी दूर दराज़ पहाड़ की तली का रहने वाला है न अभी ताज़ा हिन्दू से मुसल्मान हुवा है कि उसे न मा'लूम हो कि दाढ़ी शिआ़रे इस्लाम है, और शिआ़रे इस्लाम से इस्तिह्ज़ा (हंसी मज़ाक़) इस्लाम से इस्तिह्ज़ा (मस्ख़री करना) है। हां येह मुम्किन है कि इस से निकाह़ टूट जाना न जानता हो, मगर इस का न जानना इस के निकाह़ को मह़फ़ूज़ न रखेगा शीशे पर पथ्थर फेंके शीशा ज़रूर टूट जाएगा अगर्चे येह न जानता हो कि इस से टूट जाता है। وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 21, स. 215, 216)

पीर बचा लेगा

सुवाल : येह कहना कैसा है? "मुझे सुन्नतों पर भरोसा नहीं मेरे ग़ौसे पाक बहुत बड़े हैं, वोह बचा लेंगे।"

जवाब : क़ाइल की मुराद अगर येह है कि मेरा अ़मल नाक़िस और इख़्लास से ख़ाली होता है इस लिये मुझे सुन्नतों

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

या'नी अपने इल्म व अ़मल पर भरोसा नहीं اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरे ग़ौसे पाक बरोज़े क़ियामत मेरी शफ़ाअ़त कर के मुझे अ़ज़ाब से बचा लेंगे। तो **कलिमए कुफ़्र** नहीं और अगर مَعَاذَاللّٰہ **सुन्नत** की तह़क़ीर के त़ौर पर कहा तो कुफ़्र है। अलबत्ता ऐसे कलिमे से एह़तिराज़ (या'नी बचना) ज़रूरी है।

दाढ़ी वाले को जंगली कहना कैसा ?

सुवाल : दाढ़ी, ज़ुल्फ़ों और इमामा शरीफ़ वाले को **जंगली** कहना कैसा ?

जवाब : बिला वज्हे शरई किसी भी मुसल्मान को **जंगली** कहना जाइज़ नहीं कि इस से मुसल्मान का दिल दुखता है। **ग़म ख़्वारे उम्मत**, सरापा फ़ज़्लो रह़मत, जाने अ़ज़मतो शराफ़त, पैकरे जूदो सख़ावत, ताजदारे रिसालत, मह़बूबे रब्बे इ़ज़्ज़त صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है :

''مَنْ اٰذٰی مُسْلِمًا فَقَدْ اٰذَانِیْ وَ مَنْ اٰذَانِیْ فَقَدْ اٰذَی اللّٰہ''

या'नी जिस ने मुसल्मान को अज़िय्यत दी गोया उस ने मुझे अज़िय्यत दी और जिस ने मुझे अज़िय्यत दी गोया उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को अज़िय्यत दी।

(اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج۲ ص۳۸۶حدیث ۳۶۰۷)

ख़याल रहे अगर मज़्कूरा जुम्ला مَعَاذَاللّٰہعَزَّوَجَلَّ सुन्नत की तह्क़ीर व तौहीन के लिये बोला गया तो कुफ़्र है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई बहुत नाज़ुक दौर आ गया है। एक मुसल्मान बिल ख़ुसूस नौ जवान जब दाढ़ी और इमामा शरीफ़ की **सुन्नत** अपनाता है तो शैतान बिफर जाता है, ख़ास कर उस के अहले ख़ानदान को ख़ूब उक्साता, उस के दोस्तों को बहकाता और न जाने कितने ही अफ़राद के इमान के लिये मसाइल खड़े कर देता है !

वोह दौर आया कि दीवानए नबी के लिये
हर एक हाथ में पथ्थर दिखाई देता है

कुफ़्रिय्या कलिमात की 21 मिसालें

(1) किसी से कहा गया : **दाढ़ी** रख लो। उस ने कहा : “काम की बात करो।” या'नी **दाढ़ी** को फ़ुज़ूल व लग़्व समझा। येह **कलिमए कुफ़्र** है। हां अगर दाढ़ी को फ़ुज़ूल कहना मक़्सूद न था बल्कि सामने वाले के ख़ल्ते मब्हस (या'नी गुफ़्तगू में जो मौज़ूअ़ चल रहा था किसी का उस से हट कर दूसरी बात शुरूअ़ कर देना) करने के सबब कहा तो कुफ़्र नहीं मसलन पूछा कुछ और था मगर अगले ने बे मौक़अ़ कह दिया : “दाढ़ी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

रख लो'' इस पर जवाब दिया : ''काम की बात करो'' या'नी पहले मेरे सुवाल का जवाब दे दो।

《2》 मुत्लक़न **दाढ़ी** के सुन्नत होने का इन्कार करना **कुफ़्र** है।

《3》 **सुन्नत** को हक़ीर समझते हुए उस के तर्क पर हमेशगी **कुफ़्र** है। (مِنَحُ الرَّوض ص ٤٢٣)

《4》 किसी से कहा कि येह क्या तूने इमामा वग़ैरा पागलों वाला लिबास पहना हुवा है ! येह **कलिमए कुफ़्र** है।

《5》 **सुन्नत** की तह्क़ीर **कुफ़्र** है 《6》 जैसे दाढ़ी बढ़ाना 《7》 मूंछें कम करना 《8》 इमामा बांधना, 《9》 शम्ला लटकाना। इन की इहानत (या'नी तौहीन) कुफ़्र है जब कि **सुन्नत** की तौहीन मक़्सूद हो।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 9, स. 181)

《10》 **सुन्नत** की तौहीन करते हुए किसी से कहा : ''तुझे दाढ़ी अच्छी नहीं लग रही'' या 《11》 कहा : ''तेरा चेहरा दाढ़ी के सबब बिगड़ गया है।'' येह दोनों बातें **कुफ़्र** हैं।

《12》 **सुन्नत** की तौहीन करते हुए, दाढ़ी को **ब्रश** कहना या 《13》 दाढ़ी वाले का मज़ाक़ उड़ाते हुए उस को **दाढ़ी वाला बकरा** कहना दोनों **कुफ़्रिय्यात** हैं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

《14》 इमामा शरीफ़ को ज़मीन पर दे मारना या 《15》 फाड़ डालना या 《16》 जला देना येह तीनों बातें अगर **सुन्नत** की तौहीन की निय्यत से हों तो **कुफ़्र** हैं।

《17》 "शेव से तो चेहरा नूरानी हो जाता है और दाढ़ी से बे रौनक़।" येह **कलिमए कुफ़्र** है।

《18》 किसी से कहा गया : सर मुंडवाओ और 《19》 नाख़ुन काटो कि येह **सुन्नत** है उस ने बतौरे इन्कार और बतौरे रद के सुन्नत को ठुकराते हुए कहा : मैं नहीं करता अगर्चे **सुन्नत** ही हो। ऐसे पर हुक्मे **कुफ़्र** है और येही हुक्म हर **सुन्नत** के बारे में है।

(مَجْمَعُ الْاَنْھُر ج۲ ص۵۰۷)

《20》 दाढ़ी मुंडाने को सुन्नत कहना **कलिमए कुफ़्र** है।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 266)

《21》 ज़ैद ने खाने के बा'द उंग्लियां चाटीं। बक्र ने टोकते हुए कहा : येह तहज़ीब के ख़िलाफ़ है। ज़ैद ने कहा : येह **सुन्नते रसूल** है। बक्र ने बका : येह **सुन्नते रसूल** हो तब भी मेरी अ़क्ल में नहीं आता उंग्लियां चाटना ख़िलाफ़े तहज़ीब ही है। बक्र पर हुक्मे **कुफ़्र** है।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

कुफ़्रिय्या वसाविस के बारे में सुवाल जवाब

ज़ेहन में कुफ़्रिय्या ख़यालात आना

सुवाल : उस शख़्स के बारे में क्या हुक्म है जो कहता है कि परेशानी के आ़लम में मेरे ज़ेह्न में **कुफ़्रिय्या ख़यालात** आते रहते हैं।

जवाब : ज़ेह्न में **कुफ़्रिय्या** ख़यालात का आना और इन्हें बयान करने को बुरा समझना ऐन **ईमान की अ़लामत** है क्यूं कि **कुफ़्रिय्या वसाविस** शैत़ान की त़रफ़ से होते हैं और वोह लईन मरदूद चाहता है कि मुसल्मान से **ईमान** की दौलत छीन ले। **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, **नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा अ़ज़मत में बा'ज़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : हमें ऐसे ख़यालात आते हैं कि जिन्हें बयान करना हम बहुत बुरा समझते हैं। **सरकारे दो आ़लम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क्या वाक़ेई ऐसा होता है ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : जी हां। इर्शाद फ़रमाया : "येह तो ख़ालिस **ईमान** की निशानी है।"

(مُسلِم ص٨٠ حديث ١٣٢)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "कुफ़्री बात का दिल में ख़याल पैदा हुवा और ज़बान से बोलना बुरा जानता है तो येह कुफ़्र नहीं बल्कि ख़ास **ईमान** की अ़लामत है कि दिल में **ईमान** न होता तो उसे बुरा क्यूं जानता।" (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 9, स. 174) मक्तबतुल मदीना का मत़्बूआ़ रिसाला **वस्वसे और उन का इलाज** हदिय्यतन ह़ासिल कर के पढ़ लीजिये।

"मुझे फ़ुलां कुफ़्रिय्या वस्वसे आते हैं" कहना कैसा ?

सुवाल : अगर किसी के सामने तज़्किरा किया कि मुझे फ़ुलां फ़ुलां **कुफ़्रिय्या वस्वसे** आते हैं, मैं इन से तंग हूं, मुझे कोई इलाज बताइये। क्या इस सूरत में भी हुक्मे **कुफ़्र** है ?

जवाब : नहीं, इस सूरत में हुक्मे **कुफ़्र** नहीं।

वस्वसों के तीन इलाज

﴾1﴿ **मुस्लिम** शरीफ़ की रिवायत में है कि मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल, शाहे ख़ुश ख़िसाल, शहन्शाहे शीरीं मक़ाल, साह़िबे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे बा कमाल है : लोग एक दूसरे से पूछते रहेंगे यहां तक कि

येह कहा जाएगा कि मख़्लूक़ को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पैदा फ़रमाया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को किस ने पैदा किया ? तो जिस के दिल में इस क़िस्म का ख़याल आए वोह यूं कहे : اٰمَنْتُ بِا للّٰهِ وَ رُسُلِهٖ . या'नी मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के **रसूलों** पर ईमान लाया। (صَحِیح مُسلِم ص ۸۱ حدیث ۲۱۲-(۱۳٤)، ۲۱۳)

《2》 **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते **मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان लिखते हैं : सूफ़ियाए किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام) फ़रमाते हैं कि : जो कोई सुब्ह़ व शाम इक्कीस (21) बार लाह़ौल शरीफ़ (या'नी لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم) पानी पर दम कर के पी लिया करे तो (عَزَّوَجَلَّ) اِنْ شَآءَاللّٰه **वस्वसए शैत़ानी** से अम्न में रहेगा। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 87)

《3》 मज़ीद **मिरआत** जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा 89 पर नमाज़ में आने वाले **वस्वसों का इलाज** बयान करते हुए **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : **नमाज़** शुरूअ़ करते वक़्त तक्बीरे तह़रीमा से क़ब्ल तजरिबा है कि जो (तक्बीरे) तह़रीमा से पहले इस त़रह़ (या'नी बाईं त़रफ़

तीन बार) थुत्कार कर **लाह़ौल शरीफ़** पढ़ ले फिर तह़रीमा करे (या'नी नमाज़ शुरूअ़ करे) दौराने नमाज़ में निगाह की ह़िफ़ाज़त करे कि **क़ियाम** में सज्दागाह (या'नी सज्दे की जगह) रुकूअ़ में पुश्ते क़दम, **सज्दे** में नाक के बांसे (या'नी नाक की हड्डी पर), **जल्से** (दो सज्दों के दरमियान बैठने में) और **क़ा'दे** (अत्तह़िय्यात वग़ैरा पढ़ने) में गोद में (नज़र) रखे तो اِنْ شَآءَاللہ नमाज़ में हुज़ूरे (क़ल्ब या'नी ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़) नसीब होगा ।

न वस्वसे आएं न मुझे गन्दे ख़यालात
कर ज़ेह्न का अल्लाह अ़त़ा क़ुफ़्ले मदीना

बुरे ख़ातिमे के ख़ौफ़ से रोना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जहां मालो दौलत का ज़ोर होता है वहां **चोर** आता है और जहां कामिल ईमान होता है वहां ईमान का चोर शैत़ान आता है । **वस्वसों** की त़रफ़ से बिल्कुल ध्यान हटा देना भी दाफ़ेए़ वस्वसा है । हां मगर **ईमान की ह़िफ़ाज़त** से ग़फ़्लत बरत्ना इन्तिहाई ख़त़रनाक है । हमारे बुज़ुर्गाने

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين ईमान की सलामती के बारे में इन्तिहाई मुतफ़क्किर (या'नी फ़िक्र मन्द) रहते थे । चुनान्चे हुज्जतुल इस्लाम सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى नक़्ल करते हैं : हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ब वक़्ते वफ़ात रोने और चिल्लाने लगे । लोगों ने दिलासा देते हुए अ़र्ज़ की : या सय्यिदी ! घबराइये नहीं, **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर नज़र रखिये । फ़रमाया : **बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़** रुला रहा है अगर ईमान पर ख़ातिमे की ज़मानत मिल जाए तो फिर मुझे इस बात की परवाह नहीं अगर्चे पहाड़ों के बराबर गुनाहों के साथ रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात करूं । (إحياءُ العلوم ج٤ ص٢١١) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

मुसल्मां है अ़त्तार तेरी अ़ता से
हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही

कुफ़्फ़ार से दोस्ती वग़ैरा के बारे में सुवाल जवाब

काफ़िर से दोस्ती रखना ह़राम है

सुवाल : काफ़िर से दोस्ती रखना कैसा है ?

जवाब : ह़राम है । याद रखिये ! **बुरी** सोह़बत बुरा रंग लाती है, जो लोग **कुफ़्फ़ार** के ममालिक में ता'लीम या रोज़गार के सिल्सिले में जाते और वहां **कुफ़्फ़ार** की सोह़बतें अपनाते हैं नीज़ जो लोग इस्लामी ममालिक में भी **कुफ़्फ़ार को दोस्त** बनाते और उन से दोस्तियां रचाते हैं उन सब के लिये लम्ह़ए फ़िक्रिय्या है । "**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" सफ़ह़ा 96 पर है : "**कुफ़्फ़ार से दोस्ती व मह़ब्बत मम्नूअ़ व ह़राम है** । इन्हें राज़दार बनाना, इन से मुवालात (या'नी बाहमी इत्तिह़ाद) करना ना जाइज़ है । अगर जान या माल का ख़ौफ़ हो तो ऐसे वक़्त सिर्फ़ ज़ाहिरी बरताव जाइज़ है ।"

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

पारह 3 **सूरए आले इमरान** की 28वीं आयते करीमा में **ख़ुदाए रह़मान** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने इब्रत निशान है :

لَا یَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ الْكٰفِرِیْنَ اَوْلِیَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِیْنَۚ وَ مَنْ یَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَلَیْسَ مِنَ اللّٰهِ فِیْ شَیْءٍ

(پ ٣ اٰلِ عمران ٢٨)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : मुसल्मान, काफ़िरों को अपना दोस्त न बना लें मुसल्मानों के सिवा, और जो ऐसा करेगा उसे **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) से कुछ इलाक़ा न रहा।

काफ़िर से मह़ब्बत करने का हुक्म

सुवाल : क्या काफ़िर से मह़ब्बत भी नहीं रख सकते ?

जवाब : जी नहीं। इन से न दोस्ती रख सकते हैं न ही मह़ब्बत। चुनान्चे **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان **तफ़्सीरे नईमी** में फ़रमाते हैं : कुफ़्फ़ार से मह़ब्बत सख़्त मन्अ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو يعلى)

है। इस की मुमानअ़त में बहुत आयतें और बे शुमार हदीसें वारिद हुईं। रब तआ़ला फ़रमाता है :

لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰٓى اَوْلِيَآءَ ؔ (پ٦ المائدہ٥١)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : यहूदो नसारा को दोस्त न बनाओ।

नीज़ फ़रमाता है :

لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّيْ وَعَدُوَّكُمْ اَوْلِيَآءَ (پ٢٨ الممتحنه ١)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ।

नीज़ फ़रमाता है :

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ يُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَوْ كَانُوْٓا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِيْرَتَهُمْ ط (پ٢٨ المجادله٢٢)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम न पाओगे उन लोगों को जो यक़ीन रखते हैं **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) और पिछले दिन पर कि दोस्ती करें उन से जिन्हों ने **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) और उस के रसूल से मुख़ालफ़त की अगर्चे वोह उन के बाप या बेटे या भाई या कुम्बे वाले हों।

अहा़दीस में भी इस की सख़्त मुमानअ़त आई है मगर ख़याल रहे कि तअ़ल्लुक़ात की चन्द क़िस्में हैं और इन के जुदागाना अह़काम। दोस्ती, मह़ब्बत, मैलाने तब्अ़,

बिर्र व क़िस्त़, क़राबत दारी, अदाए हुक़ूक़, दुन्यवी मुआ़मलात, मेलजोल या'नी निशस्तो बरख़ास्त। इन सब के मुख़्तलिफ़ अह़काम हैं, दुन्यवी मुआ़मलात या'नी तिजारती लेन देन वग़ैरा कुफ़्फ़ार से जाइज़ है। अदाए हुक़ूक़ जाइज़। काफ़िर मां बाप का ह़क़्क़े मादरी व पिदरी अदा किया जाएगा।

बिर्र व क़िस्त़ या'नी दुन्यवी मुआ़मलात में ख़ुश उस्लूबी, कुफ़्फ़ार के एह़सान का एह़सान से बदला, येह भी जाइज़ है। मह़ब्बत की तीन सूरतें हैं :

(1) काफ़िर के कुफ़्र से मह़ब्बत और इस (कुफ़्र) से राज़ी होना, येह **कुफ़्र** है (2) कुफ़्फ़ार से मह़ब्बत कि कुफ़्र को तो बुरा जाने मगर अहले इस्लाम के मुक़ाबले में कुफ़्फ़ार की मदद करे, ख़्वाह क़राबत दारी या दुन्यवी लालच या किसी और वज्ह से। येह सख़्त **ह़राम** है बल्कि इस का अन्जाम **कुफ़्र** है। (3) तीसरे काफ़िर क़राबत दार (या'नी रिश्तेदार) से ग़ैर इख़्तियारी त़बीअ़त का मैलान। काफ़िर बेटे से मह़ब्बते पिसरी (या'नी बेटे की मह़ब्बत) वग़ैरा। मगर इस मह़ब्बत पर इतनी क़ुदरत रखे कि जब इस्लाम व कुफ़्र का मुक़ाबला

आ पड़े तो बेटे का लिह़ाज़ न करे। येह जाइज़ है मन्अ़ नहीं। (कुफ़्फ़ार से) मह़ब्बत का मेलजोल बहर ह़ाल **ह़राम** है। इन आयात में कुफ़्फ़ार की ग़ैर ज़रूरी मेलजोल और दोस्ती से मन्अ़ किया गया है।

(तफ़्सीरे नईमी, जि. 3, स. 422)

क्या काफ़िर से हाथ मिला सकते हैं ?

सुवाल : क्या काफ़िर से हाथ मिला सकते हैं ?

जवाब : मन्अ़ है। **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मन्अ़ फ़रमाया कि किसी मुश्रिक से हाथ मिलाएं या उसे कुन्यत से ज़िक्र करें या उस के आते वक़्त **मरह़बा** कहें। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 149, حِلیۃُ الاولیاء ج۹ ص۲۴۸ رقم۱۳۷۹۴) अलबत्ता मजबूरी में जब उन की त़रफ़ से ख़त़रा हो तो बे दिली के साथ हाथ मिलाने की गुन्जाइश है जैसा कि **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان के **तफ़्सीरे नईमी** जिल्द 3 सफ़ह़ा 421 पर दिये हुए मज़मून का ख़ुलासा है : "ब वक़्ते ज़रूरत उन से हाथ मिला सकते हैं मगर ख़बरदार दिल में उन से मह़ब्बत न रखना।" (तफ़्सीरे नईमी)

काफ़िर के पास ता'लीम ह़ासिल करना कैसा ?

सुवाल : काफ़िर उस्ताद के पास ता'लीम ह़ासिल करने की शरअ़न इजाज़त है या नहीं ?

जवाब : इजाज़त नहीं है। चुनान्चे मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ग़ैर मज़्हब वालियों (या वालों) की सोह़बत आग है, ज़ी इल्म आ़क़िल बालिग़ मर्दों के मज़्हब (भी) इस में बिगड़ गए हैं। **इमरान बिन ह़त्तान रक़्क़ाशी का क़िस्सा मश्हूर है, येह ताबिईन के ज़माने में एक बड़ा मुह़द्दिस था, ख़ारिजी मज़्हब की औ़रत की सोह़बत में** مَعَاذَ اللہ **ख़ुद ख़ारिजी हो गया और येह दा'वा किया था कि उसे सुन्नी करना चाहता है।** जब सोह़बत की येह ह़ालत तो उस्ताद बनाना किस दरजा बदतर है कि उस्ताद का असर बहुत अ़ज़ीम और निहायत जल्द होता है, तो ग़ैर मज़्हब औ़रत (या मर्द) की सिपुर्दगी या शागिर्दी में अपने बच्चों को वोही देगा जो (ख़ुद) आप (ही) दीन से वासित़ा नहीं रखता और अपने बच्चों के बद दीन हो जाने की परवाह नहीं रखता।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 23, स. 692)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

काफ़िर की दोस्ती ईमान के लिये ख़त़रनाक है

सुवाल : क्या काफ़िर से दोस्ती से ईमान ख़त़रे में पड़ जाता है ?

जवाब : जी हां। कुफ़्फ़ार की सोह़बत ब ख़ुदा बहुत बड़ी आफ़त है और इस से ईमान बरबाद हो सकता है और जो कुफ़्फ़ार की सोह़बत या इन के जल्सों मेलों में शिर्कत के बाइ़स ईमान बरबाद कर बैठेगा वोह किस क़दर बद नसीब होगा। **काफ़िर की दोस्ती** के सबब ईमान से हाथ धो बैठने वाला बरोज़े क़ियामत दस्ते ह़सरत मलते हुए जो कुछ कहेगा उस का बयान करते हुए पारह 19 **सूरतुल फ़ुरक़ान** आयत नम्बर 28 ता 29 में इर्शाद फ़रमाया जा रहा है :

يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِیْ لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِیْلًا ﴿۲۸﴾ لَقَدْ اَضَلَّنِیْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِیْ ؕ
(پ ۱۹ الفرقان ۲۸،۲۹)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वाए ख़राबी मेरी ! हाए ! किसी त़रह़ मैं ने फ़ुलाने को दोस्त न बनाया होता, बेशक उस ने मुझे बहका दिया मेरे पास आई हुई नसीह़त से।

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : **शाने नुज़ूल :** येह आयत उ़क़्बा बिन मुई़त़ के मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई जिस ने अव्वलन कलिमा पढ़ लिया था फिर उबय बिन ख़लफ़ के कहने से **मुरतद** हो गया। (**अल्लाह**

عَزَّوَجَلَّ के अ़त़ा कर्दा इल्मे ग़ैब के सबब) **हुज़ूर** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस (उ़क़्बा बिन मुई़त़) के क़त्ल की ख़बर दी । चुनान्चे वोह **बद्र** में मारा गया । उबय बिन ख़लफ़ उस का दोस्त था । उसे (या'नी उ़क़्बा बिन मुई़त़ को) क़ियामत में उस (या'नी उबय बिन ख़लफ़) की दोस्ती पर नदामत होगी । आयत का शाने नुज़ूल अगर्चे ख़ास है मगर इस का हुक्म आ़म है । इस से मा'लूम हुवा कि ईमान के लिये दो चीज़ें ज़रूरी हैं । अच्छों से उल्फ़त, बुरों से नफ़्रत । इस लिये कुफ़्फ़ार इन दोनों (बातों से मह़रूमी) पर कफ़े अफ़्सोस मलेंगे । कुफ़्फ़ार से दीनी मह़ब्बत रखनी **कुफ़्र** है और दुन्यावी **मह़ब्बत** ज़ो'फ़े ईमान (या'नी ईमान की कमज़ोरी) ।

(नूरुल इरफ़ान, स. 577, 578)

सुवाल : कुफ़्फ़ार की **जय** पुकारना कैसा है ?

जवाब : कुफ़्र है । मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : काफ़िरों की **जय** बोलना **कुफ़्र** है ।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 674)

काफ़िर की ता'ज़ीम करना कैसा ?

सुवाल : काफ़िर की ता'ज़ीम करने की इजाज़त है या नहीं ?

जवाब : इजाज़त नहीं । **मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام से नक़्ल करते हैं : अगर ज़िम्मी[1] को ता'ज़ीमन सलाम करे **काफ़िर** हो जाएगा कि **काफ़िर** की ता'ज़ीम **कुफ़्र** है। (دُرِّمختار ج ۹ ص ۶۸۱) अगर मजूसी को बतौरे ता'ज़ीम "ऐ उस्ताद" कहा **काफ़िर** हो गया (اَیضاً)। मतलब येह है कि अगर काफ़िर के कुफ़्र को अच्छा जान कर ता'ज़ीम करेगा तो ख़ुद **काफ़िर** हो जाएगा।

बद मज़्हबों से सलाम दुआ करना कैसा ?

सुवाल : बद मज़्हबों को सलाम और इन के साथ मुसाफ़हा (या'नी हाथ मिलाना) वग़ैरा कर सकते हैं या नहीं ?

जवाब : नहीं कर सकते। सुल्ताने अ़रब, मह़बूबे रब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "जो किसी **बद मज़्हब** को सलाम करे या उस से ब कुशादा पेशानी मिले या ऐसी बात के साथ उस से पेश आए जिस में उस का दिल ख़ुश हो, उस ने उस चीज़ की तह़क़ीर की जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने **मुह़म्मद** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर उतारी।" (تاریخ بغداد ج ۱۰ ص ۲۶۲) रसूले नज़ीर, सिराजे मुनीर, मह़बूबे रब्बे क़दीर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का

مدینہ

1 : जो काफ़िर इस्लामी सल्त़नत को जिज़्या अदा करता है उस को **ज़िम्मी** कहते हैं। अब दुन्या में कहीं भी कोई काफ़िर **ज़िम्मी** नहीं, सब के सब काफ़िर **ह़र्बी** हैं।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

फ़रमाने दिल पज़ीर है : जिस ने किसी **बद मज़्हब** की (ता'ज़ीम व) तौक़ीर की उस ने दीन के ढा देने पर मदद दी। (اَلْمُعْجَمُ الْاَ وْسَط لِلطَّبَرانِیّ ج٥ص١١٨حدیث ٦٧٧٢) मेरे आक़ा **आ'ला हज़रत** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **फ़तावा रज़विय्या शरीफ़** जिल्द 21 सफ़हा 184 पर फ़रमाते हैं : सुन्नियों को ग़ैर मज़्हब वालों से इख़्तिलात़ (मेलजोल) ना जाइज़ है ख़ुसूसन यूं कि वोह (बद मज़्हब) अफ़्सर हों येह (सुन्नी) मा तह़्त। قَالَ اللّٰہُ تَعَالٰی (या'नी **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है) :

وَ اِمَّا یُنْسِیَنَّكَ الشَّیْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۶۸﴾ (پ ۷ الانعام ٦٨)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो कहीं तुझे शैत़ान भुलावे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ।

रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : तुम उन से दूर रहो और वोह तुम से दूर रहें, कहीं तुम्हें गुमराह न कर दें और फ़ित्ने में न डाल दें।

(مقدمہ صحیح مسلم ص٩ حدیث ٧)

कुफ़्फ़ार के साथ मुश्तरका खाना पकाना कैसा ?

सुवाल : पाकिस्तान के बाहर मुलाज़मत करने वाले छड़े अफ़्राद जिन में मुसल्मान और काफ़िर सभी होते हैं,

अक्सर एक ही कमरे में मिलजुल कर रहते और मुश्तरका खाना पका कर खाते हैं। इन के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब : इस त़रह़ के एक सुवाल के जवाब में वक़ारुल मिल्लत ह़ज़रते मौलाना **मुफ़्ती मुह़म्मद वक़ारुद्दीन** क़ादिरी रज़वी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى फ़रमाते हैं : मुसल्मान को किसी ग़ैर मुस्लिम के साथ दोस्ती और मह़ब्बत के तअ़ल्लुक़ात रखना जाइज़ नहीं। लिहाज़ा सूरते मस्ऊला में एक साथ खाना पकाना और मह़ब्बत के तअ़ल्लुक़ात क़ाइम रखना जाइज़ नहीं। अगर ग़ैर मुस्लिम खाना वग़ैरा फ़रोख़्त करता है तो उस से वोह चीज़ें ख़रीद कर खाना जाइज़ हैं जिन में गोश्त की मिलावट न हो, गोश्त ग़ैर मुस्लिम का पकाया हुवा मुसल्मान ख़रीद कर भी नहीं खा सकता।[(1)] लिहाज़ा सब लोग जब एक मकान में रहते हैं तो मुसल्मानों को अपने खाने पीने का इन्तिज़ाम अ़लाह़दा करना चाहिये।

(वक़ारुल फ़तावा, जि. 1, स. 345)

मदीना

1 : मुसल्मान का ज़ब्ह़ किया हुवा गोश्त मुसल्मान ही की निगरानी में अगर काफ़िर इस त़रह़ पकाए कि मुसल्मान की नज़र से एक लम्ह़े के लिये भी ओझल न हुवा तो खाया जा सकता है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

औलिया से महब्बत और कुफ़्फ़ार से अदावत फ़र्ज़े आ'ज़म है

मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "हर मुसल्मान पर **फ़र्ज़े आ'ज़म** है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के तमाम दोस्तों (या'नी नबियों, सह़ाबियों और वलियों वग़ैरा) से महब्बत और उस के सब दुश्मनों (या'नी काफ़िरों, बद मज़्हबों, बे दीनों और मुरतद्दों) से अदावत रखे।"

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! काफ़िरों के पास पढ़ने, इन के साथ मिलजुल कर कामकाज करने और इन की सोहबत इख़्तियार करने में ईमान के लिये सख़्त ख़त़रा रहता है क्यूं कि वक़्तन फ़ वक़्तन दौराने बात वोह **कुफ़्रिय्यात** बकते हैं और अगर शागिर्द या मुलाज़िम वग़ैरा ने मा'ना समझने के बा वुजूद किसी क़त़्ई **कुफ़्र** पर मब्नी जुम्ले पर मुरुव्वतन भी हां में हां कर दी तो उस का भी ईमान बरबाद हो गया। **अल्लाहु रह़मान** عَزَّوَجَلَّ हमारा ईमान सलामत रखे।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى عليه واٰله وسلّم

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

काफ़िर का झूटा खाना

सुवाल : काफ़िर का झूटा खाना खा सकते हैं या नहीं ?

जवाब : बचना मुनासिब है। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن की ख़िदमत में पूछा जाने वाला सुवाल और उस के जवाब का इक़्तिबास मुलाह़ज़ा हो।

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन इस मस्अले में कि अगर कोई **काफ़िर** एक बरतन में खाना खाए और बरतन में कुछ खाना बाक़ी रहे तो बाक़ी खाना मुसल्मान खा सकता है या नहीं ? **अल जवाब : अल्लाह** तआ़ला की बे शुमार रह़मतें ह़ज़रते शैख़ सा'दी قُدِّسَ سِرُّہٗ पर कि फ़रमाते हैं :

نِیم خُوردۂِ سَگ ھم سَگ را شاید

(कुत्ते का झूटा कुत्ते ही के लाइक़ है या'नी वोही खाए)

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 21, स. 667)

काफ़िर को ता'वीज़ देना कैसा ?

सुवाल : क्या काफ़िर को **ता'वीज़** दे सकते हैं ?

जवाब : सिर्फ़ हिन्दिसात (या'नी आ'दाद) वाले ता'वीज़ात दे सकते हैं। आयात और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नामों वाले ता'वीज़ात न दिये जाएं। चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : **काफ़िर** को अगर **ता'वीज़** दिया जाए तो "मुज़्मर" (या'नी पोशीदा) जिस में हिन्दिसे (या'नी आ'दाद) होते हैं न कि "मज़्हर" जिस में कलामे इलाही, अस्माए इलाही के ह़ुरूफ़ होते हैं। وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَم। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 24, स. 197)

क्या मुरतद को ता'वीज़ दे सकते हैं ?

सुवाल : तो क्या मुरतद को भी ता'वीज़ दे सकते हैं ?

जवाब : बिग़ैर मस्लह़ते शरई मुरतद को ता'वीज़ न दिया जाए। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : जो (काफ़िर या मुरतद) मुसल्मान को ईज़ा दिया करता हो अगर्चे रसाइल की तह़रीर या मज़्हबी तक़रीर से, उस पर से दफ़्ए़ बला ख़्वाह रफ़्ए़ मरज़ का भी नक़्श न दिया जाए। और ऐसा न हो (या'नी मुसल्मान को ईज़ा न देता हो) और उस काम (या'नी ता'वीज़ देने) में किसी मुसल्मान का ज़ाती नुक़्सान भी न हो जब भी मुरतद्दों का मुब्तलाए बला ही रहना भला।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 26, स. 608)

कुफ़्फ़ार के मेलों में शिर्कत

सुवाल : कुफ़्फ़ार के मेलों और तहवारों में बिग़ैर किसी ह़ाजत के आ़म आदमी का शरीक होना कैसा ?

जवाब : सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "कुफ़्फ़ार के मेलों, तहवारों में शरीक हो कर उन के मेले और जुलूसे मज़्हबी की शानो शौकत बढ़ाना **कुफ़्र** है।" जैसे रामलीला और जन्माष्टमी और राम नवमी वग़ैरा के मेलों में शरीक होना।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 9, स. 184)

दसहरे में शिर्कत फ़िक़्ही कुफ़्र है या कलामी ?

सुवाल : हिन्दूओं के मज़्हबी तहवार मसलन दसहरे में शिर्कत करना कैसा ? अगर कुफ़्र है तो **फ़िक़्ही कुफ़्र** है या **कलामी कुफ़्र** ?

जवाब : येह **फ़िक़्ही कुफ़्र** है। इस को **कुफ़्रे लुज़ूमी** भी बोलते हैं। **फ़िक़्ही कुफ़्र** का मुरतकिब इस्लाम से ख़ारिज नहीं होता, न उस का निकाह़ टूटता है न बैअ़त। नीज़ उस के नेक आ'माल भी बरबाद नहीं होते। ताहम उसे **तजदीदे ईमान** और **तजदीदे निकाह़** का हुक्म दिया जाता है। दसहरे में शिर्कत के **कलामी कुफ़्र** जिसे **इल्तिज़ामी कुफ़्र** भी कहते हैं होने की भी सूरत है

जिस से आदमी इस्लाम से ख़ारिज हो जाता है। इस मस्अले को मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मुबारक फ़तवे के इस **इक़्तिबास** से समझिये चुनान्चे फ़रमाते हैं : जो मुरतकिबे **कुफ़्रे फ़िक़्ही** है जैसे **दसहरे** की शिर्कत या काफ़िरों की **जय** बोलना उस पर **तजदीदे इस्लाम** लाज़िम है और अपनी औ़रत से **तजदीदे निकाह़** करे और जो **क़त्अ़न काफ़िर** हो गया जैसे दसहरे में बतौ़रे मज़्कूर हुनूद[1] के साथ **नाक़ूस** (या'नी संख जो कि हिन्दू पूजा करते वक़्त बजाते हैं) बजाने या **मा'बूदाने कुफ़्फ़ार** पर फूल चढ़ाने वाला **काफ़िर मुरतद** हो गया, उस की औ़रत निकाह़ से निकल गई, अगर ताइब हो और इस्लाम लाए जब भी औ़रत को इख़्तियार है बा'दे इ़द्दत जिस से चाहे निकाह़ कर ले। और (मुरतद) बे तौबा मर जाए तो उसे मुसल्मानों की तरह़ ग़ुस्ल व कफ़न देना **ह़राम**, उस के जनाज़े की शिर्कत **ह़राम**, उसे मक़ाबिरे मुस्लिमीन (या'नी मुसल्मानों के क़ब्रिस्तान) में दफ़्न करना **ह़राम**, उस पर (जनाज़े की) नमाज़ पढ़ना **ह़राम**। اِلٰی غَیْرِ ذٰلِکَ مِنَ الْاَحْکَام (इस के इलावा दीगर अह़काम भी), وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم ।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 674)

1 : हिन्दू की जम्अ़ "हुनूद" है।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

कुफ़्फ़ार के तहवार में तोह़फ़े का लेन देन

सुवाल : कुफ़्फ़ार के तहवार के मौक़अ़ पर उन को **तोह़फ़े** देना कैसा है ?

जवाब : ह़राम है और अगर उन के तहवार की ता'ज़ीम की निय्यत हो तो **कुफ़्र**। चुनान्चे मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : **नैरोज़, मेहरगान** (आतश परस्तों के तहवार) के नाम पर तह़ाइफ़ का देना **ह़राम** और काफ़िरों के तहवारों की ता'ज़ीम मक़्सूद हो तो **कुफ़्र** है। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 673, मुलख़्ख़सन) **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं : जिस ने **नैरोज़** (या'नी आतश परस्तों की ईद नौरोज़) के दिन मजूसियों (या'नी आग की पूजा करने वालों) की त़रफ़ (इस दिन की ता'ज़ीम की निय्यत से) कोई तोह़फ़ा मसलन फ़क़त़ **अन्डा** भी अगर भेजा तो उस ने **कुफ़्र** किया। (مِنَحُ الرَّوض ص٤٩٩) जिस ने काफ़िरों के तहवार की ता'ज़ीम के लिये कोई काम किया मसलन कोई शै ख़रीदी उस पर हुक्मे **कुफ़्र** है। (فتاوٰی قاضی خان ج ٢ ص٤٦٩۔٤٧٠ ملخّصاً) सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : कुफ़्फ़ार के तहवारों के दिन मह़ज़ इस वज्ह से चीज़ें

ख़रीदना कि कुफ़्फ़ार का तहवार है येह भी **कुफ़्र** है जैसे **दीवाली** में खिलोने और मिठाइयां ख़रीदी जाती हैं कि आज ख़रीदना **दीवाली** मनाने के सिवा कुछ नहीं। यूंही कोई चीज़ ख़रीद कर उस रोज़ मुश्रिकीन के पास हदिय्या करना (या'नी तोह़फ़ा देना) जब कि मक़्सूद उस दिन की ता'ज़ीम हो तो **कुफ़्र** है।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 9, स. 184)

मुश्रिक की बख़्शिश का अ़क़ीदा रखना कैसा ?

सुवाल : ज़ैद कहता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहेगा तो मुश्रिक को भी बख़्श कर दाख़िले जन्नत फ़रमा देगा।

जवाब : ज़ैदे बे क़ैद का येह क़ौल **कुफ़्रिय्या** है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वा'दा है कि वोह मुश्रिक को कभी नहीं बख़्शेगा चुनान्चे पारह 5 **सूरतुन्निसाअ** आयत नम्बर 48 में इर्शादे रब्बुल इबाद होता है :

اِنَّ اللّٰهَ لَا یَغْفِرُ اَنْ یُّشْرَكَ بِهٖ وَ یَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ یَّشَآءُ ۚ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** इसे नहीं बख़्शता कि उस के साथ कुफ़्र किया जाए और कुफ़्र से नीचे जो कुछ है जिसे चाहे मुआ़फ़ फ़रमा देता है।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

घर में कुफ़्फ़ार के बुतों की तसावीर आवेज़ां करना

सुवाल : अपने घर में कुफ़्फ़ार के बुतों की तसावीर आवेज़ां करना कैसा है ?

जवाब : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "बुतों की नापाक तस्वीरों को दीवारों पर आवेज़ां करना अगर वैसे आ़दत के त़ौर पर हो कि इस को पागल लोग मकानात की ज़ीनत समझते हैं और किसी **कुफ़्र** की त़रफ़ तजावुज़ न किया हो तो येह (अगर्चे कुफ़्र नहीं मगर) ख़बीस तरीन कबीरा गुनाह है जो जहन्नम में ले जाने वाला, फ़िरिश्तों को दूर और शैत़ानों को क़रीब करने वाला है । और अगर येह काम कुफ़्फ़ार की रस्म को पसन्द करते हुए और दोज़ख़ियों के मा'बूदों की ता'ज़ीम के त़ौर पर किया हो तो येह **सरीह़ कुफ़्र** है । जो इस की तक्फ़ीर का बाइ़स है ।"

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 13, स. 487)

काफ़िर के पास नोकरी करना कैसा ?

सुवाल : काफ़िर के पास नोकरी करना कैसा ?

जवाब : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते

हैं : काफ़िर की नोकरी मुसल्मान के लिये वोही जाइज़ है जिस में इस्लाम और मुस्लिम की ज़िल्लत न हो। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 21, स. 121) बहर ह़ाल काफ़िर के यहां ज़िल्लत की नोकरी जैसे उस के पाउं दबाना, उस के यहां गन्द (कचरा) उठाना, गन्दी नालियां साफ़ करना वग़ैरा जाइज़ नहीं।

मुरतद के यहां मुलाज़मत कर सकते हैं या नहीं ?

सुवाल : क्या **मुरतद** के यहां मुलाज़मत कर सकते हैं ? **मुरतद** की नोकरी करने वाले को **काफ़िर** कहना कैसा ?

जवाब : मुरतद के यहां **नोकरी** नहीं कर सकते। मगर नोकरी करने वाला इस से **काफ़िर** नहीं हो जाता। चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : काफ़िरे अस्ली ग़ैरे मुरतद की वोह नोकरी जिस में कोई अम्र ना जाइज़े शरई करना न पड़े जाइज़ है और किसी दुन्यवी मुआ़मले की बातचीत उस से करना और इस के लिये कुछ देर उस के पास बैठना भी मन्अ़ नहीं। इतनी बात पर (किसी मुसल्मान को) **काफ़िर** बल्कि **फ़ासिक़** भी नहीं कहा जा सकता। हां **मुरतद** के साथ येह सब बातें मुत़्लक़न मन्अ़ हैं और **काफ़िर**

उस वक़्त भी (या'नी मुरतद के पास नोकरी की वज्ह से भी) न होगा मगर येह कि उस के मज़्हब व अ़क़ीदए कुफ़्र पर मुत्तलअ़ हो कर उस के कुफ़्र में शक करे तो अलबत्ता **काफ़िर** हो जाएगा बिग़ैर सुबूते **वज्हे कुफ़्र** के मुसल्मान को **काफ़िर** कहना सख़्त अ़ज़ीम गुनाह है बल्कि **ह़दीस** में फ़रमाया कि वोह कहना उसी कहने वाले पर पलट आता है। وَالعِيَاذُ بِاللّٰهِ تَعَالٰى । وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم ।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 23, स. 591, 592)

काफ़िरों के मह़ल्ले से जल्दी गुज़र जाइये !

सुवाल : काफ़िरों की दुन्यवी मजालिस (बैठकों) में शरीक होना कैसा ?

जवाब : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "(काफ़िरों की मजालिस) हर वक़्त مَعَاذَ اللّٰه मह़ल्ले नुज़ूले ला'नत हैं (या'नी इन लोगों की बैठकें हर वक़्त ला'नतें उतरने के मवाक़ेअ़ हैं) तो उन से दूरी बेहतर, यहां तक कि उ़लमा फ़रमाते हैं : उन के मह़ल्ले में हो कर गुज़र हो तो शिताबी करता हुवा (या'नी झटपट) निकल जाए।" वहां आहिस्ता चलना ना पसन्द रखते हैं तो रुकना ठहरना ब दरजए औला मक्रूह। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 23, स. 525) यहां मक्रूह से मुराद मक्रूहे तन्ज़ीहा है (ऐज़न, स. 526) अलबत्ता उन की इबादत

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

गाहों में जाना **मक्रूहे तह़रीमी** है क्यूं कि वोह मज्मए़ शयातीन हैं। (ऐज़न, स. 524, मुलख़्ख़सन)

कुफ़्फ़ार के मह़ल्लों में कारोबार करने जा सकते हैं या नहीं ?

सुवाल : काफ़िरों के मह़ल्लों वग़ैरा में ब ग़रज़े तिजारत आना जाना कैसा है ?

जवाब : काफ़िरों के मह़ल्लों वग़ैरा में (1) अगर किसी गुनाह का इरतिकाब न करना पड़े मसलन वहां नाचरंग की मह़फ़िल न हो (2) उन का कोई मज़्हबी तहवार न हो (3) या वहां उन के किसी मेले वग़ैरा तमाशा देखने की निय्यत न हो तो इन सूरतों में ब ग़रज़े तिजारत और दीगर दुन्यवी कामों के लिये आना जाना जाइज़ है लेकिन फिर भी मक्रूहे तन्ज़ीही ज़रूर है और बचना बेहतर है कि काफ़िरों के मह़ल्लों और घरों से दूर रहने और वहां से जल्द गुज़र जाने ही में आ़फ़िय्यत है।

काफ़िरों के मेलों में तिजारत के लिये जाना

सुवाल : क्या कुफ़्फ़ार के मेलों में कारोबार करने जा सकते हैं या नहीं ?

जवाब : कुफ़्फ़ार के मेलों में ब ग़रज़े तिजारत जाने के मुतअ़ल्लिक़ पूछे जाने वाले सुवाल का जवाब देते हुए मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

हैं : अगर वोह मेला उन का मज़्हबी है जिस में जम्अ़ हो कर ए'लाने कुफ़्र व अदाए रुसूमे शिर्क करेंगे तो ब क़स्दे तिजारत जाना भी ना जाइज़ व मक्रूहे तह़रीमी है, और हर मक्रूहे तह़रीमी सग़ीरा और हर सग़ीरा इसरार से कबीरा। मज़ीद आगे चल कर जवाज़ की सूरत बयान करते हुए फ़रमाते हैं : और अगर मज्मअ़ मज़्हबी नहीं बल्कि सिर्फ़ लह्वो लइब का मेला है तो महूज़ ब ग़रज़े तिजारत जाना फ़ी नफ़्सिही ना जाइज़ व मम्नूअ़ नहीं जब कि किसी गुनाह की त़रफ़ मुअद्दी (या'नी गुनाह की जानिब ले जाने वाला) न हो। येह जवाज़ भी उसी सूरत में है कि उसे वहां जाने में किसी मा'सियत (गुनाह) का इरतिकाब न करना पड़े। मसलन जल्सा नाचरंग का हो और इसे उस से दूर व बेगाना मौज़अ़ में (या'नी दूर अलग थलग) जगह न हो तो येह जाना मुस्तल्ज़िमे मा'सियत (या'नी मा'सियत व गुनाह को लाज़िम करने वाला) होगा और हर मल्ज़ूमे मा'सियत, मा'सियत (या'नी जिस काम या त़रीक़े कार से मा'सियत लाज़िम आए वोह ख़ुद मा'सियत है) और जाना महूज़ ब ग़रज़े तिजारत हो न कि तमाशा देखने की निय्यत (से), कि इस निय्यत से मुत़्लक़न मम्नूअ़ अगर्चे (वोह तक़रीब) ग़ैर मज़्हबी हो। इस लिये कि इन की ईदें और मजलिसें

बद तरीन क़बाह़तों (सख़्त बुरी बातों) और रुस्वा कुन मुन्करात (और रुस्वा करने वाली शरई मम्नूआ़त) पर मुश्तमिल होती हैं और ह़राम से ख़ुश होना (भी) **ह़राम** है जैसा कि **दुर्रे मुख़्तार** वग़ैरा में तस्रीह़ फ़रमाई गई है। **अल्लाह** तआ़ला पाक बरतर और ख़ूब जानने वाला है। (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये फ़तावा रज़विय्या जिल्द 23 सफ़ह़ा 523 ता 526 का मुतालआ़ फ़रमा लीजिये)

इरादए कुफ़्र के बारे में सुवाल जवाब

सुवाल : किसी शख़्स ने येह जुम्ला कहा : "अगर मेरा फ़ुलां काम न हुवा तो मैं **काफ़िर** हो जाऊंगा।" तो क्या हुक्म होगा ?

जवाब : वोह शख़्स येह कहते ही **काफ़िर** हो गया कि येह इरादए कुफ़्र है और इरादए कुफ़्र भी **कुफ़्र** है। **फ़तावा आ़लमगीरी** जिल्द 2 सफ़ह़ा 279 पर है : बीवी ने शोहर से कहा, अगर तूने आयिन्दा मुझ पर ज़ियादती की या मेरे लिये येह चीज़ न ख़रीदी तो मैं काफ़िरा हो जाऊंगी तो वोह अभी से ही **काफ़िरा** हो गई।

"अल्लाह व रसूल एक हैं" कहना कैसा ?

सुवाल : ज़ैद ने कहा : मैं कहता हूं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **व रसूल**

एक हैं, इस कहने से चाहे मैं **काफ़िर** ही क्यूं न हो जाऊं।" ज़ैद के लिये क्या हुक्म है?

जवाब : इसी त़रह़ के एक सुवाल का जवाब देते हुए **फ़क़ीहे मिल्लत** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती जलालुद्दीन अह़मद अमजदी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى फ़रमाते हैं : अगर ज़ैद ने येह कहा कि **अल्लाह व रसूल** एक हैं और मुराद येह थी कि ब ए'तिबारे ज़ात एक हैं तो येह **कुफ़्र** है और अगर मुराद येह थी कि ब ए'तिबारे इत़ाअ़त एक हैं कि रसूल की इत़ाअ़त **अल्लाह** की इत़ाअ़त है और **अल्लाह** की इत़ाअ़त **रसूल** की इत़ाअ़त है तो **कुफ़्र** नहीं। मगर ऐसे कलिमात से जो मौहिमे शिर्क या कुफ़्र (या'नी ऐसी बातें जिस से ज़ेह्न कुफ़्रिय्या या शिर्किय्या मा'ना की त़रफ़ सब्क़त करता हो) एह़तिराज़ (या'नी बचना) वाजिब है और येह कहना कि "चाहे मैं इस कहने से **काफ़िर** ही क्यूं न हो जाऊं" चूंकि इस में **कुफ़्र** के साथ अपनी रिज़ा (मन्दी) ज़ाहिर कर रहा है। लिहाज़ा येह भी **कुफ़्र** है। **फ़तावा आ़लमगीरी** जिल्द 2 सफ़ह़ा 235 में है : مَــــنْ يَّرْضٰى بِكُفْرِ نَفْسِهٖ فَقَدْ كَفَرَ या'नी "जो शख़्स अपने **कुफ़्र** पर राज़ी हो तो वोह **काफ़िर** हो गया।" लिहाज़ा ज़ैद तौबा के साथ तजदीदे ईमान व तजदीदे निकाह़ भी करे। وَهُوَ تعالٰی اعلَمُ بِالصَّواب।

(फ़तावा फ़ैज़ुर्रसूल, जि. 1, स. 4)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو یعلی)

वीज़ा फ़ोर्म पर ख़ुद को क्रिस्चेन लिखना कैसा ?

सुवाल : मुसल्मान एजन्ट ने किसी मुसल्मान को **वीज़ा फ़ोर्म** पर अपने आप को **क्रिस्चेन** लिखने का मश्वरा दिया तो क्या हुक्म है ?

जवाब : मश्वरा देने वाले एजन्ट का ऐसा मश्वरा देना **कुफ़्र** है। जिस को मश्वरा दिया गया उसे लाज़िम है कि वोह इस मश्वरे को मुस्तरद कर दे (या'नी न माने) **फ़तावा आ़लमगीरी** में है : "दूसरे को **काफ़िर** होने का हुक्म या मश्वरा देने वाले पर हुक्मे **कुफ़्र** है, ख़्वाह जिस को हुक्म या मश्वरा दिया गया वोह **कुफ़्र** करे या न करे।"

(فتاوٰی عالمگیری ج ۲ ص ۲۷٦)

नोकरी की ख़ातिर झूटमूट ख़ुद को यहूदी लिखना कैसा ?

सुवाल : कुफ़्फ़ार के ममालिक में नोकरी ह़ासिल करने के लिये **वीज़ा फ़ोर्म** पर अपने आप को झूटमूट **यहूदी** लिख देना कैसा है ?

जवाब : कुफ़्र है। बा'ज़ लोग जो इज़ालए क़र्ज़ व तंगदस्ती या दौलत की ज़ियादती के लिये कुफ़्फ़ार के यहां नोकरी की ख़ातिर या **वीज़ा फ़ोर्म** पर या किसी त़रह़ की रक़म वग़ैरा की बचत के लिये दरख़्वास्त पर ख़ुद को ईसाई (क्रिस्चेन), यहूदी, क़ादियानी या किसी भी

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

काफ़िर व मुरतद गुरोह का "फ़र्द" लिखते या लिखवाते हैं उन पर हुक्मे **कुफ़्र** है।

"मैं क़ादियानी हो जाऊंगा" कहना कैसा ?

सुवाल : किसी से माली मदद की दरख़्वास्त करते हुए कहना या लिखना कि अगर आप ने मेरा काम न किया तो मैं **क़ादियानी** या क्रिस्चेन हो जाऊंगा। येह कैसा ?

जवाब : कहने वाला कहते ही काफ़िर हो गया। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "**अ़ज़्मे कुफ़्र** (या'नी काफ़िर होने का इरादा करना) फ़िलह़ाल (या'नी अभी से ही) **कुफ़्र** है।"

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 293)

एक मग़रूर का इ़ब्रतनाक अन्जाम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हम सब को **ईमान की ह़िफ़ाज़त** की ज़रूर ज़रूर ज़रूर फ़िक्र करनी चाहिये। फ़ुज़ूल बक बक की आ़दत, गुनाहों की बुरी ख़स्लत बेबाकी व ग़फ़्लत और ग़ुरूर व नख़्वत वग़ैरा बड़े ख़त़रनाक बात़िनी अमराज़ हैं। इन वुजूहात की बिना पर या दूसरों को बिला इजाज़ते शरई झाड़ने, लताड़ने की बुरी लत वग़ैरा के सबब **ईमान** बरबाद हो गया तो क्या होगा ! हुज्जतुल इस्लाम **ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي नक़्ल करते हैं : बनी इस्राईल का एक **मग़रूर** आदमी अपने बन्द कमरे में किसी के साथ तन्हाई में था कि इतने में एक शख़्स उस की त़रफ़ एक दम लपका। उस **मग़रूर** ने कहा : अन्दर दाख़िले की तुम्हें किस ने इजाज़त दी और तुम हो कौन ? नौ वारिद ने कहा : मुझे इस घर के मालिक ने इजाज़त दी और मैं वोह हूं जिसे कोई दरबान नहीं रोक सकता, मुझे बादशाहों से भी इजाज़त लेने की ज़रूरत नहीं होती, न मुझे किसी का दबदबा डरा सकता है, न ही मुझ से कोई **मग़रूर** व सरकश बच सकता है। येह सुन कर वोह **मग़रूर** आदमी ख़ौफ़ से थर्राता हुवा मुंह के बल गिर पड़ा, फिर इन्तिहाई ज़िल्लत के साथ मुंह उठा कर **बोला** : आप **मलकुल मौत** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मा'लूम होते हैं ! फ़रमाया : हां मैं **मलकुल मौत** हूं। उस ने **अ़र्ज़** की : क्या मुझे मोहलत मिल सकती है ताकि तौबा कर के नेकियों का अ़हद करूं ? **फ़रमाया** : नहीं, तुम्हारे सांस पूरे हो चुके हैं। **बोला** : मुझे कहां ले जाएंगे ? **फ़रमाया** : "उस मक़ाम पर जहां तूने आ'माल भेजे हैं, और उस घर की त़रफ़ जो तूने तय्यार किया है।" **कहा** : अफ़्सोस ! मैं

ने न कोई नेकियां आगे भेजी हैं न ही कोई अच्छा घर तय्यार किया है। **मलकुल मौत** عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : फिर तो तुझे उस भड़क्ती आग की त़रफ़ ले जाया जाएगा जो तेरा गोश्त पोस्त नोच लेगी। येह कह कर **मलकुल मौत** عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उस की रूह़ क़ब्ज़ कर ली और वोह मुर्दा हो कर गिर पड़ा। घर में कोहराम पड़ गया, चीख़ो पुकार और रोना धोना मच गया। इस वाक़िए के रावी **ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद रक़्क़ाशी** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अगर इन सोग वारों को उस के "बुरे अन्जाम" का पता चल जाता तो इस से भी ज़ियादा रोना धोना मचाते।

(إحياءُ العلوم ج ٥ ص ٢١٦)

मौत के वक़्त सल्बे ईमान का अन्देशा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्या की बे इन्तिहा मह़ब्बत, ह़लाल व ह़राम की परवाह किये बिग़ैर धन कमाने की धुन और गुनाहों की कसरत की नुहूसत बसा अवक़ात दिल से दीनो ईमान की क़द्रो मन्ज़िलत निकाल देती, **कुफ़्र पर ख़ातिमे** का सबब बनती और हमेशा हमेशा के लिये जहन्नम की भड़क्ती हुई आग में झोंक देती है। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत,** इमामे

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن का इर्शाद है : **उ़लमाए किराम** फ़रमाते हैं : **जिस को (ज़िन्दगी में) सल्बे ईमान का ख़ौफ़ न हो नज़्अ़ के वक़्त उस का ईमान सल्ब हो जाने का शदीद ख़त़रा है।** (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, हिस्सा : 4, स. 390) ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं **सिद्दीक़ीन** رَحِمَھُمُ اللّٰہُ الْمُبِین हर लम्ह़ा **बुरे ख़ातिमे** के एह़सास से ख़ौफ़ज़दा रहते हैं और ऐसों ही के लिये पारह 18 **सूरतुल मुअमिनून** की आयत नम्बर 60 में इर्शाद फ़रमाया गया है :

وَقُلُوْبُھُمْ وَجِلَۃٌ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उन के दिल डर रहे हैं।

(اِحیاءُ العلوم ج٤ ص ٢١١)

आह ! सल्बे ईमां का ख़ौफ़ खाए जाता है
काश ! मेरी मां ने ही मुझ को न जना होता

"कुफ़्र से बचो" के आठ हुरूफ़ की निस्बत से 8 कुफ़्रिय्यात की निशान देही

﴾1﴿ **कुफ़्र** को हलका जानना भी **कुफ़्र** है।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 324)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा। (ابن عدی)

﴾2﴿ अपने कुफ़्र का इक़रार करने वाला **काफ़िर** है।

(ऐज़न, स. 366)

﴾3﴿ अगर किसी आदमी को कुफ़्र करने का हुक्म या ﴾4﴿ मश्वरा दिया अगर्चे मज़ाक़ के तौर पर हो या ﴾5﴿ इस बात का अ़ज़्म किया कि वोह (या'नी ख़ुद) किसी को **कुफ़्र** करने का हुक्म या ﴾6﴿ मश्वरा देगा तो उस पर हुक्मे **कुफ़्र है**, क्यूं कि कुफ़्र पर राज़ी होना कुफ़्र है, ख़्वाह अपने **काफ़िर** होने पर राज़ी हो या ﴾7﴿ दूसरे के। (فتاوٰی خانیہ ج ٤ ص٤٦٦، اَلْبَحْرُ الرَّائِق ج٥ ص٢٠٨)

﴾8﴿ दूसरे के **कुफ़्र** पर राज़ी होना अगर अपनी दुश्मनी व अ़दावत की वज्ह से हो तो कुफ़्र नहीं और अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की शान में गुस्ताख़ी की निय्यत से हो तो **कुफ़्र** है। (فتاوٰی تاتارخانیہ ج٥ ص ٤٦٠)

कुफ़्र पर मजबूर किये जाने के बारे में सुवाल जवाब

सुवाल : अगर किसी को **कुफ़्र** करने पर मजबूर किया जाए तो वोह क्या करे ?

जवाब : अगर कोई शख़्स क़त्ल कर देने या जिस्म का कोई उ़ज़्व काट डालने या शदीद मार मारने की सहीह़ धमकी दे कर **कुफ़्र** करने का हुक्म दे और जिस को धमकी दी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

गई वोह जानता है कि येह ज़ालिम जो कुछ कह रहा है कर गुज़रेगा। तो अब ज़ाहिरी तौर पर **कलिमए कुफ़्र** बकने या बुत को सज्दा वग़ैरा करने की रुख़्सत है और दिल हस्बे साबिक़ **ईमान** पर मुत्मइन होने की सूरत में **काफ़िर** न होगा। (دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج۹ ص ۲۲٦)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पारह 14 **सूरए नह्ल** आयत नम्बर 106 में इर्शाद फ़रमाता है :

مَنْ كَفَرَ بِاللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ اِیْمَانِهٖۤ اِلَّا مَنْ اُكْرِهَ وَ قَلْبُهٗ مُطْمَىٕنٌّۢ بِالْاِیْمَانِ (پ ۱۴ نحل ۱۰٦)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जो ईमान ला कर **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) का मुन्किर हो सिवा उस के जो मजबूर किया जाए और उस का दिल ईमान पर जमा हुवा हो।

मजबूरी में तोरिये की सूरतें

सुवाल : इकराहे शरई पाए जाने की सूरत में अगर कोई "तोरिया" करना जानता हो तो क्या हुक्म है ?

जवाब : इस की मुख़्तलिफ़ सूरतों का बयान करते हुए सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "इस शख़्स को चाहिये कि अपने क़ौल व

फ़े'ल में "तोरिया" करे या'नी अगर्चे क़ौल या फ़े'ल का ज़ाहिर **कुफ़्र** हो मगर इस की निय्यत ऐसी हो कि **कुफ़्र** न रहे मसलन इस को मजबूर किया गया कि مَعَاذَ اللّٰه बुत को सज्दा करे और इस ने सज्दा किया तो येह निय्यत करे कि **बुत को नहीं बल्कि ख़ुदा** को सज्दा करता हूं। या مَعَاذَ اللّٰه सरकार **रिसालत मआब** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जनाब में गुस्ताख़ी करने पर मजबूर किया गया तो (गुस्ताख़ी करते वक़्त) किसी दूसरे शख़्स की निय्यत करे जिस का नाम **मुह़म्मद** हो। और अगर इस शख़्स के दिल में **तोरिये** का ख़याल आया मगर **तोरिया** न किया या'नी **ख़ुदा** के लिये सज्दे की निय्यत नहीं की तो येह शख़्स **काफ़िर** हो जाएगा और इस की औ़रत निकाह़ से ख़ारिज हो जाएगी और अगर इस शख़्स को **तोरिये** का ध्यान ही नहीं आया कि **तोरिया** करता और बुत को ही सज्दा किया मगर दिल से इस का मुन्किर (या'नी इन्कारी) है तो इस सूरत में **काफ़िर** नहीं होगा।"

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 15, स. 7, دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج۹ ص ۲۲۶)

तोरिये की ता'रीफ़ और इस का आसान त़रीक़ा

सुवाल : अभी आप ने जो **बहारे शरीअ़त** का जुज़्इय्या बताया

उस की तस्हील या'नी आसान लफ़्ज़ों में वज़ाहत कर दीजिये और **तोरिया** करने का आसान त़रीक़ा भी बता दीजिये।

जवाब : तोरिये के मा'ना हैं ज़ाहिरी अल्फ़ाज़ कुछ हों और मुराद कुछ। मसलन किसी ने कहा : खाना खा लीजिये। ह़ालां कि आप ने खाना नहीं खाया था फिर भी जवाब येह दिया कि "मैं ने खाना खा लिया है।" येह झूट हुवा। अगर येह जवाब देते वक़्त दिल में येह निय्यत थी कि "मैं ने कल खाना खा लिया है" तो येह **तोरिया** हुवा। मगर याद रखिये ! बिला इजाज़ते शरई **तोरिया** करना जाइज़ नहीं। चुनान्चे सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **तोरिया** या'नी लफ़्ज़ के जो ज़ाहिर मा'ना हैं वोह ग़लत़ हैं मगर इस ने दूसरे मा'ना मुराद लिये जो सह़ीह़ हैं। ऐसा करना बिला ह़ाजत जाइज़ नहीं और ह़ाजत हो तो जाइज़ है। **तोरिये** की मिसाल येह है कि तुम ने किसी को खाने के लिये बुलाया वोह कहता है मैं ने खाना खा लिया। इस के ज़ाहिर मा'ना येह हैं कि इस वक़्त का खाना खा लिया है मगर वोह येह मुराद लेता है कि कल खाया है येह भी झूट में दाख़िल है।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, स. 160, 161, عالمگیری ج ٥ ص ٣٥٢)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

अब अस्ल मस्अला समझने की कोशिश फ़रमाइये मसलन किसी ने आप को गन पोइन्ट पर ले कर बुत सामने रखा और مَعَاذَاللّٰه कहा : "इस को सज्दा करो।" अगर आप जानते हैं कि इस की बात नहीं मानूंगा तो वाक़ेई येह गोली मार देगा तो अब सज्दा करने में येह निय्यत कीजिये कि "मैं बुत को नहीं बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को सज्दा कर रहा हूं।" या इसी त़रह़ उस ने कहा कि مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **मुह़म्मद** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़ुलां गाली दो। तो गाली बकते वक़्त मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निय्यत नहीं बल्कि किसी दूसरे ऐसे शख़्स की निय्यत कर ले जिस का नाम **मुह़म्मद** हो मसलन अपने भाई या दोस्त या पड़ोसी का नाम **मुह़म्मद** है तो उसी का तसव्वुर बांध ले कि मैं उस मुह़म्मद नामी आदमी को गाली दे रहा हूं। **तोरिये** का मस्अला जानने, त़रीक़ा मा'लूम होने, उस वक़्त याद होने और मुम्किन होने के बा वुजूद अगर यहां **तोरिया** नहीं करेगा तो **कुफ़्र** करने की सूरत में ख़ुद **काफ़िर** हो जाएगा और अगर उस वक़्त **तोरिया** की त़रफ़ तवज्जोह न गई तो **बुत को सज्दा** करते वक़्त या **कुफ़्रिय्या** बात बकते वक़्त दिल **ईमान** पर मुत़्मइन है और जो कुछ करने लगा है उस का दिल अन्दर से इन्कारी है तो अब **काफ़िर** न होगा।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

क्या जान बचाने के लिये ब ज़ाहिर कुफ़्रिय्या फ़े'ल करना ज़रूरी है ?

सुवाल : अगर कोई मुसल्लह़ काफ़िर क़त्ल की सह़ीह़ धमकी दे कर बुत को **सज्दा** करने का हुक्म दे तो क्या जान बचाने के लिये बुत को सज्दा करना ज़रूरी हो जाएगा ?

जवाब : ऐसी सूरत में "रुख़्सत" येह है कि बुत को सज्दा कर ले जब कि दिल ईमान पर मुत़्मइन हो और "अ़ज़ीमत" (जो कि अफ़्ज़ल है वोह) येह है कि जान क़ुरबान कर दे मगर बुत को सज्दा न करे।

हिदाया शरीफ़ में है : "अगर जान से मार डालने या जिस्म के किसी उ़ज़्व को ज़ाएअ़ कर देने की सह़ीह़ धमकी दे कर किसी से कहा जाए कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का **इन्कार** कर या مَعَاذَ اللہ **सरकारे मदीना** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **गाली** दे तो उस को इजाज़त है कि इस बात का इज़्हार कर दे जो उसे (ज़ालिम की त़रफ़ से) हुक्म दिया गया और **तोरिया** करे। पस अगर उस ने (ज़ालिम के कहने के मुत़ाबिक़) ज़ाहिर कर दिया इस ह़ाल में कि उस का दिल **ईमान** पर जमा हुवा हो तो इस पर कोई गुनाह नहीं और अगर **सब्र** करे यहां तक कि **शहीद** कर दिया जाए और कुफ़्र को ज़ाहिर न करे तो उस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां अज्र मिलेगा।"

(هِدایہ ج ۲ ص ۲۷٤ مُلَخّصاً)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

अ़ज़ीमत की मश्हूर तरीन मिसाल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब इक्राहे शरई पाया जाए उस वक़्त **रुख़्सत** है कि दुश्मन के मुत़ालबे पर कुफ़्रिय्या कलिमा कह दे या कुफ़्रिय्या फ़े'ल बजा लाए। (जब कि दिल ईमान पर जमा हुवा हो) और जान बचा ले और **अ़ज़ीमत** येह है कि जान दे दे मगर दुश्मन के दिये जाने वाले ख़िलाफ़े शरीअ़त हुक्म पर अ़मल न करे और **अ़ज़ीमत** की फ़ज़ीलत ज़ियादा है। अ़ज़ीमत की मश्हूर तरीन मिसाल **करबला** का दर्दनाक वाक़िआ़ है जिस में **रुख़्सत** होने के बा वुजूद इमामे आ़ली मक़ाम सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने **अ़ज़ीमत** पर अ़मल किया और यज़ीदे पलीद की बैअ़त से इन्कार कर के अहले बैते अत़्हार और रुफ़क़ाए जां निसार समेत अपनी जान क़ुरबान कर दी।

घर लुटाना जान देना कोई तुझ से सीख जाए
जाने आ़लम हो फ़िदा ऐ ख़ानदाने अहले बैत عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **अ़ज़ीमत** पर अ़मल करने वाले जवां मर्दों से तारीख़े इस्लाम के अवराक़ भरे पड़े हैं, इस ज़िम्न में **दो ह़िकायात** पढ़िये और अपना ईमान ताज़ा कीजिये।

(1) सह़ाबी ने जान क़ुरबान कर दी

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान फ़रमाते हैं कि (नुबुव्वत के झूटे दा'वेदार) मुसैलिमए कज़्ज़ाब के जासूस दो मुसल्मानों को पकड़ कर उस के पास ले आए। उस ने एक से पूछा : क्या तुम गवाही देते हो कि (सय्यिदुना) **मुह़म्मद** (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) **अल्लाह के रसूल** हैं ? उस मुसल्मान ने कहा : हां। फिर मुसैलिमा ने पूछा : क्या तुम येह गवाही देते हो कि मैं **अल्लाह** का रसूल हूं ? फ़रमाया : "ऐसी बात सुनने से मेरे कान बहरे हैं।" इस पर उस ज़ालिम ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद करने का हुक्म दे दिया। फिर उस ने दूसरे मुसल्मान से पूछा : क्या तुम गवाही देते हो कि (सय्यिदुना) **मुह़म्मद** (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم)

अल्लाह के रसूल हैं ? उस ने कहा : हां, फिर उस ने पूछा : क्या तुम येह गवाही देते हो कि मैं **अल्लाह** का रसूल हूं ? उस ने कहा : हां। पस मुसैलिमा ने उसे छोड़ दिया। फिर वोह नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम, महबूबे रब्बे अज़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में हाज़िर हुवा और अपना माजरा सुनाया। **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : रहा तुम्हारा साथी तो वोह अपने ईमान पर क़ाइम रहा (या'नी उस ने **अज़ीमत** पर अमल किया) और रहे तुम तो तुम ने **रुख़्सत** पर अमल किया। (مُصنّف ابن شيبه ج٧ ص ٦٤٢)

देखा आप ने ! वोह सहाबी अपनी जान पर खेल गए मगर **कलिमए कुफ़्र** ज़बान पर न लाए। **अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

गुलामाने मुहम्मद जान देने से नहीं डरते
येह सर रह जाए या कट जाए वोह परवा नहीं करते

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

(2) येह इक जान क्या है अगर हों करोड़ों......

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन हु़ज़ाफ़ा सहमी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को रूमियों ने क़ैद कर लिया और अपने **बादशाह** के पास ले आए। उस ने आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से कहा कि **नसरानिय्यत** क़बूल कर लो, मैं तुम्हें इक्तिदार में भी शरीक कर लूंगा और अपनी बेटी का रिश्ता भी दूंगा। **आप** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "अगर तू अपना तमाम माल व मिल्किय्यत बल्कि इस के साथ अहले अ़रब की सारी की सारी दौलत भी इस शर्त़ पर दे कि मैं एक लम्ह़े के लिये अपने प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीन से फिर जाऊं तो फिर भी मैं क़बूल नहीं करूंगा।" **बादशाह** ने कहा कि मैं तुम्हें क़त्ल कर दूंगा। **आप** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : जो चाहो करो। चुनान्चे **बादशाह** के हुक्म से **आप** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को सूली पर लटका दिया गया और तीर अन्दाज़ों को कहा कि इन के हाथों और पाउं पर आहिस्ता आहिस्ता चोटें लगाओ। उन्हों ने ऐसा करना शुरूअ़ किया, इस दौरान **बादशाह** बराबर **आप** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه पर **नसरानिय्यत** (या'नी क्रिस्चेन मज़्हब) पेश करता

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

रहा लेकिन **आप** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सब्रो इस्तिक़्लाल का दामन मज़्बूती से थामे हुए डटे रहे। फिर उस ने सूली से उतारने का हुक्म दिया। इस के बा'द बादशाह ने **तांबे की एक देग** तपाने का हुक्म दिया और एक मुसल्मान क़ैदी को **आप** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने तपती हुई **देग** में डलवा दिया और उस ने वहीं तड़प कर जान दे दी। इस के बा'द फिर **बादशाह** ने कोशिश की, कि येह **नसरानिय्यत** (या'नी क्रिस्चेन मज़्हब) क़बूल कर लें लेकिन **आप** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने साफ़ इन्कार कर दिया। आख़िर **बादशाह** ने **आप** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी **गर्मा गर्म देग** में डालने का हुक्म दे दिया। **जब जल्लाद उन्हें उठा कर उस तपती हुई देग की त़रफ़ ले जा रहे थे तो बे साख़्ता आप** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **की आंखों से आंसू टपक पड़े**। येह देख कर **बादशाह** को कुछ उम्मीद पैदा हुई कि शायद अब इस्लाम को छोड़ कर मेरा मज़्हब क़बूल कर लेंगे। उस ने वापस लाने का हुक्म दिया, रोने की वज्ह पूछी। लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह फ़रमा कर उस की उम्मीदों पर पानी फेर दिया कि **मुझे रोना इस बात पर आया कि**

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

मेरी सिर्फ़ एक ही जान है जिसे आग में डाला जा रहा है, काश ! मेरे पास इतनी जानें होतीं जितने मेरे जिस्म पर बाल हैं और मैं सब को राहे ख़ुदा में क़ुरबान कर देता।

बादशाह (सह़ाबिये रसूल की ज़बर दस्त इस्तिक़ामत देख कर ह़ैरत में पड़ गया और उस) ने कहा : इस त़रह़ करो कि मेरे सर को बोसा दे दो मैं तुम्हें आज़ाद कर दूंगा। **आप** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : क्या मेरे साथ सारे मुसल्मान क़ैदियों को भी रिहा कर दोगे ? उस ने कहा : हां। चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस के सर को चूमा। **बादशाह** ने **आप** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को और तमाम मुसल्मान क़ैदियों को आज़ाद कर दिया। (تاریخ دِمشق لِابنِ عساکِر ج٢٧ص٣٥٩وغیرہ مُلَخّصاً) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

जिसे आज़ाद करे क़ामते शह का सदक़ा
रहे फ़ितनों से वोह ता रोज़े क़ियामत मह़फ़ूज़

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

तेरे नाम पर सब को वारा करूं मैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सहमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस्तिक़ामत के किस क़दर ज़बर दस्त पहाड़ थे, शरीअ़त की दी हुई **रुख़्सत** के मुत़ाबिक़ **तोरिये** के ज़रीए़ अपनी जान बचाने के लिये राज़ी न हुए बल्कि **अ़ज़ीमत** पर अ़मल करते हुए अपने मौक़िफ़ (नुक्त़ए नज़र) पर डटे रहे, और अगर ग़म था, सदमा था, तड़प थी तो येह थी कि काश मेरे रूएं रूएं में एक एक जान होती और मैं अपनी **करोड़ों जानों** को अपने **प्यारे प्यारे अल्लाहु रह़मान** عَزَّوَجَلَّ पर क़ुरबान कर देता। फिर जब **अ़ज़ीमत** पर क़ाइम रहते हुए जान बचने की सूरत दरपेश हुई तब भी फ़क़त़ अपनी फ़िक्र न की बल्कि मुसल्मानों की ज़बर दस्त **ख़ैर ख़्वाही** की मिसाल क़ाइम करते हुए सारे ही मुसल्मान क़ैदियों की रिहाई की तरकीब फ़रमाई।

येह इक जान क्या है अगर हों करोड़ों
तेरे नाम पर सब को वारा करूं मैं

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

कुफ़्रिय्या अफ़्आ़ल के बारे में सुवाल जवाब

सुवाल : जिस त़रह़ **कुफ़्रिय्या अक़्वाल** होते हैं क्या इसी त़रह़ **कुफ़्रिय्या अफ़्आ़ल** भी होते हैं ?

जवाब : जी हां। चुनान्चे सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی फ़रमाते हैं : अ़मले जवारेह़ (या'नी ज़ाहिरी आ'ज़ा के ज़रीए़ किये जाने वाले अ़मल) दाख़िले ईमान नहीं। अलबत्ता बा'ज़ आ'माल जो क़त़्अ़न मुनाफ़िये ईमान (या'नी यक़ीनी त़ौर पर ईमान के उलट) हों उन के मुरतकिब को **काफ़िर** कहा जाएगा। जैसे बुत या चांद सूरज को सज्दा करना और क़त्ले नबी या नबी की तौहीन या मुस्ह़फ़ शरीफ़ (या'नी क़ुरआने पाक) या का'बए मुअ़ज़्ज़मा की तौहीन और किसी सुन्नत को हलका बताना येह बातें यक़ीनन **कुफ़्र** हैं। यूहीं बा'ज़ आ'माल **कुफ़्र** की अ़लामत हैं जैसे ज़ुन्नार बांधना[1], सर पर चुटिया रखना, क़श्क़ा (या'नी हिन्दूओं की त़रह पेशानी पर मख़्सूस क़िस्म का टीका) लगाना।

1 : (1) ज़ुन्नार या'नी वोह धागा कि जो हिन्दू गले और बग़ल के दरमियान डाले रहते हैं नीज़ (2) वोह धागा या ज़न्जीर जो ईसाई, मजूसी और यहूदी कमर में बांधते हैं।

ऐसे **अफ़्आ़ल** के मुरतकिब को **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام **काफ़िर** कहते हैं। तो जब इन आ'माल से **कुफ़्र** लाज़िम आता है तो इन के मुरतकिब को अज़ सरे नौ इस्लाम लाने और इस के बा'द अपनी औ़रत से **तजदीदे निकाह़** का हुक्म दिया जाएगा।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सए अव्वल, स. 94)

माथे पर क़श्क़ा लगाना कैसा ?

सुवाल : माथे (या'नी पेशानी) पर हिन्दूओं की त़रह़ **क़श्क़ा** लगाना कैसा ?

जवाब : कुफ़्र है। इस ज़िम्न में **फ़तावा रज़विय्या शरीफ़** के एक सुवाल का ख़ुलासा और उस का जवाब नक़्ल करता हूं। **सुवाल :** हिन्दूस्तान में मुसल्मानों और हिन्दूओं के एक मुश्तरका जल्से में हिन्दूओं ने मुसल्मानों को चन्दन (क़श्क़ा, टीका) लगाया तो बा'ज़ों ने नहीं लगवाया और बा'ज़ों ने रोका नहीं (या'नी मन्अ़ नहीं किया) बल्कि लगवाया फिर बा'द को उसी वक़्त या थोड़ी देर के बा'द साफ़ कर लिया और कुछ लोगों ने लगा रहने दिया और इसी ह़ाल में घर लौटे या शाम तक लगा रहने दिया। इन तीन त़रह़ के लोगों के बारे में क्या हुक्मे शरई है ? **अल जवाब :** उस जल्से में शिर्कत ह़राम ह़राम सख़्त **ह़राम** थी बल्कि **फ़ुक़हाए**

किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام) के त़ौर पर हुक्म सख़्त तर।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जो किसी मुश्रिक के साथ मेलजोल रखे और उस के साथ सुकूनत पज़ीर रहे तो वोह भी उसी जैसा है। (سُنَنُ ابی داوٗد ج۳ ص۱۲۲ حديث ۲۷۸۷) दूसरी ह़दीस में है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जिस ने किसी क़ौम की कसरत बढ़ाई वोह उन्ही में से है। (تـاريـخ بـغـداد ج ۱۰ ص ۴۲ حـديـث ۵۱۶۷) **क़श्क़ा** (टीका) कि माथे (या'नी पेशानी) पर लगाया जाता है सिर्फ़ शिआ़रे कुफ़्फ़ार नहीं बल्कि ख़ास **शिआ़रे कुफ़्र** (या'नी कुफ़्र का त़ौर त़रीक़ा) बल्कि इस से भी अख़्बस (या'नी नापाक तरीन) ख़ास त़रीक़ए इबादते महादेव वग़ैरा अस्नाम (या'नी बुतों की पूजापाट के त़रीक़े) से है। इस के लगाने पर **राज़ी** होना **कुफ़्र** पर रिज़ा (राज़ी होना) है और अपने लिये सुबूते **कुफ़्र** पर रिज़ा बिल इज्माअ़ **कुफ़्र** है। "**मिनहुर्रौज़**" में है : जो अपनी ज़ात के **कुफ़्र** पर राज़ी हुवा वोह बिल इत्तिफ़ाक़ **काफ़िर** है और जो किसी के **कुफ़्र** पर राज़ी हुवा उस के बारे में मशाइख़ का इख़्तिलाफ़ है। (مِـنَـحُ الـرَّوض ص ۴۸۴) और **कुफ़्र** पर रिज़ा जैसी सो बरस के लिये वैसे ही एक लम्हे के लिये। पोंछ डालने से **कुफ़्र** जो वाक़ेअ़ हो

लिया मिट न जाएगा जब तक अज़् सरे नौ इस्लाम न लाए, जैसे जो महादेव (हिन्दूओं के बुत) के आगे दिन भर सज्दे में पड़े रहे वोह भी **काफ़िर** और जो सज्दा कर के (फ़ौरन) सर उठा ले वोह भी **काफ़िर** । وَالعِيَاذُ بِاللّٰهِ تَعَالٰى । (फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 675, 677)

कुफ़्री बात सुन कर हंसना

सुवाल : कुफ़्री बात पर हंसने वालों पर क्या हुक्म है ?

जवाब : कुफ़्रिय्या बात सुन कर हंसने की दो सूरतें हैं (1) बे इख़्तियार (2) रिज़ा मन्दी के साथ । अगर कुफ़्रिय्या बात ऐसी थी कि जिस पर बे इख़्तियार हंसी आई तो हुक्मे **कुफ़्र** नहीं और अगर दिल में उस **कुफ़्र** पर इत्तिफ़ाक़ व रिज़ा मन्दी भी है तो इस हंसने वाले पर भी हुक्मे **कुफ़्र** है । (مِنَحُ الرَّوض ص٤٢٦)

कुफ़्रिय्या मज़्मून की कम्पोज़िंग छपाई और ख़रीदो फ़रोख़्त

सुवाल : ज़ैद एक प्रिन्टिग प्रेस में बतौरे कम्पोज़र मुलाज़मत करता है । कभी कभी ऐसे मज़ामीन भी कम्पोज़ करने पड़ते हैं जिन में कुफ़्रिय्या कलिमात नीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **व रसूल** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में गुस्ताख़ियां होती हैं । ज़ैद के लिये क्या हुक्मे शरई है ?

जवाब : ज़ैदे बे क़ैद सख़्त गुनहगार और जहन्नम का ह़क़दार है। उस बेबाक को ठन्डे दिल से इतना ही सोच लेना चाहिये कि अगर उस से कोई कहे कि अपने मां बाप को फ़क़त़ एक ही गाली कम्पोज़ कर दे तुझे दस हज़ार रुपै उजरत दूंगा तो क्या वोह ऐसा करेगा ? ग़ैरत मन्द होगा तो हरगिज़ नहीं करेगा। तो फिर दो टके की नोकरी बचाने के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **व रसूल** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم या सह़ाबा व औलिया رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم की शाने अ़ज़मत निशान में गुस्ताख़ाना कलिमात और इस्लाम के ख़िलाफ़ बक्वासात कम्पोज़ करने की जसारत इस को किस त़रह़ हो जाती है ! जिन में एक भी **कलिमए कुफ़्र** हो ऐसे कुतुबो रसाइल व अख़्बारात की किताबत या कम्पोज़िंग या छपाई या फ़ोटो कॉपी या ख़रीदो फ़रोख़्त करने वालों या बिला मस्लह़ते शरई इन में किसी त़रह़ से ह़िस्सा लेने वालों की तम्बीह के लिये **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 21 सफ़ह़ा 137 ता 139 पर दिया हुवा एक इब्रत नाक फ़तवा पेश करता हूं इस को बग़ौर पढ़िये और ग़ौरो तफ़क्कुर कर के अपनी आख़िरत की बरबादी से बचने की राह निकालिये। चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे

अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने ग़ज़ब से पनाह दे । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ फ़क़ीर ने (सुवाल में लिखे हुए) वोह नापाक मल्ऊ़न कलिमात न देखे, जब सुवाल की उस सत्र पर आया जिस से मा'लूम हुवा कि आगे कलिमाते लईना मल्ऊ़ना मन्कूल होंगे उन पर निगाह न की, नीचे की सत्रें जिन में सुवाल है ब एह़तियात देखीं । एक ही लफ़्ज़ जो ऊपर साइल ने नक़्ल किया और ना दानिस्तगी में नज़र पड़ा ! वोही मुसल्मान के दिल पर ज़ख़्म को काफ़ी है । अब येह कि जवाब लिख रहा हूं (तो सुवाल वाला) काग़ज़ तेह कर लिया है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मल्ऊ़नात को न दिखाए न सुनाए । जो नाम के मुसल्मान कोंपी नवीसी (किताबत या कम्पोज़िंग) करते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व क़ुरआने अ़ज़ीम व मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शान में ऐसे मल्ऊ़न कलिमात, ऐसी गालियां अपने **क़लम** से लिखते या छापते या किसी त़रह़ इस में इआ़नत (या'नी तआ़वुन) करते हैं, उन सब पर **अल्लाह** तआ़ला की ला'नत उतरती है । वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **व रसूल** (عَزَّوَجَلَّ و صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के मुख़ालिफ़ और अपने ईमान के दुश्मन हैं, **क़हरे इलाही** की आग उन

के लिये भड़क्ती है, सुब्ह़ करते हैं तो **अल्लाह** के ग़ज़ब में, शाम करते हैं तो **अल्लाह** के ग़ज़ब में। और ख़ास जिस वक़्त इन मल्ऊ़न कलिमों को आंखों से देखते, क़लम से लिखते, मुक़ाबला (दोहराई) वग़ैरा में ज़बान से निकालते या पथ्थर पर इस का हलका भरा (फ़ी ज़माना तह़रीर की प्लेटें, फ़िल्में) बनाते हैं, हर कलिमे (या'नी हर लफ़्ज़) पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सख़्त ला'नतें और मलाइकतुल्लाह की शदीद ला'नतें उन पर उतरती हैं, येह मैं नहीं कहता, क़ुरआन फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ وَ اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِیْنًا ﴿۵۷﴾

(پ۲۲ الاحزاب۵۷)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक जो ईज़ा देते हैं **अल्लाह** और उस के **रसूल** को उन पर **अल्लाह** की ला'नत है दुन्या और आख़िरत में और **अल्लाह** ने उन के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है।

उन नापाकों (या'नी कुफ़्रिय्या मज़ामीन की किताबत या कम्पोज़िंग या छपाई या फ़ोटो कॉपी करने वालों) का येह गुमान कि गुनाह तो उस ख़बीस का है जो मुसन्निफ़ है, हम तो (सिर्फ़) नक़्ल कर देने या छाप देने वाले हैं (ऐसा गुमान) सख़्त मल्ऊ़न व मरदूद गुमान है। ज़ैद किसी

www.dawateislami.net

दुन्या के इ़ज़्ज़त दार को गालियां लिख कर छपवाना चाहे तो (येह प्रेस वाले) हरगिज़ न छापेंगे, (क्यूं कि) जानते हैं कि मुसन्निफ़ के साथ छापने वाले भी गिरिफ़्तार होंगे। मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ वाहि़दे क़ह्हार के क़ह्रो अ़ज़ाब व ला'नत व इ़ताब की क्या परवाह है! **यक़ीनन यक़ीनन कॉपी लिखने वाला, पथ्थर** (फ़ी ज़माना तह़रीर की प्लेटें, फ़िल्में) **बनाने वाला, छापने वाला, कल** (मशीन) **चलाने वाला ग़रज़ जान** (बूझ) **कर कि इस** (मज़्मून) **में येह कुछ** (गुस्ताख़ाना कुफ़्रिय्या मवाद) **है किसी त़रह़ इस में इआ़नत** (या'नी तआ़वुन) **करने वाला, सब एक रस्सी में बांध कर जहन्नम की भड़क्ती आग में डाले जाने के मुस्तह़िक़ हैं। अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۪ (پ٦ المائدہ ٢)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और गुनाह और ज़ियादती पर बाहम मदद न दो।

ह़दीस में है रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जो दानिस्ता (या'नी जान बूझ कर) किसी ज़ालिम के साथ उस की मदद देने चला वोह यक़ीनन **इस्लाम** से निकल गया। (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير ج١ ص ٢٢٧ حديث ٦١٩) येह (मुन्दरिजए बाला ह़दीसे पाक में दी हुई वई़द तो) उस ज़ालिम के

लिये है जो गिरेह भर (या'नी बहुत ही थोड़ी सी) ज़मीन या चार पैसे (या'नी मा'मूली सी रक़म) किसी के दबा ले या ज़ैद व अ़म्र किसी को नाहक़ सख़्त सुस्त कहे। उस ब ज़ाहिर मा'मूली सा ज़ुल्म करने वाले के मददगार को इर्शाद हुवा कि **इस्लाम से निकल जाता है** न कि येह अशद (या'नी सख़्त तरीन) ज़ालिमीन जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **व रसूल** (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को गालियां देते हैं, इन बातों में उन का मददगार क्यूंकर मुसल्मान रह सकता है !

त़रीक़ए मुह़म्मदिय्यह और उस की शर्ह़ **ह़दीक़ए नदिय्या** में है : हाथ की आफ़तों में से एक येह (भी) है कि (इस से) वोह कुछ लिखा जाए जिस का बोलना **ह़राम** है या'नी जैसे मज़म्मत के अश्आ़र, फ़ोह़्श बातें, गाली गलोच और वोह वाक़िआ़त जो इस क़िस्म की बातों पर मुश्तमिल हों और हज्व (बदगोई) करना ख़्वाह नस्र में हो या नज़्म में और **गुमराह फ़िर्क़ों के मज़ाहिब पर मुश्तमिल तस्नीफ़ात**। इस लिये कि (क़लम भी ज़बान का ही हुक्म रखती है जिस के ज़रीए़ इज़्हारे ख़याल होता है) लिहाज़ा लिखना (भी) बोलने ही की त़रह़ है बल्कि बोलने से भी ज़ियादा बलीग़ (या'नी मज़ीद अच्छी त़रह़ पहुंचने वाला) है क्यूं कि वोह

सफ़ह़ात पर बाक़ी रहता है जब कि (ज़बान से अदा होने वाले) कलिमात हवा में (मुन्तशिर हो कर) गुम हो जाते हैं और (तह़रीर की त़रह़) बाक़ी नहीं रहते। 1 हि. मुख़्तसरन। (اَلْحدِيقَةُ النَّدِيَّة و الطَّرِيقَةُ الْمُحَمَّدِيَّة ج ٢ ص ٤٤٣)

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه मज़ीद फ़रमाते हैं : ऐसे (या'नी कुफ़्रिय्या कलिमात वाली तह़रीरात के कम्पोज़र, छापने वाले वग़ैरा) अशद (या'नी सख़्त तरीन) फ़ासिक़ फ़ाजिर अगर तौबा न करें तो इन से मेलजोल ना जाइज़ है, इन के पास दोस्ताना उठना बैठना **ह़राम** है। फिर मुनाकह़त (या'नी इन के साथ शादी बियाह करना) तो बड़ी चीज़ है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَ اِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۶۸﴾ (پ ۷ الانعام ۶۸)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो कहीं तुझे शैत़ान भुलावे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ।

और जो इन (कम्पोज़रों, छापने वालों वग़ैरा) **में** (से) **इस नापाक कबीरा** (गुनाह) **को ह़लाल बताए, इस पर इसरार व इस्तिक्बार** (या'नी हटधर्मी) **व मुक़ाबलए शरअ़** (या'नी शरीअ़त का मुक़ाबला करने) **से पेश आए वोह यक़ीनन काफ़िर है, उस की औ़रत**

www.dawateislami.net

उस के निकाह़ से बाहर है, उस के जनाज़े की नमाज़ ह़राम, उसे मुसल्मानों की त़रह़ ग़ुस्ल देना, कफ़न देना, दफ़्न करना, उस के दफ़्न में शरीक होना, उस की क़ब्र पर जाना सब ह़राम है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَلَا تُصَلِّ عَلٰۤی اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا وَّ لَا تَقُمْ عَلٰی قَبْرِهٖ ؕ
(پ ۱۰ التوبه ۸٤)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उन में से किसी की मय्यित पर कभी नमाज़ न पढ़ना और न उस की क़ब्र पर खड़े होना।

फ़क़ीर के यहां फ़तावा मज्मूआ़ पर नक़्ल होते हैं : मैं ने नक़्ल फ़रमाने वाले साह़िब से कह दिया है कि उन मल्ऊ़न अल्फ़ाज़ की नक़्ल न करें। सुना गया है कि साइल (या'नी फ़तवा पूछने वाले) का क़स्द इस फ़तवे के छापने का है। मैं दरख़्वास्त करता हूं कि उन मल्ऊ़नात (कुफ़्रिय्या व गुस्ताख़ाना कलिमात) को निकाल डालें, उन की जगह दो एक सत़रें ख़ाली सिर्फ़ नुक़्ते लगा कर छोड़ दें कि मुसल्मानों की आंखें इन ला'नती नापाकों के देखने से बि इज़्निही तआ़ला मह़फ़ूज़ रहें।

فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا ۪ وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۶۴﴾

www.dawateislami.net

(**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** तो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) सब से बेहतर निगहबान और वोह हर मेहरबान से बढ़ कर मेहरबान। (پ۱۳ یوسف ٦٤)

अगर मुरव्वत में कुफ़्रिय्यात कम्पोज़ करने पड़ जाएं तो ?

सुवाल : अगर नोकरी हो और दीन के ख़िलाफ़ लिखी हुई बातों वाली किताब या मज़्मून की मुरव्वत में कम्पोज़िंग करनी पड़ जाए तो ?

जवाब : चाहे नोकरी छोड़नी पड़ जाए मगर ऐसी कम्पोज़िंग जाइज़ नहीं हो सकती। मेरे आक़ा **आ'ला हज़रत** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : اَلْقَلَمُ اَحَدُ اللِّسَانَیْن (या'नी क़लम भी ज़बान का ही हुक्म रखती है) जो ज़बान से कहने के अह़काम हैं वोही क़लम पर। और ऐसी उजरत **हराम**, इस की इशाअ़त **हराम** और ऐसी मुरव्वत फ़िन्नार। हां जब ए'तिक़ादन न हो (या'नी उन दीन के ख़िलाफ़ बातों का अ़क़ीदा न हो) तो **कुफ़्र** नहीं। (और अगर जाइज़ समझता हो तो कुफ़्र है) وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 607) इस से **कलिमाते कुफ़्र** से भरपूर आर्टीकल्ज़ और बद मज़्हबों के मज़ामीन वाले अख़्बारात, माहनामे और बद अ़क़ीदा लोगों की कुतुब बेचने वाले भी दर्से इब्रत ह़ासिल करें।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

अफ़्आ़ले कुफ़्र की 4 मिसालें

﴾1﴿ जो मजूसियों की मख़्सूस टोपी पहने या ﴾2﴿ ज़ुन्नार बांधे बल्कि ﴾3﴿ कोई अपनी कमर में यूं ही रस्सी बांध कर कहे कि येह ज़ुन्नार है, उस के येह अफ़्आ़ल **कुफ़्र** हैं। (مِنَحُ الرَّوض ص ٤٩٦-٤٩٧)

﴾4﴿ जिस ने सर पर मजूसियों की मख़्सूस टोपी रख कर कहा : "दिल सीधा होना चाहिये" येह क़ौल **कुफ़्र** है क्यूं कि कहने वाले ने ज़ाहिरे शरीअ़त का इन्कार किया। (ایضاً ص ٤٩٨)

सुवाल : सुना है, "मायूसी कुफ़्र है" इस से क्या मुराद है ? मायूसी के कुफ़्र होने की सूरतें भी बता दीजिये।

जवाब : बा'ज़ अवक़ात मुख़्तलिफ़ आफ़ात, दुन्यावी मुआ़मलात या बीमारी के मुआ़लजात व अख़्राजात वग़ैरा के सिल्सिले में आदमी हिम्मत हार कर मायूस हो जाता है इस त़रह़ की मायूसी **कुफ़्र** नहीं। रह़मत से मायूसी के कुफ़्र होने की सूरतें येह हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को क़ादिर न समझे या **अल्लाह** तआ़ला को आ़लिम न समझे या **अल्लाह** तआ़ला को बख़ील समझे।

रह़मत की उम्मीद और नाराज़गी का ख़ौफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाहु ग़फ़्फ़ार** عَزَّوَجَلَّ जब बख़्शने पर आता है तो बड़े से बड़े गुनहगार को बे ह़िसाब बख़्श देता है और जब गिरिफ़्त फ़रमाना चाहता है तो ब ज़ाहिर छोटे से गुनाह पर भी पकड़ लेता है। लिहाज़ा **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से हरगिज़ हरगिज़ मायूस भी नहीं होना चाहिये और उस की **ख़ुफ़्या तदबीर** से बे ख़ौफ़ भी नहीं रहना चाहिये। हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين ढेरों ढेर नेकियां करने के बा वुजूद हमेशा इस बात से ख़ौफ़ज़दा रहते थे कि कहीं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नाराज़ न हो जाए। चुनान्चे इस ज़िम्न में **तम्बीहुल मुग़्तर्रीन** सफ़ह़ा 168 ता 169 पर से **सात ह़िकायात** मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

(1) तो मैं राख बनना पसन्द करूं

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : अगर मुझे जन्नत और जहन्नम के दरमियान खड़ा कर दें और इख़्तियार दें कि या तो राख बन जाऊं या फिर उस वक़्त तक इन्तिज़ार करूं कि मुझे अपना ठिकाना मा'लूम हो जाए। तो मैं राख बनने को तरजीह़ दूंगा। **अल्लाहु रब्बुल**

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़ह़ा करूं (या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشکوال)

इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

(2) कहीं मुझ पर आग न बरसे !

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَاد हमेशा अपने क़दमों पर तय्यार हो कर बैठते। जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से इस की वज्ह पूछी जाती तो फ़रमाते : मुत़्मइन हो कर वोह शख़्स बैठता है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से बे ख़ौफ़ हो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! रात हो या दिन, मुझे हर वक़्त येह ख़ौफ़ लगा रहता है कि कहीं आस्मान से आग बरस कर मुझे जला न दे। **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

(3) कहीं सब से पहले मुझे दोज़ख़ में न डाल दिया जाए

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرانی फ़रमाते हैं : ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझे इस बात का डर रहता है कि क़ियामत के दिन चेहरे के बल घसीट कर जहन्नम की त़रफ़ ले जाया जाने वाला सब से पहला आदमी कहीं मैं न हो जाऊं। **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

(4) जहन्नम से अमान मिलती हो तो दुन्या की आग में जल जाना मन्ज़ूर है

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का फ़रमाने ख़शिय्यत निशान है : अगर आग जला कर कहा जाए कि जो शख़्स अपने आप को इस में डालेगा वोह राख हो जाएगा और बड़ी आग (या'नी जहन्नम) में नहीं जाएगा। तो मैं अपने आप को उस आग में डाल दूं। **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

(5) एक गुनाह के मुक़ाबले में हज़ारों साल की इ़बादत भी कम है

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ख़ौफ़े ख़ुदा की शिद्दत से चालीस साल तक अपने बिस्तर पर पड़े रहे, उन में खड़े होने की सकत (त़ाक़त) नहीं थी ह़त्ता कि बिस्तर ही पर वुज़ू फ़रमाया करते थे। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बीमार पुर्सी की जाती थी। किसी इ़बादत गुज़ार बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को जब येह ख़बर पहुंची तो उन्हों ने फ़रमाया : चालीस साल की क्या हैसिय्यत है ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर कोई अपने सर के

बालों की ता'दाद के बराबर हज़ारों साल **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करे तब भी उस एक गुनाह के मुक़ाबले में येह कम है जिस का इरतिकाब बन्दा करता है। **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(6) उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ के ख़ौफ़े ख़ुदा का निराला अन्दाज़

ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा **ह़ज़रते** सय्यिदतुना फ़ाति़मा बिन्ते अ़ब्दुल मलिक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهَا फ़रमाती हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से बढ़ कर किसी को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने वाला नहीं देखा। जब वोह हम बिस्तरी के लिये बैठते तो कांप जाते और बिस्मिल (या'नी ज़ब्ह़ शुदा परिन्दे) की त़रह़ तड़प कर गिर जाते। **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा । (شعب الایمان)

(7) ह़क़ीक़ी ख़ौफ़ येह है कि गुनाह तर्क कर दे

ह़ज़रते सय्यिदुना इस्ह़ाक़ बिन ख़लफ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ख़ौफ़े ख़ुदा वाला वोह नहीं जो रोता है और अपनी आंखें मलता है, डरने वाला तो वोह है जो ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब गुनाहों को तर्क कर दे । (تنبیہ المغترین ص ۱۶۸، ۱۶۹) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

कुफ़्फ़ार रह़मत से मायूस

सुवाल : कुफ़्फ़ार रह़मत से मायूस होंगे या नहीं ?

जवाब : यक़ीनन वोह मायूस हैं और क़ियामत के दिन भी मायूस होंगे । पारह 13 **सूरए यूसुफ़** की आयत नम्बर 87 में इर्शाद होता है :

اِنَّهٗ لَا یَایْــٴَـسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۸۷﴾
(پ۱۳ یوسف ۸۷)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की रह़मत से ना उम्मीद नहीं होते मगर काफ़िर लोग ।

फ़ौतगी में बके जाने वाले कुफ़्रिय्यात के बारे में सुवाल जवाब

"अल्लाह को ऐसा नहीं करना चाहिये" कहना कैसा ?

सुवाल : छोटे भाई की फ़ौतगी पर बड़े भाई ने सदमे की वज्ह से कहा कि "**अल्लाह** तआ़ला को ऐसा नहीं करना चाहिये था।" बड़े भाई के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब : येह कहना **कुफ़्र** है। क्यूं कि कहने वाले ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ए'तिराज़ किया।

"नेक लोगों की अल्लाह को भी ज़रूरत पड़ती है" कहना कैसा ?

सुवाल : एक नेक नमाज़ी आदमी फ़ौत हो गया, इस पर पड़ोसी ने कहा : "नेक लोगों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जल्दी उठा लेता है क्यूं कि ऐसों की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को भी ज़रूरत पड़ती है।" पड़ोसी का येह क़ौल कैसा है ?

जवाब : पड़ोसी का **क़ौल कुफ़्रिय्या** है। इस्लामी अ़क़ीदा येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी का भी मोह़्ताज नहीं, वोह बे नियाज़ है। चुनान्चे **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : किसी ने मुर्दे के बारे में कहा : "ऐ लोगो !

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

अल्लाह तआ़ला तुम से ज़ियादा इस का ह़ाजत मन्द है" येह कहना **कुफ़्र** है। (مِنَحُ الرَّوض ص٣١٨)

"येह अल्लाह को चाहिये होगा" कहना कैसा है ?

सुवाल : एक नन्हा मुन्ना बच्चा छत से गिर कर फ़ौत हो गया, ता'ज़ियत करने वाली एक औ़रत बोली : "आप का फूल जैसा बच्चा **अल्लाह** पाक को चाहिये होगा इसी वासिते़ उस ने ले लिया होगा।" उस औ़रत का येह कहना कैसा है ?

जवाब : उस औ़रत ने **कुफ़्र** बक दिया। **फु़क़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : किसी का बेटा फ़ौत हो गया, उस ने कहा : "**अल्लाह** तआ़ला को इस की ह़ाजत होगी" येह क़ौल **कुफ़्र** है। क्यूं कि कहने वाले ने **अल्लाह** तआ़ला को मोह़ताज क़रार दिया।

(اَلْبَزَّازِيَّة على هامِش الْفَتَاوٰى الْهِنْدِيَّة ج٦ ص٣٤٩)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस का फूल जैसा बच्चा अचानक फ़ौत हो जाए उस का सदमा वोही समझ सकता है, मगर वावेला मचाने, चीख़ने चिल्लाने से बच्चा वापस नहीं आता, सब्र करना चाहिये। बच्चे की वफ़ात पर सब्र करने के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल **दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा फ़रमाइये और झूमिये :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

﴿1﴾ बच्चे की फ़ौतगी पर सब्र का इन्आ़म

जब किसी आदमी का बच्चा फ़ौत हो जाता है तो **अल्लाह** तआ़ला फ़िरिश्तों से फ़रमाता है : तुम ने मेरे बन्दे के लड़के की रूह़ क़ब्ज़ की ? वोह अ़र्ज़ करते हैं : हां। **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : तुम ने उस के दिल का फल क़ब्ज़ किया ? वोह अ़र्ज़ करते हैं : हां। **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : मेरे बन्दे ने क्या कहा ? वोह अ़र्ज़ करते हैं : उस ने तेरी ह़म्द की और (1) اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ ؕ پڑھा पढ़ा। **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है : "उस के लिये जन्नत में एक मकान बना दो और उस का नाम **बैतुल ह़म्द** (ता'रीफ़ का घर) रखो।" (سُنَنُ التِّرمِذی ج ۲ ص ۳۱۳ حدیث ۱۰۲۳)

﴿2﴾ जिस का बच्चा फ़ौत हो जाए उस के लिये जन्नत की बिशारत

मालिके जन्नत, क़ासिमे ने'मत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस के दो ना बालिग़ बच्चे फ़ौत हो गए वोह उन के सबब जन्नत में

مدینہ

(1) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** हम **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के माल हैं और हम को उसी की त़रफ़ फिरना। (پ ۲ البقرہ ۱۵۶)

जाएगा। उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! जिस का एक बच्चा फ़ौत हो जाए ? आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ तौफ़ीक़े ख़ैर वाली ! एक बच्चे वाले का भी येही हुक्म है।

(سُنَنُ التِّرمِذِی ج۲ ص۳۳۳ حدیث ۱۰٦٤)

है सब्र तो ख़ज़ानए जन्नत ऐ भाइयो !
नेकों के लब पे शिक्वा कभी भी न आ सके

"या अल्लाह ! तुझे बच्चों पर भी तर्स नहीं आया !" कहना कैसा ?

सुवाल : एक आदमी का इन्तिक़ाल हो गया। उस की बेवा ने ख़ूब वावेला मचाया और चीख़ चीख़ कर कहने लगी : "**या अल्लाह** ! तुझे मेरे छोटे छोटे बच्चों पर भी तर्स नहीं आया !" बेवा के लिये क्या हुक्मे शरई है ?

जवाब : बेवा पर हुक्मे **कुफ़्र** है, क्यूं कि उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ज़ालिम क़रार दिया।

बे सब्री करने से मरने वाला पलट कर नहीं आता

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन्सान की मौत उस के पस्मान्दगान के लिये ज़बर दस्त इम्तिह़ान का बाइ़स होती है। ऐसे मौक़अ़ पर सब्र करना और बिल ख़ुसूस

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

ज़बान को क़ाबू में रखना ज़रूरी है । बे सब्री से सब्र का अज्र तो ज़ाएअ़ हो सकता है मगर मरने वाला पलट कर नहीं आ सकता । मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن "ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़" में फ़रमाते हैं :

आंखें रो रो के सुजाने वाले
जाने वाले नहीं आने वाले

नौह़ा करने वालियों के लिये वई़द

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मय्यित के ग़म में आंसू बहाने में ह़रज नहीं अलबत्ता **नौह़ा** करना गुनाह है । (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 4, स. 203) चुनान्चे **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "नौह़ा करने वालियों की क़ियामत के दिन जहन्नम में दो सफ़ें बनाई जाएंगी, एक सफ़ जहन्नमियों की दाईं त़रफ़, दूसरी बाईं त़रफ़, वोह जहन्नमियों पर यूं भोंकती रहेंगी जैसे कुत्ते भोंकते हैं ।" (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج٤ ص٦٦ حديث ٥٢٢٩)

ज़बां पर शिक्वए रन्जो अलम लाया नहीं करते
नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم *के नाम लेवा ग़म से घबराया नहीं करते*

"या अल्लाह तुझे भरी जवानी पर भी रह्म न आया" कहना

सुवाल : एक नौ जवान का इन्तिक़ाल हो गया। उस की सोग वार मां ने ग़म से निढाल हो कर रो कर पुकारा ! "**या अल्लाह** ! इस की भरी जवानी पर भी तुझे रह्म न आया ! अगर तुझे लेना ही था तो इस की बूढ़ी दादी या बूढ़े नाना को ले लेता !" सोग वार मां के येह कलिमात कैसे हैं ?

जवाब : येह कलिमात, **कुफ़्रिय्यात** से भरपूर हैं।

"या अल्लाह ! हम ने तेरा क्या बिगाड़ा है" कहने का हुक्मे शरई

सुवाल : एक घर में थोड़े थोड़े वक़्फ़े से दो अम्वात हो गईं। इस पर घर की बड़ी बी रोते हुए बड़बड़ाने लगी : "**या अल्लाह** ! हम ने तेरा क्या बिगाड़ा है ! आख़िर मलकुल मौत को हमारे ही घर वालों के पीछे क्यूं लगा दिया है !" बड़ी बी के येह अल्फ़ाज़ क्या हुक्म रखते हैं ?

जवाब : मज़्कूरा बुढ़िया की बक्वास रब्बे काएनात की तौहीन और उस पर ए'तिराज़ात से भरपूर है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तौहीन और उस पर ए'तिराज़ करना **कुफ़्र** है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह्क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

अ़ज़ाब के दो कुरते

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मरने वाले पर **नौह़ा** करना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है चुनान्चे रसूले करीमो जवाद, मह़बूबे रब्बुल इ़बाद صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे इ़ब्रत बुन्याद है : **नौह़ा** करने वाली ने अगर मरने से पहले तौबा न की, तो क़ियामत के दिन इस त़रह़ खड़ी की जाएगी कि उस पर एक कुरता **क़त़िरान** (या'नी राल) का होगा और एक कुरता **जरब** (या'नी खुजली) का। (صَحِيح مُسلِم ص ٤٦٥ حديث ٩٣٤)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : **राल** में आग बहुत जल्द लगती है और सख़्त गर्म भी होती है, **जरब** वोह कपड़ा है जो सख़्त ख़ारिश में पहनाया जाता है। मा'लूम होता है कि **नाइह़ा** (या'नी नौह़ा करने वाली) पर उस दिन ख़ारिश का अ़ज़ाब मुसल्लत़ होगा क्यूं कि वोह **नौह़ा** कर के लोगों को मजरूह़ (या'नी उन के दिल ग़मगीन व ज़ख़्मी) करती थी तो क़ियामत के दिन उसे ख़ारिश से ज़ख़्मी किया जाएगा। इस से मा'लूम हुवा कि **नौह़ा** ख़्वाह अ़मली हो या क़ौली **सख़्त ह़राम** है। चूंकि अक्सर औ़रतें ही **नौह़ा** करती हैं इस लिये उ़मूमन (उ़मूम की वज्ह से) **नाइह़ा** तानीस (मुअन्नस) का सीग़ा (इर्शाद) फ़रमाया। (मिरआत, जि. 2, स. 503)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

नौह़ा के मा'ना और इस के बा'ज़ अह़काम

﴾1﴿ **नौह़ा** या'नी मय्यित के औसाफ़ (ख़ूबियां) मुबालग़े के साथ (ख़ूब बढ़ा चढ़ा कर) बयान कर के आवाज़ से रोना जिस को **बैन** (भी) कहते हैं बिल इज्माअ़ **ह़राम** है। यूहीं वावेला, वा मुसीबताह (या'नी हाए मुसीबत) कह कर चिल्लाना ﴾2﴿ गिरेबान फाड़ना, मूंह नोचना, बाल खोलना, सर पर ख़ाक डालना, सीना कूटना, रान पर हाथ मारना येह सब जाहिलिय्यत के काम हैं और **ह़राम** ﴾3﴿ आवाज़ से रोना मन्अ़ है और आवाज़ बुलन्द न हो तो इस की मुमानअ़त नहीं, बल्कि **हु़ज़ूरे अक़्दस** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (अपने लख़्ते जिगर) **ह़ज़रते इब्राहीम** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वफ़ात पर बुका फ़रमाया। (या'नी आंसू बहाए)

(बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 4, स. 203, 204)

मज़ाक़ में कुफ़्रिय्यात बकने के बारे में सुवाल जवाब

सुवाल : क्या **मज़ाक़** में कुफ़्र बकना भी कुफ़्र है?

जवाब : जी हां। **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं : **मज़ाक़** में कलिमए कुफ़्र बकना भी **कुफ़्र** है।

(اَلْبَحْرُ الرَّائِق ج۵ص۲۰۲)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

मज़ाक़ में कुफ़्र बकने वाले की क़ुरआन में मज़म्मत

सुवाल : क्या हंसी मज़ाक़ में **कुफ़्र** बकने वाले की क़ुरआने करीम में भी मज़म्मत आई है ?

जवाब : जी हां। **मज़ाक़** में **कुफ़्र** बकने वालों पर ख़ुदाए **रह़मान** عَزَّوَجَلَّ ने अपने पाक क़ुरआन में ब ज़बाने रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **कुफ़्र का फ़तवा** सादिर फ़रमाया है। चुनान्चे पारह 10 **सूरतुत्तौबह** आयत नम्बर 65 और 66 में इर्शादे रब्बुल इ़बाद है :

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَنَلْعَبُ ؕ قُلْ اَبِاللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۶۵﴾ لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ ؕ (پ ۱۰ التوبه ۶۵-۶۶)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ मह़बूब अगर तुम उन से पूछो तो कहेंगे कि हम तो यूंही हंसी खेल में थे। तुम फ़रमाओ क्या **अल्लाह** और उस की आयतों और उस के रसूल से हंसते हो ! बहाने न बनाओ तुम काफ़िर हो चुके मुसल्मान हो कर।

सरकार ने गुमशुदा ऊंटनी की ख़बर दी

मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **तम्हीदुल ईमान मअ़ह़ू ह़ुसामुल**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

हरमैन सफ़हा 94 ता 95 (मत़्बूआ मक्तबतुल मदीना) पर नक़्ल फ़रमाते हैं : किसी शख़्स की **ऊंटनी** गुम हो गई, उस की तलाश थी, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऊंटनी फ़ुलां जंगल में फ़ुलां जगह है।" इस पर एक मुनाफ़िक़ बोला, "**मुहम्मद** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बताते हैं कि ऊंटनी फ़ुलां जगह है, **मुहम्मद** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ग़ैब क्या जानें !" इस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आयते करीमा उतारी कि "क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **व रसूल से ठठ्ठा** (मस्ख़री) करते हो, बहाने न बनाओ तुम मुसल्मान कहला कर इस लफ़्ज़ के कहने से **काफ़िर** हो गए।" (تفسیر دُرِّ منثور ج ۴ ص ۲۳۰) मुसल्मानो देखो ! **मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शान में गुस्ताख़ी करने से कि "वोह ग़ैब क्या जानें", कलिमा गोई काम न आई और **अल्लाह** तआ़ला ने साफ़ फ़रमा दिया कि **बहाने न बनाओ, तुम इस्लाम लाने के बा'द काफ़िर हो गए**। यहां से वोह ह़ज़रात भी सबक़ लें जो **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के उ़लूमे ग़ैब से मुत़्लक़न मुन्किर हैं। देखो येह क़ौल मुनाफ़िक़ का है और इस के क़ाइल को **अल्लाह** तआ़ला व क़ुरआन व रसूल से **ठठ्ठा** (मस्ख़री) करने

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

वाला बताया और साफ़ साफ़ **काफ़िर व मुरतद** ठहराया और क्यूं न हो कि **ग़ैब की बात जाननी शाने नुबुव्वत है।"** (तम्हीदुल ईमान, स. 94, 95)

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहां हो भला
जब न ख़ुदा ही छुपा तुम पे करोड़ों दुरूद

फ़िल्मी अदाकारों की वज्ह से जहन्नम को पसन्द करना कैसा ?

सुवाल : "अच्छा है **जहन्नम** में जाएंगे कि **फ़िल्मी अदाकार** भी तो वहीं होंगे।" येह कहना कैसा है ?

जवाब : कुफ़्र है। इस क़ौले बदतर अज़ बौल में **जहन्नम** के अ़ज़ाब की तख़्फ़ीफ़ (या'नी अ़ज़ाबे इलाही को हलका जानना पाया जा रहा) है। अगर कोई कहे कि मैं ने तो यूं ही **मज़ाक़** में कहा था जब भी **कुफ़्र** है। सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह, अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : जो बत़ौरे तमस्ख़ुर और ठठ्ठा (या'नी मज़ाक़ मस्ख़री में) कुफ़्र करेगा वोह भी **मुरतद** है अगर्चे कहता है कि (मैं) ऐसा ए'तिक़ाद (या'नी अ़क़ीदा) नहीं रखता।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 9, स. 173, دُرِّ مُختار ج٦ ص٣٤٣)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइ़स है। (ابو يعلى)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस दौर में **ईमान की हि़फ़ाज़त** का ज़ेह्न काफ़ी कम हो गया है, ज़बान की लगाम बहुत ही ढीली है, अक्सरिय्यत का ह़ाल येह है कि बस जो मुंह में आता है बके जा रहा है, फ़िल्मों, डिरामों, नाविलों, डायजस्टों, स्कूलों की लायब्रेरी की किताबों और अख़्बारों में भी बसा अवक़ात त़रह़ त़रह़ के **कुफ़्रिय्यात** होते हैं। इसी त़रह़ **मिज़ाहि़या चुटकुलों** की केसिटें भी बा'ज़ अवक़ात कुफ़्रिय्या फ़िक्रात से भरपूर होती हैं।

"जन्नती को दोज़ख़ में सिगरेट जलाने के लिये जाना पड़ेगा" कहना

सुवाल : मिज़ाहि़या चुटकुलों की एक केसिट में किसी कोमेडियन (या'नी मस्ख़रे) ने जन्नत और दोज़ख़ का मज़ाक़ उड़ाते हुए बका है : "अगर तुम लोग **जन्नत** में चले भी गए तो सिगरेट जलाने के लिये तो हमारे ही पास (या'नी दोज़ख़ में) आना पड़ेगा !" बकने वाले का येह क़ौल कैसा है ?

जवाब : कोमेडियन का येह क़ौल **कुफ़्र** है।

बद मज़्हबों की किताबें पढ़ने का मस्अला

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस को **ईमान की हि़फ़ाज़त** अ़ज़ीज़ हो उसे चाहिये कि वोह मिज़ाहि़या

चुटकुलों की केसिटों, फ़िल्मों, डिरामों, गानों बाजों, रूमानी और जासूसी नाविलों, डायजस्टों, इश्क़िया व फ़िस्क़िया अफ़्सानों और अख़्बारों की ग़ैर शरई तह़रीरों वग़ैरहा के क़रीब भी न फटके। याद रखिये ! इस्लामी नज़रिय्यात और शरई अह़कामात से टकराने वाली तक़रीरात सुनना और तह़रीरात पढ़ना **ह़राम** और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। एक ग़ैर शरई किताब के मुतअ़ल्लिक़ जब मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن की ख़िदमत में **इस्तिफ़्ता** पेश हुवा तो जवाबन फ़रमाया : वोह किताब मज़्हबे अहले सुन्नत के ख़िलाफ़ है बल्कि उस में ख़ुद इस्लाम की भी मुख़ालफ़त है ! उस का देखना, पढ़ना सुनना **ह़राम** है। हां जो आ़लिम उस का मुत़ालआ़ करे उस की तरदीद के लिये या उस में जो **कुफ़्र** बयान हुवा उस के इन्किशाफ़ के लिये तो उस के लिये पढ़ना देखना **ह़राम** नहीं। وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَم (फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 358) हर इस्लामी भाई को चाहिये कि वोह **अच्छी सोह़बत** इख़्तियार करे, सिर्फ़ और सिर्फ़ **उ़लमाए अहले सुन्नत** के मज़ामीन और इन्हीं की किताबों का मुत़ालआ़ करे और **ईमान की ह़िफ़ाज़त**

का जज़्बा बढ़ाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र को अपना मा'मूल बनाए।

कलिमा शरीफ़ का मज़ाक़ उड़ाना कुफ़्र है

सुवाल : किसी शख़्स ने मज़ाक़ में इस तरह **कलिमा** पढ़ा : "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ **मुहम्मद** भाई बाल्टी ला" उस के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब : कलिमा शरीफ़ का मज़ाक़ उड़ाना **कुफ़्र** है। शख़्से मज़्कूर ने अगर कलिमए त़य्यिबा का मज़ाक़ उड़ाने ही की ग़रज़ से मज़्कूरा जुम्ला बोला है तो बेशक **काफ़िर व मुरतद** है, उस का निकाह़ भी टूटा और साबिक़ा तमाम नेक आ'माल भी ग़ारत हुए।

सुब्ह़ान ह़ल्वा कहना कैसा ?

सुवाल : سُبْحٰنَ اللّٰه के बजाए मज़ाक़न "सुब्ह़ान ह़ल्वा" कहना कैसा ?

जवाब : अगर سُبْحٰنَ اللّٰه का मज़ाक़ उड़ाना मक़्सूद है तो **सरीह़ कुफ़्र** है। **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : **ज़िक्रे इलाही** عَزَّوَجَلَّ से तमस्ख़ुर करना (या'नी मज़ाक़ उड़ाना) **कुफ़्र** है। (مجمع الانهر ج۲ص۵۰۷) अलबत्ता याद

रहे कि मुख़्तलिफ़ क़राइन की वज्ह से हुक्म मुख़्तलिफ़ हो सकता है।

"आज नमाज़ की छुट्टी है" कहना कैसा ?

सुवाल : आ़म ता'त़ील के रोज़ एक ने कहा : आओ ज़ोहर की **नमाज़** पढ़ें, दूसरे ने मज़ाक़ में जवाब दिया : यार ! आज तो छुट्टी का दिन है, **नमाज़ की भी छुट्टी है**। येह जवाब कैसा है ? जब कि जवाब देने वाला आ़क़िल व बालिग़ भी हो।

जवाब : येह जुम्ला सरीह़ कुफ़्र है।

सुब्ह़ मोमिन तो शाम को काफ़िर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! निहायत ही नाज़ुक दौर है, مَعَاذَاللّٰہ बा'ज़ मुंहफट लोग बात बात पर **कुफ़्रिय्यात** बक देते हैं। हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह त़लब करते हैं। **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रह़मते आ़लम, शहन्शाहे अ़रबो अ़जम, रसूले मुह़्तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुअ़ज़्ज़म है : "उन फ़ितनों से पहले नेक आ'माल के सिलसिले में जल्दी

करो ! जो तारीक रात के हिस्सों की त़रह़ होंगे, **एक आदमी सुब्ह़ को मोमिन होगा और शाम को काफ़िर होगा और शाम को मोमिन होगा और सुब्ह़ को काफ़िर होगा।** नीज़ अपने दीन को दुन्यावी साज़ो सामान के बदले फ़रोख़्त कर देगा।" (مُسلِم حدیث ۱۱۸ص۷۳)

आंधी के वक़्त सरकार बे क़रार हो जाते

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किस क़दर ग़फ़्लत का दौर आ गया है ! बिजली का कड़क्ना और बादल का गरजना जो कि ख़ौफ़ के मक़ामात हैं, इन में भी बा'ज़ों को मज़ाक़ सूझता है ! अक्सर लोग ख़ूब उछल कूद करते और त़रह़ त़रह़ की आवाज़ें निकालते हैं ह़ालां कि जब **आंधी** चलती, मत़्लअ़ अब्र आलूद होता तो हमारे मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने परवर्दगार عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से बे क़रार हो जाते चुनान्चे उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : "जिस दिन **आंधी** चलती और आस्मान पर **बादल** घिर जाते तो मेरे सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर का रंग मुतग़य्यर हो जाता (या'नी बदल जाता) और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (इज़्तिराब की वज्ह से) कभी

अन्दर आते कभी बाहर तशरीफ़ ले जाते, फिर जब **बारिश** हो जाती तो येह कैफ़िय्यत ख़त्म हो जाती। मैं ने इस की वज्ह पूछी तो इर्शाद फ़रमाया : "**ऐ आ़इशा** ! मुझे येह ख़ौफ़ हुवा कि कहीं येह **बादल** अ़ज़ाब का न हो जो मेरी उम्मत पर भेजा गया हो।"

(صحیح مُسلِم حدیث ۸۹۹،ص ٤٤٦)

जब तेज़ हवा चलती तो......?

इस ज़िम्न में एक वलिय्युल्लाह की **ह़िकायत** मुलाह़ज़ा फ़रमाइये : ह़ज़रते **सय्यिदुना अ़ता** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के **ख़ौफ़े ख़ुदा** का ह़ाल येह था कि जब **आंधी आती** या'नी तेज़ हवा चलती तो बे क़रारी के आ़लम में कभी खड़े हो जाते तो कभी बैठ जाते, कभी बाहर निकलते तो कभी अन्दर तशरीफ़ ले जाते, अपने पेट की खाल को पकड़ लेते या'नी आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का ऐसा ह़ाल हो जाता जैसे ह़ामिला औ़रत का दर्दे ज़िह में (या'नी बच्चे की विलादत की सख़्त तक्लीफ़ के वक़्त) हो जाता है। (تَنبِیہُ الْمُغتَرِّین ص ١٦٨)

बरात का मज़ाक़ उड़ाना

सुवाल : बिग़ैर ढोल ढमक्के के शरीअ़त के मुत़ाबिक़ सादगी वाली शादी की बरात देख कर ज़ैद ने कहा : येह

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

देखो ! जनाज़ा जा रहा है ! ज़ैद का क़ौल कैसा है ?

जवाब : इसी त़रह़ के एक सुवाल के जवाब में सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیۡہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : येह क़ौल बहुत सख़्त है (1) अगर इस से मक़्सूद शर्अ़ शरीफ़ की तौहीन है तो **कुफ़्र** है और (2) अगर मह़्ज़ इस बरात से इस्तिह्ज़ा (मज़ाक़ उड़ाना) है येह मक़्सूद न हो कि शरई बरात होने की वज्ह से येह मस्ख़रा पन करता है तो बुरा किया। पहली सूरत में या'नी जब कि मक़्सूद तौहीने शर्अ़ है, (तौबा व तजदीदे ईमान के साथ साथ) बीबी से निकाह़ दोबारा करना ज़रूर है और दूसरी सूरत में भी अगर्चे **कुफ़्र** नहीं, मगर इस क़ौल में चूंकि तौहीने शर्अ़ का पहलू निकलता है। लिहाज़ा (तौबा व तजदीदे ईमान और) तजदीदे निकाह़ कर ले। وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعۡلَم। (फ़तावा अम्जदिय्या, जि. 4, स. 141) सादगी वाली शादी में किसी जाइज़ ख़ुशी का भी इज़्हार न हो, बिल्कुल ख़ामोशी बल्कि रन्जो ग़म की कैफ़िय्यत हो या मुराक़बए मौत के अश्आ़र की तक्रार पर बराती अश्कबार हों अगर ऐसी सूरत में कोई इस वज्ह से उस को जनाज़े से ता'बीर करे कि शादी की बरात में कुछ तो जाइज़ ख़ुशी का इज़्हार करना ही चाहिये था तो न **कुफ़्र** है न गुनाह।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

आ़जिज़ी की निराली ह़िकायत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़ियादा बोलने वाले, ग़ैर सन्जीदा और मज़ाक़ मस्ख़री के आ़दी की ज़बान से फ़ुज़ूलिय्यात के साथ साथ **कुफ़्रिय्यात** निकलने के काफ़ी ख़त़रात रहते हैं। **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ हमें सन्जीदगी और कमगोई की सआ़दत इनायत करे। नीज़ "मैं मैं" करने वालों, हुब्बे जाह के मरीज़ों और बिल ख़ुसूस मग़रूरों से भी **कुफ़्रिय्या कलिमों** के सुदूर का इम्कान रहता है। काश ! हमें ह़क़ीक़ी **आ़जिज़ी** नसीब हो जाए। आइये आप को आ़जिज़ी की एक **निराली ह़िकायत** सुनाऊं चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना **दावूद त़ाई** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमते बा बरकत में एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने आमद का मक़्सद दरयाफ़्त किया तो अ़र्ज़ की : ज़ियारत के लिये ह़ाज़िर हुवा हूं। **फ़रमाया :** हुस्ने ज़न की बिना पर (मुझे नेक आदमी समझते हुए मेरी) ज़ियारत के लिये आ कर तुम ने अपने लिये तो अच्छा काम किया मगर मेरा क्या बनेगा ! अगर मुझ से पूछा गया कि तू कौन होता है जिस की ज़ियारत की

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे । (شعب الایمان)

जाए ! तो क्या जवाब दूंगा ! अगर सुवाल हुवा, क्या तू **आ़बिदों** (या'नी इबादत गुज़ारों) में से है ? तो मेरा जवाब येही होगा : ख़ुदा की क़सम ! इन में से नहीं हूं । अगर कहा जाए : क्या तू **ज़ाहिदों** (या'नी दुन्या से बे रग़बत रहने वालों) में से है ? तो येही जवाब दूंगा : ख़ुदा की क़सम ! इन में से भी नहीं हूं । येह फ़रमाने के बा'द अपने आप को डांटते हुए फ़रमाने लगे : "**ऐ दावूद** ! तू जवानी में ना फ़रमान था, अधेड़ उ़म्र में धोकाबाज़ बना और अब जब कि बुढ़ापा आया तो रियाकार हो गया है !" येह फ़रमाने के बा'द दुआ़ की : ऐ आस्मानों और ज़मीनों के मा'बूद ! मुझे अपनी रह़मत से ऐसा नवाज़ दे जो मेरे शबाब की इस्लाह़ कर दे, मुझे तमाम बुराइयों से मह़फ़ूज़ फ़रमा और सालिह़ीन (या'नी नेक बन्दों) के आ'ला मक़ामात में मेरा मक़ाम बुलन्द फ़रमा ।

(بحرالدُّموع لابن الجوزی ص۵۸)

सय्यिदुना दावूद त़ाई की अ़ज़मत की झल्कियां

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद त़ाई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की आ़जिज़ी मुलाह़ज़ा फ़रमाई

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोजे़ जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

! आप رَحمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बहुत बड़े वलिय्युल्लाह बल्कि कुत़्बुल अक़्त़ाब शुमार किये जाते थे। आप رَحمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अजिल्लए तलामिज़ा (या'नी बुलन्द पाया शागिर्दों) में से एक थे। मुह़र्रिरे मज़्हब ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَحَد मुश्किल इज्तिहादी मसाइल के ह़ल के लिये आप رَحمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास आया करते थे। इबादत व तिलावत की ख़ूब कसरत फ़रमाते थे। **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

"जी चाहता है यहूदी हो जाऊं" मज़ाक़न ऐसा कहना कैसा ?

सुवाल : किसी ने मज़ाक़ में कहा : "बस जी चाहता है यहूदी या क़ादियानी बन जाऊं !" इस में कोई ह़रज तो नहीं ?

जवाब : ह़रज क्यूं नहीं ! ज़बर दस्त ह़रज है। बल्कि **कुफ़्र** है कि इस में **कुफ़्र** पर राज़ी होना पाया जा रहा है। इसी त़रह़ के एक **सुवाल** के **जवाब** में मेरे आक़ा आ'ला

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा। (ابن عدی)

ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحمٰن **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 14 सफ़ह़ा 583 पर फ़रमाते हैं : "जिस ने जिस फ़िर्क़े का नाम लिया उस फ़िर्क़े का हो गया, **मज़ाक़** से कहे या किसी दूसरी वज्ह से।"

"मज़ाक़ दोज़ख़ पहुंचा सकता है" के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से मज़ाक़ में बोले जाने वाले कुफ़्रिय्यात की कमोबेश 19 मिसालें

﴾1﴿ जिस ने **अल्लाह** तआला को ऐसे वस्फ़ से मौसूफ़ किया जो उस की शान के लाइक़ नहीं, या ﴾2﴿ **अल्लाह** तआला के नामों में से किसी नाम का मज़ाक़ उड़ाया, या ﴾3﴿ उस के अह़काम में से किसी हुक्म का मज़ाक़ उड़ाया, या ﴾4﴿ उस के वा'दे, या ﴾5﴿ वईद का इन्कार किया तो ऐसे आदमी पर हुक्मे **कुफ़्र** लगाया जाएगा। (مِنَحُ الرَّوْض ص۴۲۵)

﴾6﴿ **अल्लाह** तआला को गाली देना **कुफ़्र** है। ख़्वाह ﴾7﴿ सन्जीदगी में दे या ﴾8﴿ मज़ाक़ में ﴾9﴿ ख़ुशी से दे या ﴾10﴿ गुस्से में।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

﴾11﴿ येह कहना : "सुब्ह़ सुब्ह़ दुआ़ मांग लिया करो इस वक़्त **अल्लाह** फ़ारिग़ होता है।" **कुफ़्र** है।

﴾12﴿ येह कहना : "इतनी नेकियां न करो कि ख़ुदा की जज़ा कम पड़ जाए।" **कुफ़्र** है।

﴾13﴿ "ख़ुदा ने तुम्हारे बाल बड़ी फ़ुरसत से बनाए हैं" येह **कलिमए कुफ़्र** है।

﴾14﴿ ज़ैद ने कहा : यार ! हो सकता है आज बारिश हो जाए। बक्र ने कहा : "नहीं यार ! **अल्लाह** तो हमें भूल गया है।" बक्र पर हुक्मे **कुफ़्र** है।

﴾15﴿ अगर किसी ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मज़ाक़ उड़ाया तो **काफ़िर** है।

﴾16﴿ किसी को मज़ाक़ या हंसी खेल के तौर पर **कुफ़्रिय्या कलिमा** कहने का बोला तो इस मश्वरा देने वाले पर हुक्मे **कुफ़्र** है। (اَلْبَزَّازِيَّة علٰى هامِش الْفَتَاوٰى الْهِنْدِيَّة ج٦ ص ٣٣٧)

﴾17﴿ **जो कुफ़्रिय्या** बात पर रिज़ा मन्दी से हंसा उस पर भी हुक्मे **कुफ़्र** है। (فتاوٰی تاتار خانیه ج٥ ص ٤٥٩) बे इख़्तियार हंसी आई, तो मुआ़फ़ है। जैसे कोई ऐसी बात हो जो **कुफ़्रिय्या** है मगर चुटकुले या मिज़ाह़ का मा'ना रखती हो और उसे सुन कर बे इख़्तियार हंसी आई इस पर हुक्मे **कुफ़्र** नहीं अलबत्ता अगर इस के साथ दिल से राज़ी भी हो तो **कुफ़्र** है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

﴿18﴾ अगर किसी ने कहा : जहन्नम में जाएंगे तो सर्दी में अगर जन्नती आग लेने आएंगे तो हम उन को नहीं देंगे। येह **कलिमए कुफ़्र** है।

﴿19﴾ जिस ने मज़ाक़ के तौर पर काफ़िरों जैसी शक्लो सूरत बनाई (मसलन हुनूद की त़रह़ क़श्क़ा लगाया या ज़ुन्नार बांधा) उस पर हुक्मे **कुफ़्र** है। (مِنَحُ الرَّوض ص٤٢٦)

गानों के 34 कुफ़्रिय्या अश्आ़र

(1) ***सीप का मोती है तू या आस्मां की धूल है***
तू है क़ुदरत का करिश्मा या ख़ुदा की भूल है

इस शे'र में مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को **भूलने वाला** माना गया है जो कि **सरीह़ कुफ़्र** है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भूलने से पाक है। चुनान्चे पारह 16 **सूरए त़ाहा** की आयत नम्बर 52 में इर्शाद होता है :

لَا يَضِلُّ رَبِّيْ وَلَا يَنْسَى (پ ١٦ طٰهٰ ٥٢)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : मेरा रब (عَزَّوَجَلَّ) न बहके न भूले।

(2) *दिल में तुझे बिठा कर कर लूंगी बन्द आंखें*
***पूजा** करूंगी तेरी दिल में रहूंगी तेरे*

इस में अपने मजाज़ी मह़बूब की **पूजा** करने के अ़ज़्म का इज़्हार है जो कि **कुफ़्र** है।

www.dawateislami.net

(3) *हाए ! तुझे चाहेंगे*

अपना ख़ुदा बनाएंगे

इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी और को ख़ुदा बनाने का अ़ज़्म ज़ाहिर किया गया है जो कि **सरीह़ कुफ़्र** है।

(4) *दिल में हो तुम आंखों में तुम बोलो तुम्हें कैसे चाहूं ?*

***पूजा करूं** या सज्दा करूं जैसे कहो वैसे चाहूं ?*

इस में अपने मजाज़ी मह़बूब की **पूजा** की इजाज़त मांगी गई है जो कि **कुफ़्र** है और **सज्दे** का भी इज़्न त़लब किया है, ग़ैरे ख़ुदा को सज्दए ता'ज़ीमी ह़राम और सज्दए इबादत **कुफ़्र** है।

(5) *तुम्हारे सिवा कुछ न चाहत करेंगे कि जब तक जियेंगे मह़ब्बत करेंगे*

***सज़ा** रब जो देगा वोह **मन्ज़ूर** होगी बस अब तो तुम्हारी **इबादत** करेंगे*

इस शे'र के मिस्रए़ सानी में दो **सरीह़ कुफ़्रिय्यात** हैं (1) **अल्लाहु तव्वाब** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब को हलका जाना गया है (2) ग़ैरे ख़ुदा की **इबादत** के अ़ज़्म का इज़्हार है।

(6) *या रब तूने येह **दिल तोड़ा** किस मौसिम में ?*

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

इस मिस्रअ़ में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर **ए'तिराज़** का पहलू नुमायां है इस लिये **कुफ़्र** है अगर **ए'तिराज़** ही मक़्सूद था तो **क़ाइल काफ़िर व मुरतद हो गया।**

(7) *कैसे कैसे को दिया है* ***ऐसे वैसे*** *को दिया है*

अब तो ***छप्पड़ फाड़*** *मौला अपनी* ***जेबें झाड़*** *मौला*

मिस्रए़ सानी में "छप्पड़ फाड़ना और जेबें झाड़ना" अगर्चे मुहा़वरतन भी बोला जाता है लेकिन ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ की मुबारक शान में सख़्त मम्नूअ़ है और अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को अज्साम की त़रह़ जिस्म वाला मानना और उसे जेब वाला लिबास पहनने वाला ए'तिक़ाद किया तो **सरीह़ कुफ़्र** है। रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ जिस्म व जिस्मानियात से पाक है।

(8) *बे चैनियां समेट कर सारे जहान की*

जब कुछ न बन सका *तो मेरा दिल बना दिया*

इस शे'र के मिस्रए़ सानी के इन अल्फ़ाज़ "**जब कुछ न बन सका**" में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को "**आ़जिज़ व बेबस**" क़रार दिया गया है जो कि **सरीह़ कुफ़्र** है।

(9) *दुन्या बनाने वाले* ***दुन्या में आ के देख***

सदमे सहे जो मैं ने ***तू भी उठा के देख***

येह शे'र कई **कुफ़्रिय्यात** का मज्मूआ है। इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर वाज़ेह़ ए'तिराज़ और उस की तौहीन है।

(10) *दुन्या बनाने वाले **क्या तेरे मन में समाई** ?*

*तू ने **काहे को दुन्या बनाई** ?*

इस शे'र में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर **ए'तिराज़** का पहलू नुमायां है इस लिये **कुफ़्र** है।

(11) *ऐ ख़ुदा इन ह़सीनों की **पतली कमर क्यूं बनाई** ?*

तेरे पास मिट्टी कम थी या तूने रिश्वत खाई (مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ)

मज़्कूरा शे'र में तीन सरीह़ **कुफ़्रिय्यात** हैं : (1) इस में रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ की ज़ाते सितूदा सिफ़ात पर **पतली कमर** बनाने पर **ए'तिराज़** (2) इस पर आ़जिज़ व बेबस होने का इल्ज़ाम और (3) रिश्वत खाने का इत्तिहाम (या'नी तोहमत) है।

(12) ***इस हूर का क्या करें जो हज़ारों साल पुरानी है***

مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ इस में **जन्नती हूर की खुली तौहीन** है, जन्नत या जन्नत की किसी भी ने'मत की तौहीन **सरीह़ कुफ़्र** है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ़ और रोजे़ जुमुआ़ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा । (شعب الایمان)

(13) *ह़सीनों को आते हैं क्या क्या बहाने*

__ख़ुदा भी न जाने__ तो हम कैसे जाने

مَعَاذَاللّٰہعَزَّوَجَلَّ इस शे'र के दूसरे मिस्रअ़ में कहा गया है : "**ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ **भी न जाने**" येह बात **सरीह़ कुफ़्र** है ।

(14) *ख़ुदा भी __आस्मां से__ जब ज़मीं पर __देखता होगा__*

मेरे मह़बूब को __किस ने बनाया सोचता होगा__

इस शे'र में مَعَاذَاللّٰہعَزَّوَجَلَّ कई कुफ़्रिय्यात हैं ﴾1﴿ **जब देखता होगा** इस का मत़लब येह हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर वक़्त नहीं देखता ﴾2﴿ इस बे ह़या के मह़बूब को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने नहीं बनाया مَعَاذَاللّٰہ उस का कोई और ख़ालिक़ है ﴾3﴿ किस ने बनाया येह भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को नहीं मा'लूम ﴾4﴿ सोचता होगा ﴾5﴿ ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ आस्मान से देखता होगा ह़ालां कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **मकान** और **सम्त** से पाक है । बहर ह़ाल येह शे'र **कुफ़्रिय्यात** का मज्मूआ़ है इस में रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ जहालत और मोह़ताजी की निस्बत है किसी और को ख़ालिक़ मानना है **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की ख़ालिक़िय्यत का इन्कार है, वोह हर वक़्त हर लम्ह़ा हर शै को मुलाह़ज़ा फ़रमा रहा है । शे'र में इन औसाफ़ का इन्कार है । येह सब क़त़्अ़न इज्माअ़न **कुफ़्रिय्यात** हैं । क़ाइल **काफ़िर व**

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

मुरतद हो गया यूंही ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ के लिये **मकान** साबित किया है येह भी **कुफ़्र** है।

(15) *रब ने मुझ पर **सितम किया है***

ज़माने का ग़म मुझे दिया है

इस शे'र में दो **कुफ़्रिय्यात** हैं (1) مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ज़ालिम ठहराया गया और (2) उस पर ए'तिराज़ किया गया है।

(16) *तुझ को दी सूरत परी सी दिल नहीं तुझ को दिया*

*मिलता ख़ुदा तो पूछता येह **ज़ुल्म** तूने क्यूं किया ?*

इस शे'र में दो सरीह़ **कुफ़्रिय्यात** हैं : (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ **ज़ालिम** कहा गया है (2) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर **ए'तिराज़** किया गया है।

(17) ***ओ मेरे रब्बा रब्बा रे रब्बा येह क्या ग़ज़ब किया***

जिस को बनाना था लड़की उसे लड़का बना दिया

इस कुफ़्रिय्यात से भरपूर शे'र में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर **ए'तिराज़** और उस की **तौहीन** है।

(18) *अब आगे जो भी हो अन्जाम देखा जाएगा*

ख़ुदा तराश लिया और बन्दगी कर ली!

इस शे'र के मिस्रए़ सानी में **दो सरीह़ कुफ़्र** हैं : (1) मख़्लूक़ को ख़ुदा कहना (2) फिर उस की बन्दगी या'नी इ़बादत करना।

(19) *मेरी निगाह में क्या बन के आप रहते हैं*

क़सम ख़ुदा की, ख़ुदा बन के आप रहते हैं!

इस शे'र के मिस्रए़ सानी में **ग़ैरे ख़ुदा को ख़ुदा** कहा गया है। येह **सरीह़ कुफ़्र** है।

(20) ***किसी पथ्थर की मूरत से मह़ब्बत का इरादा है***

परस्तिश की तमन्ना है इ़बादत का इरादा है

इस शे'र में **पथ्थर के बुत की पूजा की तमन्ना और निय्यत का इज़्हार है** जो कि **खुला कुफ़्र** है। क्यूं कि इरादए कुफ़्र भी **क़त़्ई कुफ़्र** है। इस शे'र में अपने लिये **कुफ़्र** पर रिज़ा मन्दी भी है येह भी **सरीह़ कुफ़्र** है।

(21) ***मुझे बता ओ जहां के मालिक येह क्या नज़ारे दिखा रहा है***

तेरे समुन्दर में क्या कमी थी कि आज मुझ को रुला रहा है

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

इस शे'र में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर **ए'तिराज़** का पहलू नुमायां है इस लिये **कुफ़्र** का हुक्म है। और अगर शाइर या जो पढ़े उस की मुराद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर **ए'तिराज़** हो तो **सरीह़ कुफ़्र** है और वोह **काफ़िर व मुरतद** हो जाएगा।

(22) ***हर दुख को है गले लगाया, हर मुश्किल में साथ निभाया***

उन की क्या ता'रीफ़ करूं मैं, फ़ुरसत से है रब ने बनाया

इस शे'र में **फ़ुरसत से है रब ने बनाया** के अल्फ़ाज़ कुफ़्रिय्या हैं क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला के लिये "फ़ुरसत" का लफ़्ज़ बोलना **कुफ़्र** है।

(23) *ऐ ख़ुदा बेहतर है येह कि तू छुपा पर्दे में है*

बेच डालेंगे तुझे येह लोग इसी चक्कर में हैं

इस शे'र में रब्बुल आ़लमीन جَلَّ جَلَالُهٗ को मजबूर व बेबस और धोका खा जाने वाला कहा गया है जो कि **अल्लाहु** रब्बुल आ़लमीन की **खुली तौहीन** है। और **अल्लाहुल मुबीन** की तौहीन **कुफ़्र** है।

(24) *अब येह जान ले ले या रब, या ईमान ले ले या रब*

दो जहान ले ले या रब, या ख़ुदा ! फ़ना फ़ना येह दिल हुवा फ़ना

इस शे'र के इस हिस्से **ईमान ले ले या रब** में ईमान चले जाने या'नी काफ़िर हो जाने पर राज़ी होना पाया जा रहा है जो कि **कुफ़्र** है। "फ़तावा तातार ख़ानिया" में है : "जो अपने **कुफ़्र** पर राज़ी हुवा तह़क़ीक़ उस ने **कुफ़्र** किया।"

(فتاوٰی تاتارخانیہ،ج۵ص٤٦٠)

(25) *जब से तेरे नैनां मेरे नैनों से लागे रे*
तब से दीवाना हुवा सब से बेगाना हुवा
रब भी दीवाना लागे रे

इस शे'र के इस हिस्से **रब भी दीवाना लागे रे** में शाइ़रे बे बसाइर के दा'वे के मुत़ाबिक़ इस को ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस عَزَّوَجَلَّ مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दीवाना** लग रहा है यक़ीनन येह उस عَزَّوَجَلَّ की शाने आ़ली में खुली गाली और खुला खुला **कुफ़्र व इरतिदाद** है। **फ़तावा तातार ख़ानिया** में है : "जो **अल्लाह** को ऐसे वस्फ़ (या'नी पहचान या ख़ासिय्यत) से मौसूफ़ करे जो उस की शान के लाइक़ नहीं या **अल्लाह** तआ़ला के नामों में से किसी नाम का या उस के अह़काम में से किसी हुक्म का मज़ाक़ उड़ाए या उस के वा'दे या वई़द का इन्कार करे तो ऐसे आदमी की तक्फ़ीर की जाएगी या'नी उस को **काफ़िर** क़रार दिया जाएगा।"

(فتاوٰی تاتارخانیہ،ج۵ص٤٦١)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

(26) *जो भरता नहीं वोह ज़ख़्म दिया है मुझ को, नहीं प्यार को बदनाम तूने किया है*

जिसे मैं ने पूजा मसीह़ा बना कर, न था येह पता पथ्थरों का बना है

इस शे'र में अपने मजाज़ी मह़बूब को **पूजने** या'नी उस की **इबादत** करने का इक़रार है और शाइ़र इस **कुफ़्र** का इक़रार कर रहा है और **कुफ़्र** का इक़रार भी **कुफ़्र** है। अगर मज़ाक़न हो तब भी येही हुक्म है। सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह, अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : जो बत़ौरे तमस्ख़ुर और ठठ्ठा (या'नी मज़ाक़ मस्ख़री में) **कुफ़्र** करेगा वोह भी **मुरतद** है अगर्चे कहता है कि (मैं) ऐसा ए'तिक़ाद (या'नी अ़क़ीदा) नहीं रखता। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 9, स. 173, دُرِّمُختار ج ٦ ص ٣٤٣)

(27) *रखूंगा तुम्हें धड़कनों में बसा के*

तुम्हें चाहतों का ख़ुदा मैं बना के

बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ वह़्दहू ला शरीक है। बयान कर्दा शे'र में बन्दे को "चाहतों का ख़ुदा" माना गया है जो कि खुला, **कुफ़्र व शिर्क** है।

(28) *तुम सा कोई दूसरा इस ज़मीं पे हुवा तो रब से शिकायत होगी*

तुम्हारी त़रफ़ रुख़ ग़ैर का हुवा तो क़ियामत से पहले क़ियामत होगी

इस शे'र में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर **ए'तिराज़** करने के इरादे का इज़्हार है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर **ए'तिराज़** करना **कुफ़्र** है।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

(29) *महब्बत की क़िस्मत बनाने से पहले — ज़माने के मालिक तू रोया तो होगा*
महब्बत पे येह ज़ुल्म ढाने से पहले — ज़माने के मालिक तू रोया तो होगा

(30) *तुझे भी किसी से अगर प्यार होता — हमारी तरह तू भी क़िस्मत को रोता*
येह अश्कों के मेले लगाने से पहले — ज़माने के मालिक तू रोया तो होगा

(31) *मेरे हाल पर येह जो हंसते हैं तारे — येह तारे हैं तेरी हंसी के नज़ारे*
हंसी मेरे ग़म की उड़ाने से पहले — ज़माने के मालिक तू रोया तो होगा

(32) *ज़माने के मालिक येह तुझ से गिला है — ख़ुशी हम ने मांगी थी रोना मिला है*
गिला मेरे लब पे भी आने से पहले — ज़माने के मालिक तू रोया तो होगा

मज़्कूरा अश्आर **अल्लाहु** रब्बुल आलमीन جَلَّ جَلَالُہٗ की **तौहीन** से भरपूर हैं, इन अश्आर में कम अज़ कम **पांच खुले कुफ़्रिय्यात** हैं ﴾1﴿ **अल्लाह** के लिये **रोना** मुम्किन माना गया है ﴾2﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को **ज़ालिम** कहा गया है ﴾3﴿ उसे **महकूम** माना गया है ﴾4﴿ उस को किसी के रन्जो ग़म और बे बसी पर **हंसी उड़ाने** वाला क़रार दिया गया है और ﴾5﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर **ए'तिराज़** किया गया है ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

(33) ***मैं प्यार का पुजारी मुझे प्यार चाहिये***

रब जैसा ही मुझे सुन्दर यार चाहिये

इस शे'र में दो कुफ़्रिय्यात हैं ﴾1﴿ ग़ैरे ख़ुदा की **पूजा** या'नी इबादत का इक़रार है ﴾2﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरह किसी और का होना मुम्किन माना गया है। कुरआने मजीद फ़ुरक़ाने हमीद पारह 25 **सूरए शूरा**, आयत नम्बर 11 में **अल्लाहु** रब्बुल इबाद عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

لَیْسَ كَمِثْلِهٖ شَیْءٌۚ وَ هُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ ﴿۱۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : उस जैसा कोई नहीं और वोही सुनता देखता है।

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی **बहारे शरीअ़त** में लिखते हैं : "**अल्लाह** एक है कोई उस का शरीक नहीं न ज़ात में न सिफ़ात में न अफ़्आ़ल में न अह़काम में न अस्मा (या'नी नामों) में।" (बहारे शरीअ़त, हिस्सए अव्वल, स. 17)

(34) ***क़िस्मत बनाने वाले ज़रा सामने तो आ***

मैं तुझ को येह बताऊं कि दुन्या तेरी है क्या ?

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह्क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

मज़्कूरा शे'र में कई **कुफ़्रिय्यात** हैं : ﴾1﴿ अ़ज़ाबे नार के ह़क़दार शाइ़रे ना हन्जार का **अल्लाहु ग़फ़्फ़ार** عَزَّوَجَلَّ को मुख़ात़ब कर के इस त़रह़ कहना : "ज़रा सामने तो आ" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को मुक़ाबले के लिये चेलेन्ज करना है और येह **अल्लाहु** रब्बुल आ़लमीन جَلَّ جَلَالُہٗ की **सख़्त तौहीन** है और रब्बे मुबीन عَزَّوَجَلَّ की तौहीन **कुफ़्र** है ﴾2﴿ "मैं तुझ को बताऊं कि दुन्या तेरी है क्या ?" कह कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर **ए'तिराज़** किया गया है और येह भी **कुफ़्र** है और ﴾3﴿ तीसरा **कुफ़्र** येह है कि इस में **अल्लाह** तआ़ला को मुक़ाबले के लिये पुकारा है। نَعُوْذُ بِاللّٰہِ تَعَالٰی

ईमान बरबाद हो गया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! क़त़ई कुफ़्र पर मब्नी एक भी शे'र जिस ने दिलचस्पी के साथ पढ़ा, सुना या गाया वोह कुफ़्र में जा पड़ा और इस्लाम से ख़ारिज हो कर **काफ़िर व मुरतद** हो गया, उस के तमाम नेक आ'माल अकारत हो गए या'नी पिछली सारी नमाज़ें, रोज़े, ह़ज वग़ैरा तमाम नेकियां ज़ाएअ़ हो गईं। शादी शुदा था तो **निकाह़** भी टूट गया अगर किसी का **मुरीद** था तो बैअ़त भी ख़त्म हो गई। उस पर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

फ़र्ज़ है कि उस शे'र में जो **कुफ़्र** है उस से फ़ौरन तौबा करे और कलिमा पढ़ कर नए सिरे से मुसल्मान हो। **मुरीद** होना चाहे तो अब नए सिरे से किसी भी जामेए़ शराइत़ पीर का मुरीद हो, अगर साबिक़ा बीवी को रखना चाहे तो दोबारा नए **महर** के साथ उस से **निकाह़** करे।

जिस को येह शक हो कि आया मैं ने इस त़रह़ का शे'र दिलचस्पी के साथ गाया, सुना या पढ़ा है या नहीं मुझे तो बस यूं ही फ़िल्मी गाने सुनने और गुनगुनाने की आ़दत है तो ऐसा शख़्स भी **एह़तियात़न तौबा** कर के नए सिरे से मुसल्मान हो जाए, नीज़ **तजदीदे बैअ़त** और **तजदीदे निकाह़** कर ले कि इसी में दोनों जहां की भलाई है।

मियां बीवी के मुतअ़ल्लिक़ कुफ़्रिय्यात के बारे में सुवाल जवाब

"अल्लाह मालिक नहीं बस आप को काम करना है" कहना कैसा ?

सुवाल : बीवी ने शोहर से कहा कि "फ़ुलां काम ज़रूर कर देना।" शोहर ने कहा : "**अल्लाह** मालिक है।" इस पर बीवी ने कहा : "**अल्लाह** मालिक नहीं बस आप को काम करना है।"

जवाब : येह कहना कि "**अल्लाह** मालिक नहीं" **कुफ़्र** है।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

"ख़ुदा भी जुदा नहीं कर सकता" कहना कैसा ?

सुवाल : एक शख़्स ने अपनी बीवी से कहा : "ख़ुदा भी अब तुम को मुझ से जुदा नहीं कर सकता, तुम्हें हर ह़ाल में यहीं रहना है ।" क्या येह कहना कुफ़्र है ?

जवाब : इस त़रह़ कहने वाला **काफ़िर व मुरतद** है कि उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत का इन्कार किया । **बहारे शरीअ़त** हिस्सा 9 सफ़ह़ा 179 पर है : किसी ज़बान दराज़ आदमी से येह कहना कि "**ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी ज़बान का मुक़ाबला कर ही नहीं सकता मैं किस त़रह़ करूं !" येह **कुफ़्र** है । यूंही एक ने दूसरे से कहा : अपनी औ़रत को क़ाबू में नहीं रखता ? उस ने कहा : "औ़रतों पर **ख़ुदा** को तो क़ुदरत है नहीं मुझ को कहां से होगी ।" (येह भी कलिमए कुफ़्र है)

मियां बीवी के बारे में कुफ़्रिय्यात की 10 मिसालें

﴾1﴿ जिस ने कहा : मैं त़लाक़ मलाक़ कुछ नहीं जानता बीवी को घर में होना चाहिये, चाहे त़लाक़ हो जाए या न हो । ऐसा शख़्स **काफ़िर** है । क्यूं कि उस ने ह़लाल ह़राम को बराबर समझा । (مِنَحُ الرَّوض ص ٤٧٢)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

﴾2﴿ इ़द्दत में निकाह़ को ह़लाल जान कर निकाह़ पढ़ाने वाला और ﴾3﴿ ह़लाल समझ कर शिर्कत करने वाले सब लोगों पर हुक्मे **कुफ़्र** है।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 11, स. 266, मुलख़्ख़सन)

﴾4﴿ जिस ने कहा : "आ़लिम शोहर पर ला'नत हो" येह क़ौल **कुफ़्र** है क्यूं कि इस ने इ़ल्म के वस्फ़ पर (या'नी आ़लिमे दीन होने की वज्ह से) ला'नत की और शरीअ़त की तौहीन की। (فتاوٰی عالمگیری ج ۲ ص ۲۷۱)

﴾5﴿ ह़ाएज़ा औ़रत से हम बिस्तरी को ह़लाल समझना फ़ुक़हाए किराम की एक जमाअ़त के नज़्दीक **कुफ़्र** है। (مِنَحُ الرَّوض ص ۵۰۸, बहारे शरीअ़त, जि. 1, हि़स्सा : 2, स. 382)

﴾6﴿ लिवात़त (बद फ़े'ली) करने को ह़लाल समझना **कुफ़्र** है।

(مِنَحُ الرَّوض ص ۵۰۳)

﴾7﴿ जिस ने किसी क्रिस्चेन औ़रत को देखा तो कहा : "काश ! मैं भी क्रिस्चेन होता ताकि इस से निकाह़ कर सकता" येह कहना **कुफ़्र** है। (اَیضاً ص۴۸۶)

﴾8﴿ बीवी ने शोहर से कहा : तुझे न ग़ैरत है और न ही तेरा कोई दीने इस्लाम है कि ग़ैरों के साथ मेरी तन्हाई पर राज़ी है ! शोहर ने कहा : हां मुझे न ग़ैरत है और न ही मेरा कोई दीने इस्लाम है" येह क़ौल **कुफ़्र** है।

(مَجْمَعُ الْاَنْهُر ج ۲ ص ۵۱۳)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

9 बीवी ने शोहर से कहा : "अगर तूने आयिन्दा मुझ पर ज़ियादती की या मेरे लिये फुलां चीज़ न ख़रीदी तो मैं **काफ़िरा** हो जाऊंगी" कहने वाली फ़ौरन **काफ़िरा** हो गई। (فتاوٰی عالمگیری ج۲ ص ۲۷۹)

10 जो अपनी बीवी से कहे : "तू मुझे ख़ुदा से ज़ियादा पसन्द है।" येह क़ौल **कुफ़्रिय्या** पहलू रखता है। (اَلْبَحْرُ الرَّائِق ج۵ ص ۲۰۳)

दो जन्नतें...... किस के लिये ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मियां बीवी में ज़ेहनी हम आहंगी न होने के बाइस होने वाली आए दिन की लड़ाइयों और **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ की कमी के बाइस बक बक और झक झक की आ़दतों के सबब ज़बान से **कुफ़्रिय्या कलिमात** निकल जाने का सख़्त अन्देशा रहता है लिहाज़ा अपने दिल में **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ पैदा करने की जिद्दो जहद जारी रखिये। पारह 27 **सूरतुर्रह़मान** आयत नम्बर 46 में ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ﴿۴۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरे उस के लिये **दो जन्नतें** हैं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइ़स है। (ابو یعلی)

इस आयते मुबारका की तफ़्सीर बयान करते हुए **ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह उन मोमिनीन से जन्नत का वा'दा फ़रमाया जो अपने रब عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर खड़े होने से डरे और ख़ाइफ़ (डरने वाला) वोह है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त बजा लाए और उस की ना फ़रमानी छोड़ दे।

(تفسیر طَبَری ج ۱۱ ص ۶۰۲)

सोने और चांदी की जन्नतें

इन दो जन्नतों के मुतअ़ल्लिक़ कई अक़्वाल हैं, बुख़ारी शरीफ़ में है : **सरकारे नामदार**, मदीने के ताजदार, ह़बीबे परवर्दगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, जनाबे अह़मदे मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे नूरबार है : **दो जन्नतें चांदी की हैं,** जिन के बरतन और जो कुछ उन में है सब चांदी के हैं और **दो जन्नतें सोने की हैं,** जिन के बरतन और जो कुछ उन में है सब सोने के हैं। इन के और इन के **रब्बे** करीम عَزَّوَجَلَّ के दीदार के दरमियान जन्नते अ़द्न में सिर्फ़ रिदाए किब्रियाई ह़ाइल है।

(صَحِیحُ البُخارِیّ ج ۳ ص ۳۴۴ حدیث ۴۸۷۸)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

"اِنْ شَآءَاللّٰه" का मज़ाक़ उड़ाने के बारे में सुवाल जवाब

"येह اِنْ شَآءَاللّٰه ढीली है" कहना कैसा ?

सुवाल : बयान के दौरान मुक़र्रिर ने सामिईन से किसी अ़मल की निय्यत करने के लिये कहा तो सामिईन ने आहिस्ता से : "اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ" कहा। इस पर मुक़र्रिर बोला कि येह اِنْ شَآءَاللّٰه तो "ढीली" है। येह सुन कर सामिईन ने اِنْ شَآءَاللّٰه की ज़ोरदार सदा लगाई। इस पर कहा कि येह اِنْ شَآءَاللّٰه सहीह वाली है या कहा येह اِنْ شَآءَاللّٰه "पतली गली वाली" है। इस पर सामिईन ने क़हक़हा लगाया, क्या इस अन्दाज़ से اِنْ شَآءَاللّٰه की तौहीन नहीं होती ?

जवाब : मज़्कूरा कलिमा ब ज़ाहिर कुफ़्र ही लगता है कि इस में लफ़्ज़े اِنْ شَآءَاللّٰه के साथ तमस्ख़ुर (या'नी मज़ाक़) करना पाया जा रहा है जभी तो सामिईन ने क़हक़हा लगाया। और اِنْ شَآءَاللّٰه को "ढीली" या "पतली गली वाली" कहने में भी इस की तौहीन ज़ाहिर हो रही है अगर्चे इस की **तावील** मुम्किन है, हो सकता है यहां लोगों का اِنْ شَآءَاللّٰه फ़क़त ढीली आवाज़ में कहना

www.dawateislami.net

मुक़र्रिर की मुराद हो। बहर ह़ाल वोह मुक़र्रिर इस जुम्ले से तौबा के साथ साथ **तजदीदे ईमान** और शादी शुदा हो तो **तजदीदे निकाह़** भी करे और इस को सुन कर जिन का बे इख़्तियार क़ह्क़हा बुलन्द हो गया उन का कोई क़ुसूर नहीं जब कि वोह उस मुक़र्रिर की बात से मुत्तफ़िक़ न हों। हां जिन्हों ने मुक़र्रिर की बात को समझ कर मुत्तफ़िक़ हो कर क़ह्क़हा लगाया वोह भी **तौबा** व **तजदीदे ईमान** व **तजदीदे निकाह़** करें।

मुबल्लिग़े आ'ज़म के रूह़ परवर बयान की एक झलक

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुन्नतों भरा बयान करने में सख़्त एह़तियातों की ज़रूरत है नीज़ बयान करने वाले को **सन्जीदा अन्दाज़** रखना चाहिये। बा'ज़ मुक़र्रिरीन बड़े बेबाक होते हैं और इज्तिमाअ़ की कसरत देख कर बसा अवक़ात एक दम आपे से बाहर हो जाते हैं और न कहने वाली बात बोल जाते हैं। काश ! हमें **सन्जीदगी** मिल जाती और **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ नसीब हो जाता। येह आ़म मुशाहदे की बात है कि **ग़ैर सन्जीदा** बयान में ह़ाज़िरीन ज़ोर ज़ोर से हंसते और रिक़्क़त आमेज़ **सन्जीदा** बयान में बिलक बिलक कर रोते हैं। काएनात के सब से

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الايمان)

अ़ज़ीम मुबल्लिग़ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बयाने अ़ज़मत निशान की एक झलक मुलाहज़ा हो : चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ

(پ ٢٨ التحريم ٦)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं।

इस के बा'द इर्शाद फ़रमाया : जहन्नम की आग को एक हज़ार साल तक जलाया गया यहां तक कि वोह **सुर्ख़** हो गई, फिर एक हज़ार साल तक जलाया गया यहां तक कि वोह **सफ़ेद** हो गई, फिर उसे एक हज़ार साल तक जलाया गया तो वोह **सियाह** हो गई तो अब जहन्नम की आग काली सियाह है उस के शो'ले नहीं बुझते। येह सुन कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने **एक ह़बशी चीख़ें मार कर रोने लगा** तो ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام नाज़िल हुए और अ़र्ज़ की : "आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने रोने वाला शख़्स कौन है ?" फ़रमाया : ह़बशा का एक शख़्स है। और फिर उस शख़्स की ता'रीफ़ बयान फ़रमाई तो ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

फ़रमाता है कि मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! **मेरे ख़ौफ़ के सबब जिस बन्दे की आंख रोएगी, मैं जन्नत में उस की हंसी में इज़ाफ़ा फ़रमाऊंगा।**

(شُعَبُ الایمان ج ۱ ص ۴۸۹ حدیث ۷۹۹)

ख़ुल्दे बरीं दे बाग़े जिनां दे | *नारे जहन्नम से तू अमां दे*
या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *मेरी झोली भर दे* | *वासिफ़ नो'मां बिन साबित का* رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

"मैं बिग़ैर اِنْ شَآءَ اللّٰہ काम करूंगा" कहना

सुवाल : किसी ने कहा : तुम اِنْ شَآءَ اللّٰہ येह काम करोगे। जवाब दिया : मैं बिग़ैर اِنْ شَآءَ اللّٰہ के येह काम करूंगा। ऐसा जवाब देने वाले के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब : ऐसा जवाब देने वाले पर हुक्मे **कुफ़्र** है।

جَزَاكَ اللّٰه सुन कर कहना कि इस की ज़रूरत नहीं

सुवाल : एक ने कहा : جَزَاکَ اللّٰہ (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को जज़ा दे) दूसरे ने मा'ना समझने के बा वुजूद जवाब दिया : नहीं नहीं इस की ज़रूरत नहीं या कहा मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से जज़ाए ख़ैर नहीं चाहिये। ऐसा जवाब देने वाले के बारे में क्या हुक्म है ?

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा। (ابن عدی)

जवाब : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से अ़त़ा होने वाले अज्रो सवाब को हलका जानना कुफ़्र है। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत**, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن की ख़िदमत में **सुवाल** किया गया कि कुछ अफ़्राद **क़ुरबानी** करते हैं मगर कहते हैं कि चाहे हमारी **क़ुरबानी** क़बूल हो या न हो, अपने बाप दादा की रस्म न छोड़ेंगे, चाहे आ़लिम कुछ भी कहें। **अल जवाब :** "उन के येह अक़्वाल मज़्मूम व सख़्त हैं, उन की क़ुरबानियां क़ाबिले क़बूल नहीं। उन्हों ने क़बूले इलाही (عَزَّوَجَلَّ) को हलका जाना और आ़लिमों के इर्शाद से बे परवाई की, (अपने क़ौल से तौबा कर के) अज़् सरे नौ कलिमा पढ़ें और अपनी औ़रतों से निकाहे़ जदीद करें।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 707, 708, मुलख़्ख़सन) और جَزَاکَ الله सुन कर अगर मा'ना न जानने की वज्ह से कहा कि नहीं इस की ज़रूरत नहीं या'नी मुराद येह हो कि मेरा शुक्रिय्या अदा करने की कोई ज़रूरत नहीं तो कोई जुर्म नहीं।

जन्नत दिखा कर मह़रूम कर दिया जाएगा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! हर अ़मल अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ मह़्ज़ रब्बे लम यज़ल عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये करना चाहिये। सिर्फ़ दिखावे के लिये

नेकियां करने वाले रियाकार अ़ज़ाबे नार के ह़क़दार हैं चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़दी बिन ह़ातिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم ने फ़रमाया : क़ियामत के दिन लोगों में से कुछ लोगों को **जन्नत** की त़रफ़ जाने का हुक्म दिया जाएगा, जब वोह लोग **जन्नत** के क़रीब पहुंच जाएंगे और उस की ख़ुश्बू को सूंघ लेंगे और उस के मह़ल्लों और जन्नतियों के लिये जो ने'मतें तय्यार की गई हैं उन को देख लेंगे तो निदा की जाएगी : اِصْرِفُوْھُمْ عَنْھَا،لَا نَصِیْبَ لَھُمْ فِیْھَا या'नी "इन को **जन्नत** से हटा दो, इन के लिये **जन्नत** में कोई ह़िस्सा नहीं है।" वोह इतनी ह़सरत से **जन्नत** से लौटेंगे कि पहले इतनी ह़सरत से कोई नहीं लौटा था, वोह कहेंगे कि ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ अगर तू हम को **जन्नत** और अपने सवाब को दिखाने और तूने अपने दोस्तों के लिये जो ने'मतें तय्यार की हैं, उन को हमें दिखाने से पहले दोज़ख़ में दाख़िल कर देता तो येह हमारे लिये बहुत आसान होता। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : "हमारी मशिय्यत ही येह थी ऐ बद बख़्तो ! जब तुम तन्हा होते थे तो बड़े बड़े गुनाहों से

मेरा मुक़ाबला करते थे और जब लोगों से मिलते थे तो ख़ुशूअ़ के साथ मिलते जो कुछ दिल में मेरी ता'ज़ीम करते उस के ख़िलाफ़ लोगों पर ज़ाहिर करते लोगों से तुम डरे और मुझ से न डरे, लोगों की ता'ज़ीम की और मेरी ता'ज़ीम नहीं की, लोगों के लिये गुनाह छोड़े मेरे लिये नहीं छोड़े, लिहाज़ा तुम को आज अ़ज़ाब चखाऊंगा और सवाब से मह़रूम करूंगा।"

(مَجْمَعُ الزَّوائِد ج۱۰ ص ۳۷۷ حدیث ۱۷٦٤۹)

क्रिस्चेनों वग़ैरा के बारे में सुवाल जवाब

"क्रिस्चेनों को अहले ईमान" कहना कैसा ?

सुवाल : ज़ैद ने सरे आ़म कहा : "मौजूदा दौर के क्रिस्चेन और यहूदी **अहले ईमान** हैं" इस के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब : यहूदियों और क्रिस्चेनों या'नी ईसाइयों को **अहले ईमान** कहना **कुफ़्र** है क्यूं कि येह दोनों **काफ़िर** हैं और **काफ़िर** को **काफ़िर** जानना **ज़रूरिय्याते दीन** में से है। चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 144 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" हिस्सा 1 सफ़्ह़ा 98 पर सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा

मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى फ़रमाते हैं : "मुसल्मान को मुसल्मान, काफ़िर को काफ़िर जानना **ज़रूरिय्याते दीन** से है।"

(बहारे शरीअ़त, हिस्सए अव्वल, स. 98)

क्या अहले किताब, अहले ईमान नहीं ?

सुवाल : अगर ज़ैद येह कहे कि मैं ने यहूदो नसारा (या'नी यहूदियों और क्रिस्चेनों) को इस लिये **अहले ईमान** कहा कि वोह **आस्मानी किताबों** के मानने वाले या'नी अहले किताब हैं।

जवाब : यहूदो नसारा **अहले किताब** तो हैं मगर इस बिना पर उन्हें **अहले ईमान** नहीं कहा जा सकता, फ़िल वक़्त उन के मज़ाहिब बातिल हैं और दीने इस्लाम के सिवा कोई और दीन क़ाबिले क़बूल नहीं। पारह 3 **सूरए आले इमरान** आयत 85 में ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने अ़ज़ीमुश्शान है :

وَمَنۡ یَّبۡتَغِ غَیۡرَ الۡاِسۡلَامِ دِیۡنًا فَلَنۡ یُّقۡبَلَ مِنۡهُ ۚ وَهُوَ فِی الۡاٰخِرَةِ مِنَ الۡخٰسِرِیۡنَ ﴿۸۵﴾

(پ۳ آل عمران ۸۵)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो इस्लाम के सिवा कोई दीन चाहेगा वोह हरगिज़ उस से क़बूल न किया जाएगा और वोह आख़िरत में ज़ियांकारों (या'नी नुक़्सान उठाने वालों में) से है।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस आयते मुबारका के तह़त **तफ़्सीरे नईमी** जिल्द 3 सफ़ह़ा 575 पर फ़रमाते हैं : "जो कोई इस्लाम के सिवा कोई दूसरा दीन तलाश करे या **नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी के बा'द जो कोई इन की शरीअ़त के इलावा किसी और दीन को तलाश करे ख़्वाह शिर्क व कुफ़्र को या यहूदिय्यत व नसरानिय्यत को कि वोह अद्यान (या'नी यहूदिय्यत व नसरानिय्यत) अपने वक़्त में इस्लाम थे अब इन का इख़्तियार करना गुमराही व कुफ़्र है।" (तफ़्सीरे नईमी, जि. 3, स. 575)

ईसाई तीन ख़ुदाओं को मानते हैं

सुवाल : क्या ईसाई एक ख़ुदा के मानने वाले नहीं हैं ?

जवाब : जी नहीं। येह लोग तस्लीस के क़ाइल हैं या'नी इन्हों ने वह़दानिय्यत को مَعَاذَ اللّٰه तीन ह़िस्सों में इस त़रह़ तक़्सीम कर दिया है : (1) बाप (2) बेटा और (3) रूहुल क़ुदुस। और इन लोगों को वाज़ेह़ लफ़्ज़ों में क़ुरआने मजीद ने **काफ़िर** क़रार दिया है। अब अगर कोई इन को "ईमान वाला" कहता है तो वोह साफ़ साफ़ क़ुरआने करीम को झुटलाता है चुनान्चे पारह 6 **सूरतुल माइदह** की आयत नम्बर 72 ता 73 में इर्शादे रब्बुल इबाद है :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ وَقَالَ الْمَسِيْحُ يٰبَنِىْۤ اِسْرَآءِيْلَ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّىْ وَرَبَّكُمْ ؕ اِنَّهٗ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَاْوٰىهُ النَّارُ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿۷۲﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ ثَلٰثَةٍ ۘ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّاۤ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ وَاِنْ لَّمْ يَنْتَهُوْا عَمَّا يَقُوْلُوْنَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۷۳﴾

(پ٦ المائدہ،٧٢،٧٣)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक काफ़िर हैं वोह जो कहते हैं कि **अल्लाह** वोही मसीह़ मरयम का बेटा है और मसीह़ ने तो येह कहा था : ऐ बनी इसराईल ! **अल्लाह** की बन्दगी करो जो मेरा रब और तुम्हारा रब, बेशक जो **अल्लाह** का शरीक ठहराए तो **अल्लाह** ने उस पर जन्नत ह़राम कर दी और उस का ठिकाना दोज़ख़ है और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। बेशक काफ़िर हैं वोह जो कहते हैं **अल्लाह** तीन ख़ुदाओं में का तीसरा है, और ख़ुदा तो नहीं मगर एक ख़ुदा और अगर अपनी बात से बाज़ न आए तो जो उन में काफ़िर मरेंगे उन को ज़रूर दर्दनाक अ़ज़ाब पहुंचेगा।

क्या तौह़ीद के क़ाइल यहूदियों को भी अहले ईमान न कहा जाए ?

सुवाल : जो यहूदी तौह़ीद के क़ाइल हैं क्या उन को भी **अहले ईमान** नहीं कह सकते ?

जवाब : यहूदियों में से जो लोग रब्बुल इ़ज़्ज़त की वह़दानिय्यत के

क़ाइल हैं, उन को भी **अहले ईमान** नहीं कह सकते क्यूं कि **अहले ईमान** के लिये **तौह़ीद** पर ईमान के साथ साथ नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **रिसालत** पर ईमान लाना भी ज़रूरी है और अगर कोई **अल्लाहु** रह़मान عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाए मगर सुल्त़ाने दो जहान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान न लाए तो वोह ईमान वाला या'नी **मोमिन** नहीं जैसा कि **यहूदो नसारा** रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान न लाए तो इन्हें कु़रआने पाक में मुन्किर व ला'नती क़रार दिया गया। चुनान्चे मुक़द्दस कु़रआन पारह 1 **सूरतुल बक़रह** की आयत नम्बर 89 में ख़ुदाए ह़न्नान व मन्नान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने फ़ैसला निशान है :

وَلَمَّا جَآءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ ۙ وَكَانُوْا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا بِهٖ ۫ فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿۸۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब उन के पास **अल्लाह** की वोह किताब (कु़रआन) आई जो उन के साथ वाली किताब (तौरैत) की तस्दीक़ फ़रमाती है और इस से पहले उसी नबी के वसीले से काफ़िरों पर फ़त्ह़ मांगते थे तो जब तशरीफ़ लाया उन के पास वोह जाना पहचाना उस से मुन्किर हो बैठे तो **अल्लाह** की ला'नत मुन्किरों पर।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

पारह 3 **सूरए आले इमरान** आयत 90 में ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने अ़ज़ीमुश्शान है :

اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِیْمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ ۚ وَ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الضَّآلُّوْنَ ﴿۹۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो ईमान ला कर काफ़िर हुए फिर और कुफ़्र में बढ़े उन की तौबा हरगिज़ क़बूल न होगी और वोही हैं बहके हुए।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی इस आयते करीमा के तह़्त तफ़्सीरे **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में फ़रमाते हैं : "येह आयत **यहूदो नसारा** के ह़क़ में नाज़िल हुई जो सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बिअ़्सत से क़ब्ल तो अपनी किताबों में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त देख कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर **ईमान** रखते थे और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़ुहूर के बा'द **काफ़िर** हो गए और फिर **कुफ़्र** में और शदीद हो गए।"

क्या किताबियों को अहले ईमान कहने की कोई गुन्जाइश ही नहीं ?

सुवाल : तो क्या वाक़ेई अहले किताब को **अहले ईमान** कहने की कोई गुन्जाइश ही नहीं ?

जवाब : जी हां कोई गुन्जाइश नहीं कि जब कुरआने पाक ने

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

यहूदो नसारा को सराहतन काफ़िर फ़रमा दिया तो अब उन को **अहले ईमान** कहने की गुन्जाइश ही कब रही ! बल्कि अहले किताब का अपनी किताबों पर अ़मल करने का दा'वा भी उन्हें **अहले ईमान** न कर सकेगा कि जब उन की किताबों में **सरकारे दो आ़लम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी और इन पर ईमान लाने का **ज़िक्र** किया गया था तो फिर बा'द में ख़ातमुल मुरसलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इन्कार करना गोया कि अपनी किताबों को **न मानना** है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِ "तफ़्सीरे कबीर" में **सूरतुल बक़रह** की आयत नम्बर 41 के इस हिस्से : وَلَا تَكُوْنُوْۤا اَوَّلَ كَافِرٍۭ بِهٖ۪ (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान** : और सब से पहले उस के मुन्किर न बनो) के तह़त फ़रमाते हैं : ताजदारे नुबुव्वत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की **रिसालत** को सब से पहले झुटला कर अपनी किताबों को झुटलाने वाले न बनो इस लिये कि तुम्हारा **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को झुटलाना अपनी किताबों के झुटलाने को लाज़िम करता है। (تفسیرکبیر،ج ۱ ص ۴۸۳)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

क्या शिर्क से बचने वाले किताबी को भी अहले ईमान नहीं कह सकते ?

सुवाल : कोई यहूदी या क्रिस्चेन अगर शिर्क न करता हो और सिर्फ़ एक ख़ुदा का क़ाइल हो क्या अब भी उस को **अहले ईमान** नहीं कह सकते ?

जवाब : जी नहीं। अगर कोई यहूदी या ईसाई शिर्क छोड़ भी दे और तौहीदे ह़क़ीक़ी का इक़रार कर भी ले मगर जब तक वोह सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, बि इज़्ने परवर्दगार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को नबी न माने **अहले ईमान नहीं हो सकता वोह यक़ीनन क़त्अ़न काफ़िर, काफ़िर और काफ़िर ही है और काफ़िर भी ऐसा कि उसे ईमान वाला या'नी मोमिन कहने वाला ख़ुद काफ़िर है।** "मज्मउ़ल अन्हर" में है : यहूदी या ईसाई अगर सिर्फ़ येह कहे : لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه या'नी "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं" वोह मुसल्मान न होगा जब तक مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم या'नी "**मुह़म्मद** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के **रसूल** हैं" न कह ले। (مَجْمَعُ الانهُر ج٢ ص٥٠٣) बल्कि किसी एक नबी को नबी मानने से इन्कार करना भी कुफ़्र है। **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते है : जो कोई **अम्बियाए किराम** عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में से

बा'ज़ अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को न माने या जो अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सुन्नत हो उस पर राज़ी न हो तो यक़ीनन उस ने **कुफ़्र** किया। (عالمگیری ج۲ص ۲۶۳) बहर हाल महबूबे रब्बे ज़ुल जलाल, साहिबे जूदो नवाल, शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, सुल्ताने शीरीं मक़ाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर **ईमान** न लाना, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को आख़िरी नबी न मानना और अपने दीन को छोड़ कर सय्यिदुल मुरसलीन, ख़ातमुन्नबिय्यीन, जनाबे रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लाए हुए दीने मुबीन को न अपनाना यहूदो नसारा का **ख़ालिस कुफ़्र** है कि अब **अहले ईमान** या'नी मोमिन होने का मतलब ही येह है कि वोह ख़ातमुन्नबिय्यीन, साहिबे क़ुरआने मुबीन, महबूबे रब्बुल आलमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लाए हुए दीने मतीन की तस्दीक़ करने वाला और इस पर बिला चूनो चिरा ईमान लाने वाला हो। **मज्मउ़ल अन्हर** में है : "जो कोई मोहतरम नबी, मक्की मदनी, महबूबे रब्बे ग़नी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को आख़िरी नबी न जाने तो वोह **मुसल्मान** नहीं।" (مَجْمَعُ الانہرج۲ ص۵۰۶) **तो चूंकि**

यहूदो नसारा का अहले ईमान होना न क़ुरआने पाक से साबित है न अह़ादीसे मुबारका से लिहाज़ा उन को अहले ईमान कहना क़त़ई कुफ़्र है क्यूं कि काफ़िर को काफ़िर जानना ज़रूरिय्याते दीन में से है। चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या शरीफ़** में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ज़करिय्या नववी और सय्यिदुना इमाम इब्ने ह़जर मक्की رَحِمَهُمَا اللّٰهُ الْقَوِی का मुबारक क़ौल नक़्ल करते हुए फ़रमाते हैं : जब किसी ने ऐसी बात का इन्कार किया जिस का ज़रूरिय्याते दीने इस्लाम से होना मुत्तफ़क़ुन अ़लैह (या'नी जिस पर सभी अहले इस्लाम का इत्तिफ़ाक़ होना) मा'लूम है ख़्वाह उस में नस्स हो या न हो तो उस का इन्कार **कुफ़्र** है। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 339)

क्या यहूदो नसारा दाइमी जहन्नमी हैं ?

सुवाल : तो क्या यहूदो नसारा को अहले ईमान कहने की कोई सूरत ही नहीं ? क्या येह हमेशा हमेशा के लिये जहन्नमी हैं ?

जवाब : जी हां इन को **अहले ईमान** कहने की कोई सूरत ही नहीं कि क़ुरआने करीम पारह अव्वल **सूरतुल**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

बक़रह की आयत नम्बर 41 में सराहतन आ गया है :

وَاٰمِنُوْا بِمَاۤ اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُوْنُوْۤا اَوَّلَ كَافِرٍۭ بِهٖ۪

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ईमान लाओ उस पर जो मैं ने उतारा उस की तस्दीक़ करता हुवा जो तुम्हारे साथ है और सब से पहले इस के मुन्किर न बनो।

तो अब साफ़ ज़ाहिर है कि **यहूदो नसारा** ने मक्की मदनी आक़ा मीठे मीठे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान न ला कर कुफ़्र किया और क़ुरआने मजीद ने इन को काफ़िर कहा **तो अब इन को अहले ईमान कहने की कोई सूरत ही बाक़ी न रही। यहूदो नसारा इन्कार करने के सबब काफ़िर हो कर हमेशा हमेशा के लिये जहन्नमी हो गए और जो इन को जहन्नमी न माने वोह भी काफ़िर व दाइमी जहन्नमी है** चुनान्चे फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं : हज़रते **सय्यिदुना इब्ने सलाम** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْاَنَام से मरवी है जो येह कहे : "मैं नहीं जानता कि जब क़ियामत क़ाइम की जाएगी तो **यहूदो नसारा** को आग का अज़ाब दिया जाएगा," इस पर मशाइख़े बल्ख़ समेत तमाम मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام ने फ़तवा इर्शाद फ़रमाया कि ऐसे शख़्स की **तक्फ़ीर** की जाएगी।

(عالمگیری ج۲ ص ۲۷٤)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

काफ़िर को इस्लाम के क़रीब लाने के लिये कुफ़्र बकना

सुवाल : अगर कोई यहूदो नसारा को इस्लाम से क़रीब लाने के जज़्बे के तहत इन को ख़ुश करने के लिये इन्हें **ईमान वाला** कह दे तो क्या अब भी **कुफ़्र** है ?

जवाब : जी हां अब भी **कुफ़्र** है। किसी काफ़िर को इस्लाम से मानूस करने की ख़ातिर ख़ुद कुफ़्रिय्यात बकने की इस्लाम हरगिज़ इजाज़त नहीं देता। याद रखिये ! जो **बिला इक्राहे शरई**(1) कलिमए कुफ़्र बके, उस की ज़ाहिरी अच्छी निय्यत का कोई ए'तिबार नहीं। मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अहमद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن इसी क़िस्म के एक मस्अले में **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 14 सफ़हा 600 पर फ़रमाते हैं : "और ब फ़र्ज़ ग़लत़ अगर धोका देना ज़रूरत भी हो तो हर ज़रूरत कुफ़्र से नहीं **बचाती**, यूं तो जो नंगे भूके पेट की ख़ातिर **ईसाई** (या'नी क्रिस्चेन) हो जाते हैं उन्हें भी कहिये **काफ़िर** न हुए कि ब ज़रूरत **कुफ़्र** इख़्तियार किया,

---

(1) जान से मार देने या जिस्म का कोई उ़ज़्व तलफ़ (ज़ाएअ़) कर देने या ज़र्बे शदीद (सख़्त मार लगाने) की सह़ीह़ धमकी देना, जिस को धमकी दी गई वोह जानता है कि ज़ालिम जो कुछ कह रहा है वोह कर गुज़रेगा येह इक्राहे शरई कहलाता है।

www.dawateislami.net

यहां वोह ज़रूरत मो'तबर है कि **ह़द्दे इक्राहे शरई** तक पहुंची हो ।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 600)

यक़ीनन यहूदो नसारा को अपने क़रीब लाने का दा'वा करने वाले ने **बिला इक्राहे शरई** वोह कलिमाते कुफ़्र बके। यहां "इक्राह" या'नी इस त़रह़ की धमकी मिलना दर कनार एक रोंगटे को भी कुछ नुक़्सान न पहुंचता था, एक धेला (या'नी आधा पैसा) भी गिरेह (जेब) से न जाता था । **लिहाज़ा यहूदी या ईसाई (क्रिस्चेन) को इस्लाम से क़रीब लाने के लिये अहले ईमान कहना भी कुफ़्र है**। जैसा कि फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने वाज़ेह़ त़ौर पर इर्शाद फ़रमाया : "एक शख़्स ने ज़बान से ह़ालते ख़ुशी में कुफ़्र का इज़्हार किया ह़ालां कि उस का दिल ईमान पर था तब भी वोह **काफ़िर** है और वोह **अल्लाह** तआ़ला के यहां **मोमिन** नहीं ।" (عالمگیری ج۲ص۲۸۳) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن "**त़रीक़ए मुह़म्मदिय्यह व ह़दीक़ए नदिय्यह**" के ह़वाले से इर्शाद फ़रमाते हैं : "अगर कलिमए कुफ़्र का तकल्लुम (या'नी कुफ़्र बकना) ख़ुशी से है, या'नी किसी चीज़ का इक्राह व जब्र नहीं जब कि सब्क़ते लिसानी (या'नी

कहना कुछ चाहता था और बे ख़याली में ज़बान से कुछ और निकल गया वाला मुआ़मला) न हो तो इस का हुक्म येह है कि (ईमान बरबाद), अ़मल ज़ाएअ़ और **निकाह़** ख़त्म हो जाएगा।"

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 601)

लुग़वी त़ौर पर किसी को अहले ईमान कहना

सुवाल : यहूदो नसारा को **इस्तिलाह़ी मा'ना** में नहीं **लुग़वी मा'ना** में अगर **अहले ईमान** कहा जाए तो क्या हुक्म है ?

जवाब : येह दलील भी **बात़िल** है। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "**सरीह़** लफ़्ज़ में तावील नहीं सुनी जाती।" **फ़तावा आ़लमगीरी** (जिल्द 2 सफ़ह़ा 363) में है : "अगर कोई अपने आप को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का **रसूल** कहे या ब ज़बाने फ़ारसी कहे मैं पैग़म्बर हूं और मुराद येह ले कि मैं किसी का पैग़ाम पहुंचाने वाला एलची (या'नी क़ासिद या डाकिया) हूं **काफ़िर** हो जाएगा।" और ह़ज़रते मौलाना अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى **शर्ह़े शिफ़ा** (जिल्द 2 सफ़ह़ा 396) में फ़रमाते हैं : "वोह जो उस मरदक (या'नी ज़लील शख़्स) ने कहा कि मैं ने (रसूल से) बिच्छू मुराद

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा। (ابن عدی)

लिया इस त़रह़ उस ने रिसालते उ़र्फ़ी को **मा'निये लुग़वी** की त़रफ़ ढाला कि बिच्छू को भी ख़ुदा ही ने भेजा और ख़ल्क़ पर मुसल्लत़ किया है और ऐसी तावील क़वाइ़दे शर्अ़ के नज़्दीक मरदूद है।"

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 578, 579, मुलख़्ख़सन)

काफ़िर के इस्लाम क़बूल करने के बारे में सुवाल जवाब

क़बूले इस्लाम के त़ालिब को सोचने का मश्वरा देना कैसा ?

सुवाल : कोई काफ़िर अगर मुसल्मान होना चाहे तो उस को इस त़रह़ समझाना कैसा कि भाई ! ख़ूब अच्छी त़रह़ ग़ौर कर लो कहीं मुसल्मान होने के बा'द परेशानी न उठानी पड़े।

जवाब : काफ़िर को इस त़रह़ समझाना मुसल्मान होने से रोकना हुवा, उस समझाने वाले पर हुक्मे **कुफ़्र** है। जब भी कोई काफ़िर मुसल्मान होना चाहे उस को फ़ौरन मुसल्मान करना **फ़र्ज़** है। और अगर वोह परेशानियां आने की बात करे तो उस को तल्क़ीने सब्र कीजिये।

काफ़िर के मुत़ालबे पर आ़लिम के पास क़बूले इस्लाम के लिये ले जाना

सुवाल : अगर कोई काफ़िर किसी मुसल्मान से कहे कि फ़ुलां आ़लिम के पास ले चलो मुझे उन्ही के हाथ पर **इस्लाम**

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

क़बूल करना है तो उस मुसल्मान को क्या करना चाहिये ?

जवाब : चूंकि उस का मुत़ालबा है लिहाज़ा उसे उस आ़लिम साह़िब की ख़िदमत में पेश कर दे ऐसा करने में वोह मुसल्मान गुनहगार नहीं बल्कि सवाब का ह़क़दार है।

काफ़िर को मुसल्मान करने का त़रीक़ा

सुवाल : किसी काफ़िर को मुसल्मान करने का आसान त़रीक़ा इर्शाद फ़रमाइये।

जवाब : काफ़िर को मुसल्मान करने के लिये पहले उसे उस के बात़िल मज़्हब से तौबा करवाई जाए मसलन मुसल्मान होने का ख़्वाहिश मन्द क्रिस्चेन है, तो उस से कहिये : कहो, "मैं क्रिस्चेन मज़्हब से तौबा करता हूं" जब वोह येह कह ले फिर उसे कलिमए त़य्यिबा या कलिमए शहादत पढ़ाइये अगर अ़रबी नहीं जानता तो जो भी ज़बान समझता हो उसी ज़बान में तरजमा भी कहलवा लीजिये अगर वोह अ़रबी कलिमा नहीं पढ़ पा रहा तो उसी की ज़बान में उस से शहादतैन का इक़रार बा आवाज़ करवा लीजिये या'नी वोह कह दे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई भी इ़बादत के लाइक़ नहीं, मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं। इस त़रह़ से वोह शख़्स **मुसल्मान** हो जाएगा।

क्या क़बूले इस्लाम से क़ब्ल नहाना ज़रूरी है ?

सुवाल : क्या क़बूले इस्लाम से क़ब्ल काफ़िर को नहलाना **फ़र्ज़** है ?

जवाब : क़बूले इस्लाम से क़ब्ल ग़ुस्ल करवाना फ़र्ज़ नहीं बल्कि ख़्वाहिश मन्द को फ़ौरन मुसल्मान करना **फ़र्ज़** है। अलबत्ता क़बूले इस्लाम के बा'द **अफ़्ज़ल** है। इस की सूरतें बयान करते हुए सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "काफ़िर मर्द या औ़रत जुनुब है या ह़ैज़ो निफ़ास वाली काफ़िरा औ़रत अब मुसल्मान हुई, अगर्चे इस्लाम से पहले ह़ैज़ व निफ़ास से फ़राग़त हो चुकी, सह़ीह़ येह है कि उन पर ग़ुस्ल वाजिब है। हां अगर इस्लाम लाने से पहले ग़ुस्ल कर चुके हों या किसी त़रह़ तमाम बदन पर पानी बह गया हो तो सिर्फ़ नाक में नर्म बांसे तक पानी चढ़ाना काफ़ी होगा कि येही वोह चीज़ है जो कुफ़्फ़ार से अदा नहीं होती। पानी के बड़े बड़े घूंट पीने से कुल्ली का फ़र्ज़ अदा हो जाता है और अगर येह भी बाक़ी रह गया हो तो इसे भी बजा लाएं, ग़रज़ जितने आ'ज़ा का धुलना ग़ुस्ल में फ़र्ज़ है, जिमाअ़ वग़ैरा अस्बाब के बा'द अगर वोह सब ब ह़ालते कुफ़्र ही

धुल चुके थे तो बा'दे इस्लाम इआ़दए ग़ुस्ल ज़रूर नहीं, वरना जितना हिस्सा बाक़ी हो उतने का धो लेना फ़र्ज़ है और मुस्तह़ब तो येह है कि बा'दे इस्लाम पूरा ग़ुस्ल करे।" (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 2, स. 46, मक्तबतुल मदीना)

नौ मुस्लिम का ख़तना

सुवाल : अगर **बालिग़** शख़्स मुसल्मान हुवा तो क्या उस का **ख़तना** करवाना ज़रूरी है ?

जवाब : ख़तना सुन्नते मुअक्कदा और शिआ़रे इस्लाम है (फ़तावा अफ़्रीक़ा, स. 46, मुलख़्ख़सन) नौ मुस्लिम के **ख़तना** की सूरतें बयान करते हुए मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत**, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 22 सफ़्ह़ा 593 पर फ़रमाते हैं : हां अगर ख़ुद कर सकता हो तो आप अपने हाथ से कर ले या कोई औ़रत जो इस काम को कर सकती हो, मुम्किन हो तो उस से निकाह़ करा दिया जाए वोह **ख़तना** कर दे, इस के बा'द चाहे तो उसे छोड़ दे (या'नी त़लाक़ दे दे) या कोई कनीज़े शरई (ख़तना से) वाक़िफ़ हो तो वोह ख़रीदी जाए। (फ़ी ज़माना ग़ुलाम और कनीज़ का सिल्सिला बन्द है) और अगर येह **तीनों** सूरतें न हो सकें तो ह़ज्जाम **ख़तना** कर दे कि ऐसी ज़रूरत के लिये सित्र देखना

दिखाना मन्अ़ नहीं। **दुर्रे मुख़्तार** में है : ब वक़्ते ज़रूरत ब क़दरे ज़रूरत त़बीब मरज़ की जगह को देख सकता है और क़दरे ज़रूरत (या'नी ज़रूरत की मिक़्दार) मह़ज़ अन्दाज़े से (तै) होगी, इसी त़रह़ दाया और **ख़तना** करने वाले का मुआ़मला है। (دُرِّ مختار ج۹ ص۶۱۱) सय्यिदुना **इमाम कर्ख़ी** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने "जामेए़ सग़ीर" में फ़रमाया कि : "बालिग़ आदमी का **ख़तना ह़म्माम** वाला (ह़जाम) करे।" (عالمگیری ج۵، ص۳۵۷) बहुत **बूढ़ा** शख़्स अगर इस्लाम क़बूल करे और ख़तना की त़ाक़त न रखता हो तो अगर चन्द अहले नज़र राय दें कि येह वाक़ेई त़ाक़त नहीं रखता तो उसे **बिला ख़तना** ही रहने दिया जाए

(ख़ुलासतुल फ़तावा, जि. 4, स. 340)

अगर नौ मुस्लिम ख़तना न करवाए तो ?

सुवाल : अगर कोई बालिग़ नौ मुस्लिम ख़तना करना न जानता हो और त़बीब से करवाने के लिये तय्यार न हो तो क्या उसे इस पर मजबूर किया जा सकता है ?

जवाब : उस को اَمرٌ بِالْمَعرُوف किया जाए या'नी नेकी की दा'वत दी जाए अगर वोह तय्यार न हो तो किसी क़िस्म की सख़्ती न की जाए। **ख़तना** सुन्नत है। बालिग़ नौ मुस्लिम का त़बीब से ख़तना करवाने में वैसे भी

www.dawateislami.net

उ़लमा का इख़्तिलाफ़ है। ख़तना न करने या न करवाने से उस के ईमान में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा, वोह ब दस्तूर मुसल्मान है।

नौ मुस्लिम के लिये इब्तिदाई मा'लूमात के ज़राएअ़

सुवाल : नौ मुस्लिम को इब्तिदाई **इस्लामी मा'लूमात** किस तरह़ फ़राहम की जाएं ?

जवाब : किसी सुन्नी आ़लिमे दीन की ख़िदमत में पेश किया जाए जो उस को **बुन्यादी अ़क़ाइद** सिखाए। अगर उर्दू या इंग्लिश जानता हो तो ख़लीलुल उ़लमा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद ख़लील ख़ान बरकाती رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की किताब **हमारा इस्लाम** (मुकम्मल) उस को पढ़ने के लिये पेश कर दीजिये। या उस में से पढ़ पढ़ कर उस को इस्लामी अ़क़ाइद समझाइये और सवाब कमाइये। उस को मुसल्मान करने के बा'द तरबियत के बिग़ैर छोड़ देना मुनासिब नहीं। **मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी** अलह़ाज मुफ़्ती मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى की आवाज़ में मक्तबतुल मदीना की त़रफ़ से जारी कर्दा **निसाबे शरीअ़त कोर्स** की केसिटें नौ मुस्लिम बल्कि हर मुस्लिम के लिये मा'लूमात का बे बहा ख़ज़ाना हैं। **दा'वते इस्लामी** के मदनी मर्कज़ में 63 दिन के **मदनी**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

तरबियती कोर्स में शुमूलिय्यत भी हर मुस्लिम बिल ख़ुसूस नौ मुस्लिम के लिये निहायत ही मुफ़ीद है। नीज़ वुज़ू, ग़ुस्ल और नमाज़ का त़रीक़ा मा'लूम करने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ किताब **नमाज़ के अह़काम** का मुत़ालआ़ हर नए पुराने मुसल्मान के लिये इन्तिहाई ज़रूरी है।

क्या नौ मुस्लिम को इस्लामी ता'लीम भी देनी होगी ?

सुवाल : जो नया मुसल्मान हुवा क्या उस को इस्लामी ता'लीमात से भी रू शनास कराना होगा ?

जवाब : जी हां। इस ज़िम्न में **फ़तावा रज़विय्या शरीफ़** जिल्द 24 सफ़ह़ा 146 पर दिये गए एक **सुवाल** का ख़ुलासा है : "जिस मुल्क के नौ मुस्लिम इस्लामी ता'लीमात से बे ख़बर हों, कुफ़्फ़ार की सोह़बत की वज्ह से कुफ़्र व इस्लाम की बहुत सारी बातों का फ़र्क़ भी न जानते हों उन को पहले पहल क्या सिखाया जाए ? अ़क़ाइदे इस्लामिय्या व अह़कामाते शरइय्या की ता'लीम दी जाए या तसव्वुफ़ की बारीकियां वग़ैरा समझाई जाएं ?" मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत**, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने जो **जवाब** इर्शाद फ़रमाया इस में येह भी है : बदीहिय्याते दीनिय्या (या'नी वोह मश्हूरो

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

मा'रूफ़ दीनी अह़काम जिन को अ़वामो ख़वास सब जानते हों) से है कि अव्वलन अ़क़ाइदे इस्लाम व सुन्नत फिर अह़कामे सलात व त़हारत वग़ैरहा ज़रूरिय्याते शरइय्या **सीखना सिखाना** फ़र्ज़ है और इन्हें छोड़ कर दूसरे किसी मुस्तह़ब व पसन्दीदा इ़ल्म में भी वक़्त ज़ाएअ़ करना **ह़राम**। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 24, स. 146, 158) मा'लूम हुवा ऐसे नौ मुस्लिमों को अ़क़ाइद व अह़काम और ज़रूरिय्याते शरइय्या सिखाना **फ़र्ज़** है और येही ख़ुद भी सीखना **फ़र्ज़**। **तसव्वुफ़** की बारीकियां तो आज कल बड़े बड़ों को समझ में नहीं आतीं ! मज़ीद सफ़्ह़ा 159 पर फ़रमाते हैं : इन्हें अभी सीधे सीधे अह़काम समझने के लाले हैं उन मुतशाबहात (और पेचीदा बातों) को कौन समझेगा ! ग़रज़ इस का असर ज़रूर इन का बिगड़ना फ़ितने में पड़ना ज़िन्दीक़, मुरतद या अदना दरजा गुमराह बद दीन हो जाना होगा व बस। ह़दीस में है रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जब तू किसी क़ौम के आगे वोह बात बयान करेगा जिस तक उन की अ़क़्लें न पहुंचीं तो ज़रूर वोह उन में किसी पर फ़ितना होगी।

(اَلْجامِعُ الصَّغِیر ص٤٧٩ حدیث ٧٨٣٨، تاریخ دمشق لابن عَساکِر ج٣٨ ص ٣٥٦)

एक और मक़ाम पर **हुज़ूरे** पुरनूर, शाहे ग़यूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : اُمِرْنَا اَنْ نُّكَلِّمَ النَّاسَ عَلٰى قَدْرِ عُقُوْلِهِم या'नी हम को हुक्म दिया गया कि हम लोगों से उन की अ़क़्लों के मुत़ाबिक़ कलाम (गुफ़्त्गू) करें। (جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّيُوْطِی ج٢ ص١٧٥ حديث ٤٦٦٧) **वारिद** है : كَلِّمِ النَّاسَ عَلٰى قَدْرِعُقُوْلِهِم या'नी लोगों से उन की समझ के मुत़ाबिक़ बात की जाए।

(مِرْقَاةُ الْمَفَاتِيح للقارى، ج٩ص ٣٧٣ تحت الحديث ٥٤٧١)

लिहाज़ा हर एक के साथ उस के ज़र्फ़ के मुत़ाबिक़ बात करनी चाहिये कि गहरी बातें उस को तश्वीश में डालतीं बल्कि राह से भटका सकती हैं। हर मुक़र्रिर व मुबल्लिग़ के लिये भी इस में येह महक्ता मदनी फूल है कि अ़वाम के आगे अदक़ (या'नी पेचीदा) मज़ामीन छेड़ने के बजाए ह़त्तल इम्कान आसान ज़बान में उन के काम की वोह बातें बयान की जाएं जिन को वोह ब आसानी समझ सकें।

क्या काफ़िर के लिये किसी के हाथ पर मुसल्मान होना ज़रूरी है ?

सुवाल : क्या काफ़िर के लिये येह ज़रूरी है कि किसी न किसी मुसल्मान के हाथ पर तौबा कर के मुसल्मान हो ?

जवाब : ईमान लाने के लिये किसी मुसल्मान के हाथ ही पर

तौबा करना शर्त़ नहीं । अलबत्ता अपने इस्लाम का इज़्हार करे । सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : अस्ल ईमान सिर्फ़ तस्दीक़ का नाम है आ'माले बदन तो अस्लन जुज़्वे ईमान नहीं। रहा इक़रार इस में तफ़्सील येह है कि अगर तस्दीक़ के बा'द इस के इज़्हार का मौक़अ़ न मिला तो इन्दल्लाह عَزَّوَجَلَّ (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक) मोमिन है और अगर मौक़अ़ मिला और इस से मुत़ालबा किया गया (मसलन पूछा गया, क्या आप मुसल्मान हैं ?) और इक़रार न किया तो **काफ़िर** है और अगर मुत़ालबा न किया गया तो (चूंकि किसी को मा'लूम ही नहीं कि येह मुसल्मान हो चुका है लिहाज़ा) अह़कामे दुन्या में **काफ़िर** समझा जाएगा, न उस के जनाज़े की नमाज़ पढ़ेंगे न मुसल्मानों के क़ब्रिस्तान में दफ़्न करेंगे मगर इन्दल्लाह عَزَّوَجَلَّ (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक) **मोमिन** है अगर कोई अम्र ख़िलाफ़े इस्लाम ज़ाहिर न किया हो।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सए अव्वल, स. 93)

नौ मुस्लिम की माली मदद

सुवाल : क्या नौ मुस्लिम की **माली मदद** करना ज़रूरी है ?

जवाब : अगर वोह मुस्तह़िक़ है मसलन मुसल्मान होने के

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ़ और रोजे़ जुमुआ़ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

सबब उस का घरबार और रोज़गार वग़ैरा छूट जाए तो ऐसी सूरत में हर त़रह़ का तआ़वुन करना चाहिये। **मुहाजिरीन व अन्सार** की मदनी मिसाल हमारे सामने मौजूद है। ताहम ग़ौरो ख़ौज़ कर ले, तफ़्तीश भी कर ले, उस का **शनाख़्ती कार्ड**, **पासपोर्ट** वग़ैरा देख ले और सोच समझ कर क़दम उठाए, क्यूं कि आज कल ह़ालात बहुत नाज़ुक हैं। देखा गया है कि बा'ज़ लोग सिर्फ़ पैसे बटोरने की ख़ात़िर मुख़्तलिफ़ मसाजिद में या जुदा जुदा शख़्सिय्यात के पास जा कर अपने आप को مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ **काफ़िर** ज़ाहिर कर के बार बार **मुसल्मान** होते हैं। फिर उन के लिये चन्दा होता और इस त़रह़ उन का धन्दा चलता है। **शख़्सिय्यात** से लिखवा भी लेते हैं कि येह साह़िब **नौ मुस्लिम** हैं, इस्लाम लाने के जुर्म में ख़ानदान वालों ने बायकाट कर दिया है लिहाज़ा माली तआ़वुन किया जाए वग़ैरा। हां नौ मुस्लिम को **कोर्ट से सनद** दिलवाने में ह़रज नहीं कि वोह ज़रूरतन क़ानूनी त़ौर पर कारआमद होती है। बाक़ी **शख़्सिय्यात की सनद** सिर्फ़ चन्दा करने के काम आती होगी क्यूं कि कोर्ट में इस की कोई "क़ानूनी" हैसिय्यत नहीं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझे अपनी ज़िन्दगी में मुतअ़द्दद बार कुफ़्फ़ार को दाख़िले

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

इस्लाम करने की सआ़दत मिली है मगर इसी एह़तियात़ के पेशे नज़र आज तक किसी को तह़रीर नहीं दी। हां अगर कोई नक़्ली तह़रीर बना कर जा'ली दस्त ख़त़ कर के चन्दा करता फिरे तो मैं क्या कर सकता हूं कि आज कल तो लोग जा'ली नोटें (करन्सी) भी छाप डालते हैं। लिहाज़ा अगर कोई मेरी तह़रीर दिखाए तो सोच समझ कर ही क़दम उठाइये। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 18 सफ़ह़ा 705 पर फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के ह़वाले से नक़्ल फ़रमाते हैं : मक्तूब कभी झूटा और जा'ली होता है और एक दूसरे के मुशाबेह (मिलता जुलता) होता है और मोहर एक दूसरे के मुशाबेह (मिलती जुलती) होती है, मुख़्तसरन।

(مَجْمَعُ الْاَنْهُر ج٣ ص ٢٣٠،عالمگیری ج٣ص ٣٨١)

एक ही कलिमए कुफ़्र से बार बार तौबा

सुवाल : एक बार कलिमए कुफ़्र सादिर हो गया और **तौबा** कर ली अब दोबारा उसी कलिमए कुफ़्र से तौबा कर सकते हैं या नहीं ?

जवाब : एक कलिमए कुफ़्र से बार बार **तौबा** करने में ह़रज

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

नहीं जब कि इस बात पर यक़ीन हो कि मैं पहले **तौबा** कर के मुसल्मान हो चुका हूं।

क्या मुसल्मान और काफ़िर बराबर हैं ?

सुवाल : एक बूढ़ा आदमी लोगों में बैठ कर कह रहा था : "इन्सानिय्यत की ख़िदमत करनी चाहिये, चाहे मुसल्मान हो या काफ़िर, **अल्लाह** के यहां सब इन्सान बराबर हैं, बख़्शिश का दारो मदार अ़क़ीदे पर नहीं अ़मल पर है।" हाज़िरीन उस की हर बात पर इस्बात (या'नी ताईद) में सर हिला रहे थे। हुक्मे शरई इर्शाद हो।

जवाब : बूढ़े की येह बातें **कुफ़्रिय्यात** से भरपूर हैं। वोह बूढ़ा और जो मा'ना समझने के बा वुजूद ताईद में सर हिला रहे थे वोह सब **काफ़िर व मुरतद** हो गए, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के यहां सब इन्सान हरगिज़ बराबर नहीं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पारह 28 **सूरतुल ह़श्र** की आयत नम्बर 20 में इर्शाद फ़रमाता है :

لَا یَسْتَوِیْۤ اَصْحٰبُ النَّارِ وَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ؕ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : दोज़ख़ वाले और जन्नत वाले बराबर नहीं।

और पारह 2 **सूरतुल बक़रह** आयत नम्बर 221 में इर्शादे रब्बानी है :

وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكُمْ ؕ

(پ ٢ البقرة ٢٢١)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मुसल्मान गुलाम, मुश्रिक से अच्छा अगर्चे वोह तुम्हें भाता हो।

समाजी कारकुन

दर अस्ल जिन को **समाजी ख़िदमत** की लगन के साथ साथ नामो नुमूद की भी धुन होती है वोह लोग उ़मूमन इन्सानिय्यत की बुन्याद पर बिला इम्तियाज़े मज़्हब हर ज़रूरत मन्द इन्सान की ख़िदमत करते हैं, शैत़ान ऐसों को अपना खिलोना बना लेता है और लोगों की मुसीबतें दिखा दिखा कर उन के दिल में बाग़ियाना वस्वसे डालता है, जिस की बिना पर बा'ज़ अवक़ात उन की तवज्जोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हि़क्मतों की त़रफ़ से हट जाती है और फिर वोह दुख्यारों की हमदर्दी की रौ में बह कर مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ कुफ़्रिय्यात बकने लगते हैं। एक बार मेरी (सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ की) मुलाक़ात इसी त़रह़ के एक इन्तिहाई सरगर्म **समाजी लीडर** से हुई, दौराने गुफ़्तुगू जज़्बात में आ कर उस ने مَعَاذَ اللہ कुछ इस त़रह़ से **कुफ़्रिय्यात** बकने शुरूअ़ कर दिये : “ग़रीब भूके मर रहे हैं, **अल्लाह** के यहां फ़क़त़ **सब्र** है, **अल्लाह** खुद ज़मीन पर आ कर **सब्र**

करे या आस्मान से किसी को भेज कर उसे सब्र करवा कर देखे तो उस को पता चले कि सब्र किस त़रह़ होता है !!!" येह कुफ़्रिय्यात से भरपूर गुफ़्त्गू सुन कर मैं तो हक्का बक्का रह गया। बा'द में किसी त़रह़ तरकीब बनी और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उसे तौबा करवाने में काम्याबी ह़ासिल हो गई।

कलिमए कुफ़्र की ताईद भी कुफ़्र है

बा'ज़ अवक़ात सियासी क़ाइदीन, अफ़्सरान और "ज़रूरत से ज़ियादा पढ़े लिखे" लोग भी मज़्कूरा अन्दाज़ में **कुफ़्रिय्यात** बकते और लोग हां में हां कर रहे होते हैं बल्कि बा'ज़ तो इतने बक्वासी होते हैं कि **कुफ़्रिय्यात** बकते जाते हैं और ह़ाज़िरीन से दाद वुसूल करने के अन्दाज़ में पूछते भी जाते हैं : **क्यूं भई ! मैं ग़लत़ तो नहीं कह रहा ?** ह़ाज़िरीन के लिये येह मौक़अ़ सख़्त आज़्माइश का होता है बा'ज़ लोग ऐसे मौक़अ़ पर न चाहते हुए भी मुरुव्वत में हां में हां मिला देते और ख़ुद को कुफ़्र के गढ़े में गिरा देते हैं। क्यूं कि **जो कुफ़्री बात समझने के बा वुजूद हां में हां मिलाए उस पर भी हुक्मे कुफ़्र है।** याद रखिये ! **काफ़िरों से**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

दोस्ती ह़राम है, कुफ़्फ़ार की दोस्ती का एक मन्फ़ी असर येह भी है कि वोह **कुफ़्रिय्यात** बक कर नाम के मुसलमान से हां में हां करवा कर उसे **कुफ़्र** के ग़ार में धकेलते रहते हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारा ईमान सलामत रखे। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

(कुफ़्फ़ार की दोस्ती के तफ़्सीली अह़काम इसी किताब के सफ़ह़ा 428 पर मुलाह़ज़ा फ़रमा लीजिये)

मुसल्मां है अ़त्तार तेरी अ़ता से
हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही عَزَّوَجَلَّ *!*

ख़ुद को आधा मुसल्मान कहना कैसा ?

सुवाल : "मैं आधा काफ़िर हूं और आधा मुसल्मान" येह कहना कैसा है ?

जवाब : कहने वाला पूरा ही **काफ़िर** है।

"वोह तो न दीन का है न दुन्या का" कहना

सुवाल : किसी मुसल्मान के बारे में येह कहना कैसा कि "वोह तो न दीन का है न दुन्या का।"

जवाब : इस में कोई **कुफ़्र** नहीं। येह मुह़ावरा है इस के मा'ना हैं, "निकम्मा" हां इस जुम्ले से मुसल्मान की दिल आज़ारी हो सकती है और बिला इजाज़ते शरई मुसल्मान

का दिल दुखाना सख़्त गुनाह है। अगर येह जुम्ला पीठ पीछे कहा गया है तो अगर वोह वाक़ेई ऐसा है तब तो ग़ीबत वरना तोहमत और अगर वोह बेबाक है और इस के मुआमले में मशहूर है तो न ग़ीबत न तोहमत। बहर हाल किसी मुसल्मान को बुरा कहने से क़ब्ल 112 बार ग़ौर कर लेना चाहिये कि कहीं ख़ुद गुनाह में तो नहीं पड़ रहे !

कुफ़्रिय्या कलिमात की 15 मिसालें

(1) जिस ने कहा : "फुलां मुझ से बड़ा काफ़िर है" येह क़ौल **कुफ़्र** है। (مِنَحُ الرَّوض ص٤٩٥)

(2) मुसल्मान को काफ़िर ए'तिक़ाद करते हुए काफ़िर कहा तो **कुफ़्र** है और अगर गाली के तौर पर कहा तो **कुफ़्र** नहीं। (اَلْبَحْرُ الرَّائِق ج٥ ص٢٠٧)

(3) कोई काफ़िर मुसल्मान हुवा तो उस से किसी ने कहा : "काश ! तुम अभी **मुसल्मान** न होते ताकि मीरास पा लेते" येह **कलिमए कुफ़्र** है। (مِنَحُ الرَّوض ص٤٨٦)

(4) जो शख़्स कहे : "काश ! मैं **काफ़िर** होता।" येह कहने वाला **काफ़िर** है। (ايضاً ص٤٨٦)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

《5》 जो कहे : "मैं मुसल्मानों के साथ मुसल्मान और काफ़िरों के साथ काफ़िर हूं" येह कहना **कुफ़्र** है।

(اَیضاً ص۴۸۷)

《6》 जिस शख़्स से पूछा गया कि क्या तुम **मुसल्मान** हो? उस ने जवाब दिया : "नहीं।" येह जवाब **कुफ़्रिय्या** है। (فتاوٰی عالمگیری ج ۲ ص۲۷۷)

《7》 अगर किसी ने इस्लाम क़बूल करने वाले से कहा : "जिस दीन पर तू था उस ने तेरा क्या नुक़्सान किया कि तूने इस्लाम क़बूल किया!" येह कहना **कुफ़्र** है।

(مِنَحُ الرَّوض ص۴۸۷)

《8》 किसी ने दूसरे को : **ऐ काफ़िर! ऐ यहूदी! ऐ ईसाई!** कह कर पुकारा। दूसरे ने : "ह़ाज़िर जनाब" या इसी त़रह़ का कोई लफ़्ज़ बोला तो दूसरे पर हुक्मे **कुफ़्र** है।

(مَجمَعُ الْاَنْهُر ج۲ ص ۵۱۱)

《9》 किसी ने कहा : "मुझे **काफ़िर** होने दो।" येह **कलिमए कुफ़्र** है। (مِنَحُ الرَّوض ص۴۹۱)

《10》 काफ़िर के लिये मग़्फ़िरत की दुआ़ करना, यूंही 《11》 मुरतद के लिये बख़्शिश की दुआ़ मांगना **कुफ़्र** है।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 21, स. 228, बहारे शरीअ़त, हिस्सए अव्वल, स. 97)

《12》 काफ़िर को काफ़िर न जानना **कुफ़्र** है।

(फ़तावा अम्जदिय्या, जि. 4, स. 399)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया । (طبرانی)

13 जो कहे : "अगर मैं **काफ़िर** हो जाऊं तो मुझे क्या नुक़्सान होगा ?" येह क़ौल **कुफ़्र** है ।

(فتاوٰی عالمگیری ج ۲ ص ۲۷۹)

14 जो कहे : "मैं नहीं जानता, **काफ़िर** जन्नत में जाएगा या जहन्नम में" या कहे :

15 "मैं नहीं जानता कि **काफ़िर** का ठिकाना क्या है ।" येह दोनों बातें **कुफ़्रिय्या** हैं । (مَجْمَعُ الْاَنْھُر ج ۲ ص ۵۱۱) अलबत्ता अगर काफ़िर के जहन्नम में जाने पर ईमान है और ठिकाना न जानने से मुराद येह है कि जहन्नम के त़बक़ात में से किस त़बक़े में होगा इस का इ़ल्म नहीं तो इस पर **हुक्मे कुफ़्र** नहीं ।

मुतफ़र्रिक़ात

अल्लाह के दुरूद भेजने के मा'ना

सुवाल : "**अल्लाहु** वदूद عَزَّوَجَلَّ दुरूद भेजता है" इस के क्या मा'ना हैं ?

जवाब : इस में कई अक़्वाल हैं । **सह़ीह़ बुख़ारी** जिल्द 3 सफ़्ह़ा 307 पर ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल आ़लिया رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मन्क़ूल है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर सलात (दुरूद) भेजना, फ़िरिश्तों के पास आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'रीफ़ करना है ।

दुरूदे पाक पढ़ने में सुस्ती न करें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन **दुरूद शरीफ़** पढ़ना निहायत ही आ'ला दरजे का अ़मल है, हर एक को **दुरूद शरीफ़** की कसरत करनी चाहिये। बिल ख़ुसूस जब **मीठे मीठे आक़ा** मदीने वाले **मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे नामी, इस्मे गिरामी लें या सुनें उस वक़्त **दुरूद शरीफ़** पढ़ने में हरगिज़ सुस्ती नहीं करनी चाहिये। सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : उम्र में एक बार **दुरूद शरीफ़** पढ़ना फ़र्ज़ है और हर जल्सए ज़िक्र में **दुरूद शरीफ़** पढ़ना वाजिब, ख़्वाह ख़ुद नामे अक़्दस ले या दूसरे से सुने और अगर एक मजलिस में सो बार ज़िक्र आए तो हर बार **दुरूद शरीफ़** पढ़ना चाहिये, अगर नामे अक़्दस लिया या सुना और **दुरूद शरीफ़** उस वक़्त न पढ़ा तो किसी दूसरे वक़्त में उस के बदले का पढ़ ले। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 101, دُرِّمُختار ج۲ص۲۷۶-۲۸۱)

दुरूदे पाक न पढ़ने का वबाल

ज़रूरत के वक़्त भी नामे अक़्दस सुन कर **दुरूद शरीफ़** पढ़ने में सुस्ती करने वाले एक शख़्स की

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

इब्रत नाक हिकायत मुलाहज़ा फ़रमाइये चुनान्चे **मन्क़ूल** है : एक शख़्स को इन्तिक़ाल के बा'द किसी ने ख़्वाब में सर पर **मजूसियों** (या'नी आतश परस्तों की मख़्सूस) टोपी पहने हुए देखा तो इस का सबब पूछा, उस ने जवाब दिया : जब कभी **मुहम्मदे मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे मुबारक आता मैं **दुरूद शरीफ़** न पढ़ता था इस गुनाह की नुहूसत से मुझ से मा'रिफ़त और **ईमान** सल्ब कर लिये गए। (سبع سنابل ص ٣٥)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़्वाब की बुन्याद पर किसी को काफ़िर नहीं कह सकते

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? गुनाहों की नुहूसत कितनी बड़ी आफ़त है कि इस के सबब मौत के वक़्त ईमान बरबाद हो जाने का ख़त्रा रहता है। यहां येह ज़रूरी मस्अला ज़ेह्न नशीन फ़रमा लीजिये कि किसी के बारे में **बुरा ख़्वाब** देखा जाना बेशक बाइसे तश्वीश है ताहम ग़ैरे नबी का **ख़्वाब** शरीअ़त में हुज्जत या'नी दलील नहीं और फ़क़त ख़्वाब की बुन्याद पर किसी मुसल्मान को **काफ़िर** नहीं कहा जा सकता नीज़ मुसल्मान मय्यित पर ख़्वाब में कोई **अ़लामते कुफ़्र** देखने या खुद मरने वाले मुसल्मान का

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

ख़्वाब में अपने ईमान के सल्ब (बरबाद) होने की ख़बर देने से भी उस को **काफ़िर** नहीं कह सकते।

ढूंडने से ख़ुदा भी मिल जाता है

सुवाल : उ़मूमन लोग कहते हैं कि "ढूंडने से तो **ख़ुदा** भी मिल जाता है।" इस जुम्ले में कोई क़बाह़त तो नहीं ?

जवाब : हमारे यहां येह जुम्ला मुह़ावरतन इस्ति'माल होता है और इस का मा'ना येह है कि कोशिश करने से बन्दा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब पा लेता है, उस की रिज़ा को ह़ासिल कर लेता है। लिहाज़ा इस मा'ना में **कुफ़्र** का कोई पहलू नहीं।

अल्लाह को ह़ाज़िर नाज़िर कहना कैसा ?

सुवाल : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को **ह़ाज़िरो नाज़िर** कह सकते हैं या नहीं ?

जवाब : नहीं कह सकते। **अल्लाहु** आ़लिमुल ग़ैबि वश्शहादह عَزَّوَجَلَّ हर शै को जानता है, उस से कुछ पोशीदा नहीं, उसे समीओ़ बसीर, अ़लीमो ख़बीर कहा जाए। **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 14 सफ़ह़ा 640 ता 641 पर है : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن की बारगाह में **सुवाल** हुवा : ख़ुदा को हर जगह ह़ाज़िर

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الايمان)

कहना कैसा है ? **अल जवाब : अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जगह से पाक है, येह लफ़्ज़ बहुत बुरे मा'ना का एह़तिमाल रखता है इस से एह़तिराज़ (बचना) लाज़िम है। وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَم। इसी जिल्द 14 के सफ़ह़ा 688 ता 689 पर फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ शहीद व बसीर है उसे **ह़ाज़िरो नाज़िर** न कहना चाहिये यहां तक कि बा'ज़ उ़लमा ने इस पर तक्फ़ीर (या'नी हुक्मे कुफ़्र लगाने) का ख़याल फ़रमाया और अकाबिर (या'नी जय्यिद उ़लमाए दीन) को इस की नफ़ी (तरदीद) की ह़ाजत हुई, मज्मूआ़ अ़ल्लामा इब्ने वहबान में है : يَا حَاضِرُ يَا نَاظِرُ لَيْسَ بِكُفْرٍ या'नी ऐ ह़ाज़िर ऐ नाज़िर कहना कुफ़्र नहीं है। जो ऐसा करता है ख़त़ा करता है, बचना चाहिये। وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَم।

"रह़मान के घर शैत़ान पैदा होता है" कहना

सुवाल : "रह़मान के घर शैत़ान और शैत़ान के घर रह़मान पैदा होता है" कहना कैसा ?

जवाब : येह कुफ़्रिय्या क़ौल है।

"मेरा कोई दीन मज़्हब नहीं" येह तस्लीम करना कैसा ?

सुवाल : एक शख़्स ने दूसरे से कहा कि "तेरा कोई दीन मज़्हब (या दीन धरम) भी है या नहीं ?" तो दूसरे ने ग़ुस्से में

जवाब दिया कि "नहीं।" इस जवाब देने वाले पर क्या हुक्मे शरई है ?

जवाब : अगर दीन मज़्हब दीने इस्लाम ही के मा'ना में इस्ति'माल हुवा था तो दूसरे शख़्स का इस के जवाब में "नहीं" कहना **क़ौले कुफ़्र** है या'नी गोया उस ने अपने जवाब में तस्लीम किया कि मेरा कोई दीन मज़्हब नहीं और ऐसा कहना **कुफ़्र** है चुनान्चे **फ़ुक़हाए** किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : बीवी ने शोहर से कहा : "तुझे न ग़ैरत है और न ही तेरा कोई दीन इस्लाम है कि तू ग़ैरों के साथ मेरी तन्हाई पर राज़ी है" शोहर ने जवाबन कहा : "हां, मुझे न ग़ैरत है और न ही मेरा दीन इस्लाम है" येह **क़ौल कुफ़्र** है।

(عالمگیری ج۲ ص۲۷۷)

चार मुहावरात

सुवाल : आम बोलचाल में येह चार मुहावरे इस्ति'माल किये जाते हैं। कहीं येह कुफ़्रिय्या तो नहीं ?

(1) मैं तो दीन का रहा न दुन्या का (2) अपने पास तो न दुन्या है न दीन (3) मैं तो न दीन का हूं न दुन्या का (4) फ़ुलां तो न दीन का है न दुन्या का

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा। (ابن عدی)

जवाब : मज़्कूरा जुम्ले उ़मूमन लोगों में **मुह़ावरतन** इस्ति'माल किये जाते हैं जो कि **कुफ़्र** नहीं क्यूं कि इन से मुराद येह होती है कि मैं किसी काम का नहीं हूं या'नी निकम्मा हूं जैसा कि **फ़ीरोज़ुल्लुग़ात** सफ़्ह़ा 711 पर इस मुहा़वरे **"दीन का न दुन्या का"** के मा'ना लिखे हैं : **"किसी काम का नहीं, निकम्मा।"**

(फ़तावा दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत ग़ैर मत़्बूआ़)

शफ़ाअ़त का इन्कार

सुवाल : शफ़ाअ़त का इन्कार करना कैसा ?

जवाब : मुत़्लक़न **शफ़ाअ़त** का इन्कार हुक्मे कुरआनी का इन्कार और **कुफ़्र** है। चुनान्चे कुरआने करीम की मश्हूरो मा'रूफ़ आयते करीमा **आयतुल कुर्सी** में है :

مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ (پ ۳ البقرہ ، ۲۵۵)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह कौन है जो उस के यहां सिफ़ारिश करे बे उस के हुक्म के।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : इस में मुश्रिकीन का रद है जिन का गुमान था कि बुत शफ़ाअ़त करेंगे। उन्हें बता दिया गया कि कुफ़्फ़ार के लिये शफ़ाअ़त नहीं। **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के हु़ज़ूर माज़ूनीन (या'नी इजाज़त याफ़्तगान) के सिवा

कोई शफ़ाअ़त नहीं कर सकता और इज़्न वाले (या'नी इजाज़त याफ़्ता) अम्बिया व मलाएका व मोमिनीन हैं। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 76) "अल बहरुर्राइक़" जिल्द 1 सफ़्ह़ा 611 पर है : "जो नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त का मुन्किर हो या किरामन कातिबीन का मुन्किर हो या रूयते बारी (या'नी दीदारे इलाही) का इन्कार करता हो उस के पीछे नमाज़ जाइज़ नहीं इस लिये कि वोह काफ़िर है।"

"तौबा कोई चीज़ नहीं" कहना कैसा ?

सुवाल : एक शख़्स से गुनाह सरज़द हो गया फिर उस ने तौबा कर ली। तो बा'ज़ लोगों ने कहा : "इस ने दिखाने के लिये तौबा की है," और येह भी कहा कि "तौबा कोई चीज़ नहीं।" हुक्मे शरीअ़त बयान कीजिये।

जवाब : मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत**, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن इसी त़रह़ के एक सुवाल के जवाब में इर्शाद फ़रमाते हैं : **तौबा कोई चीज़ नहीं** से मुराद अगर उस गुनाह करने वाले की तौबा है कि उस ने दिल से **तौबा** नहीं की तो मुसल्मान पर बद गुमानी है और वोह **सख़्त ह़राम** है। और अगर येह मुराद हो कि सिरे से **तौबा**

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

ही कोई चीज़ नहीं तो مَعَاذَاللهعَزَّوَجَلَّ **सरीह़ कुफ़्र** है।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 609, 610, मुलख़्ख़सन)

"अल्लाह मालिक नहीं" कहना कैसा ?

सुवाल : ज़ैद ने बक्र से कहा : "सामान ज़ियादा होगा कोई गाड़ी कर लेना।" **बक्र** ने जवाब दिया : "**अल्लाह** मालिक है।" तो ज़ैद ने कहा : "**अल्लाह** मालिक नहीं ख़ुद ही करना है" इस गुफ़्तगू में शरअ़न कोई गरिफ़्त है या नहीं ?

जवाब : ज़ैद पर हुक्मे **कुफ़्र** है। क्यूं कि इस जुम्ले में इस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मालिक होने का इन्कार किया है।

"चाहे अल्लाह पसन्द करे या न करे मैं तो ज़ियादा खाऊंगा" कहना

सुवाल : किसी से कहा गया : ज़ियादा न खा (या ज़ियादा मत सो या ज़ियादा मत हंस) कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़ियादा खाने (या सोने या हंसने) वाले को पसन्द नहीं करता। उस ने जवाब दिया : मैं तो ज़ियादा खाऊंगा (या ज़ियादा सोऊंगा या ज़ियादा हंसूंगा) चाहे वोह अपना पसन्दीदा बन्दा बनाए या न बनाए। जवाब देने वाले के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब : जवाब देने वाले पर हुक्मे **कुफ़्र** है।

(ماخوذ از فتاوٰی عالمگیری ج۲ص۲۶۰)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़ह़ा करूं (या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشکوال)

"मुसल्मान बन कर इम्तिह़ान में पड़ गया हूं" कहना कैसा ?

सुवाल : बेज़ारी के साथ येह कहना कैसा कि "मैं तो मुसल्मान बन कर इम्तिह़ान में पड़ गया हूं, **काफ़िर** ही अच्छा था।"

जवाब : येह क़ौले बदतर अज़ बौल इस्लाम से बेज़ारी और **कुफ़्र** से यारी का पता देता है। येह शख़्स **काफ़िर व मुरतद** है।

"नहीं मा'लूम कि मुसल्मान हूं या काफ़िर" कहना कैसा ?

सुवाल : ज़ैद से पूछा गया : "तू मुसल्मान है या **काफ़िर** ?" जवाब दिया : "मुझे नहीं मा'लूम कि मुसल्मान हूं या **काफ़िर** ?"

जवाब : सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ القَوِی फ़रमाते हैं : जिस शख़्स को अपने ईमान में शक हो या'नी कहता है कि मुझे अपने मोमिन होने का यक़ीन नहीं या कहता है मा'लूम नहीं मैं मोमिन हूं या काफ़िर। वोह **काफ़िर** है। हां अगर उस का मत़लब येह हो कि मा'लूम नहीं मेरा ख़ातिमा ईमान पर होगा या नहीं तो **काफ़िर** नहीं। जो शख़्स ईमान व कुफ़्र को एक समझे या'नी कहता है कि सब ठीक है **ख़ुदा** को सब पसन्द है वोह काफ़िर है। यूंही जो शख़्स **ईमान** पर राज़ी नहीं

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

या **कुफ़्र** पर राज़ी है वोह भी **काफ़िर** है। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 9, स. 179, عالمگیری ج ۲ ص ۲۰۷) नीज़ फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : जिस ने अपने ईमान में शक किया और कहा : "मैं मोमिन हूं اِنْ شَآءَ الله" अगर अपने ईमान में शक की वज्ह से इस तरह कहा तो **कुफ़्र** है और अगर इस वज्ह से कहा कि मा'लूम नहीं मेरा ख़ातिमा ईमान पर होगा या कुफ़्र पर तो **कुफ़्र** नहीं। (عالمگیری ج ۲ ص ۲۰۷)

क्या दोबारा जनम लेना मुम्किन है ?

सुवाल : क्या मरने के बा'द रूह़ किसी और क़ालिब (या'नी जिस्म) में दाख़िल हो कर दोबारा दुन्या में आ सकती है? जो ऐसा अ़क़ीदा रखे उस के लिये क्या हुक्म है?

जवाब : इन्सान बल्कि हर जानदार सिर्फ़ एक ही बार पैदा होता है। मरने वाले की **रूह़** किसी जिस्म में दाख़िल हो कर **दोबारा जनम** ले कर दुन्या में नहीं आती। ऐसा अ़क़ीदा रखना **कुफ़्र** है। दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 103 पर सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : येह ख़याल कि

वोह रूह़ किसी दूसरे बदन में चली जाती है ख़्वाह वोह आदमी का बदन हो या किसी और जानवर का जिस को तनासुख़ और **आवागोन** कहते हैं। मह़्ज़ बात़िल और उस का मानना **कुफ़्र** है। (बहारे शरीअ़त)

आवागोन के बारे में ह़ैरत अंगेज़ मा'लूमात

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 561 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत**" सफ़ह़ा 362 पर से इस ज़िम्न में एक मा'लूमाती इक़्तिबास मुलाह़ज़ा हो। **अ़र्ज़ :** हुज़ूर ! बा'ज़ जगह बच्चा पैदा होता है और वोह बयान करता है कि मैं फ़ुलां जगह पैदा हुवा था और तमाम निशानियां ज़ाहिर करता है। **इर्शाद :** اَلشَّیْطٰنُ یَنْطِقُ عَلٰی لِسَانِہٖ (या'नी) **शैत़ान** उस की ज़बान पर बोलता है। उस (नौ मौलूद) का **शैत़ान** (हमज़ाद) उस (मरने वाले) बच्चे के **शैत़ान** (हमज़ाद) से पूछ रखता है (और) वोही बयान करता है ताकि लोग गुमराह हों कि ओहो ! येह तो **आवागोन** हो गया !

क्या दिल का पर्दा काफ़ी है ?

सुवाल : बा'ज़ बे पर्दा औ़रतें ज़ाहिरी पर्दे का इन्कार करते हुए कहती हैं : "फ़क़त़ दिल का पर्दा होना चाहिये" इस की क्या ह़क़ीक़त है ?

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

जवाब : येह शैत़ान का बहुत बड़ा और बुरा वार है और इस क़ौले बदतर अज़ बौल में उन क़ुरआनी आयात का इन्कार है जिन में ज़ाहिरी जिस्म को पर्दे में छुपाने का हुक्म दिया गया है, मसलन पारह 22 **सूरतुल अह़ज़ाब** आयत नम्बर 33 में फ़रमाया गया, **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और घरों में ठहरी रहो और बे पर्दा न रहो जैसी अगली जाहिलिय्यत की बे पर्दगी। इसी सूरत की आयत नम्बर 59 में है, **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ नबी ! अपनी अज़्वाज और साह़िब ज़ादियों और मुसल्मानों की औ़रतों से फ़रमा दो कि अपनी चादरों का एक ह़िस्सा अपने मुंह पर डाले रहें اِلخ। **सूरतुन्नूर** की आयत नम्बर 31 में है, **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और अपना बनाव न दिखाएं اِلخ। **जो जिस्म के पर्दे का मुत़्लक़न इन्कार करे और कहे कि "सिर्फ़ दिल का पर्दा होना चाहिये" उस का ईमान जाता रहा ।** मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : येह ख़याल कि बात़िन (या'नी दिल) साफ़ होना चाहिये ज़ाहिर कैसा ही हो मह़्ज़ बात़िल है। ह़दीस में फ़रमाया कि "इस का दिल ठीक होता तो ज़ाहिर आप (या'नी ख़ुद ही) ठीक हो जाता।"

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 22, स. 605)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

किसी को "अल्लाह मियां की गाय" कहना कैसा ?

सुवाल : भोलेभाले या बे वुक़ूफ़ आदमी को "**अल्लाह** वाला" या "**अल्लाह** मियां की गाय" या "ग़ौसे पाक का दुम्बा" कहना कैसा ?

जवाब : इस के कोई **कुफ़्रिय्या** मा'ना नहीं, लेकिन इस त़रह़ के जुम्लों से बसा अवक़ात **दिल आज़ारी** होती है। दिल आज़ारी होने की सूरत में सख़्त गुनाहगारी और जहन्नम की ह़क़दारी है लिहाज़ा तौबा भी करनी होगी और जिस का दिल दुखा उस से मुआ़फ़ भी करवाना होगा। नीज़ येह भी ज़ेहन में रहे कि हुज़ूर सय्यिदी **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के फ़तवे के मुत़ाबिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ लफ़्ज़ **मियां** का इस्ति'माल मम्नूअ़ है।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 275)

झूटी बात पर कहना, "अल्लाह जानता है मैं सच्चा हूं"

सुवाल : झूटी बात पर येह कहना कैसा कि **अल्लाह** जानता है मैं सच बोल रहा हूं ?

जवाब : किसी भी झूटी बात पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को गवाह बनाना या झूटी बात पर जान बूझ कर येह कहना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जानता है येह **कलिमए कुफ़्र** है। **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं : जो शख़्स

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

कहे : "**अल्लाह** जानता है कि येह काम मैं ने किया है ह़ालां कि वोह काम उस ने नहीं किया है" तो उस ने **कुफ़्र** किया। (مِنَحُ الرَّوْض ص ۵۱۱)

खाना खाने को "पेट पूजा करना" कहना कैसा ?

सुवाल : बा'ज़ अवक़ात खाने के लिये जाते हुए कह दिया जाता है : "**पेट पूजा** करने जा रहा हूं।" क्या येह कुफ़्र नहीं ?

जवाब : **कुफ़्र** नहीं, अलबत्ता ऐसा कहने से बचना चाहिये।

अल्लाह की दी हुई तौफ़ीक़ ही से सब कुछ होता है

सुवाल : क्या येह बात **कुफ़्र** है कि इन्सान कितनी ही कोशिश कर ले जब तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से इस्लाह़ की तौफ़ीक़ और गुनाह से बचने की त़ाक़त न मिले उस वक़्त तक कुछ नहीं होता ?

जवाब : मज़्कूरा कलाम **कुफ़्र** नहीं। उ़मूमन हर मुसल्मान येह पढ़ता है, "لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه" **तरजमा :** "गुनाहों से बचने की त़ाक़त और नेकी करने की क़ुव्वत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से है।" अलबत्ता चूंकि हमें नहीं मा'लूम कि हमारे मुक़द्दर में क्या लिखा हुवा है लिहाज़ा नेकी की कोशिश करना और गुनाहों से बचना हम पर लाज़िम है कि इस बात का हमें हुक्म दिया गया है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

जो जैसा करने वाला था वैसा लिख दिया गया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस शैत़ानी वस्वसे पर हरगिज़ ध्यान न दिया जाए कि हम अब मुक़द्दर के हाथों लाचार हैं, हमारा अपना कोई क़ुसूर ही नहीं बस हम हर वोह बुरा भला काम करने के पाबन्द हैं जो लिख दिया गया है। ह़ालां कि हरगिज़ ऐसा नहीं बल्कि जो जैसा करने वाला था, उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने इ़ल्म से जाना और उस के लिये वैसा लिखा उस (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) के जानने और लिखने ने किसी को मजबूर नहीं किया। इस बात को इस आ़म फ़ह्म मिसाल से समझने की कोशिश फ़रमाइये जैसा कि आज कल क़ानून के मुत़ाबिक़ ग़िज़ाओं और दवाओं वग़ैरा के पेकिटों पर इन्तिहाई तारीख़ (EXP. DATE) लिखी जाती है। बच्चा भी येह बात समझ सकता है कि कम्पनी वालों को चूंकि तजरिबा होता है कि येह चीज़ फ़ुलां तारीख़ तक ख़राब हो जाएगी, इस लिये लिख देते हैं, यक़ीनन कम्पनी के (EXP. DATE) लिखने ने उस चीज़ को ख़राब होने पर मजबूर नहीं किया, अगर वोह न लिखते तब भी उस चीज़ को अपनी मुद्दत पर ख़राब होना ही था।

तक़्दीर के बारे में एक अहम फ़तवा

इस ज़िम्न में **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 29 सफ़्हा 284 ता 285 से एक सुवाल जवाब पेश किया जाता है। **सुवाल :** ज़ैद कहता है जो हुवा और होगा सब ख़ुदा के हुक्म से ही हुवा और होगा। फिर बन्दे से क्यूं गिरिफ़्त है और इस को क्यूं सज़ा का मुर्तकिब ठहराया गया ? इस ने कौन सा काम ऐसा किया जो मुस्तहि़क़ अ़ज़ाब का हुवा ? जो कुछ उस (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) ने तक़्दीर में लिख दिया है वोही होता है क्यूं कि कुरआने पाक से साबित हो रहा है कि बिला हुक्म उस के एक ज़र्रा नहीं हिलता फिर बन्दे ने कौन सा अपने इख़्तियार से वोह काम किया जो दोज़ख़ी हुवा या काफ़िर या फ़ासिक़। जो बुरे काम तक़्दीर में लिखे होंगे तो बुरे काम करेगा और भले लिखे होंगे तो भले। बहर ह़ाल तक़्दीर का ताबेअ़ है फिर क्यूं इस को मुजरिम बनाया जाता है ? चोरी करना, ज़िना करना, क़त्ल करना वग़ैरा वग़ैरा जो बन्दे की तक़्दीर में लिख दिये हैं वोही करना है ऐसे ही नेक काम करना है। **अल जवाब :** "ज़ैद गुमराह बे दीन है इसे कोई जूता मारे तो क्यूं नाराज़ होता है ? येह भी तो तक़्दीर में था। इस का कोई माल दबाए तो क्यूं बिगड़ता है ? येह भी तक़्दीर में था। येह शैत़ानी फ़े'लों का धोका है कि

जैसा लिख दिया ऐसा हमें करना पड़ता है (ह़ालां कि हरगिज़ ऐसा नहीं) बल्कि जैसा हम करने वाले थे उस (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) ने अपने इ़ल्म से जान कर वोही लिखा है।" दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 19 पर सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : बुरा काम कर के **तक़्दीर** की त़रफ़ निस्बत करना और मशिय्यते इलाही के ह़वाले करना बहुत बुरी बात है, बल्कि ह़ुक्म येह है कि जो अच्छा काम करे उसे मिन जानिबिल्लाह (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की जानिब से) कहे, और जो बुराई सरज़द हो उस को शामते नफ़्स तसव्वुर करे।

तक़्दीर के बारे में बह़्स करना कैसा ?

सुवाल : सुना है तक़्दीर के मुआ़मले में बह़्स करना मन्अ़ है !

जवाब : जी हां मन्अ़ है। **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 18 पर है : क़ज़ा व क़दर (तक़्दीर) के मसाइल आ़म अ़क़्लों में नहीं आ सकते, इन में ज़ियादा ग़ौरो फ़िक्र करना सबबे हलाकत है, **सिद्दीक़ व फ़ारूक़**

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا इस मस्अले में बह्स करने से मन्अ़ फ़रमाए गए। मा व शुमा (हम और आप) किस गिनती में.....! इतना समझ लो कि **अल्लाह** तआ़ला ने आदमी को मिस्ले पथ्थर और दीगर जमादात (या'नी बेजान चीज़ों) के बे ह़िसो ह़रकत नहीं पैदा किया, बल्कि इस को एक नौए़ इख़्तियार (एक त़रह़ का इख़्तियार) दिया है कि एक काम चाहे करे, चाहे न करे, और इस के साथ ही **अ़क़्ल** भी दी है कि भले बुरे, नफ़्अ़ नुक़्सान को पहचान सके, और हर क़िस्म के सामान और अस्बाब मुहय्या कर दिये हैं कि जब कोई काम करना चाहता है उसी क़िस्म के सामान मुहय्या हो जाते हैं और इसी बिना पर उस पर मुआख़ज़ा (पूछगछ) है। अपने आप को बिल्कुल मजबूर या बिल्कुल मुख़्तार (बा इख़्तियार) समझना, दोनों **गुमराही** हैं।

काफ़िर हो जाने की क़सम

सुवाल : अगर कोई क़सम खाए कि मैं फ़ुलां काम करूं तो **काफ़िर** हो जाऊं। इस के बारे में क्या हुक्म है?

जवाब : अगर इस **क़सम** के खाने वाले का येह ज़ेह्न बना हुवा है कि मैं वोह काम करूंगा तो वाक़ेई **काफ़िर** हो जाऊंगा तो ऐसी सूरत में वोह उस काम के करने की

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

सूरत में **काफ़िर** हो जाएगा वरना **क़सम** तोड़ने पर **काफ़िर** तो न होगा मगर **गुनहगार** होगा और उस पर **क़सम का कफ़्फ़ारा** देना वाजिब हो जाएगा।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 13, स. 578, मुलख़्ख़सन)

सिर्फ़ "एक लफ़्ज़" बारबादिये आख़िरत के लिये काफ़ी है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें हर दम रब्बे अकरम عَزَّوَجَلَّ से डरना और ज़बान की हि़फ़ाज़त करना चाहिये कहीं ऐसा न हो कि कोई लफ़्ज़ मुंह से ऐसा निकल जाए जो مَعَاذَ الله عَزَّوَجَلَّ हमारी आख़िरत को बरबाद कर दे। इस ज़िम्न में **दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

﴾1﴿ बेशक आदमी एक बात कहता है जिस में कोई ह़रज नहीं समझता ह़ालां कि उस के सबब **सत्तर साल** जहन्नम में गिरता रहेगा। (سُنَنُ التِّرمِذِی ج٤ ص ١٤١ حدیث٢٣٢١) ﴾2﴿ कोई शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़गी की बात करता है वोह उस मक़ाम तक पहुंचती है जिस का उस को ख़याल भी नहीं होता। पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस कलाम की वज्ह से उस पर अपनी नाराज़गी क़ियामत तक के लिये लिख देता है। (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیر ج١ ص ٣٦٥ حدیث١١٢٩)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الايمان)

"हम ख़ुदा और रसूल को नहीं जानते" कहना कैसा ?

सुवाल : एक शख़्स को किसी बात पर जब इसरार करते हुए ख़ुदा व रसूल का वासित़ा दिया गया तो उस ने बका कि "हम **अल्लाह** व रसूल को नहीं जानते" उस कहने वाले के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब : वोह **काफ़िर व मुरतद** हो गया। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत**, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 21 सफ़ह़ा 104 ता 105 पर इसी त़रह़ के एक **सुवाल** के **जवाब** में इर्शाद फ़रमाते हैं : वोह लफ़्ज़ जो उस ने कहा कि **हम ख़ुदा व रसूल को नहीं जानते, येह सरीह़ कलिमए कुफ़्र** है। وَالعِيَاذُ بِاللّٰهِ تَعَالٰى। उस शख़्स पर फ़र्ज़ है कि **तौबा** करे और अज़् सरे नौ मुसल्मान हो, और अगर औ़रत रखता है तो नए सिरे से **निकाह़** चाहिये, और जिस त़रह़ वोह (कुफ़्रिय्या) कलिमा मज्मअ़ में कहा था तौबा भी मज्मअ़ में करे, और अगर न माने तो मुसल्मान ज़रूर उसे अपने गुरोह से निकाल दें, न अपने पास बिठाएं न उस के पास बैठें, न उस के मुआ़मलात (मसलन ख़रीदो फ़रोख़्त वग़ैरा) में शरीक हों, न अपनी तक़्रीबों में उसे शरीक करें। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۶۸﴾ (پ ۷، الانعام ۶۸)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो कहीं तुझे शैतान भुलावे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ।

मस्जिद की तौहीन का हुक्म

सुवाल : मस्जिद की तौहीन करने वाले के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब : ऐसे शख़्स पर हुक्मे कुफ़्र है। **फुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "जिस शख़्स ने कुरआन या **मस्जिद** या इस त़रह़ की वोह चीज़ें जो शरअ़न मुअ़ज़्ज़म (या'नी दीनी शिआ़र) हैं उन की तौहीन की तो उस पर हुक्मे **कुफ़्र** है।" (مِنَحُ الرَّوْض ص ٤٥٧)

का'बा शरीफ़ को ईंट मिट्टी का बना हुवा कहना कैसा ?

सुवाल : एक शख़्स ह़ज के लिये आया और का'बा शरीफ़ को देख कर कहने लगा : "अरे ! येह तो उसी त़रह़ ईंटों और गारे का बना हुवा है जिस त़रह़ हमारे मकानात बनते हैं !" इस शख़्स के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब : अगर तौहीन की निय्यत न हो तो **कुफ़्र** नहीं मसलन कोई ह़ज को पहली बार चला और उस ने का'बा

शरीफ़ के बारे में अपने त़ौर पर कोई नक़्शा ज़ेह्‌न में बिठा लिया कि उस की दीवारें सोने चांदी की होंगी वग़ैरा। फिर जब उस ने ज़ियारत की, अपने ख़याली ख़ाके के मुत़ाबिक़ न पा कर तअ़ज्जुब से सुवाल में मज़्कूरा जुम्ला कहा तो **काफ़िर** न होगा। हां अगर उस ने का'बए मुशर्रफ़ा को ह़क़ीर जानते हुए ऐसा कहा तो बेशक **काफ़िर व मुरतद** हो गया।

का'बे को गाली देना कैसा ?

सुवाल : जिस ने **का'बे** को गाली दी या उस को ऐ़ब लगाया या उस के ज़वाल (या'नी नुक़्सान व घाटे) की तमन्ना की उस के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब : ऐसा शख़्स **काफ़िर व मुरतद** है।

किसी बुज़ुर्ग को क़य्यूमे ज़मां कहना कैसा ?

सुवाल : किसी का नाम अ़ब्दुल क़य्यूम हो उस को **क़य्यूम** कह कर पुकारना कैसा ? इसी त़रह़ किसी बुज़ुर्ग को "क़य्यूमे जहां" या "क़य्यूमे ज़मां" कह सकते हैं या नहीं ?

जवाब : ऐसा कहना **सख़्त ह़राम** है। बा'ज़ **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के नज़्दीक बन्दे को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मख़्सूस नामों जैसे **क़य्यूम, क़ुद्दूस** या, **रह़मान** कह कर पुकारना **कुफ़्र** है। "क़य्यूमे जहां" या "क़य्यूमे

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

ज़मां'' कहने का एक ही हुक्म है। चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 15 सफ़्हा 280 पर फ़रमाते हैं : **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने ''क़य्यूमे जहां'' ग़ैरे ख़ुदा को कहने पर **तक्फ़ीर** फ़रमाई। **मज्मउ़ल अन्हर** में है : ''अगर कोई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अस्माए मुख़्तस्सा (या'नी मख़्सूस नामों) में से किसी नाम का इत़्लाक़ मख़्लूक़ पर करे जैसे इसे (या'नी मख़्लूक़ के किसी फ़र्द को) **क़ुद्दूस, क़य्यूम** या, **रह़मान** कहे तो येह **कुफ़्र** हो जाएगा।'' وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم। (مَجْمَعُ الْاَنْهُر ج۲ ص ٥٠٤)

आदमी को क़य्यूम, क़ुद्दूस और रह़मान कह कर न पुकारिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सख़्त ताकीद है कि किसी भी शख़्स को **रह़मान, क़य्यूम** और **क़ुद्दूस** वग़ैरा मत कहिये बल्कि आ़दत बनाइये कि जिस का नाम **अल्लाह** के किसी नाम में ''अ़ब्द'' की इज़ाफ़त के साथ हो मसलन जिन का नाम अ़ब्दुल मजीद या अ़ब्दुल करीम वग़ैरा हो उन को मजीद या करीम कह कर न पुकारें। उस में से ''अ़ब्द'' ख़ारिज न करें, हां ग़ैरे ख़ुदा को ''मजीद'' या ''करीम'' कहना **कुफ़्र** नहीं।

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ 312 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" हिस्सा 16 सफ़हा 245 पर सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : बा'ज़ अस्माए इलाहिय्यह जिन का इत़्लाक़ (बोला जाना) ग़ैरुल्लाह पर जाइज़ है उन के साथ नाम रखना जाइज़ है, जैसे **अ़ली, रशीद, कबीर, बदीअ़**, क्यूं कि बन्दों के नामों में वोह मा'ना मुराद नहीं हैं जिन का इरादा **अल्लाह** तआ़ला पर इत़्लाक़ करने (बोलने) में होता है और इन नामों में अलिफ़ व लाम मिला कर भी नाम रखना जाइज़ है, मसलन **अल अ़ली, अर्रशीद**। हां इस ज़माने में चूंकि अ़वाम में नामों की तस्ग़ीर करने का ब कसरत रवाज हो गया है, लिहाज़ा जहां ऐसा गुमान हो ऐसे नाम से बचना ही मुनासिब है। ख़ुसूसन जब कि अस्माए इलाहिय्यह के साथ **अ़ब्द** का लफ़्ज़ मिला कर नाम रखा गया, मसलन **अ़ब्दुर्रह़ीम, अ़ब्दुल करीम, अ़ब्दुल अ़ज़ीज़** कि यहां मुज़ाफ़ इलैह से मुराद **अल्लाह** तआ़ला है और ऐसी सूरत में तस्ग़ीर (छोटा करना) अगर क़स्दन होती तो مَعَاذَ الله **कुफ़्र** होती, क्यूं कि येह उस शख़्स की तस्ग़ीर नहीं बल्कि मा'बूदे बरह़क़ की तस्ग़ीर है मगर अ़वाम और

www.dawateislami.net

ना वाक़िफ़ों का येह मक़्सद यक़ीनन नहीं है, इसी लिये वोह हुक्म नहीं दिया जाएगा बल्कि उन को समझाया और बताया जाए और ऐसे मौक़अ़ पर ऐसे नाम ही न रखे जाएं जहां येह एह्तिमाल (गुमान) हो । (دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج ۹ ص ۶۸۸)

अ़ब्दुल क़ादिर को क़ादिर कहना कैसा ?

सुवाल : अ़ब्दुल क़ादिर, अ़ब्दुल क़दीर, अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ वग़ैरा नाम वाले अफ़राद को क़ादिर, क़दीर और रज़्ज़ाक़ कह कर पुकारना कैसा है ?

जवाब : इस त़रह़ के एक सुवाल का जवाब देते हुए शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत हुज़ूर **मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द** मौलाना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : ऐसे नामों से लफ़्ज़ अ़ब्द का ह़ज़्फ़ (या'नी अलग कर देना) बहुत बुरा है और कभी ना जाइज़ व गुनाह होता है और कभी सरह़दे **कुफ़्र** तक भी पहुंचता है। **क़ादिर** का इत़्लाक़ तो ग़ैर पर जाइज़ है। इस सूरत में अ़ब्दुल क़ादिर को **क़ादिर** कह कर पुकारना **बुरा** है । मगर **क़दीर** का इत़्लाक़ ग़ैरे ख़ुदा पर ना जाइज़। كمافِى الْبَيْضاوى (जैसा कि बैज़ावी में है) और अगर किसी का नाम अ़ब्दुल क़ुद्दूस, अ़ब्दुर्रह़मान, अ़ब्दुल क़य्यूम है तो उसे **क़ुद्दूस, रह़मान, क़य्यूम** कहना ऐसा ही है जैसे उसे

www.dawateislami.net

(कि) जिस का नाम अ़ब्दुल्लाह हो (उस को) "**अल्लाह**" कहना बहुत सख़्त बात है। وَالعِیَاذُ بِاللّٰہِ تَعَالٰی। जिस का नाम अ़ब्दुल क़ादिर हो उसे भी अ़ब्दुल क़ादिर ही कहा जाए, जिस का अ़ब्दुल क़दीर उसे अ़ब्दुल क़दीर ही कहना ज़रूर है। अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ को अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़, अ़ब्दुल मुक़्तदिर को अ़ब्दुल मुक़्तदिर। ग़ैर पर इत्लाक़े क़दीर व मुक़्तदिर (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इलावा किसी ग़ैर को क़दीर और मुक़्तदिर कह सकते हैं या नहीं इस मस्अले) में उ़लमा का इख़्तिलाफ़ है। كَمَا فِی غَایَۃِ الْقَاضِی حَاشِیَہ شَرحُ الْبَیْضَاوِی।

(फ़तावा मुस्तफ़विय्या, स. 89, 90)

"न ख़ुदा ही मिला न विसाले सनम" कहना कैसा ?

सुवाल : जब आदमी किसी काम में नाकाम हो जाता है तो बा'ज़ अवक़ात अपने बारे में बोल पड़ता है : "**न ख़ुदा ही मिला न विसाले सनम** न इधर के रहे न उधर के रहे।"

जवाब : येह मुहा़वरा बोलने से बचना चाहिये। इस के इब्तिदाई अल्फ़ाज़ के मा'ना येह बनेंगे कि "न **ख़ुदा** का क़ुर्ब नसीब हुवा और न ही **सनम** के क़रीब हो सके।" कुतुबे लुग़त के ए'तिबार से **सनम** के मा'ना **बुत** भी है और **मह़बूब** भी।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

पीर साहिब और मज़ारात के बारे में सुवाल जवाब

अपने पीर को नबी से बढ़ कर कहना

सुवाल : एक जाहिला औ़रत का कहना है : (مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ) हमारे मुर्शिद **हु़ज़ूरे अकरम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बढ़ कर हैं। और कहती है : **इमाम अह़मद रज़ा** क्या हैं ! सिर्फ़ आ़शिक़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही तो हैं।" इस बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब : पहले जुम्ले में उस जाहिला ने अपने पीर को مَعَاذَ اللّٰہ सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अफ़्ज़ल क़रार दिया है जो कि **सरीह़ कुफ़्र** है।

वाह क्या बात आ'ला ह़ज़रत की

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, इमामे इ़श्क़ो मह़ब्बत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, आफ़्ताबे विलायत, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن बेशक ज़बर दस्त **आ़शिक़े रसूल** थे मगर साथ ही साथ ज़बर दस्त आ़लिमे दीन, क़ारी व ह़ाफ़िज़, मुफ़्ती और **वलिय्ये कामिल** भी थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه तक़रीबन पचास उ़लूम पर दस्त रस रखते थे, जदीद तरकीब के मुत़ाबिक़ आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मुबारक फ़तवों पर मुश्तमिल **फ़तावा रज़विय्या** शरीफ़ तक़रीबन 30 जिल्दों में ज़ेवरे त़ब्अ़ से आरास्ता हो चुकी हैं। मेरी नाक़िस राय में येह उर्दू ज़बान में दुन्या के ज़ख़ीम तरीन फ़तावा हैं जो कि सिर्फ़ एक ही मुफ़्ती ने जारी फ़रमाए हैं येह तक़रीबन बाईस हज़ार (22000) सफ़ह़ात, छ[6] हज़ार आठ सो सेंतालीस (6847) सुवालात के जवाबात और दो सो छ[6] (206) रसाइल पर मुश्तमिल हैं। जब कि हज़ारहा मसाइल ज़िम्नन ज़ेरे बह़्स आए हैं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के दौर के उ़लमाए ह़रमैने त़य्यिबैन رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को 14वीं सदी का **मुजद्दिद** कहा।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात् अज्र लिखता है और क़ीरात् उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

अह़मद रज़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ *का ताज़ा गुलिस्तां हैं आज भी   ख़ुरशीदे इल्म उन का दरख़्शां है आज भी*

किस त़रह़ इतने इल्म के दरिया बहा दिये   उ़लमाए ह़क़ की अ़क़्ल तो ह़ैरां है आज भी

सब उन से जलने वालों के गुल हो गए चराग़   अह़मद रज़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ *की शम्अ़ फ़रोज़ां है आज भी*

मिरज़ा सरे नियाज़ झुकाता है इस लिये

शे'रो अदब पे आप का एह़सां है आज भी

मज़ीद मा'लूमात के लिये **ह़याते आ'ला ह़ज़रत** (तीन जिल्दें) मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल कर के मुत़ालआ़ फ़रमाइये। **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

इस जुम्ले "अल्लाह करम फ़रमा देगा" को रद कर देना कैसा ?

सुवाल : मुरीद ने पीर साह़िब से अपनी परेशानी बयान की। पीर साह़िब ने कहा : **अल्लाह** करम फ़रमा देगा। इस पर मुरीद ने कहा : "नहीं, बस आप करम फ़रमा दीजिये।" क्या हुक्मे शरई है ?

जवाब : मुरीद के जवाब में ब ज़ाहिर इस बात "**अल्लाह** करम फ़रमा देगा" का रद और इन्कार है इस लिये मुरीद पर हुक्मे **कुफ़्र** है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़बान को बहुत संभाल कर चलाना ज़रूरी है कि जब येह क़ैंची की त़रह़ चलती है तो इस से कुफ़्रिय्यात सादिर होते देर नहीं लगती। आह ! बसा अवक़ात न बोलने का बोल कर बन्दा इस्लाम से हाथ धो बैठता है और उस को कानों कान ख़बर तक नहीं होती !

मेरा ईमान इलाही عَزَّوَجَلَّ *तू सलामत रखना*
मुझ पे हर आन फ़क़त़ अपनी इ़नायत रखना

"या मुर्शिद ! आप करम फ़रमा दीजिये" कहना कैसा ?

सुवाल : तो क्या अपने पीरो मुर्शिद से येह नहीं कह सकते कि "या मुर्शिद आप करम फ़रमा दीजिये।"

जवाब : अपने पीरो मुर्शिद से मुत़्लक़न करम की भीक मांगने में कोई ह़रज नहीं। अगर मुर्शिद कामिल हो तो अपनी ज़िन्दगी में भी वोह नज़्रे करम, तवज्जोह और दुआ़ओं से मुरीदों के काम बनाता है और बा'दे विसाल भी उस का फ़ैज़ जारी व सारी रहता है।

मुह़्ये दीं ग़ौस हैं और ख़्वाजा मुईनुद्दीं हैं
ऐ ह़सन क्यूं न हो मह़फ़ूज़ अ़क़ीदा तेरा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तमाम मुज्तहिदीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن अपने अपने मुक़ल्लिदीन को और जुम्ला

मशाइख़ व मुर्शिदीन अपने अपने मुरीदीन को दुन्या व आख़िरत में फ़ैज़ पहुंचाते और उन की बिगड़ियां बनाते हैं। चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 9 सफ़ह़ा 769 ता 770 पर फ़रमाते हैं **:** اَلْحَمْدُ لِلّٰه (बा'दे वफ़ात) बरज़ख़ में भी इन का फ़ैज़ जारी और ग़ुलामों के साथ वोही शाने इमदाद व यारी है। इमामे अजल अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانى **मीज़ानुश्शरीअ़तिल कुब्रा** में इर्शाद फ़रमाते हैं **:** तमाम **आइम्मए मुज्तहिदीन** (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن) अपने पैरवों (इत्तिबाअ़ करने वालों) की शफ़ाअ़त करते हैं और दुन्या व बरज़ख़ व क़ियामत हर जगह की सख़्तियों में इन पर निगाह रखते हैं यहां तक कि (पुल) सिरात़ से पार हो जाएं। (الميزان الكبرٰى ج ا ص ٩)

इसी **इमामे अजल** ने इसी किताबे अज्मल में फ़रमाया **:** तमाम अइम्मए फ़ुक़हा व सूफ़िया अपने अपने मुक़ल्लिदों की शफ़ाअ़त करते हैं और जब इन के मुक़ल्लिद की रूह़ निकलती है, जब मुन्कर नकीर उस से सुवाल को आते हैं, जब उस का ह़श्र होता है, जब

नामए आ'माल खुलते हैं, जब ह़िसाब लिया जाता है, जब अ़मल तुलते हैं, जब (पुल) सिरात़ पर चलता है, ग़रज़ हर ह़ाल में उस की निगहबानी फ़रमाते हैं और किसी जगह उस से ग़ाफ़िल नहीं होते। ह़ज़रते इमाम शा'रानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی मजी़द फ़रमाते हैं :......

इमाम मालिक ने क़ब्र में जा कर इमदाद फ़रमाई

हमारे उस्ताज़ शैख़ुल इस्लाम इमाम नासिरुद्दीन लक़्क़ानी मालिकी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का जब इन्तिक़ाल हुवा बा'ज़ सालिह़ों (या'नी नेक लोगों) ने उन्हें ख़्वाब में देखा, (तो) पूछा : **अल्लाह** तआ़ला ने आप के साथ क्या किया ? कहा : जब मुन्कर नकीर ने मुझे सुवाल के लिये बिठाया (कि सय्यिदुना) इमाम मालिक (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) तशरीफ़ लाए और उन (या'नी मुन्कर नकीर) से फ़रमाया : (क्या) ऐसा शख़्स (या'नी इतना ज़बर दस्त आ़लिमे दीन) भी इस (बात) की ह़ाजत रखता है कि उस से **ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ **व रसूल** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान के बारे में सुवाल किया जाए ! अलग हो (जाइये) इस के पास से। (सय्यिदुना इमामे मालिक के) येह फ़रमाते ही नकीरैन मुझ से अलग हो गए। और जब मशाइख़े किराम सूफ़िया قُدِّسَتْ اَسْرَارُهُم हौल व

www.dawateislami.net

सख़्ती के वक़्त दुन्या व आख़िरत में अपने पैरवों (इत्तिबाअ़ करने वालों) और मुरीदों का लिह़ाज़ रखते हैं तो उन पेशवायाने मज़ाहिब का कहना ही क्या जो ज़मीन की मीख़ें हैं और दीन के सुतून, और शारेअ़ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत पर उस के अमीन।

رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُم اَجْمَعِیْن (المیزان الکبری ج۱ص۵۳, फ़तावा रज़विय्या)

साह़िबे मज़ार का अपने ज़ाइर की ख़बर गीरी करना

औलियाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام पर रब्बुल अनाम جَلَّ جَلَالُہٗ के ख़ूब ख़ूब इन्आ़मो इकराम होते हैं इन की अ़ज़्मतों के क्या कहने ! मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : **ह़ज़रते सय्यिदी अह़मद बदवी कबीर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिन की मजलिसे मीलाद **मिस्र** में होती है। मज़ारे मुबारक पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की विलादत के दिन हर साल मज्मअ़ होता है और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मीलाद पढ़ा जाता है। **इमाम अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी** قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی इल्तिज़ाम के साथ हर साल ह़ाज़िर होते, अपनी किताब में भी बहुत ता'रीफ़ लिखी है। कई वरक़ों (या'नी सफ़ह़ात) में उस मजलिस के ह़ालात बयान किये हैं। मजलिस

तीन दिन होती है । एक दफ़्अ़ा आप (या'नी इमाम शा'रानी) को ताख़ीर हो गई, येह हमेशा (या'नी हर साल) एक दिन पहले ही ह़ाज़िर हो जाते थे, इस दफ़्अ़ा आख़िर दिन पहुंचे । जो **औलियाए किराम** (رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام) मज़ारे मुबारक पर मुराक़िब थे उन्हों ने (इमाम शा'रानी से) फ़रमाया : कहां थे ? दो रोज़ से **ह़ज़रत** (सय्यिदी अह़मद बदवी कबीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر) मज़ारे मुबारक से पर्दा उठा उठा कर फ़रमाते हैं : **अ़ब्दुल वह्हाब आया ? अ़ब्दुल वह्हाब आया ?** उन्हों ने (या'नी इमाम शा'रानी ने) फ़रमाया : क्या हुज़ूर (या'नी साह़िबे मज़ार) को मेरे आने की इत्तिलाअ़ होती है ? उन्हों ने फ़रमाया : इत्तिलाअ़ (भी) कैसी ! हुज़ूर (या'नी साह़िबे मज़ार) तो फ़रमाते हैं कि **कितनी ही मन्ज़िल पर कोई शख़्स मेरे मज़ार पर आने का इरादा करे, मैं उस के साथ होता हूं, उस की ह़िफ़ाज़त करता हूं, अगर उस का एक टुकड़ा रस्सी का जाता रहेगा अल्लाह तआ़ला मुझ से सुवाल करेगा ।** (येह ह़िकायत बयान करने के बा'द आ'ला ह़ज़रत ने फ़रमाया) इन (या'नी इमाम शा'रानी) पर ख़ास तवज्जोह थी और इन को (या'नी इमाम शा'रानी को) भी ख़ास नियाज़ मन्दी (ख़ुसूसी अ़क़ीदत) थी, इसी वज्ह से

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

ह़ज़रत (सय्यिदी अह़मद बदवी कबीर عَلَيۡهِ رَحۡمَةُاللّٰهِ الۡقَدِيۡر) को इन से ख़ास मह़ब्बत थी। **ह़दीस** में है : "जो कोई दरयाफ़्त करना चाहे कि **अल्लाह** के यहां उस की किस क़दर, क़द्रो मन्ज़िलत है वोह येह देखे कि उस के दिल में **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की किस क़दर, क़द्रो मन्ज़िलत है उतनी ही उस की **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के यहां है।" (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, हि़स्सए सिवुम, स. 361, مُسۡنَد اَبِی یَعۡلٰی ج۲ص۲۲٤حديث ۱۸٦٠)

मज़ार को सज्दा करना कैसा ?

सुवाल : अपने पीर साहि़ब को या उन की तस्वीर को या किसी बुज़ुर्ग के मज़ार को **सज्दा** करना **कुफ़्र** है या नहीं ?

जवाब : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी और को सज्दए इबादत करना बेशक **कुफ़्र** है जब कि सज्दए ता'ज़ीमी करना **ह़राम** और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّحۡمٰن फ़रमाते हैं : बिलफ़र्ज़ कभी कोई नादान मुसल्मान किसी मज़ार को सज्दा करता नज़र आए तो उस के सज्दे को **सज्दए ता'ज़ीमी** ही पर मह़मूल करेंगे क्यूं कि येह बईद अज़ क़ियास है कि कोई जाहिल से जाहिल मुसल्मान भी **इबादत** की निय्यत से किसी बुज़ुर्ग के मज़ार को

www.dawateislami.net

सज्दा करे। हां अगर यक़ीनी त़ौर पर मा'लूम हो जाए मसलन वोह ख़ुद इक़रार करे कि मैं ने मज़ार को इबादत की निय्यत से सज्दा किया है तो बेशक **काफ़िर** है। निय्यत मा'लूम न होने के बा वुजूद उस के सज्दे को मह़ज़ अपने क़ियास से ख़्वाह म ख़्वाह **सज्दए इबादत** क़रार देना एक मुसल्मान के बारे में बद गुमानी ही नहीं बल्कि सरीह़ इफ़्तिरा (या'नी खुली तोहमत) है जो कि ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। (माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. 30, स. 376)

मज़ार के सामने ज़मीन चूमना कैसा ?

सुवाल : मज़ार के सामने ज़मीन चूम सकते हैं या नहीं ?

जवाब : नहीं चूम सकते। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 22 सफ़ह़ा 474 पर फ़रमाते हैं : "मज़ारात को सज्दा या इन के सामने ज़मीन चूमना **ह़राम** और ह़द्दे रुकूअ़ तक झुकना मम्नूअ़।" दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 115 पर सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی

फ़रमाते हैं : "आ़लिम या किसी बड़े के सामने ज़मीन को बोसा देना **ह़राम** है जिस ने ऐसा किया और जो इस पर राज़ी हुवा दोनों गुनहगार हैं।" (تَبيِينُ الحَقائِق ج ٧ ص ٥٦) मज़ीद फ़रमाते हैं : बा'ज़ लोग सलाम करते वक़्त झुक जाते हैं, येह झुकना अगर ह़द्दे रुकूअ़ तक हो तो **ह़राम** है और इस से कम हो तो मक्रूह है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 107) ह़ज़रते सदरुश्शरीअ़ह रुकूअ़ की ता'रीफ़ बयान करते हुए फ़रमाते हैं : इतना झुकना कि हाथ बढ़ाए तो घुटनों तक पहुंच जाएं येह रुकूअ़ का अदना दरजा है और पूरा येह कि पीठ सीधी बिछा दे। (ऐज़न, ह़िस्सा : 3, स. 81, دُرِّمختار ج٢ ص١٢٥-١٢٦ वग़ैरा) जब ज़ाहिरी ज़िन्दों के लिये येह अह़कामात हैं तो मज़ारात के मुआ़मलात में मज़ीद मोह़तात़ रहना होगा कि इस के नुक़्सानात में से येह भी है कि शैत़ान भोलेभाले मुसल्मानों को वस्वसे डाल कर औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के मज़ारात और अहले सुन्नत के मा'मूलात से दूर करने की मज़्मूम कोशिशें करेगा। (इन मसाइल की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **फ़तावा रज़विय्या**, जिल्द 22 में से रिसाला "**अज़्ज़ुब्दतुज़्ज़किय्यह लि तह़रीमि सुजूदित्तह़िय्यह**" का मुत़ालआ़ फ़रमा लीजिये)

समझाने पर ज़िद करने वाले की मज़म्मत

सुवाल : बा'ज़ अवक़ात देखा गया है अगर किसी ने **सरीह़ कुफ़्र** बक दिया और समझाते हुए तौबा, तजदीदे ईमान व तजदीदे निकाह़ का मश्वरा दिया गया तो वोह बिफर जाता और ज़िद पर आ जाता है ऐसे शख़्स के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब : हुक्मे शरई सुन कर गुनाह पर हटधर्मी करने वालों पर जितना अफ़्सोस किया जाए कम है। पारह 2 **सूरतुल बक़रह** आयत नम्बर 206 में इर्शादे रब्बुल इबाद है :

وَ اِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ ؕ وَ لَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۲۰۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब उस से कहा जाए कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) से डर तो उसे और ज़िद चढ़े गुनाह की ऐसे को दोज़ख़ काफ़ी है और वोह ज़रूर बहुत बुरा बिछोना है।

"लोग बे मौत मर रहे हैं" कहना कैसा ?

सुवाल : दहशत गर्दों की त़रफ़ से किये जाने वाले बम धमाकों में यकमुश्त काफ़ी अफ़्राद की हलाकत पर येह कहना कैसा कि ह़ालात बहुत ख़राब हैं, बहुत सारे लोग बे मौत मर रहे हैं।

जवाब : "लोग बे मौत मर रहे हैं" येह अल्फ़ाज़ हुक्मे कुरआनी के ख़िलाफ़ होने की वज्ह से बहुत सख़्त हैं क्यूं कि "बे मौत" कोई मर ही नहीं सकता। चुनान्चे ताऊन में ब कसरत मरने वालों के लिये इसी तरह के अल्फ़ाज़ इस्ति'माल करने वालों को तम्बीह (या'नी ख़बरदार) करते हुए मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अहमद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 24 सफ़हा 199 पर फ़रमाते हैं : "जो लोग कहते हैं कि लोग इस में बे मौत मर जाते हैं" वोह **गुमराह** हैं, इस में कुरआने अज़ीम का इन्कार है, उन पर **तौबा फ़र्ज़ है और तजदीदे इस्लाम व तजदीदे निकाह** चाहिये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا ؕ
(پ٤ ال عمران ١٤٥)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और कोई जान बे हुक्मे ख़ुदा मर नहीं सकती सब का वक़्त लिखा रखा है।

पेड़ से (अक्सर) एकआध फल टपकता (ही) रहता है (और) इसी (एकआध) का टपकना लिखा था और (बा'ज़ अवक़ात) एक आंधी आती है कि हज़ारों फल

एक साथ झड़ पड़ते हैं, (झड़ने में) इन का साथ होना ही लिखा था। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَكُلُّ صَغِيرٍ وَّ كَبِيرٍ مُّسْتَطَرٌ ﴿٥٣﴾ (پ۲۷ القمر۵۳)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हर छोटी बड़ी चीज़ लिखी हुई है।

मुझे जज़ाए ख़ैर नहीं चाहिये कहना कैसा ?

सुवाल : किसी ने अपने मोह्सिन का शुक्रिय्या अदा करते हुए कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को जज़ाए ख़ैर दे" मोह्सिन बोला : मुझे जज़ाए ख़ैर नहीं चाहिये। मोह्सिन के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब : मोह्सिन के जवाब में सवाब को हलका जानना पाया जा रहा है इस लिये उस का जुम्ला कुफ़्रिय्या है।

येह कहना : अच्छा जाओ (पूजा) कर लो

सुवाल : एक शख़्स किसी काफ़िर की दुकान पर किसी काम से गया तो उस काफ़िर ने कहा : तुम थोड़ी देर बैठो मैं पूजा कर के आता हूं। जवाबन उस शख़्स ने कहा : "अच्छा जाओ कर लो।" शख़्से मज़्कूर का येह जुम्ला कहना कैसा है ?

जवाब : मज़्कूरा जुम्ला **कुफ़्रिय्या** है कि काफ़िर का पूजा के लिये जाना **कुफ़्र** है और इस जुम्ले से इस कुफ़्र पर

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

रिज़ा व तह़सीन (अच्छा समझना और रिज़ा मन्दी) साबित हो रही है और किसी कुफ़्र पर राज़ी होना या उसे अच्छा कहना दोनों बातें **कुफ़्र** हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना **मुल्ला अ़ली क़ारी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى इर्शाद फ़रमाते हैं : "किसी ने दूसरे से कहा : तुम चाहो तो मुसल्मान हो जाओ या यहूदी दोनों ही मेरे नज़्दीक बराबर हैं तो येह कहना **कुफ़्र** है कि येह कुफ़्र पर राज़ी होना है और किसी के कुफ़्र पर राज़ी होने वाले की **तक्फ़ीर** की जाएगी।" (या'नी उस को काफ़िर क़रार दिया जाएगा) (مِنَحُ الرَّوض ص٤٩٣) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इस से मिलते जुलते एक सुवाल का जवाब देते हुए फ़रमाते हैं : सुल्त़ाने इस्लाम हरगिज़ कुफ़्फ़ार को मुरासिमे कुफ़्र (या'नी कुफ़्रिय्या रुसूमात) की इजाज़त नहीं दे सकता, क्या इजाज़ते कुफ़्र दे कर ख़ुद काफ़िर होगा ! बल्कि نَتْرُكُهُمْ وَمَا يَدِيْنُوْن (या'नी हम उन्हें उन के दीन पर छोड़ते हैं) या'नी जहां जिस बात के इज़ाले (या'नी ज़ाइल करने) का हुक्म नहीं वहां तअ़र्रुज़ (या'नी रोकना) न करेगा न येह कि उन से कहेगा कि हां ऐसा करो।"

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 136)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा। (ابن عدی)

"पूजा कर के आता हूं" कहने वाले को क्या जवाब दे ?

सुवाल : कुफ़्फ़ार की अक्सरिय्यत वाले ममालिक में इस त़रह़ की सूरतें पेश आ सकती हैं, अब अगर कोई कह दे कि "ठहरो मैं पूजा कर के आ रहा हूं" ऐसी सूरत में आदमी क्या जवाब दे ? अगर कुछ मोह़तात़ अल्फ़ाज़ मिल जाएं तो मुसल्मानों के लिये सहूलत रहेगी।

जवाब : ऐसे मौक़ए़ पर चुप हो जाए। या यूं कह दे : मैं यहीं बैठा हूं, या कहे : इधर ही हूं, या कहे : तुम्हारा इन्तिज़ार करूंगा। (अच्छा जी, बेहतर है, ठीक है, जल्दी आना, ज़ियादा देर मत लगाना, वग़ैरा अल्फ़ाज़ न कहे कि इन में भी रिज़ा मन्दी का पहलू निकल रहा है)

ज़िक्र के मुतअ़ल्लिक़ कुफ़्रिय्यात की 9 मिसालें

﴾1﴿ दो आदमियों का झगड़ा हुवा, उन में से एक ने कहा : لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه इस पर दूसरे ने कहा : लाह़ौल कुछ भी नहीं है। या ﴾2﴿ कहा मैं لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه का क्या करूं ? या ﴾3﴿ कहा : **लाह़ौल** भूक की जगह फ़ाएदा नहीं देती। या ﴾4﴿ कहा : **लाह़ौल** रोटी का काम नहीं देती। या ﴾5﴿ कहा : **लाह़ौल** रोटी की जगह किफ़ायत नहीं करती। या ﴾6﴿ कहा : **लाह़ौल**

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

कुछ फ़ाएदा नहीं देती। या ﴾7﴿ कहा : **लाह़ौल** पियाले में सरीद नहीं। येह तमाम अक़्वाल **कुफ़्रिय्या** हैं। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 9, स. 183, عالمگیری ج۲ ص ۲۷۳ منح الروض ص ٤٦١)

﴾8﴿ तस्बीह़ात (मसलन سُبۡحٰنَ اللہ, اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ, اَللّٰہُ اَکۡبَر, لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہ) के मुतअ़ल्लिक़ मज़्कूरा बाला अल्फ़ाज़ कहने का हुक्म भी येही है या'नी **कुफ़्र** है।

(مِنَحُ الرَّوض ص ٤٦١)

﴾9﴿ किसी ने कहा : سُبۡحٰنَ اللہ ! इस पर दूसरे ने कहा : "तूने **अल्लाह** के नाम की खाल उतार दी।" येह **कलिमए कुफ़्र** है। (ایضاً)

मुतफ़र्रिक़ात की 45 मिसालें

﴾1﴿ येह कहना कि "येह भी ख़ुदा, वोह भी ख़ुदा और सब ख़ुदा (हैं)" **कलिमए कुफ़्र** है।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 641)

﴾2﴿ जो कहे : "अगर क़ियामत के दिन **अल्लाह** तआ़ला इन्साफ़ करेगा तो मैं इन्साफ़ करूंगा।" ऐसे पर हुक्मे **कुफ़्र** है। (اَلْبَحْرُ الرَّائِق ج۵ ص ۲۰۳)

﴾3﴿ जो आ़लम में किसी शै को क़दीम (या'नी हमेशा से) माने या उस के हुदूस में (या'नी पहले न थी फिर मौजूद हुई इस में) शक करे वोह **काफ़िर** है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सए

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

अव्वल, स. 18) मत़लब येह कि सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही क़दीम या'नी हमेशा हमेशा से है। इस के इलावा हर हर चीज़ बा'द में ह़ादिस हुई ! या'नी कोई भी शै हमेशा हमेशा से नहीं हर चीज़ बा'द में पैदा की गई।

﴾4﴿ **अल्लाह** तआ़ला से किसी शै के एक ज़र्रे के इ़ल्म की नफ़ी (इन्कार) करना **कुफ़्र** है, और ﴾5﴿ यूंही मा'दूम (जिस का वुजूद न हो उस) के इ़ल्म की नफ़ी (इन्कार) करना भी **कुफ़्र** है। (ईमान की ह़िफ़ाज़त, स. 51) या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को हमेशा हमेशा से हमेशा हमेशा के लिये ज़र्रे ज़र्रे का इ़ल्म है कोई भी ज़र्रा उस से पोशीदा नहीं नीज़ हर वोह शै जो अभी तक वुजूद में नहीं आई उस का भी इ़ल्म है।

﴾6﴿ जो कहे : "जब तक **ख़ुदा** व रसूल को आंख से देख न लेंगे ईमान न लाएंगे" वोह **काफ़िर** है।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 610)

﴾7﴿ कुफ़्र को **अल्लाह** तआ़ला तक पहुंचने का ज़रीआ़ कहना **कुफ़्र** है। (ऐज़न, जि. 15, स. 287)

﴾8﴿ जो कहे : "मैं तौह़ीद (या'नी **अल्लाह** तआ़ला की वह़दानिय्यत) को नहीं जानता" वोह **काफ़िर** है।

(فتاوٰی عالمگیری ج ٢ ص ٢٥٧)

﴾9﴿ **अल्लाह** तआ़ला से इस्तिग़ना (या'नी बे नियाज़ी)

ज़ाहिर करना **सरीह़ कुफ़्र** है या'नी येह कहना

﴾10﴿ मुझे **अल्लाह** तआ़ला की परवाह नहीं या

﴾11﴿ मुझे **अल्लाह** की रिज़ा की ज़रूरत नहीं या

﴾12﴿ **अल्लाह** तआ़ला नाराज़ हो जाए मुझे इस की परवाह नहीं, मुझे तो अपने मह़बूब की रिज़ा चाहिये। इस त़रह़ के कुफ़्रिय्या जुम्ले अक्सर गानों और इश्क़े मजाज़ी करने वालों में इस्ति'माल होते हैं। इन से बचना फ़र्ज़ है। (इश्क़े मजाज़ी के बारे में हैरत अंगेज़ मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 409 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**पर्दे के बारे में सुवाल जवाब**" सफ़ह़ा 318 ता 356 का मुत़ालआ़ कीजिये)

﴾13﴿ जो किसी से कहे : "अगर तू इलाहुल आ़लमीन भी होता तब भी तुझ से अपना ह़क़ ले लेता" येह **कलिमए कुफ़्र** है। (عالمگیری ج۲ ص ۲۶۰)

﴾14﴿ किसी से कहा गया : ख़ुदा से ह़या कर। उस ने कहा : "मैं नहीं करता" येह क़ौल **कुफ़्र** है।

(فتاوٰی تاتار خانیه ج۵ ص ۴۷۰)

﴾15﴿ ज़रूरिय्याते दीन के मुन्किर को काफ़िर न जानना भी कुफ़्र है। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 11, स. 378, मुलख़्ख़सन)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

《16》 जो कहे : "मैं तौबा नहीं करूंगा जब तक **अल्लाह** तआ़ला न चाहे" येह कहने वाला इस बात को अपनी तौबा के लिये अगर उ़ज़्र बनाता है तो उस पर हुक्मे **कुफ़्र** है। (مِنَحُ الرَّوض ص٥٠٥)

《17》 जो कुफ़्र की फ़त्ह़ और इस्लाम की शिकस्त चाहता है उस के **कुफ़्र** में शक नहीं। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 412)

《18》 जो इस्लामी त़रीक़ए विरासत के मुन्किर हों वोह **काफ़िर** हैं। (माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. 26, स. 354)

《19》 जिस ने दूसरे से कहा : "तुझ पर और तेरे इस्लाम पर ला'नत है" ऐसा कहना **कुफ़्र** है। (عالمگیری ج٢ ص ٢٠٧)

《20》 फ़िरऔ़न को मोमिन कहना और उस का ईमान मोमिनों के ईमान से ज़ियादा बताना दोनों बातें **कुफ़्र** हैं।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 272)

《21》 किसी ने कहा : **अल्लाह** तआ़ला इब्लीस पर ला'नत करता है। दूसरे ने कहा : "मैं तो ला'नत नहीं करता" येह कहने वाले पर हुक्मे **कुफ़्र** है।

(مِنَحُ الرَّوض ص٤٩٠)

《22》 जो येह ए'तिक़ाद रखे कि : "**अल्लाह** तआ़ला कुफ़्र पर राज़ी है।" वोह **काफ़िर** है। (اَلْبَحْرُ الرَّائِق ج٥ ص ٢٠٣)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

«23» जिस ने कहा : अगर मैं ने फ़ुलां काम किया हो तो **मजूसी** हूं या «24» **अल्लाह** से बेज़ार हूं और कहने वाला जानता है कि उस ने येह काम किया है तो उस पर हुक्मे **कुफ़्र** है। (مِنَحُ الرَّوض ص ۵۱۰)

«25» किसी ने कहा : "अगर मैं फ़ुलां काम करूं तो **काफ़िर** हो जाऊं" फिर उस काम के करने को **कुफ़्र** जानते हुए किया तो **काफ़िर** हो जाएगा। (مِنَحُ الرَّوض ص ۵۱۱) और अगर येह ए'तिक़ाद न हो और वोह काम किया तो क़सम तोड़ने का कफ़्फ़ारा देना होगा।

«26» काफ़िरों के किसी (मज़हबी) फ़े'ल को अच्छा कहना **कुफ़्र** है मसलन येह कहना कि खाते वक़्त ख़ामोश रहना मजूसियों का अच्छा काम है।

(عالمگیری ج ۲ ص ۲۷۷)

«27» धोका देने के लिये अल्फ़ाज़े कुफ़्र बकना भी **कुफ़्र** है।

(माख़ूज़ अज़ : फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 599)

«28» अगर किसी मरीज़ ने बीमारी से घबरा कर कहा : "**या अल्लाह**! तुझे इख़्तियार है चाहे मुसल्मान मार चाहे काफ़िर मार।" येह क़ौल **कुफ़्र** है।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 9, स. 183)

«29» अगर कोई हज की फ़र्ज़िय्यत का इन्कार करे तो **काफ़िर** है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

﴾30﴿ जन्नत व दोज़ख़ हक़ हैं इन का इन्कार करने वाला **काफ़िर** है। (बहारे शरीअ़त, हिस्सए अव्वल, स. 42)

﴾31﴿ "जन्नत में दाख़िले के बा'द दीदारे इलाही नहीं होगा।" ऐसा कहना **कुफ़्र** है। (عالمگیری ج۲ ص ۲۷٤)

﴾32﴿ जो शख़्स ईमान व कुफ़्र को एक समझे या'नी कहता है कि सब ठीक है, ख़ुदा को सब पसन्द है। वोह **काफ़िर** है। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 9, स. 179)

﴾33﴿ आ़म उम्मत को मुश्रिक कहना **कुफ़्र** है।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 291)

﴾34﴿ जो शख़्स बिग़ैर तावील के कहे : "येह इबादतें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमारे लिये अ़ज़ाब बना दी हैं" वोह **काफ़िर** है।

﴾35﴿ जो शख़्स बिग़ैर तावील के कहे : "अगर **अल्लाह** तआ़ला फुलां चीज़ हमारे ऊपर फ़र्ज़ न करता तो अच्छा होता" येह क़ौल **कुफ़्र** है। (مِنَحُ الرَّوض ص٥٠٥)

﴾36﴿ जिस ने कहा : "मैं اِنْ شَآءَ اللّٰہ (या'नी **अल्लाह** ने चाहा तो) मोमिन हूं" अगर अपने ईमान में तरद्दुद (या'नी शक) की वज्ह से कहा तो **कुफ़्र** है। और अगर इस वज्ह से कहा कि मा'लूम नहीं ख़ातिमा ईमान पर होगा या **कुफ़्र** पर, तो **कुफ़्र** नहीं।

(عالمگیری ج۲ ص ۲۵۷، مِنَحُ الرَّوض ص٤٧٦)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक क़ीरात् अज्र लिखता है और क़ीरात् उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

﴾37﴿ जो इस्लाम व ईमान पर राज़ी न हो वोह **काफ़िर** है।

(عالمگیری ج ۲ ص ۲۰۷)

﴾38﴿ जो ग़ैरे ख़ुदा को "ऐ मा'बूद !" या "ऐ मेरे मा'बूद !" कहे वोह **काफ़िर** है। (مِنَحُ الرَّوض ص ۵۱۰)

﴾39﴿ "अपने पीरों को ख़ुदा और रसूल" कहने वाला **काफ़िर** है। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 610)

﴾40﴿ **कुफ़्र** को मा'मूली बात समझते हुए बक देना भी **कुफ़्र** है अगर्चे जो कुछ बका उस पर ए'तिक़ाद न रखता हो। (عالمگیری ج ۲ ص ۲۷۶) या'नी ऐसा बेबाक हो कि **कुफ़्र** बकने को बड़ी बात न समझता हो, मुंहफट हो **कुफ़्र** बक दे।

﴾41﴿ बुतों या शैत़ान के नाम पर (ग़ुलाम) आज़ाद किया कि ग़ुलाम अब भी आज़ाद हो जाएगा मगर उस का येह फ़े'ल कुफ़्र हुवा कि इन के नाम पर आज़ाद करना दलीले ता'ज़ीम है और इन की ता'ज़ीम कुफ़्र।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 9, स. 3)

﴾42﴿ जिस से कहा गया : "क्या तू **अल्लाह** से नहीं डरता ?" उस ने कहा : "नहीं।" यहां जवाबन "नहीं" कहना **कुफ़्र** है। (مَجمَعُ الْاَنْھُر ج ۲ ص ۵۰۵)

"आ़लमगीरी" में है : जब मियां बीवी के दरमियान आपस में झगड़ा त़वील हुवा, तो शोहर ने बीवी से

कहा : ख़ुदा से डर, और अपने आप को उस की ना फ़रमानी से बचा, पस बीवी ने जवाब दिया : **मैं उस से नहीं डरती,** (तो उस के बारे में) ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू बक्र मुह़म्मद बिन अल फ़ज़्ल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : अगर शोहर ने उस को ज़ाहिरी गुनाह पर मलामत की और उसे **अल्लाह** तआ़ला से ख़ौफ़ दिलाया और उस ने येह जवाब दिया तो **मुरतद्दा** हो जाएगी और अपने शोहर से "बाइना" हो जाएगी, और शोहर ने उस को ऐसे अम्र पर मलामत की जिस में ख़ुदा की त़रफ़ से ख़ौफ़ का मक़ाम नहीं, तो काफ़िरा न होगी, लेकिन अगर उस ने अपने इस कलाम से इस्तिख़्फ़ाफ़ का इरादा किया है तो अपने शोहर से बाइना हो जाएगी। (عالمگیری ج ۲ ص ۲۶۱) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن इस मस्अले के तह़्त फ़रमाते हैं : मैं कहता हूं (बीवी के इस क़ौल) "मैं उस से नहीं डरती" के दो मा'ना हैं : पहला मा'ना कि ग़ुरूरो तकब्बुर की वज्ह से (ख़ुदा के) ख़ौफ़ से इन्कार करना **कुफ़्र** है। दूसरा मा'ना जिस त़रह़ **अल्लाह** तआ़ला से डरने का ह़क़ है उस त़रह़ डरने

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

की अपने आप से नफ़ी (इन्कार) करना और येह ह़क़ व साबित है। "आ़लमगीरी" में है : एक शख़्स ने दूसरे को मारना चाहा तो वोह बोला : क्या तू **अल्लाह** तआ़ला से नहीं डरता ? तो उस ने कहा : "नहीं।" ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से येह मस्अला पूछा गया तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने जवाब इर्शाद फ़रमाया : उस की तक्फ़ीर नहीं की जाएगी, इस लिये कि वोह येह कह सकता है कि तक़्वा इसी में है, जो मैं करता हूं, और अगर कोई शख़्स गुनाह करता हुवा देखा गया, पस किसी दूसरे ने उस से कहा : क्या तू **अल्लाह** तआ़ला से नहीं डरता ? तो उस ने कहा : "नहीं।" तो **काफ़िर** हो जाएगा, इस लिये कि इस की तावील मुम्किन नहीं है। (عالمگیری ج ۲ ص ۲٦۱) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن इस मस्अले के तह़्त फ़रमाते हैं : और उस चीज़ को याद रखो जो हम ने अभी ज़िक्र की है...... । اِلخ

(مترجم حاشیہ عالمگیری باب احکام المرتدین ص ۳۱،۳۲)

43 नशे की ह़ालत में अगर कोई कलिमए कुफ़्र बका तो उसे मुरतद का हुक्म न देंगे या'नी उस की औ़रत बाइन न होगी रहा येह कि इन्दल्लाह भी काफ़िर होगा या

नहीं ? अगर क़स्दन कुफ़्र बका है तो इन्दल्लाह काफ़िर है वरना नहीं। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 9, स. 110)

《44》 नशे वाला जिस की अ़क़्ल जाती रही और ज़बान से कलिमए कुफ़्र निकला तो औरत निकाह़ से बाहर न हुई। (عالمگیری ج۱ص ۳٤۰) मगर तजदीदे निकाह़ किया जाए।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 7, स. 93)

《45》 "आ़लमगीरी" में है : अगर किसी मुसल्मान ने कहा मैं मुल्ह़िद हूं, तो उस की तक्फ़ीर की जाएगी, और अगर उस ने उ़ज़्र किया कि मैं नहीं जानता था कि येह कुफ़्र है तो उस का येह उ़ज़्र क़बूल नहीं किया जाएगा। (عالمگیری ج۲ ص۲۷۹) इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن इस मस्अले के तह़्त फ़रमाते हैं : मैं कहता हूं लेकिन "**ग़म्ज़ुल उ़यून**" वग़ैरा में सराह़त की, कि फ़तवा इस पर है कि मुकफ़्फ़िरात (कुफ़्रिय्या जुम्ले) में जहल (मा'लूम न होना) उ़ज़्र है हां मगर येह कहा जाए येह मज़्कूरा मस्अला उन मसाइल में है जिस से ग़ाफ़िल नहीं होना चाहिये और न ही इस में उ़ज़्र (जहल) क़बूल किया जाएगा पस ग़ौर करना चाहिये। (مترجم حاشیہ عالمگیری باب احکام المرتدین ص ٦١)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

तजदीदे ईमान, तजदीदे निकाह वग़ैरा के बारे में सुवाल जवाब

तजदीदे ईमान का त़रीक़ा

सुवाल : तजदीदे ईमान का त़रीक़ा बता दीजिये।

जवाब : जिस **कुफ़्र** से तौबा मक़्सूद है वोह उसी वक़्त मक़्बूल होगी जब कि वोह उस **कुफ़्र** को **कुफ़्र** तस्लीम करता हो और दिल में उस **कुफ़्र** से नफ़रत व बेज़ारी भी हो। जो **कुफ़्र सरज़द हुवा तौबा में उस का तज़्किरा भी हो**। मसलन जिस ने वीज़ा फ़ॉर्म पर अपने आप को **क्रिस्चेन** लिख दिया वोह इस त़रह़ कहे : **"या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **! मैं ने जो वीज़ा फ़ॉर्म में अपने आप को क्रिस्चेन ज़ाहिर किया है इस कुफ़्र से तौबा करता हूं।**

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسولُ اللّٰہ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

(**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं)" इस त़रह़ मख़्सूस **कुफ़्र** से तौबा भी हो गई और **तजदीदे ईमान** भी। अगर مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ कई **कुफ़्रिय्यात** बके हों और याद न हो कि क्या क्या बका है तो यूं कहे : **"या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **! मुझ से जो जो कुफ़्रिय्यात**

सादिर हुए हैं मैं उन से तौबा करता हूं।" फिर कलिमा पढ़ ले। (अगर कलिमा शरीफ़ का तरजमा मा'लूम है तो ज़बान से तरजमा दोहराने की ह़ाजत नहीं) अगर येह मा'लूम ही नहीं कि **कुफ़्र** बका भी है या नहीं तब भी अगर एह़तियात़न **तौबा** करना चाहें तो इस त़रह़ कहिये : **"या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **! अगर मुझ से कोई कुफ़्र हो गया हो तो मैं उस से तौबा करता हूं।"** येह कहने के बा'द **कलिमा** पढ़ लीजिये।

तजदीदे निकाह़ का त़रीक़ा

सुवाल : तजदीदे निकाह़ कैसे किया जाए ?

जवाब : तजदीदे निकाह़ का मा'ना है : "नए महर से नया **निकाह़** करना।" इस के लिये लोगों को इकठ्ठा करना ज़रूरी नहीं। **निकाह़** नाम है ईजाब व क़बूल का। हां ब वक़्ते निकाह़ बत़ौरे गवाह कम अज़ कम दो मर्द मुसल्मान या एक मर्द मुसल्मान और दो मुसल्मान औ़रतों का ह़ाज़िर होना लाज़िमी है। **ख़ुत़्बए निकाह़** शर्त़ नहीं बल्कि मुस्तह़ब है। ख़ुत़्बा याद न हो तो اَعُوْذُ بِاللّٰہ और बिस्मिल्लाह शरीफ़ के बा'द **सूरए फ़ातिह़ा** भी पढ़ सकते हैं। कम अज़ कम दस दिरहम या'नी दो तोला साढ़े सात माशा चांदी (मौजूदा वज़्न के ह़िसाब से

www.dawateislami.net

30 ग्राम 618 मिली ग्राम चांदी) या उस की रक़म **महर** वाजिब है। मसलन आप ने हिन्दुस्तानी 786 रुपै **उधार** महर की निय्यत कर ली है (मगर येह देख लीजिये कि महर मुक़र्रर करते वक़्त मज़्कूरा चांदी की क़ीमत 786 हिन्दुस्तानी रुपै से ज़ाइद तो नहीं) तो अब मज़्कूरा गवाहों की मौजूदगी में आप "ईजाब" कीजिये या'नी औ़रत से कहिये : "मैं ने 786 हिन्दुस्तानी रुपै **महर** के बदले आप से **निकाह़** किया।" औ़रत कहे : "मैं ने क़बूल किया।" निकाह़ हो गया। येह भी हो सकता है कि **औ़रत** ही ख़ुत़्बा या **सूरए फ़ातिह़ा** पढ़ कर "ईजाब" करे और मर्द कहे : "मैं ने क़बूल किया", **निकाह़** हो गया। बा'दे **निकाह़** अगर औ़रत चाहे तो **महर** मुआ़फ़ भी कर सकती है। मगर मर्द बिला ह़ाजते शरई औ़रत से **महर** मुआ़फ़ करने का सुवाल न करे।

ह़ालते इरतिदाद में होने वाले निकाह़ का मस्अला

सुवाल : अगर किसी ने **सरीह़ कुफ़्र** बका और मुरतद हो गया और फिर इसी हाल में **निकाह़** भी किया उस के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब : मुरतद हो जाने के बा'द कोई शख़्स अगर्चे ब ज़ाहिर नेक रास्ते पर आ गया, दाढ़ी, ज़ुल्फ़ों, इमामे और

सुन्नतों भरे लिबास से भी आरास्ता हो गया मगर उस ने अपने उस कुफ़्र से तौबा व तजदीदे ईमान न किया तो ब दस्तूर **मुरतद** है, तौबा व तजदीदे ईमान से पहले जो भी नेक अ़मल किया वोह मक़्बूल नहीं, बैअ़त की तो न हुई, यहां तक कि अगर निकाह़ भी किया तो न हुवा। चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द **11** सफ़ह़ा **153** पर फ़रमाते हैं : مَعَاذَاللّٰه अगर मर्द या औ़रत ने पेश अज़ निकाह़ (या'नी निकाह़ से क़ब्ल) **कुफ़्रे सरीह़** का इरतिकाब किया था और बे तौबा व (नए सिरे से क़बूले) इस्लाम उन का **निकाह़** किया गया तो क़त़्अ़न निकाह़ बात़िल, और उस से जो औलाद होगी वलदुज़्ज़िना, इसी त़रह़ अगर बा'दे निकाह़ उन में कोई مَعَاذَاللّٰه **मुरतद** हो गया और इस के बा'द के जिमाअ़ से औलाद हुई तो वोह भी **ह़रामी** होगी। लिहाज़ा किसी ने **इरतिदाद** के बा'द अगर **निकाह़** किया हो और **निकाह़** के बा'द अगर्चे **तौबा व तजदीदे ईमान** कर चुका हो तो भी अब नए सिरे से **निकाह़** करना होगा। इस के लिये धूमधाम शर्त़ नहीं, घर की चार दीवारी में भी **निकाह़** हो सकता है। इस का त़रीक़ा

आगे गुज़र चुका है। हां अगर लोगों के सामने **मुरतद** हुवा था और फिर इसी ह़ाल में **निकाह़** किया था तो फिर सब के सामने तौबा व **तजदीदे ईमान व तजदीदे निकाह़** करे। या उन लोगों को अपनी तौबा व तजदीदे ईमान व तजदीदे निकाह़ पर मुत्तलअ़ करे। ह़दीसे पाक में है : **सुल्त़ाने दो जहान**, मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत बुन्याद है : "जब तुम कोई गुनाह करो तो तौबा कर लो, اَلسِّرُّ بِالسِّرِّ وَالْعَلَانِيَةُ بِالْعَلَانِيَة या'नी पोशीदा गुनाह की तौबा पोशीदा और अ़लानिया गुनाह की तौबा अ़लानिया।" (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير ج ٢٠ ص ١٥٩ حديث ٣٣١)

अ़लानिया तौबा का अहम तरीन मस्अला

मेरे **आक़ा आ'ला ह़ज़रत**, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن **अ़लानिया गुनाह की अ़लानिया तौबा** के बारे में ताकीद करते हुए **फ़तावा रज़विय्या** शरीफ़ जिल्द 21 सफ़ह़ा 146 पर फ़रमाते हैं : सो (100) के सामने गुनाह किया और एक गोशे में दो (2) के आगे इज़्हारे तौबा कर दिया तो इस का इश्तिहार मिस्ले इश्तिहारे गुनाह न हुवा, और वोह (अ़लानिया तौबा के) फ़वाइद कि मत़लूब थे पूरे न

हुए बल्कि ह़क़ीक़तन वोह मरज़ कि बाइ़से ए'लान था तौबा में कमिये ए'लान (या'नी नाक़िस ए'लान) पर भी वोही बाइ़स है कि गुनाह तो दिल खोल कर मज्मए़ कसीर में कर लिया और (अब उन्हीं लोगों के सामने) अपनी ख़त़ा पर इक़्रार करते आ़र (या'नी शर्म) आती है। सफ़ह़ा 144 पर फ़रमाते हैं : **गुनाहे अ़लानिया** दोहरा गुनाह है कि ए'लाने गुनाह (भी) गुनाह बल्कि इस गुनाह से भी बदतर गुनाह है। **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "मेरी सब उम्मत आ़फ़िय्यत में है सिवा उन के जो गुनाह आश्कारा (या'नी अ़लल ए'लान) करते हैं।" (بُخاری ج٤ ص ١١٨ حدیث٦٠٦٩)

नीज़ ह़दीस में है : **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "हमेशा **अल्लाह** तआ़ला का अ़ज़ाब बन्दों से दूर रहेगा जब कि वोह **अल्लाह** तआ़ला की ना फ़रमानियों को ढांपें और छुपाएंगे फिर जब अ़लानिया गुनाह और (खुल्लम खुल्ला) ना फ़रमानियां करेंगे तो वोह अ़ज़ाब के मुस्तह़िक़ और सज़ावार हो जाएंगे।"

(اَلْفِرْدَوْس بماْثور الْخطّاب ج٥ ص ٩٦ حدیث ٧٥٧٨)

एह़तियाती तजदीदे ईमान कब कब करें ?

सुवाल : क्या जब चाहें जितनी बार चाहें **एह़तियाती तौबा व तजदीदे ईमान** कर सकते हैं ?

जवाब : जी हां दिन में चाहें तो 112 बार कर लीजिये। **मदनी मश्वरा** है रोज़ाना कम अज़ कम एक बार मसलन सोने से क़ब्ल (या जब चाहें) **एह़तियात़ी तौबा व तजदीदे ईमान** कर लीजिये और अगर ब आसानी गवाह दस्तयाब हों तो मियां बीवी तौबा कर के घर के अन्दर ही कभी कभी **एह़तियात़न तजदीदे निकाह़** की तरकीब भी कर लिया करें। मां, बाप, बहन भाई और औलाद वग़ैरा आ़क़िल व बालिग़ मुसल्मान मर्द व औ़रत निकाह़ के गवाह बन सकते हैं। **एह़तियात़ी तजदीदे निकाह़ बिल्कुल मुफ़्त है इस के लिये महर की भी ज़रूरत नहीं।**

शोहर मुरतद हो जाए तो बीवी क्या करे ?

सुवाल : औ़रत को शोहर के इरतिदाद की इत्तिलाअ़ मिली तो क्या वोह **निकाह़** से आज़ाद हो गई ?

जवाब : जी हां उस का **निकाह़** टूट गया। चुनान्चे **फ़ुक़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : औ़रत को ख़बर मिली कि उस का शोहर **मुरतद** हो गया तो **इ़द्दत** गुज़ार कर (किसी और से) **निकाह़** कर सकती है। ख़बर देने वाले दो मर्द हों या एक मर्द और दो औ़रतें बल्कि एक **आ़दिल** की ख़बर भी काफ़ी है। (دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج٦ ص ٣٨٦)

मुरतद तौबा कर के इद्दत के अन्दर निकाह़ कर सकता है या नहीं

सुवाल : जै़द مَعَاذَاللّٰه **सरीह़ कुफ़्र** बक कर **मुरतद** हो गया मगर उसी दिन नादिम हो कर उस ने **तजदीदे ईमान** कर लिया। आया **तजदीदे निकाह़** भी फ़ौरन कर ले या पहले औ़रत को **इद्दत** गुज़ार लेने दे ? औ़रत को कितना अ़र्सा इद्दत गुज़ारनी होगी ? अगर दौराने इद्दत ही जै़द ने **तजदीदे निकाह़** कर लिया तो क्या हुक्म है ?

जवाब : अगर किसी शख़्स ने مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **सरीह़ कलिमए कुफ़्र** बका तो वोह **मुरतद** हो गया और उस की औ़रत निकाह़ से निकल गई, जो कुछ नेक आ'माल किये थे सब अकारत (या'नी ज़ाएअ़ हो) गए। अगर नादिम हो कर उस ने तजदीदे ईमान कर लिया तो अगर वोह औ़रत राज़ी हो तो दोबारा उसी से **निकाह़** कर सकता है अगर्चे **दौराने इद्दत** ही कर ले। हां अगर वोह औ़रत उस के इ़लावा किसी और से **निकाह़** करना चाहती है तो **इद्दत** पूरी करने के बा'द कर सकती है। और इस सूरत में इद्दत की वोही तफ़्सील होगी जो मुत़ल्लक़ा औ़रत की **इद्दत** की है या'नी अगर वोह औ़रत ह़ामिला हो तो वज़्ए़ ह़म्ल (या'नी बच्चे की विलादत हो जाना) और अगर औ़रत, ना बालिग़ा या आइसा या'नी पचपन

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو یعلی)

सालह या इस से ज़ाइद उ़म्र की है तो उस की इ़द्दत हिजरी सिन के हि़साब से तीन महीना होगी वरना हैज़ वाली हो तो तीन हैज़ होगी। "इ़द्दत के तफ़्सीली मसाइल" की आगाही के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 182 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" हि़स्सा 8 सफ़्ह़ा 126 ता 134 का मुत़ालआ़ फ़रमा लीजिये।

मुश्रिका का शोहर मुसल्मान हो गया निकाह़ का क्या बना ?

सुवाल : अगर शोहर मुसल्मान हो गया और बीवी बुत परस्त है तो बीवी के साथ **निकाह़** बर क़रार रहा या टूट गया ?

जवाब : सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : औ़रत अगर मुश्रिका है तो मुसल्मान की ज़ौजिय्यत में नहीं रह सकती। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** न येह उन्हें ह़लाल न वोह इन्हें ह़लाल। (پ ۲۸ ممتحنہ ۱۰) शोहर के मुसल्मान होने के बा'द क़ाज़ी औ़रत पर इस्लाम पेश करेगा अगर इस्लाम से इन्कार

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

करे **निकाह़** जाता रहेगा। और जहां क़ाज़ी न हों जैसे आज कल हिन्दूस्तान में तो यहां औ़रत को तीन है़ज़ आने पर **निकाह़** टूट जाएगा। येह हुक्म **निकाह़** टूटने का है। या'नी अगर तीन है़ज़ गुज़रने के बा'द औ़रत भी मुसल्मान हो गई और उसी शोहर के पास रहना चाहती है तो **जदीद निकाह़** की ज़रूरत होगी कि अब वोह पहला **निकाह़** जाता रहा। रहा औ़रत से जिमाअ़ करना तो मर्द के इस्लाम लाते ही (उस काफ़िरा बीवी से) **ह़राम** हो गया। (फ़तावा अम्जदिय्या, जि. 4, स. 416)

बीवी मुरतद्दा हो गई तो निकाह़ टूटा या नहीं ?

सुवाल : अगर औ़रत **मुरतद्दा** हो गई तो शोहर के **निकाह़** में रही या नहीं ?

जवाब : मुरतद्दा औ़रत निकाह़ से नहीं निकलती। चुनान्चे मेरे **आक़ा आ'ला ह़ज़रत**, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की बारगाह में कुछ इस त़रह़ सुवाल हुवा कि हुक्मे शरीअ़त सुन कर हिन्दा जो कि शादी शुदा है ने ग़ुस्से में आ कर या तो येह कहा : "चूल्हे में जाए ऐसी शरीअ़त" या फिर यूं कहा : "मरी पड़े ऐसी शरीअ़त।"

अल जवाब : हिन्दा ने पहला फ़िक्रा कहा हो ख़्वाह दूसरा, (दोनों जुम्ले सरीह़ कुफ़्रिय्यात हैं लिहाज़ा) हर त़रह़ उस का ईमान जाता रहा कि उस ने शरए़ मुत़ह्हरा की तौहीन की मगर हिन्दा (मुरतद्दा हो जाने के बा वुजूद) निकाह़ से न निकली, न उसे रवा (या'नी जाइज़) है कि बा'दे इस्लाम किसी दूसरे से निकाह़ कर ले। हां (चूंकि वोह अपने इरतिदाद के सबब अपने शोहर पर ह़राम हो चुकी है लिहाज़ा) बा'दे (क़बूले) इस्लाम साबिक़ा शोहर ही से **तजदीदे निकाह़** पर मजबूर की जाएगी।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 12, स. 262, 263 मुलख़्ख़सन)

क्या साबिक़ा मुर्शिद ही से तजदीदे बैअ़त करे ?

सुवाल : क़त़ई कुफ़्र बकने के बा'द तजदीदे ईमान की सूरत में क्या साबिक़ा पीर साहि़ब ही से **तजदीदे बैअ़त** करनी होगी ? अगर पीर साहि़ब वफ़ात पा गए हों तो क्या करे ?

जवाब : बैअ़त टूट जाने की सूरत में साबिक़ा पीर साहि़ब ब क़ैदे ह़यात हों तब भी दोबारा उन्हीं से **बैअ़त** करना ज़रूरी नहीं, किसी भी **जामेए़ शराइत़** पीर साहि़ब की बैअ़त की जा सकती है।

www.dawateislami.net

इसी किताब "कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब" के मुतअ़ल्लिक़ मुतवक़्क़अ़ वस्वसों के बारे में सुवाल जवाब

क्या कलिमा गो भी काफ़िर हो सकता है ?

सुवाल : आप ने अपनी किताब "कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब" में खुले काफ़िरों को नहीं बल्कि कलिमा पढ़ने वालों को **कुफ़्रिय्यात** से आगाह किया है तो क्या कोई **कलिमा** गो दोबारा भी **काफ़िर** हो सकता है ?

जवाब : क्यूं नहीं, अगर कलिमा गो से कोई क़ौल या फ़े'ल **क़त़्ई कुफ़्र** सादिर हुवा तो वोह **काफ़िर** हो जाएगा। **देखिये** ! मालदार को **मालदार** उस वक़्त तक ही कहा जाएगा जब तक उस के पास मालो दौलत है। इसी त़रह़ किसी इन्सान को उस वक़्त तक ही **मुसल्मान** कहेंगे जब तक उस का **ईमान** सलामत है। मुसल्मान होने की बुन्याद ही **ईमान** पर है। अ़ल्लामतुद्दह्र ह़ज़रते सय्यिदुना सा'दुद्दीन **तफ़्ताज़ानी** قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی "शर्हे अ़क़ाइदे नसफ़ी" में **ईमान** की ता'रीफ़ बयान करते हुए फ़रमाते हैं : "शरीअ़त में ईमान उन उमूर की

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

तस्दीक़ का नाम है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से आए या'नी इज्माली तौ़र पर **हुज़ूरे अकरम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दिल से तस्दीक़ करना हर उस चीज़ में जो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से लाए जिस का सुबूत आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से क़त़्ई (यक़ीनी) तौ़र पर हो।" (شرح عقائد نسفی ص ۱۲۶) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, **इमामे अहले सुन्नत**, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **ईमान** की इसी ता'रीफ़ को मज़ीद वज़ाह़त के साथ बयान करते हुए फ़रमाते हैं : "**मुह़म्मद** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हर बात में सच्चा जाने, **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़क़्क़ानिय्यत को सिदक़े दिल से मानना **ईमान** है जो इस का मुक़िर (या'नी इक़रार करने वाला) हो उसे **मुसल्मान** जानेंगे जब कि उस के किसी क़ौल या फ़े'ल या ह़ाल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व **रसूल** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इन्कार या तक्ज़ीब (या'नी झुटलाना) या तौहीन न पाई जाए।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 29, स. 254) सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "(ईमान येह है कि) सच्चे दिल से उन सब बातों की तस्दीक़ करे जो **ज़रूरिय्याते दीन** से हैं।" (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सए अव्वल, स. 92)

ज़रूरते दीनी का मुन्किर कुफ़्र के नाम से चिड़ता हो तब भी काफ़िर है।

मा'लूम हुवा कि मुसल्मान होने के लिये **कलिमा गो** या'नी कलिमा पढ़ने वाला होने के साथ साथ उन सब बातों की तस्दीक़ करने वाला होना भी लाज़िम है जो **ज़रूरिय्याते दीन** से हैं। मिसाल के त़ौर पर **ज़ैद कलिमा** गो है, लेकिन वोह ज़रूरिय्याते दीन में एक ज़रूरते दीनी मसलन "जन्नत" के वुजूद का इन्कार करता है तो क्या वोह मुसल्मान रह सकता है? हरगिज़ नहीं। यक़ीनन उसे **काफ़िर व मुरतद** ही कहा जाएगा चाहे वोह रोज़ाना एक बार नहीं एक हज़ार बार कलिमा पढ़ता हो और ब ज़ाहिर इस्लाम का ज़बर दस्त शैदाई भी बनता हो बल्कि **कुफ़्र के नाम तक से चिड़ता हो**।

बरबादिये ईमान के इम्कान का क़ुरआन से सुबूत

सुवाल : क्या क़ुरआने पाक में कहीं इस बात का ज़िक्र है कि **मुसल्मान** होने के बा'द भी कोई **काफ़िर** हो सकता है।

जवाब : क्यूं नहीं ! ऐसी कई आयाते मुबारका हैं। मसलन पारह 2 **सूरतुल बक़रह** की आयत नम्बर 217 में मुसल्मानों ही से इर्शाद होता है :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

وَمَنْ يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۱۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम में जो कोई अपने दीन से फिरे फिर काफ़िर हो कर मरे तो उन लोगों का किया अकारत गया दुन्या में और आख़िरत में और वोह दोज़ख़ वाले हैं उन्हें उस में हमेशा रहना।

कुफ़्र की आंधियों से हिफ़ाज़त की पनाह गाहें

इन्सान का दिल गोया ख़ुश्क और हलका (सा) पत्ता है, दुन्या एक सुनसान जंगल है जहां कुफ़्र, निफ़ाक़ और तुग़्यान की तेज़ आंधियां चल रही हैं, जिन की वज्ह से इन्सानी दिल को क़रार नहीं, हर वक़्त ख़त़रा है कि न मा'लूम कौन सी हवा इस दिल को कब और किधर उड़ा ले जाए, ऐसे जंगल में ऐसे हलके (फुलके) पत्ते के लिये अमान की सिर्फ़ एक ही सूरत है, वोह येह कि पहाड़ की आड़ में आ जाए या किसी वज़्नी पथ्थर की मा तह्ती क़बूल कर ले, ह़ज़राते औलिया (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) अम्बियाए ऊ़ज़्ज़ाम (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ख़ुसूसन हु़ज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे लिये पहाड़ हैं जिन के दामन में आ़लम को पनाह मिलती है। ह़ज़राते स़हा़बा हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

वाबस्ता थे, वोह हर क़िस्म की हवा से महफ़ूज़ रहे, तेज़ आंधियां आईं अपना ज़ोर दिखा कर चली गईं मगर वोह टस से मस न हुए। मुनाफ़िक़ीन ने हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पनाह न ली, जिस का अन्जाम येह हुवा कि वोह हर **कुफ़्र** में फ़ौरन दाख़िल हो जाते थे। (तफ़्सीरे नईमी, जि. 4, स. 360)

आ पड़े हैं तेरे क़दमों में येह सुन कर हम भी
जो तेरे क़दमों में गिरते हैं संभल जाते हैं

कलिमा पढ़ लिया अब जन्नत से कौन रोक सकता है !

सुवाल : हदीसे पाक में है : مَنْ قَالَ لَآ اِلٰهَ اِلَّااللّٰهُ دَخَلَ الْجَنَّة "जिस ने لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कह लिया जन्नत में जाएगा" फिर किसी क़ौल या फ़े'ल की वज्ह से **काफ़िर** कैसे हो सकता है ?

जवाब : مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ येह शैतान का बहुत बड़ा और बुरा **मक्र** और धोका है कि बस कलिमा पढ़ लिया अब जो चाहो करो और जो मन में आए बको **जन्नत** में जाने से तुम्हें कोई नहीं रोक सकता ! मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن कलिमा गो गुस्ताख़ाने ख़ुदा

व मुस्तफ़ा का रद करते हुए तहरीर फ़रमाते हैं : **मुसल्मानों** ज़रा होशियार ! ख़बरदार ! इस **मक्र** मल्ऊन का हासिल येह है कि ज़बान से لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कह लेना गोया ख़ुदा का बेटा बन जाना है (कि जिस त़रह़) आदमी का बेटा अगर उसे (या'नी अपने बाप को) गालियां दे, जूतियां मारे, (जो) कुछ (चाहे) करे उस (या'नी अपने बाप) के बेटे होने से निकल नहीं सकता यूंही जिस ने لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कह लिया अब वोह चाहे **ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ को झूटा कज़्ज़ाब कहे, चाहे **रसूल** को सड़ी सड़ी गालियां दे, उस का **इस्लाम** नहीं बदल सकता ! इस **मक्र** का जवाब एक तो (पारह 20 **सूरतुल अन्कबूत** की) इसी आयते करीमा

الٓمّٓ ۚ﴿۱﴾ اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُّتْرَكُوْۤا اَنْ يَّقُوْلُوْۤا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ ﴿۲﴾

(**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या लोग इस घमन्ड में हैं कि इतनी बात पर छोड़ दिये जाएंगे कि कहें हम ईमान लाए और उन की आज़्माइश न होगी) में गुज़रा। इस्लाम अगर फ़क़त़ **कलिमा गोई** का नाम था तो बेशक (कलिमा गोई तो) ह़ासिल थी फिर लोगों का घमन्ड क्यूं ग़लत़ था जिसे क़ुरआने अज़ीम रद फ़रमा रहा है ! नीज़ तुम्हारा रब عَزَّوَجَلَّ (पारह 26 **सूरतुल हुजुरात** की आयत नम्बर 14 में) फ़रमाता है :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا ؕ قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ قُوْلُوْۤا اَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ الْاِيْمَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : गंवार बोले : हम ईमान लाए। तुम फ़रमाओ : तुम ईमान तो न लाए हां यूं कहो कि हम मुतीअ़ हुए और अभी ईमान तुम्हारे दिलों में कहां दाख़िल हुवा !

और (पारह 28 **सूरतुल मुनाफ़िक़ून** की आयत नम्बर 1 में **अल्लाहु** रब्बुल इबाद इर्शाद) फ़रमाता है :

اِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۘ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ۚ﴿۱﴾

(پ ۲۸ المنافقون ۱)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जब मुनाफ़िक़ तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर होते हैं कहते हैं कि हम गवाही देते हैं कि हुज़ूर बेशक यक़ीनन **अल्लाह** के **रसूल** हैं और **अल्लाह** जानता है कि तुम उस के रसूल हो और **अल्लाह** गवाही देता है कि मुनाफ़िक़ ज़रूर झूटे हैं।

देखो (मुनाफ़िक़ीन की) कैसी लम्बी चौड़ी **कलिमा गोई**, कैसी कैसी ताकीदों से मुअक्कद, कैसी कैसी क़समों से मुअय्यद (मगर) हरगिज़ (उन की कलिमा गोई) मूजिबे (या'नी बाइसे) इस्लाम न हुई और **अल्लाहु**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

वाहिदे क़हहार (عَزَّوَجَلَّ) ने उन के झूटे कज़्ज़ाब होने की गवाही दी तो مَنْ قَالَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ دَخَلَ الْجَنَّة (जिस ने لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहा वोह दाख़िले जन्नत होगा) का येह मत़लब घड़ना (कि अब किसी क़ौल व फ़े'ल की वज्ह से काफ़िर हो ही नहीं सकता) सराहतन (या'नी खुल्लम खुल्ला) कुरआने अज़ीम का रद करना है। हां जो **कलिमा** पढ़ता है, अपने आप को मुसल्मान कहता हो हम उसे मुसल्मान जानेंगे जब तक उस से कोई कलिमा, कोई ह़रकत, कोई फ़े'ल मुनाफ़िये इस्लाम (या'नी जब तक उस से किसी क़िस्म का क़त़ई कुफ़्र) सादिर न हो। बा'द सुदूरे मुनाफ़ी (या'नी अगर क़त़ई कुफ़्र सादिर हुवा तो फिर) हरगिज़ **कलिमा गोई** काम न देगी। (पारह 10 **सूरतुत्तौबह** आयत नम्बर 74 में) तुम्हारा रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ؕ وَلَقَدْ قَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह की क़सम खाते हैं कि उन्हों ने न कहा, और बेशक ज़रूर उन्हों ने कुफ़्र की बात कही और इस्लाम में आ कर काफ़िर हो गए।

आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ग़ैब की ख़बर दी

इब्ने जरीर व त़बरानी व अबुश्शैख़ व इब्ने मर्दवैह अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

रिवायत करते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक पेड़ के साए में तशरीफ़ फ़रमा थे, इर्शाद फ़रमाया : अ़न्क़रीब एक शख़्स आएगा तुम्हें शैत़ान की आंखों से देखेगा वोह आए तो उस से बात न करना। कुछ देर न हुई थी कि एक करन्जी (या'नी नीली) आंखों वाला सामने से गुज़रा, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे बुला कर फ़रमाया : "तू और तेरे रफ़ीक़ (साथी) किस बात पर मेरी शान में गुस्ताख़ी के लफ़्ज़ बोलते हैं ?" वोह गया और अपने रफ़ीक़ों (साथियों) को बुला लाया। सब ने आ कर क़समें खाईं कि हम ने कोई कलिमा हुज़ूर की शान में बे अदबी का न कहा। इस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह (पारह 10 **सूरतुत्तौबह** की 74वीं) आयत उतारी कि "ख़ुदा की क़सम खाते हैं कि इन्हों ने गुस्ताख़ी न की और बेशक ज़रूर, येह कुफ़्र का कलिमा बोले और तेरी शान में बे अदबी कर के इस्लाम के बा'द **काफ़िर** हो गए।" देखो **अल्लाह** गवाही देता है कि नबी की शान में बे अदबी का लफ़्ज़, **कलिमए कुफ़्र** है और इस का कहने वाला अगर्चे लाख मुसल्मानी का मुद्दई (या'नी दा'वा करने वाला) करोड़ बार कलिमा गो हो, (मगर) **काफ़िर** हो जाता है। (तम्हीदुल ईमान मअ़ हाशिया, स. 56,57, 90,93)

क्या अहले क़िब्ला को भी काफ़िर कहा जा सकता है ?

सुवाल : कहते हैं **अहले क़िब्ला** की तक्फ़ीर तो हो ही नहीं सकती क्यूं कि ह़दीसे पाक में वाज़ेह़ त़ौर पर फ़रमा दिया गया है कि "जो हमारी नमाज़ पढ़े और हमारे क़िब्ला को मुंह करे और हमारा ज़बीह़ा खाए वोह मुसल्मान है।" (بخاری ج۱ ص۱۵۴ حدیث ۳۹۱)

जवाब : बेशक ह़दीसे पाक ह़क़ ह़क़ और ह़क़ है लेकिन इस के मा'ना हरगिज़ येह नहीं कि **अहले क़िब्ला** कहलाने वालों को हर त़रह़ के कुफ़्रिय्यात बकने की खुली छूट मिली हुई है। शारेह़े बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : **अहले क़िब्ला** से मुराद वोह लोग हैं जो उन तमाम बातों को ह़क़ कहते और मानते हों जो हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه عَلَيْهِ وَسَلَّم, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से लाए हैं और ज़रूरिय्याते दीन में से किसी एक का भी इन्कार न करते हों, जो शख़्स अपने को मुसल्मान कहलाता है और हमारे क़िब्ला की त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ता है मगर ज़रूरिय्याते दीन में से किसी का इन्कार करता है वोह **अहले क़िब्ला** में से नहीं। **सय्यिदुना इमामे**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि हम अहले सुन्नत, **अहले क़िब्ला** को काफ़िर नहीं कहते। इस से मुराद **अहले क़िब्ला** ब मा'नए मज़्कूर (या'नी जो मा'ना पिछली सुत़ूर में बयान किये गए) हैं इस लिये क़ादियानी वग़ैरा जो कि ज़रूरिय्याते दीन का इन्कार करते हैं उन को ज़रूर काफ़िर कहा जाएगा। (नुज़्हतुल क़ारी, जि. 2, स. 107) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : इस्तिलाहे अइम्मा में **अहले क़िब्ला** वोह है कि तमाम ज़रूरिय्याते दीन पर ईमान रखता हो, इन में एक बात का भी मुन्किर हो तो क़त्अ़न इज्माअ़न **काफ़िर मुरतद** है ऐसा कि जो उसे काफ़िर न कहे ख़ुद काफ़िर है।

(तम्हीदुल ईमान, स. 103)

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت कलिमा पढ़ने वाले गुस्ताख़ाने ख़ुदा व मुस्त़फ़ा का रद करते हुए मज़ीद फ़रमाते हैं : मुसल्मानो ! इस **मक्रे** ख़बीस (नापाक धोके) में (अब) उन लोगों ने **निरी** (या'नी फ़क़त़) **कलिमा** गोई से उ़दूल (रू गर्दानी) कर के सिर्फ़ **क़िब्ला रूई** (क़िब्ले की त़रफ़ मुंह करने) का नाम

ईमान रख दिया ! या'नी जो **क़िब्ला रू** हो कर नमाज़ पढ़ ले मुसल्मान है अगर्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को झूटा कहे, **मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को गालियां दे, किसी सूरत किसी त़रह़ **ईमान** नहीं टलता !

چوں وضوئے محکم بی بی تمیز

(या'नी जिस त़रह़ एक जाहिला औ़रत येह नहीं समझती कि रीह़ वग़ैरा ख़ारिज होने से वुज़ू कैसे टूटता है, गोया इसी त़रह़ येह शुबा वारिद करने वाले भी येह जानने से क़ासिर हैं कि कुफ़्रिय्यात से ईमान कैसे चला जाता है !)

अव्वलन इस मक्र का **जवाब** : (पारह 2 **सूरतुल बक़रह** आयत 177 में) तुम्हारा रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالْكِتٰبِ وَالنَّبِيّٖنَ ۚ

(پ ۲ البقرة ۱۷۷)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : कुछ अस्ल नेकी येह नहीं कि मुंह मशरिक़ या मग़रिब की त़रफ़ करो, हां अस्ल नेकी येह कि ईमान लाए **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) और क़ियामत और फ़िरिश्तों और किताब और पैग़म्बरों पर।

www.dawateislami.net

देखो ! साफ़ फ़रमा दिया कि **ज़रूरिय्याते दीन** पर ईमान लाना ही अस्ल कार (काम) है बिग़ैर इस के नमाज़ में **क़िब्ला को मुंह करना** कोई चीज़ नहीं। और (पारह 10 **सूरतुत्तौबह** आयत 54 में) फ़रमाता है :

وَمَا مَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ اِلَّاۤ اَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَ بِرَسُوْلِهٖ وَ لَا یَاْتُوْنَ الصَّلٰوةَ اِلَّا وَ هُمْ كُسَالٰى وَ لَا یُنْفِقُوْنَ اِلَّا وَ هُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿۵۴﴾

(پ ۱۰ توبہ ٥٤)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो ख़र्च करते हैं उस का क़बूल होना बन्द न हुवा मगर इसी लिये कि वोह **अल्लाह** और **रसूल** से मुन्किर हुए और नमाज़ को नहीं आते मगर जी हारे और ख़र्च नहीं करते मगर ना गवारी से।

देखो ! उन का नमाज़ पढ़ना बयान किया और फिर उन्हें **काफ़िर** फ़रमाया। क्या वोह **क़िब्ला** को नमाज़ नहीं पढ़ते थे ? **फ़क़त क़िब्ला कैसा, क़िब्लए दिलो जां, का'बए दीनो ईमां, सरवरे आ़लमिय्यां** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **के पीछे जानिबे क़िब्ला नमाज़ पढ़ते थे** और (पारह 10 **सूरतुत्तौबह** आयत 11 ता 12 में) फ़रमाता है :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइ़स है। (ابو یعلی)

فَاِنْ تَابُوْا وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَاِخْوَانُكُمْ فِی الدِّیْنِؕ وَ نُفَصِّلُ الْاٰیٰتِ لِقَوْمٍ یَّعْلَمُوْنَ ﴿۱۱﴾ وَ اِنْ نَّكَثُوْۤا اَیْمَانَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَ طَعَنُوْا فِیْ دِیْنِكُمْ فَقَاتِلُوْۤا اَىٕمَّةَ الْكُفْرِۙ اِنَّهُمْ لَاۤ اَیْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ یَنْتَهُوْنَ ﴿۱۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर अगर वोह तौबा करें और नमाज़ क़ाइम रखें और ज़कात दें तो वोह तुम्हारे दीनी भाई हैं और हम आयतें मुफ़स्सल बयान करते हैं जानने वालों के लिये। और अगर अ़हद कर के अपनी क़समें तोड़ें और तुम्हारे दीन पर मुंह आएं तो कुफ़्र के सरग़नों से लड़ो बेशक उन की क़समें कुछ नहीं इस उम्मीद पर कि शायद वोह बाज़ आएं।

देखो ! नमाज़ व ज़कात वाले अगर दीन पर त़ा'ना करें तो उन्हें कुफ़्र का पेशवा, काफ़िरों का सरग़ना (गुरू घन्टाल) फ़रमाया, (तो) क्या **ख़ुदा** और **रसूल** की शान में वोह गुस्ताख़ियां दीन पर त़ा'ना नहीं ? (या'नी ज़रूर बिज़्ज़रूर येह उमूर भी कुफ़्र ही हैं)

(तम्हीदुल ईमान मअ़ हाशिया, स. 97, 99)

नेक नमाज़ी कैसे काफ़िर हो सकता है ?

सुवाल : जो मुसल्मान के घर में पैदा हुवा, नेक नमाज़ी भी है वोह कैसे **काफ़िर** हो सकता है ?

जवाब : मुसल्मान होने के लिये "नमाज़ी" होना काफ़ी नहीं

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

और काफ़िर होने के लिये "बे नमाज़ी" होना शर्त़ नहीं। देखिये ! **क़ादियानी** लोग मस्जिदें भी बनाते और नमाज़ें भी पढ़ते हैं मगर न उन की मस्जिद, मस्जिद है न उन की नमाज़, नमाज़ क्यूं कि वोह **काफ़िर** हैं। दीने इस्लाम की बुन्याद **ईमान** पर है जब तक ईमान बाक़ी रहेगा बन्दा **मुसल्मान** कहलाएगा, और जब कोई बद नसीब مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ईमान से हाथ धो बैठेगा तो **ख़ारिज अज़ इस्लाम** हो जाएगा। क़ुरआने मजीद के पारह 6 **सूरए माइदह** की आयत 5 में वाज़ेह़ अल्फ़ाज़ में बयान फ़रमा दिया गया :

وَمَنْ يَّكْفُرْ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهٗ ۡ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۟ (پ٦:المائدہ:٥)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो मुसल्मान, से काफ़िर हो उस का किया धरा सब अकारत[(1)] गया और वोह आख़िरत में ज़ियांकार[(2)] है।

ह़ाजी नमाज़ी कोई भी हो सब के लिये कुफ़्र का ख़ौफ़ है

देखिये ! किस क़दर वाज़ेह़ अल्फ़ाज़ में **अल्लाहु** रह़मान عَزَّوَجَلَّ ने **मुसल्मान** को डराया है कि ख़बरदार ! अगर **काफ़िर** हो गए तो सब कुछ अकारत (बरबाद) हो जाएगा। अगर एक दफ़्आ ईमान ला कर **कुफ़्र** का

(1) बेकार। (2) नुक़्सान उठाने वाला।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

कोई अन्देशा न होता तो **अल्लाह** तबारक व तआ़ला **काफ़िर** हो जाने से क्यूं डराता ? **बहर ह़ाल** ह़ाजी, नमाज़ी, रोज़ादार वग़ैरा जो कोई भी हो अगर वोह किसी **ज़रूरते दीनी** का इन्कार करेगा तो **काफ़िर** ही ठहरेगा। चुनान्चे फ़िक़्हे ह़नफ़ी की मश्हूर किताब **रद्दुल मुह़तार** जिल्द 2 सफ़ह़ा 357 पर है : "उस शख़्स के कुफ़्र के बारे में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं जो **ज़रूरिय्याते दीन** में से किसी चीज़ का इन्कार करे अगर्चे वोह **अहले क़िब्ला** में से हो अगर्चे कि तमाम उ़म्र त़ाआ़त व इ़बादात करता रहे।"

ईमान सीने में दाख़िल हो कर निकल भी सकता है !

सुवाल : किताब "कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब" पढ़ कर तो येह ज़ाहिर हो रहा है कि सीने में ईमान दाख़िल हो कर बसा अवक़ात वापस भी निकल जाता और साबिक़ मुसल्मान अस्ली काफ़िर से भी बदतर काफ़िर या'नी **मुरतद** हो जाता है ! इस के मुतअ़ल्लिक़ कुछ **मदनी फूल** इनायत कर दीजिये।

जवाब : जी हां ऐसा ही है। लिहाज़ा एक बार **ईमान** ले आने के बा'द मौत तक इस की ह़िफ़ाज़त की फ़िक्र लाज़िम है वरना अगर कोई **क़त़ई कुफ़्र** सादिर हो गया तो

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

अस्ली काफ़िर से भी बदतर या'नी **मुरतद** हो जाएगा। हम इस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहते हैं। ईमान की हि़फ़ाज़त का ज़ेह्न देने ही के लिये इस किताब में बुरी सोह़बत से इज्तिनाब और ज़बान की एह़तियात़ पर भी काफ़ी ज़ोर दिया गया है कि सोह़बते बद और ज़बान की बे जा बक बक **बरबादिये ईमान** का सबब बन सकती है। बहर ह़ाल मुसल्मान का ईमान बरबाद हो जाने का हर इम्कान मौजूद है। हम **अल्लाहु** रह़मान عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में **ईमान की हि़फ़ाज़त** की गिड़गिड़ा कर इल्तिजा करते हैं :

या इलाही عَزَّوَجَلَّ ***मेरा ईमान सलामत रखना***

नफ़्सो शैत़ान से मुझ को ब हि़फ़ाज़त रखना

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰلهٖ وسلَّم

नाबीना को बद निगाही से कोई नहीं रोकता

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! हमेशा मन्अ़ उसी काम से किया जाता है जिस का वुक़ूअ़ (या'नी वाक़ेअ़ होना) मुम्किन हो। **नाबीना** को कोई नहीं कहता कि बद निगाही मत करो क्यूं कि इस से बद निगाही का वाक़ेअ़ होना मुम्किन ही नहीं। **बीना** (या'नी आंख वाले) ही को बद निगाही से रोका और

www.dawateislami.net

इस के अ़ज़ाबात से डराया जाता है। **अफ़्सोस** ! येह भी शैत़ान का एक बहुत बड़ा और बुरा वार है कि उस ने कसीर मुसल्मानों को न सिर्फ़ **सल्बे ईमान** के ख़ौफ़ से दूर रखा हुवा है बल्कि उन्हें यहां तक बावर (या'नी यक़ीन) करवा दिया है कि बस **एक दफ़्अ़ा ईमान लाना** ही काफ़ी है फिर जिस का जो दिल चाहे करे अब वोह किसी भी त़रह़ इस्लाम से बाहर नहीं हो सकता ! **याद रखिये** ! येह सोच आख़िरत को बरबाद करने वाली सोच है। मुसल्मान को हर आन बरबादिये ईमान के ख़ौफ़ से लरज़ां व तरसां रहना चाहिये। "**बुख़ारी शरीफ़**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 30 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "**निफ़ाक़ से मोमिन ही डरता है जब कि मुनाफ़िक़ ही इस से बे ख़ौफ़ होता है।**" इस क़ौल का मत़लब व मन्शा येह है कि मोमिन को हमेशा ख़िलाफ़े शरअ़ उमूर और कुफ़्रो शिर्क से पनाह मांगते रहना चाहिये और ब हुज़ूरे रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ हुस्ने ख़ातिमा की दुआ़ करते रहना चाहिये।

(ماخوذ از فیوض الباری شرح بخاری ج۱ص ۲۰٤)

हर मुल्क में जराइम की सज़ाएं हैं

दुन्या के तक़रीबन तमाम मुल्कों और मुख़्तलिफ़

बिरादरियों ने छोटे बड़े जराइम का तअ़य्युन और उन की दुन्यवी **सज़ाएं** मुक़र्रर कर रखी हैं। छोटा जुर्म करने पर छोटी सज़ा और बड़ा जुर्म करने पर बड़ी सज़ा मिलती है। मगर कोई बा शुऊ़र आदमी किसी जुर्म की सज़ा को ज़ुल्म व ज़ियादती नहीं समझता बल्कि जुर्म की सज़ा न देने को ही ना पसन्द करता है। اَلۡحَمۡدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने हमें अ़द्लो इन्साफ़ पर मब्नी एक इन्तिहाई मज़बूत़ निज़ाम बख़्शा है। **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ और **मुस्त़फ़ा** जाने रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त को **नेकी** और इन की ना फ़रमानी व मा'सियत को **गुनाह** क़रार दिया है और हर गुनाह की **सज़ा** भी मुक़र्रर की गई है। चुनान्चे बा'ज़ गुनाह ऐसे हैं जिन में मुलव्वस होने वाले को दुन्या में भी सज़ा दी जाती है जैसे चोर, ज़ानी, क़ातिल वग़ैरा। मगर चोर, ज़ानी वग़ैरा दाइरए इस्लाम से ख़ारिज नहीं होते। लेकिन बा'ज़ जराइम ऐसे हैं कि जिन का करने वाला मुसल्मान नहीं रहता, काफ़िर हो जाता है मसलन रमज़ानुल मुबारक के रोज़ों या यौमिय्या पांच नमाज़ों की फ़र्ज़िय्यत का इन्कार करने वाला वग़ैरहा।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

गद्दार को कोई भी मुहिब्बे वत़न नहीं कह सकता

दुन्या के मुख़्तलिफ़ ममालिक ने हुरमत व तक़द्दुस और अख़्लाक़ व आदाब का अपना अपना एक मे'यार मुक़र्रर कर रखा है। और सादा सी अ़क़्ल में भी येह बात आ जाने वाली है कि मुल्क की जो चीज़, जो शख़्स, जो इदारा जिस क़दर अहम होता है उसे वैसी ही क़द्रो मन्ज़िलत दी जाती है और उस के तक़द्दुस की पासदारी हर एक की क़ानूनी ज़िम्मेदारी होती है। मसलन किसी मुल्क का बाशिन्दा अपने मुल्क के झन्डे या क़ानून या अफ़्वाज वग़ैरा में से किसी की बे हुरमती करे तो उसे **गद्दार** क़रार दे कर सख़्त से सख़्त सज़ा दी जाती है। गद्दारी का इल्ज़ाम साबित हो जाने पर अगर्चे कोई लाख **हुब्बुल वत़नी** का दा'वा करता रहे कोई उसे **मुहिब्बे वत़न** नहीं कहेगा, उसे **गद्दार** ही समझा जाएगा। बिला तश्बीह **इस्लाम** में भी हुरमत व तक़द्दुस की पासदारी का एक मे'यार है। चुनान्चे अगर कोई **अल्लाहु** रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ की तौहीन करे या **अम्बियाए किराम** عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की गुस्ताख़ी का मुरतकिब हो तो ऐसे शख़्स को दीने इस्लाम का **बाग़ी** क़रार दे कर मुसल्मानों की फ़ेहरिस से ख़ारिज कर के **काफ़िर** शुमार किया जाता है अगर्चे वोह लाख दा'वए ईमानी करे उस के दा'वे का कोई ए'तिबार

नहीं किया जाता। **ज़रा सोचिये !** क्या मिरज़ा ग़ुलाम अह्मद **क़ादियानी** कलिमा गो नहीं था ? यक़ीनन था मगर जब उस से कुफ़्रिय्यात सादिर हुए तो मुफ़्तियाने इस्लाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने उसे **काफ़िर व मुरतद** क़रार दिया। इसी त़रह़ बदनाम दुश्मने इस्लाम **सलमान रुश्दी** क्या इस्लाम लाने के बा'द **मुरतद** नहीं हुवा ? क्या रुस्वाए ज़माना गुस्ताख़े रसूल **तस्लीमा नसरीन** मुसल्मान घराने में पैदा नहीं हुई थी ? ऐसे ही लोगों के बारे में **अल्लाहु** रब्बुल इबाद क़ुरआने पाक पारह 10 **सूरतुत्तौबह** आयत नम्बर 74 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَقَدۡ قَالُوۡا كَلِمَةَ الۡكُفۡرِ وَكَفَرُوۡا بَعۡدَ اِسۡلَامِهِمۡ
(پ۱۰ التوبہ ۷٤)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक ज़रूर इन्हों ने कुफ़्र की बात कही और इस्लाम में आ कर काफ़िर हो गए।

क़त़ई कुफ़्र के सुदूर के बा'द कोई आदमी मुसल्मान नहीं रह सकता

ऐ भोलेभाले इस्लामी भाइयो ! शैत़ानी वस्वसों को समझने की ज़रूरत है, क्या **अल्लाहुल मुबीन** عَزَّوَجَلَّ की सरीह़ तौहीन, उस के रसूले मक़्बूल **मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में वाज़ेह़ गुस्ताख़ी और **ज़रूरिय्याते दीन** के इन्कार

को भी भला कोई मुसल्मान अच्छा कह सकता है ? हरगिज़ नहीं कह सकता, जो कहेगा, वोह भी अपने **ईमान** से हाथ धो बैठेगा। कुफ़्र को कुफ़्र ही कहा जाएगा, **क़त़ई कुफ़्र** के सुदूर के बा'द हरगिज़ ईमान सलामत नहीं रह सकता।

अगर मुजरिम ही ज़ियादा हों तो क़ाज़ी क्या करे !

सुवाल : अगर करोड़ों में किसी **एकआध मुसल्मान** पर हुक्मे कुफ़्र लग जाए तो आदमी की अ़क़्ल में आ भी जाए। आप की किताब "कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब" के मुत़ालए़ से तो आज के दौर के बे शुमार ज़ाहिरी मुसल्मान ख़ारिज अज़ इस्लाम नज़र आ रहे हैं !

जवाब : मज़्कूरा किताब में مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ किसी भी मुसल्मान को अपनी मरज़ी से **काफ़िर** नहीं कहा गया। इस किताब का अगर ब नज़रे ग़ाइर (या'नी गहरी नज़र से) मुत़ालआ़ किया जाए तो नतीजा येही सामने आएगा कि इस में गोया ह़द बन्दियां बयान की गई हैं कि ख़बरदार ! फ़ुलां फ़ुलां बात या फ़ुलां फ़ुलां ह़रकात से बचना वरना **ईमान** चला जाएगा। अब अगर इस दौर में बहुत सारे लोग **कुफ़्रिय्यात** बकने वाले पाए जा रहे हों और वोह मुबय्यना (या'नी बयान कर्दा) इस्लामी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

अह़काम की ज़द में आ रहे हों तो इस में **किताब के मुरत्तिब** का क्या क़ुसूर ? देखिये ना ! अगर मुजरिम ही ज़ियादा हो जाएं तो क्या **क़ाज़ी** पर येह इल्ज़ाम आएगा कि कैसा बे रह़्म आदमी है कि हर रोज़ इतने सारे मुजरिमों को सज़ा सुनाता है ! ज़ाहिर है कोई भी अ़क़्ल मन्द आदमी क़ाज़ी को इल्ज़ाम नहीं देगा, बल्कि **मुजरिम** ही की मज़म्मत करेगा और अपनी ह़ैसिय्यत के मुत़ाबिक़ **जुर्म** की रोकथाम के लिये कोशां होगा। पस जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के **रसूल** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अह़काम से मुंह मोड़ा जाए, यहूदो नसारा और माद्दा परस्त लोगों की बेहूदा तहज़ीब के गन्दे नाले में मुसल्मानों को डुबोने की सई की जाए बल्कि ऐन **ज़रूरिय्याते इस्लाम** ही का इन्कार व इस्तिख़्फ़ाफ़ (या'नी हलका जानना) पाया जाने लगे तो ऐसे संगीन ह़ालात में ग़ाफ़िलीन को जगाने वाले मुस्लिह़ीन, वाइज़ीन, मुक़र्रिरीन, मुबल्लिग़ीन, मुअल्लिफ़ीन और मुसन्निफ़ीन जो कि उम्मत के मोह़सिनीन हैं इन को बे जा तन्क़ीद से नहीं दुआ़ए ख़ैर से नवाज़ना चाहिये।

आयिन्दा काफ़िर हो जाने की पेशिन गोई !

مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़िलह़ाल इस बात में क़ीलो क़ाल की

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

जा रही है कि कुफ़्रिय्यात बकने वाले जरी व बेबाक अफ़राद पर **हुक्मे कुफ़्र** क्यूं लगाया गया ? जब कि ऐसे ऐसे रोशन ज़मीर उ़लमाए ह़क़ भी गुज़रे हैं जो इस्लाम के अच्छे ख़ासे शैदाई नज़र आने वाले के लिये बसा अवक़ात पहले ही से पेशिन गोइयां फ़रमा दिया करते थे कि **फ़ुलां मुस्तक़्बिल में काफ़िर हो जाएगा** ! चुनान्चे उ़लमाए ह़क़ के रहबर, इ़ल्मो अ़मल के अ़ज़ीम पैकर, बि इज़्ने रब्बे दावर ग़ैब की बातों से बा ख़बर ह़ज़रते सय्यिदुना **सिद्दीक़े अक्बर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की ख़िदमते सरापा इ़ल्मो ह़िक्मत में ह़ाज़िर हो कर **रबीआ़** बिन उमय्या बिन ख़लफ़ ने अ़र्ज़ की : मैं ने कल रात ख़्वाब देखा है कि मैं सर सब्ज़ जगह पर था फिर बन्जर ज़मीन पर पहुंच गया जहां कोई पैदावार नहीं है, और येह भी देखा है कि दोनों हाथ मिल गए और त़ौक़ की त़रह़ गरदन में लटक गए हैं। **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : अगर तूने वाक़ेई येह ख़्वाब देखा है तो इस की ता'बीर येह है कि तू **इस्लाम** को छोड़ कर **कुफ़्र** इख़्तियार करेगा, (या'नी मुरतद हो जाएगा) अलबत्ता मेरे मुआ़मलात दुरुस्त रहेंगे, और मेरे दोनों हाथ दुन्या की आलाइशों से पाक रहेंगे। रावी कहता है कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के ज़मानए ख़िलाफ़त में **रबीआ़** मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيمًا से रूम पहुंचा, और क़ैसरे रूम के यहां जा कर **नसरानी** (या'नी क्रिस्चेन) हो गया।

(تعبیرُ الرؤیا ص ٥٤)

उ़लमा पर ए'तिराज़ कि जब देखो कुफ़्र का फ़तवा दाग़ देते हैं !

सुवाल : अगर कोई येह किताब "कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब" पढ़ने के बा'द यूं कहे कि मौलवियों को तो कुफ़्र के फ़तवे देने के सिवा कोई काम ही नहीं, **जब देखो कुफ़्र का फ़तवा दाग़ देते हैं**! ऐसे शख़्स के लिये कुछ **मदनी फूल** दे दीजिये।

जवाब : इस त़रह़ के तअस्सुरात का इज़्हार यक़ीनन दीन से दूरी का नतीजा है इसी दूरी ने बा'ज़ लोगों को बेबाक बना दिया है, वोह **उ़लमाए दीन** की ह़क़ीक़त ही नहीं समझते, उन्हें इतना भी एह़सास नहीं कि आख़िर वोह किन हस्तियों की **इ़ज़्ज़तो नामूस** पर ह़म्ला कर रहे हैं ? किन के ख़िलाफ़ दिल की भड़ास निकाल रहे हैं? उन के ख़िलाफ़, जिन को दीन में **सुतून** की ह़ैसिय्यत ह़ासिल है, जो दीन के **मुह़ाफ़िज़** हैं लारैबो शक ! उ़लमाए दीन बहुत बड़ी शानों के मालिक हैं इन की

मुख़ालफ़त सबबे हलाकत और इन की इत़ाअ़त दोनों जहां के लिये बाइ़से सआ़दत है। चुनान्चे पारह 5 **सूरतुन्निसाअ** आयत नम्बर 59 में इर्शादे रब्बुल इ़बाद है :

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَ اُولِي الْاَمْرِ مِنْكُمْ ۚ (پ ٥ النساء٥٩)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो हुक्म मानो **अल्लाह** का और हुक्म मानो **रसूल** का और उन का जो तुम में हुकूमत वाले हैं।

उ़लमा की इत़ाअ़त रसूल की इत़ाअ़त है

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस आयते करीमा के तह़्त फ़रमाते हैं : "ख़्वाह दीनी हुकूमत वाले हों जैसे आ़लिम, मुर्शिदे कामिल, फ़क़ीह, मुज्तहिद या दुन्यावी हुकूमत वाले जैसे इस्लामी सुल्त़ान और इस्लामी हुक्काम। लेकिन दीनी हुक्काम की इत़ाअ़त दुन्यावी हुक्काम पर भी वाजिब होगी, मगर इन दोनों की इत़ाअ़त में येह शर्त़ है कि नस्स के ख़िलाफ़ हुक्म न दें वरना इन की इत़ाअ़त नहीं...... मज़ीद फ़रमाते हैं फ़ुक़हा की त़रफ़ रुजूअ़ करना भी रसूल ही की त़रफ़ रुजूअ़ करना है क्यूं कि फ़ुक़हा हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही का हुक्म सुनाते हैं, जैसे हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

इत़ाअ़त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त है ऐसे ही आ़लिमे दीन की फ़रमां बरदारी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी है।"

(नूरुल इरफ़ान, स. 137)

सुवाल में मज़्कूर ए'तिराज़ में बिला तख़्सीस मुत़्लक़न येह बात कही गई है कि मौलवियों को तो **कुफ़्र का फ़तवा** देने के सिवा कोई काम ही नहीं........الخ, مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ख़ुद येह जुम्ला इन्तिहाई सख़्त है, इस में उ़लमाए दीन की **तौहीन** का पहलू वाज़ेह़ है बल्कि उ़लमाए दीन की **तौहीन** ही मक़्सूद हो तो **खुला कुफ़्र व इरतिदाद** है। रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, नबिय्ये मुह़्तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "तीन शख़्सों के ह़क़ को हलका न जानेगा मगर मुनाफ़िक़ खुला मुनाफ़िक़, एक वोह जिसे इस्लाम में बुढ़ापा आया, दूसरा **इ़ल्म वाला**, तीसरा आ़दिल बादशाह।" (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیْر ج۸ص۲۰۲ حدیث ۷۸۱۹)

उ़लमाए दीन की तौहीन संगीन जुर्म है

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या शरीफ़** जिल्द 23 सफ़ह़ा 649 पर उ़लमाए

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

दीन की तौहीन करने से मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : "सख़्त ह़राम सख़्त गुनाह अशद कबीरा, **आ़लिमे दीन** सुन्नी सह़ीहुल अ़क़ीदा कि लोगों को ह़क़ की त़रफ़ बुलाए और ह़क़ बात बताए **मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नाइब है। इस की तह़क़ीर (तौहीन) مَعَاذَ اللّٰہ **मुह़म्मद** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तौहीन है और **मुह़म्मद** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जनाब में गुस्ताख़ी मूजिबे ला'नते इलाही व अ़ज़ाबे अलीम है।"

(फ़तावा रज़विय्या)

शैत़ान लोगों को आ़लिमों से क्यूं दूर करता है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! शैत़ान लोगों के दिलों से उ़लमाए दीन की **वक़्अ़त** निकालना चाहता है ताकि उ़लमाए किराम जब किसी बात को **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ और **मुस्त़फ़ा जाने रह़मत** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानी व मा'सियत क़रार दें तो लोग उन की नसीह़त पर कान न धरें और बे धड़क शैत़ानी कामों में लगे रहें।

शैत़ान मां बाप के रूप में !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! हमें शैत़ान के वार को नाकाम बनाते हुए हर दम बा अ़मल आ़लिमों के

दामन से वाबस्ता रहना चाहिये ताकि दीनी मा'लूमात होती रहें वरना शैतान कहीं ईमान छीनने में काम्याब न हो जाए। उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : **ईमान** का मुआ़मला बेहद ह़स्सास है, अ़क़ाइदो नज़रिय्यात बिगड़ जाने या अल्फ़ाज़े कुफ़्र की तह़सीन या अफ़्आ़ले इरतिदाद के इरतिकाब के सबब ईमान ज़ाएअ़ हो गया तो क्या होगा ! सय्यिदुना **इमाम क़ुरतु़बी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं कि (सकरात के वक़्त) **शैत़ान** दाईं जानिब से आता है और यहूदी दीन का अच्छा होना बयान करता है और उस के **बाप** का रूप धार कर यहूदी मज़्हब क़बूल करने के लिये उक्साता है अगर क़बूल न करे तो फिर शैत़ान बाईं जानिब से आता है और उस की **मां** का रूप धार कर ईसाइयों (क्रिस्चेनों) का मज़्हब क़बूल करने की दा'वत देता है और बा'ज़ रिवायात में येह है कि **शैत़ान** ऐसे मौक़अ़ पर **पानी का पियाला** ले कर आता है कि अगर तू वोह कह दे जो मैं कह रहा हूं और **दा'वते कुफ़्र** दे रहा होता है (या'नी तू इस्लाम छोड़ कर काफ़िर हो जाए) तो पियाला तुझे पेश कर दूंगा। (بریقة محمودیة فی شرح طریقة محمدیة ج۱ص۷۵)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम तेरी रह़मत के भिकारी और तुझ से ईमान की ह़िफ़ाज़त के त़लब गार हैं। **मह़बूब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सदक़ा नज़्अ़ में रुस्वा न करना।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

अ़त्त़ार है ईमां की ह़िफ़ाज़त का सुवाली
ख़ाली नहीं जाएगा येह दरबारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم *से*

उ़लमा के बिग़ैर इस्लाम का निज़ाम नहीं चल सकता

उ़लमाए इस्लाम का काम तो **अल्लाहु** रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल, शहन्शाहे अम्बियाए किराम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पैग़ाम को दुरुस्त त़रीक़े पर आ़म फ़रमाना है, उ़लमाए दीन तो शरीअ़त के क़वानीन के मुह़ाफ़िज़ीन हैं। उ़लमाए किराम तो दीने इस्लाम के अह़काम के मुत़ाबिक़ ही किसी चीज़ को ह़लाल या ह़राम, कुफ़्र या इस्लाम क़रार देने के पाबन्द हैं। अपनी त़रफ़ से हरगिज़ कुछ नहीं कहते, येही इन का मन्सब है। यक़ीनन उ़लमाए दीन ही की बरकतों, कोशिशों, इ़ल्मी काविशों और मसाइ़ये तब्लीग़ से गुलज़ारे इस्लाम की **बहारें** हैं। उ़लमाए ह़क़ ही की

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

बदौलत गुल्शने इस्लाम हरा भरा **लहलहा** रहा है। अगर उ़लमा ही मा'दूम (या'नी ख़त्म) हो जाएं तो कुफ़्फ़ार को इस्लाम की **दा'वत** कौन देगा ? कुफ़्फ़ार की त़रफ़ से उठाए जाने वाले ए'तिराज़ात के मुस्कित (या'नी ख़ामोश कर देने वाले) **जवाबात** कैसे दिये जा सकेंगे ? अ़ाम्मतुल मुस्लिमीन को **अरकाने इस्लाम** की ता'लीम देने की तरकीब कैसे बनेगी ? इन्हें **क़ुरआनो ह़दीस** के रुमूज़ (या'नी भेदों) से कौन आश्ना (वाक़िफ़) करेगा ?

उ़लमा की बारगाह में ह़ाज़िरी तौबा की तौफ़ीक़ का ज़रीआ़...

उ़लमाए रब्बानिय्यीन की बारगाहों में ह़ाज़िरी तौबा की तौफ़ीक़ मिलने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का सबब बन सकती है चुनान्चे एक अ़ज़ीम ताबेई बुज़ुर्ग व ज़बर दस्त अ़ालिमे दीन ह़ज़रते सय्यिदुना **सईद बिन मुसय्यब** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर किसी ने अ़र्ज़ की, कि "मैं ने ख़्वाब में का'बए मुशर्रफ़ा के ऊपर ख़ुद को नमाज़ पढ़ते देखा।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : **ख़ुदा** का ख़ौफ़ कर ! शायद तू दीने इस्लाम से फिर गया है ! उस ने अ़र्ज़

की : मैं तौबा करता हूं क्यूं कि तक़्रीबन दो माह से **"फ़िर्क़ए क़दरिय्या"** (या'नी तक़्दीर का इन्कार करने वाले फ़िर्क़े) के अ़क़ाइद पर हूं। (ख़्वाबों की ता'बीर, स. 145)

क्या जाहिल के ईमान पर ख़ातिमे की उम्मीद नहीं ?

सुवाल : इस किताब की इब्तिदा में आप ने **कुफ़्रिय्या कलिमात और दीगर फ़र्ज़ उ़लूम** सीखने पर काफ़ी ज़ोर दिया है मगर अब इस नफ़्सा नफ़्सी के दौर में उ़मूमन लोगों के पास इतना वक़्त तो होता नहीं कि वोह किसी दीनी मद्रसे में दाख़िला ले कर आ़लिम कोर्स करे, तो क्या ऐसी सूरत में अब **जाहिल** के ईमान पर ख़ातिमा होने की कोई उम्मीद ही नहीं ?

जवाब : ऐसा नहीं है कि हर ग़ैरे आ़लिम मुसल्मान مَعَاذَاللّٰه ثُمَّ مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **कुफ़्र** ही पर मरेगा। मगर इन्सान को ख़ुद सोचना चाहिये कि **फ़ानी दुन्या** बनाने की ख़ातिर दुन्यवी उ़लूमो फ़ुनून सीखने पर ज़िन्दगी का अच्छा ख़ासा हिस्सा सर्फ़ कर देता है तो आख़िर **बाक़ी आख़िरत** बनाने की ख़ातिर ज़रूरी उ़लूम सीखने में क्यूं कोताही करता है ! मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 24

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

सफ़ह़ा 158 पर फ़रमाते हैं : बदीहिय्याते दीनिय्या[1] से है कि अव्वलन अ़क़ाइदे इस्लाम व सुन्नत फिर अह़कामे सलात व त़हारत वग़ैरहा ज़रूरिय्याते शरइय्या **सीखना सिखाना** फ़र्ज़ है और इन्हें छोड़ कर दूसरे किसी मुस्तह़ब व पसन्दीदा इल्म में भी वक़्त ज़ाएअ़ करना **ह़राम**। **फ़तावा रज़विय्या शरीफ़** जिल्द 18 सफ़ह़ा 501 पर फ़रमाते हैं : "**मुसल्मान बे इल्मे दीन एक क़दम नहीं चल सकता, अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इल्म दे, उस पर अ़मल दे, उस को क़बूल फ़रमाए।"

ईमान छीनने का अ़जीब शैत़ानी अन्दाज़

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये इल्मे दीन की अहम्मिय्यत बयान करते हुए फ़रमाते हैं : बिग़ैर इल्म के सूफ़ी को **शैत़ान** कच्चे तागे (या'नी कमज़ोर धागे) की लगाम डालता है। **मन्क़ूल** है : बा'दे नमाज़े अ़स्र शयात़ीन समुन्दर पर जम्अ़ होते हैं, **इब्लीस** का तख़्त बिछता है, शयात़ीन की कार गुज़ारी पेश होती है, कोई कहता है :

मदीना

(1) या'नी वोह मश्हूरो मा'रूफ़ दीनी अह़काम जिन को अ़वामो ख़वास सब जानते हों।

इस ने (या'नी मैं ने) इतनी शराबें पिलाईं, कोई कहता है, इस ने (या'नी मैं ने) इतने ज़िना कराए सब की सुनीं। किसी ने कहा : इस ने (या'नी मैं ने) आज फ़ुलां त़ालिबे इल्मे (दीन) को पढ़ने से बाज़ रखा। (शैत़ान येह) सुनते ही तख़्त पर से उछल पड़ा और उस को गले से लगा लिया और कहा : اَنْتَ اَنْتَ (या'नी बस) तूने (ज़ोरदार) काम किया। और शयात़ीन येह कैफ़िय्यत देख कर जल गए कि उन्हों ने इतने बड़े बड़े काम किये इन को कुछ न कहा और इस (शैत़ान के चेले) को (त़ालिबे इल्मे दीन को सिर्फ़ एक छुट्टी करवा देने पर) इतनी शाबाश दी ! **इब्लीस** बोला : तुम्हें नहीं मा'लूम जो कुछ तुम ने किया, सब इसी (इल्मे दीन पढ़ने से रोकने वाले) का सदक़ा है। अगर (दीनी) इल्म होता तो वोह (लोग) गुनाह न करते। बताओ ! वोह कौन सी जगह है जहां सब से बड़ा **आ़बिद** (इ़बादत गुज़ार) रहता है मगर वोह **आ़लिम** नहीं और वहां एक **आ़लिम** भी रहता हो। उन्हों ने एक मक़ाम का नाम लिया। सुब्ह़ को क़ब्ले तुलूए़ आफ़्ताब (इब्लीस अपने चेले) शयात़ीन को लिये हुए उस मक़ाम पर पहुंचा। और शयात़ीन मख़्फ़ी (छुपे) रहे और येह (या'नी इब्लीस) इन्सान

www.dawateislami.net

की शक्ल बन कर रस्ते पर खड़ा हो गया। **आ़बिद** साहिब तहज्जुद की नमाज़ के बा'द, नमाज़े फ़ज्र के वासिते़ मस्जिद की त़रफ़ तशरीफ़ लाए। रास्ते में **इब्लीस** खड़ा ही था, ह़ज़रत ! मुझे एक मस्अला पूछना है। **आ़बिद** साहिब ने फ़रमाया : जल्द पूछो। मुझे नमाज़ को जाना है। इस (इब्लीस) ने अपनी जेब से एक **शीशी** निकाल कर पूछा : (क्या) **अल्लाह** तआ़ला क़ादिर है कि इन समावात व अर्ज़ (या'नी आस्मानों और ज़मीनों) को इस छोटी सी शीशी में दाख़िल कर दे ? **आ़बिद** साहिब ने सोचा और कहा : "कहां आस्मानो ज़मीन और कहां येह छोटी सी शीशी !" (इब्लीस) बोला : बस येही पूछना था तशरीफ़ ले जाइये और (फिर अपने चेले) शयात़ीन से कहा : देखो (मैं ने) इस (आ़बिद) की राह मार दी, इस को **अल्लाह** की क़ुदरत पर ही ईमान नहीं (इस बे ईमान मुरतद की अब) इ़बादत किस काम की ! तुलूए़ आफ़्ताब के क़रीब आ़लिम साहिब जल्दी करते हुए तशरीफ़ लाए इस (इब्लीस) ने कहा : मुझे एक मस्अला पूछना है। उन्हों ने फ़रमाया : जल्दी पूछो नमाज़ का वक़्त कम है। इस ने वोही सुवाल किया। (सुन कर आ़लिम साहिब ने फ़रमाया :) **मल्ऊ़न** ! तू इब्लीस मा'लूम

होता है, अरे ! वोह क़ादिर है कि येह शीशी तो बहुत बड़ी है एक सूई के नाके के अन्दर अगर चाहे तो करोड़ों आस्मानो ज़मीन दाख़िल कर दे । اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) सब कुछ कर सकता है । (پ ۱ البقرہ ۲۰) **आ़लिम** साहि़ब के तशरीफ़ ले जाने के बा'द शयात़ीन से (इब्लीस) बोला : देखो ! येह इल्म की बरकत है।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, हि़स्सए सिवुम, स. 356)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **आ़लिम** साहि़ब **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त के इ़नायत कर्दा इ़ल्मे दीन की बरकत से शैत़ान से अपने **ईमान की ह़िफ़ाज़त** करने में काम्याब हुए जब कि वोह **जाहिल** सूफ़ी और बे इ़ल्म तहज्जुद गुज़ार **आ़बिद** इ़ल्मे दीन से दूरी के सबब शैत़ान की बातों में आ कर ईमान से हाथ धो बैठा। इस लिये ईमानिय्यात और कुफ़्रिय्यात के बारे में मा'लूमात ह़ासिल करना हर मुसल्मान के लिये ना गुज़ीर है कि कहीं शैत़ान ईमान न ले उड़े। इस रिवायत से वोह त़लबए इ़ल्मे दीन भी दर्स ह़ासिल करें जो मा'मूली सी मजबूरी या मह़्ज़ सुस्ती की बिना पर अपनी पढ़ाई की छुट्टियां कर के शैत़ान की कैसी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

हौसला अफ़्ज़ाई और अपना कितना ज़बर दस्त नुक़्सान कर बैठते हैं ! इसी तरह सुन्नतों भरे इज्तिमाआत और सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के साथ सफ़र से तकाहुल (सुस्ती) बरत्ने वालों के लिये भी इस रिवायत में हिदायत के काफ़ी **मदनी फूल** हैं।

महबूबे ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم *सर पे अजल आ के खड़ी है*
शैतान से अत्तार का ईमान बचा लो

अच्छा ख़ासा मुसल्मान कुफ़्र के ग़ार में कैसे जा पड़ता है ?

सुवाल : "अच्छा ख़ासा मुसल्मान **कुफ़्र के ग़ार** में कैसे जा पड़ता है" इस के लिये मज़ीद अक़्ली और नक़्ली मदनी फूल इनायत फ़रमा दीजिये।

जवाब : दुन्या में हर चीज़ की एक **ज़िद** (या'नी उलट) पाई जाती है। गर्मी की ज़िद सर्दी, ख़ुश्बू की ज़िद बदबू, मिठास की ज़िद कड़वाहट, झूट की ज़िद सच, अच्छाई की ज़िद बुराई और रिज़ा मन्दी की ज़िद नाराज़ी है, यूं ही **ईमान** की ज़िद **कुफ़्र** है जो साहिबे ईमान होगा वोह **कुफ़्र** से ख़ाली होगा और जो काफ़िर होगा वोह **ईमान** से महरूम होगा। जहां **ईमान** होगा वहां न

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو یعلی)

तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **व रसूल** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तौहीन होगी न इन्कार न इस्तिख़्फ़ाफ़ (या'नी शान घटाना)। दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 172 ता 176 पर सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ القَوِى फ़रमाते हैं : "(ईमान येह है कि) सच्चे दिल से उन सब बातों की तस्दीक़ करे जो **ज़रूरिय्याते दीन** से हैं।" मज़ीद फ़रमाते हैं : मुसल्मान होने के लिये येह भी शर्त़ है कि ज़बान से किसी ऐसी चीज़ का इन्कार न करे जो ज़रूरिय्याते दीन से है, अगर्चे बाक़ी बातों का इक़रार करता हो, अगर्चे वोह येह कहे कि सिर्फ़ ज़बान से इन्कार है दिल में इन्कार नहीं, कि **बिला इक्राहे शरई**(1) मुसल्मान कलिमए कुफ़्र सादिर नहीं कर सकता, वोही शख़्स ऐसी बात मुंह पर लाएगा जिस के दिल में इतनी ही

(1) या'नी जान से मार देने या जिस्म का कोई उ़ज़्व तलफ़ (ज़ाएअ़) कर देने या ज़र्बे शदीद (सख़्त मार लगाने) की सह़ीह़ धमकी देना, जिस को धमकी दी गई वोह जानता है कि ज़ालिम जो कुछ कह रहा है वोह कर गुज़रेगा येह इक्राहे शरई कहलाता है।

वक़्अ़त है कि जब चाहा इन्कार कर दिया और ईमान तो ऐसी तस्दीक़ है जिस के ख़िलाफ़ की अस्लन गुन्जाइश नहीं। मज़ीद फ़रमाते हैं : बा'ज़ आ'माल जो क़त्अ़न मुनाफ़िये ईमान हों उन के मुर्तकिब को काफ़िर कहा जाएगा, जैसे बुत या चांद सूरज को सज्दा करना और क़त्ले नबी या नबी की तौहीन या मुस्ह़फ़ शरीफ़ या का'बए मुअ़ज़्ज़मा की तौहीन और किसी सुन्नत को हलका बताना, येह बातें यक़ीनन कुफ़्र हैं। यूंही बा'ज़ आ'माल कुफ़्र की अ़लामत हैं, जैसे ज़ुन्नार बांधना, सर पर चुटिया रखना, क़श्क़ा लगाना, ऐसे अफ़्आ़ल के मुरतकिब को फ़ुक़हाए किराम काफ़िर कहते हैं। तो जब इन आ'माल से कुफ़्र लाज़िम आता है तो इन के मुरतकिब को अज़ सरे नौ इस्लाम लाने और इस के बा'द अपनी औ़रत से तजदीदे निकाह़ का हुक्म दिया जाएगा (बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा : 1, स. 172, 176) आ'ला ह़ज़रत **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : जो ख़ुशी ख़ुशी ज़रूरिय्याते दीन में से किसी चीज़ को झुटलाए वोह **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक भी काफ़िर है। अगर्चे येह दा'वा करता हो कि उस का दिल ईमान पर मुत़्मइन है। (المعتمد المستند،حاشیه نمبر ۱۲۰،ص۱۹٤)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

मज़्कूरा इबारात से मा'लूम हुवा कि अगर कोई **ईमान** का दा'वा करे मगर **ज़रूरिय्याते दीन** में से किसी **ज़रूरते दीनी** का इन्कार करे ऐसा शख़्स हरगिज़ **ईमान** के दा'वे में सच्चा नहीं हो सकता, येह तो उस शख़्स की मानिन्द है जो कहे : "इस वक़्त दिन भी है और रात भी ।" ह़ालां कि नादान से नादान इन्सान भी जानता है कि दिन के वक़्त रात और रात के वक़्त दिन का होना नहीं पाया जा सकता, दिन और रात आपस में ज़िद हैं और इज्तिमाए़ ज़िद्दैन मुह़ाल (या'नी दो उलट चीज़ों का जम्अ़ होना ना मुम्किन) होता है मसलन आग और पानी यकजा हो ही नहीं सकते ! पस इसी त़रह़ **ईमान नूर** (या'नी रोशनी) है और **कुफ़्र अंधेरा** लिहाज़ा ईमान और कुफ़्र भी आपस में ज़िद हैं, और येह भी दिन और रात की त़रह़ हरगिज़ जम्अ़ नहीं हो सकते । उम्मीद है येह बात समझ में आ गई होगी कि **अच्छा ख़ासा मुसल्मान नज़र आने वाला कुफ़्र की खाई में कैसे जा पड़ता है** ! कलिमा गो आदमी ख़ारिज अज़ इस्लाम कब और क्यूं क़रार पाता है नीज़ येह बात भी समझ में आ गई होगी कि ईमान व कुफ़्र दो अलग अलग चीज़ें हैं और जो इन दोनों को एक समझे वोह खुद **काफ़िर** है।

ईमान की हिफ़ाज़त की फ़िक्र ज़रूरी है

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 186 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" हिस्सा 9 सफ़्ह़ा 172 ता 173 पर सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : कुफ़्रो शिर्क से बदतर कोई गुनाह नहीं और वोह भी **इरतिदाद** कि येह कुफ़्रे अस्ली से भी ब ए'तिबारे अह़काम सख़्त तर है जैसा कि इस के अह़काम (जानने) से मा'लूम होगा। मुसल्मान को चाहिये कि इस (कुफ़्रो इरतिदाद) से पनाह मांगता रहे कि शैत़ान हर वक़्त ईमान की घात में है और ह़दीस में फ़रमाया कि "शैत़ान इन्सान के बदन में ख़ून की त़रह़ तैरता है।" आदमी को कभी अपने ऊपर या अपनी त़ाअ़त (व इबादत) व आ'माल पर भरोसा न चाहिये, हर वक़्त ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ पर ए'तिमाद करे और उसी से बक़ाए ईमान की दुआ़ चाहिये कि उसी के हाथ में क़ल्ब है और क़ल्ब को क़ल्ब इसी वज्ह से कहते हैं कि लोटपोट (उलट पलट) होता रहता है। ईमान पर साबित रहना उसी की तौफ़ीक़ से है जिस के दस्ते क़ुदरत में क़ल्ब है और ह़दीस में फ़रमाया कि शिर्क से बचो कि वोह

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

च्यूंटी की चाल से ज़ियादा मख़्फ़ी (या'नी पोशीदा) है और इस से बचने की ह़दीसे (पाक) में एक दुआ़ इर्शाद फ़रमाई इसे हर रोज़ तीन मर्तबा पढ़ लिया करो, ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शाद है कि शिर्क से मह़फ़ूज़ रहोगे वोह दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُ بِكَ مِنۡ اَنۡ اُشۡرِكَ بِكَ شَيۡئًا وَّ اَنَا اَعۡلَمُ وَاَسۡتَغۡفِرُكَ لِمَا لَا اَعۡلَمُ اِنَّكَ اَنۡتَ عَلَّامُ الۡغُيُوۡبِ۔

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 9, स. 172, 173)

ईमान की ह़िफ़ाज़त की दुआ़ के लिये दरबारे आ'ला ह़ज़रत में ह़ाज़िरी

ईमान की ह़िफ़ाज़त का एक त़रीक़ा येह भी है कि **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों से **ईमान की ह़िफ़ाज़त** की दुआ़ की दरख़्वास्त करता रहे कि न जाने किस की दुआ़ की बरकत से ईमान सलामत ले कर दुन्या से रुख़्सत होना नसीब हो। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن चूंकि बहुत बड़े वलिय्युल्लाह और एक ज़बर दस्त आ़शिक़े रसूल थे, लिहाज़ा आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमते बा बरकत में अहले अ़क़ीदत दूर दूर से ह़ाज़िर होते थे चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 561 सफ़ह़ात पर

मुश्तमिल किताब, **"मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत"** सफ़ह़ा 311 पर शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, ताजदारे अहले सुन्नत, हु़ज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द **मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : एक रोज़ बा'द फ़रागे़ नमाज़े इशा लोग दस्त बोस हो रहे थे इस मज्मअ़ में से एक साहि़ब ने (हु़ज़ूर आ'ला ह़ज़रत की) ख़िदमते बा बरकत में अ़र्ज़ की : **हु़ज़ूर** ! मैं "ज़िलअ़ होशंगआबाद" का रहने वाला हूं, मुझे हु़ज़ूर की "जबलपूर" तशरीफ़ आवरी की रेल (ट्रेन) में ख़बर मिली लिहाज़ा डाक से सिर्फ़ **दुआ़** के वासिते़ ह़ाज़िर हुवा हूं कि ख़ुदा वन्दे करीम عَزَّوَجَلَّ ईमान के साथ ख़ातिमा बिलख़ैर करे । **हु़ज़ूर** ने दुआ़ दी और इर्शाद फ़रमाया : इक्तालीस बार सुब्ह़(1) को يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़, नीज़ सोते वक़्त अपने सब अवराद के बा'द **सूरए काफ़िरून** रोज़ाना पढ़ लिया कीजिये इस के बा'द कलाम (गुफ़्तगू) वग़ैरा न कीजिये हां अगर ज़रूरत हो तो कलाम (बात) करने के बा'द फिर **सूरए काफ़िरून** तिलावत कर लें कि ख़ातिमा

(1) आधी रात ढले से सूरज की पहली किरन चमक्ने तक **सुब्ह़** कहलाती है और दोपहर ढलने से ग़ुरूबे आफ़्ताब तक **शाम** कहलाती है ।

(इख़्तिताम) इसी पर हो, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **ख़ातिमा ईमान पर होगा** और तीन बार **सुब्ह़** और तीन बार **शाम** इस दुआ का विर्द रखें :

اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ نُّشْرِكَ بِكَ

شَيْئًا نَّعْلَمُهٗ وَ نَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا نَعْلَمُهٗ

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! हमारा ईमान सलामत रख । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! ज़िन्दगी भर में किसी लम्ह़े के करोड़वें ह़िस्से में भी हम पर कभी कुफ़्र वारिद न हो । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें **कुफ़्रिय्या कलिमात** और दीगर **फ़र्ज़ उ़लूम** सीखने का जज़्बा इनायत फ़रमा और येह उ़लूम याद रखने वाला ह़ाफ़िज़ा भी नसीब कर, **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा ।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی عليه واٰلهٖ وسلَّم

सदक़ा प्यारे की ह़या का कि न ले मुझ से ह़िसाब

बख़्श बे पूछे लजाए को लजाना क्या है

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُوْبُوْا اِلَی اللّٰهِ ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़ेहरिस

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	सरसरी देखने और सीखने का फ़र्क़	36
ईमान पर मौत की किसी के पास ज़मानत नहीं	1	किताबों की अग़लात़ दुरुस्त करवाने का त़रीक़ा	37
न जाने हमारा ख़ातिमा कैसा हो !	3	**दुआए अ़त्तार**	38
शैत़ान अ़ज़ीज़ों के रूप में ईमान छीनने आएगा	3	**(1) बा'ज़ अहम इस्त़िलाह़ात के बारे में**	
पैदा न होने वाला क़ाबिले रश्क है	5	**सुवाल जवाब**	39
क़ाबिले रश्क वोही है जो क़ब्र के अन्दर मोमिन है	7	ईमान की ता'रीफ़	39
बुरी सोह़बत ईमान के लिये ख़त़रनाक है	8	कुफ़्र की ता'रीफ़	40
ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये अलग थलग रहने वाला	9	ज़रूरिय्याते दीन की ता'रीफ़	40
ईमान लूटने के लिये छीना झपटी !	10	ज़रूरिय्याते मज़्हबे अहले सुन्नत	44
सल्बे ईमान की फ़िक्र में शब भर गिर्या व ज़ारी	11	तौह़ीद की ता'रीफ़	44
सुब्ह़ मोमिन तो शाम को काफ़िर	12	शिर्क की ता'रीफ़	44
ईमान पर मौत आती हो तो आज और अभी आ जाए !	13	वाजिबुल वुजूद किसे कहते हैं ?	45
दिल में कभी ईमान तो कभी निफ़ाक़	14	निफ़ाक़ की ता'रीफ़	45
झूटी ख़ुशामद से दीनदारी जाती रहती है !	15	मुरतद की ता'रीफ़	46
जिस को बरबादिये ईमान का ख़ौफ़ न होगा...	18	**(2) कुफ़्र की अक़्साम और तक्फ़ीर के**	
एक "ग़लत़ लफ़्ज़" भी जहन्नम में झोंक सकता है	19	**बारे में सुवाल जवाब**	47
हाथ में आग की चिंगारी	20	कलिमाते कुफ़्र की क़िस्में	47
सुन्नत का तर्क कहीं कुफ़्र तक न पहुंचा दे !	21	लुज़ूम व इल्तिज़ाम की तफ़्सील	48
गुनाह करने से दिल काला हो जाता है	22	आ'ला ह़ज़रत के फ़त्वे का आसान लफ़्ज़ों में ख़ुलासा	50
मरने के बा'द नौ जवान बूढ़ा हो गया !	23	इख़्तिलाफ़ी कुफ़्र के बारे में हुक्म	52
जो मोमिन है वोह ख़ुदा से डरे	24	कुफ़्रे लुज़ूमी में आ'माल बरबाद हो जाते हैं या नहीं ?	52
काश ख़ौफ़े ख़ुदा नसीब हो जाए	24	क्या क़त़्ई कुफ़्र में भी इख़्तिलाफ़ हो सकता है ?	53
ख़ौफ़े ख़ुदा से क्या मुराद है ?	26	मुसल्मान को काफ़िर कहना कैसा ?	54
सात सह़ाबा के रिक़्क़त अंगेज़ कलिमात	27	दूसरे के बारे में काफ़िर होने की आरज़ू	55
अ़वामी बैठकों से दूर रहने में आ़फ़िय्यत है	28	बे ख़याली में कुफ़्र बक देना	56
अफ़्सोस कुफ़्रिय्यात की मा'लूमात नहीं	30	ना बालिग़ का कुफ़्र बकना	56
कुफ़्रिय्या कलिमात आ़म होने के बा'ज़ अस्बाब	30	ना बालिग़ बच्चे के मुसल्मान होने का मस्अला ?	57
कुफ़्रिय्या कलिमात के मुतअ़ल्लिक़ इ़ल्म सीखना फ़र्ज़ है	31	ना बालिग़ का कुफ़्र किस उ़म्र में मो'तबर है ?	58
कुफ़्रिय्या कलिमात से मुतअ़ल्लिक़ अहम ज़ाबित़ा	32	काफ़िर को काफ़िर कहना ज़रूरी है	59
बिग़ैर इ़ल्म के दीनी बह़सें करने वालो ख़बरदार	33	क़त़्ई काफ़िर के कुफ़्र में शक करने वाला भी	
मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी की फ़रमाइश	35	काफ़िर हो जाता है	60

www.dawateislami.net

उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा
क्या आ़म आदमी हुक्मे कुफ़्र लगा सकता है ?	61	(1) काश मैं मेंढा होता	94
बिग़ैर इ़ल्म के फ़तवा देना कैसा ?	62	(2) काश मैं राख होता	94
ग़लत़ मस्अला बताना सख़्त कबीरा गुनाह है	64	(3) काश ! मैं रोज़े क़ियामत न उठाया जाऊं	95
अगर आ़लिम भूल कर ग़लत़ मस्अला बता दे तो गुनाह नहीं	65	**(4) वुजूदे इलाही के इन्कार के बारे में**	
जाहिल से मस्अला पूछना कैसा ?	65	**सुवाल जवाब**	96
(3) मुरतद के बारे में सुवाल जवाब	66	"**अल्लाह** होता तो ग़रीबों का साथ देता"	
मुरतद किसे कहते हैं ?	66	कहना कैसा ?	96
मुरतद की दुन्या में सज़ा	67	"**अल्लाह** होता तो ज़रूर सुनता" कहना कैसा ?	96
क्या मुरतद को हर कोई क़त्ल कर सकता है ?	68	दुश्वारी के साथ आसानी भी होती है ?	97
औ़रत या बच्चा मुरतद हो तो सज़ा	69	ख़ुदा, जज़ा और सज़ा का इन्कार	98
मुरतद की औलाद ह़रामी होती है	70	**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का जिस्म मानना कैसा ?	99
क्या मुरतद के तमाम आ'माल ज़ाएअ़ हो जाते हैं ?	70	**(5) "अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **मकान से पाक है" के**	
कुफ़्र बकने वाले की हां में हां मिलाने वाले का हुक्म	71	**बारे में सुवाल जवाब**	100
मुरतद दोबारा ईमान लाए तो नमाज़ रोज़े के मसाइल	72	"रोज़ी देने वाला ऊपर बैठा है" कहना कैसा ?	100
मुरतद्दीन की सोह़बत से ईमान बरबाद हो सकता है	73	बच्चों को **अल्लाह** कहना सिखाइये	101
मुरतद की नमाज़े जनाज़ा का हुक्मे शरई	75	"**अल्लाह**" का इशारा गूंगे बहरे किस त़रह़ करें ?	102
काफ़िर को मर्हूम कहना कैसा ?	77	फ़िल्में कुफ़्रिय्यात सीखने का ज़रीआ़ हैं	103
नमाज़ और दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत में वालिदैन के लिये		"**अल्लाह** आस्मान से देख रहा है" कहना कैसा ?	104
दुआ़ए मग़्फ़िरत का नाज़ुक मस्अला	77	हज़ार ह़ज से बेहतर अ़मल	105
ख़ानदान का कोई फ़र्द बिलफ़र्ज़ काफ़िर हो तो...	78	आंखों में आग की सलाई फिराई जाएगी	106
मां बाप अगर काफ़िर हों तो उन से मह़ब्बत ह़राम है	80	आंखों के क़ुफ़्ले मदीना का एक मदनी नुस्ख़ा	106
सह़ाबा ने जंग में काफ़िर रिश्तेदारों को क़त्ल किया	80	नीची नज़र रखने का ला जवाब त़रीक़ा	107
गुस्ताख़ों से मेलजोल रखना बे ईमानों की निशानी है	81	कोई देख तो नहीं रहा।	108
सांप जान और बुरा दोस्त ईमान लेता है	82	मदनी इल्तिजा	109
क़ादियानी काफ़िर हैं	83	"ऊपर **अल्लाह** का सहारा" कहने का हुक्मे शरई	109
मुरतद की दा'वत खाना कैसा ?	87	**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को "ऊपर वाला" कहना कैसा ?	109
मुरतद का ज़बीह़ा ह़लाल है या ह़राम ?	88	"**अल्लाह** मस्जिद, मन्दर हर जगह है" कहना	110
मुरतद की क़ुरबानी का गोश्त खा सकते हैं या नहीं ?	89	"**अल्लाह** मकान से पाक है" इस की वज़ाह़त	111
मुरतद बेटा, बाप की विरासत का ह़क़दार है या नहीं ?	89	मकान के मुतअ़ल्लिक़ कुफ़्रिय्यात की 7 मिसालें	114
मुरतद से मुसल्मान क्या सुलूक करें ?	90	**(6) अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की तौहीन के बारे में**	
इम्तिह़ानी परचे में मुरतद लीडर के बारे में		**सुवाल जवाब**	116
सुवाल आए तो....?	92	"**अल्लाह** ज़ालिमों का साथ देता है" कहना	116
लाखों बला में फंसने को रूह़ बदन में आई क्यूं !	93	ख़ुदा की नाराज़ी को हलका जानना कैसा ?	116

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
इमामे आ'ज़म का ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ	117	"मिक्नातीस क़ुत्ब तारे की तरफ़ क्यूं !"	
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भूल से पाक है	118	येह ए'तिराज़ कोई भी नहीं करता	151
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ भूल मन्सूब करना	119	"**अल्लाह** ने मेरी क़िस्मत अच्छी नहीं बनाई"	
अल्लाह मियां कहना कैसा ?	119	कहना कैसा ?	152
"ईमान" का लिबास किस को मिलेगा ?	120	शह्वत परस्ती भी बुरे ख़ातिमे का सबब है	153
"कैसे यक़ीन करूं कि **अल्लाह** सुनता है" कहना कैसा ?	121	दो अम्रद पसन्द मुअज़्ज़िनों की बरबादी	154
"**अल्लाह** साबिरों के साथ है" का इन्कार	122	रिश्तेदार का रिश्तेदार से पर्दा	155
करबला वालों से बढ़ कर मुसीबत ज़दा कौन ?	122	अम्रद को शह्वत से देखना हराम है	156
मुसीबत की अजीब हिक्मत	123	अम्रद के साथ 70 शैतान	157
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के निज़ाम को उलटा कहने वाला काफ़िर है	124	"**अल्लाह** मेरे दुश्मनों को ख़ुशहाल रखता है" कहना कैसा ?	158
"**अल्लाह** मक्कारों का साथ देता है" कहना कैसा ?	125	हमारे हक़ में क्या बेहतर है, हमें नहीं मा'लूम	159
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर छोड़ कर देख लिया !	125	**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बारे में कहना कि "ग़रीबों का साथ नहीं देता"	159
अल्लाह को हासिद कहना कैसा है ?	125	"**अल्लाह** ज़ालिमों का साथ देता है" कहना कैसा ?	160
हाथों हाथ सज़ा	126	"**अल्लाह** को चाहिये कि बुरों से फ़ौरन बदला ले"	
आख़िरत की मुसीबत बरदाश्त करना मुम्किन नहीं	126	कहना कैसा ?	161
"**अल्लाह** बद मआश के साथ है" कहना कैसा ?	127	आफ़त व राहत के बारे में पुर हिक्मत रिवायत	161
कीचड़ में लिथड़े हुए बच्चे से दर्से इब्रत	127	आसाइशों पर मत फूलो !	163
"**अल्लाह** बख़्शेगा नहीं तो कहां जाएगा !"		"**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ गुनहगारों की नहीं सुनता" कहना कैसा ?	163
कहना कैसा ?	129	"**अल्लाह** ने सारी मुसीबतें मुझ पर डाल दी हैं" कहना	164
"फ़ुलां **अल्लाह** को ठगता है" कहना कैसा ?	129	हर एक को इम्तिहान के लिये तय्यार रहना चाहिये	164
क्या **अल्लाह** को सख़ी कह सकते हैं ?	130	कंघियों से गोश्त नोचे गए	166
अल्लाहु रब्बुल आलमीन عَزَّوَجَلَّ की तौहीन के		गुनाहों के सबब ईमान बरबाद हो गया	167
मुतअ़ल्लिक़ कुफ़्रिय्यात की 50 मिसालें	132	"**अल्लाह** ने मुसीबतों के पहाड़ तोड़े हैं" कहना	168
(7) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ए'तिराज़ के बारे में सुवाल जवाब	141	"**अल्लाह** के ख़ज़ाने में मेरे लिये कुछ नहीं"	
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ए'तिराज़ करना कैसा ?	141	कहना कैसा ?	168
अल्लाह पर ए'तिराज़ करना क्यूं कुफ़्र है ?	141	मुसीबत छुपाने की फ़ज़ीलत	169
सत्तर हज़ार जादूगर सज्दे में गिर गए !	143	दाढ़ में दर्द का शिक्वा करने वाले को तम्बीह	169
अल्लाह चाहता तो किसी को भूक ही न लगती	146	मुसीबत ज़दो मत घबराओ !	170
हज़ारों ईंटों की तक़्सीम की बेहतरीन मिसाल	148	आम मुसल्मान भी आज़्माए जाते हैं	172
बादशाह से उलझने वाले फ़क़ीर को		ख़ुदा का हर काम हिक्मत भरा होता है	173
कोई अक़्ल मन्द नहीं कहता	148	काश ! मेरी कोई दुआ न क़बूल होती	174
सेठ तो दाना नोकर पर भी ए'तिराज़ नहीं किया करता	150	**अल्लाह** की रिज़ा पर राज़ी रहिये	175

www.dawateislami.net

उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा
ए'तिराज़ वाले कुफ़्रिय्यात की 25 मिसालें	177	मूए मुबारक की गुस्ताख़ी करना कैसा ?	206
(8) क़ुरआने पाक की तौहीन के बारे में सुवाल जवाब	180	महबूब से निस्बत रखने वाली चीज़ की गुस्ताख़ी कुफ़्र है	206
रिश्वत को هٰذا مِنْ فَضْلِ رَبِّیْ कहना कैसा ?	180	सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर ऐब से पाक हैं	208
फ़िरऔन का फ़तवा ख़ुद उसी के मुंह पर	181	कद्दू शरीफ़ की गुस्ताख़ी करना कैसा ?	208
अगर क़ुरआने पाक हाथ से छूट जाए ?	182	मुझे कद्दू ना पसन्द है कहने वाले की हिकायत	209
क़ुरआने पाक ज़मीन पर पटख़ दिया तो ?	182	येह कहना, क्या तुम्हारे नबी को गाली दूं ?	210
हुक्मे क़ुरआन को ग़लत़ जानना कुफ़्र है	183	मुअज़्ज़मीन की तौहीन कुफ़्र है	210
ईमान की हिफ़ाज़त की मदनी सोच अपनाइये	183	"हमारा सारा गाउं गुस्ताख़ है" कहना कैसा ?	211
नजात के तीन मदनी फूल	184	सारे शहर वालों को ज़ानी कहने का शरई हुक्म	211
रोने के फ़ज़ाइल पर दो रिवायात	184	आ़म लोगों को बुरा भला कहने का शरई हुक्म	214
मूसीक़ी के साथ तिलावत	185	"सरकार ह़राम माल की नियाज़ भी क़बूल फ़रमा	
क्या क़ुरआन पढ़ना कुफ़्र भी हो सकता है ?	185	लेते हैं" कहना कैसा ?	215
फ़ारूक़े आ'ज़म ने पेश इमाम को क़त्ल करवा दिया !	185	ग़लबए ख़ौफ़ में बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के	
सूरए इख़्लास पढ़ने वाले सह़ाबी की हिकायत	186	6 इर्शादात	216
क़ुरआने पाक पढ़ाने वाले की नक़्क़ाली	187	क्या **अल्लाह** के लिये लफ़्ज़ "आ़शिक़" इस्ति'माल	
सूरए लहब की तौहीन	188	कर सकते हैं ?	217
आयते क़ुरआनी "न मानने" का हुक्म	188	क्या किसी को आ़शिक़े रसूल कह सकते हैं ?	218
क्या इन्जील पर भी ईमान लाना होगा ?	189	आ़शिक़े रसूल की 6 निशानियां	219
क्या रद्दो बदल वाली इन्जील पर भी		मदीना को यसरिब कहना कैसा ?	220
ईमान लाना ज़रूरी है ?	190	बे अ़ताए इलाही इल्मे ग़ैब का मानना कैसा ?	221
मेमन क़ौम को मज़ाक़न क़ुरआन से साबित करना	191	सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गुस्ताख़ी के	
क़िराअत के इन्कार का क्या हुक्म है ?	192	मुतअ़ल्लिक़ कुफ़्रिय्यात की 26 मिसालें	222
क़ुरआनो ह़दीस को कहना "कोई चीज़ नहीं"	193	**(10) मे'राज शरीफ़ के बारे में सुवाल जवाब**	226
क़ुरआने पाक की तौहीन की तक़रीबन 42 मिसालें	194	मे'राज शरीफ़ का इन्कार करना कैसा ?	226
(9) नबी की गुस्ताख़ी के बारे में सुवाल जवाब	199	जागते में दीदारे इलाही के दा'वेदार का शरई हुक्म	228
गुस्ताख़ के साथ क्या सुलूक होना चाहिये ?	199	क्या ख़्वाब में दीदारे इलाही मुम्किन है ?	229
सह़ाबा के गुस्ताख़ों के साथ बरताव	201	हिकायत	230
मुरतद से हमदर्दी...... ?	202	**(11) ह़म्द व ना'त, मन्क़बत और**	
मुरतद के बारे में हुक्मे शरई को ज़ुल्म कहना	202	**शुअ़रा के बारे में सुवाल जवाब**	230
क्या वाक़ेई "गुस्ताख़े रसूल की तौबा क़बूल नहीं ?"	203	ह़म्द व ना'त और मन्क़बत किसे कहते हैं ?	230
सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को चरवाहा कहना कैसा ?	204	ना'तिया शाइ़री करना कैसा ?	232

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
क्या ग़ैरे आ़लिम ना'त नहीं लिख सकता ?	233	नुबुव्वत सिर्फ़ **अल्लाह** की इनायत से मिली है	269
किस किस का कलाम पढ़ना चाहिये ?	237	नबी को बन्दा कहने से इन्कार करने वाले का हुक्म	271
कमल्या वाला कहना कैसा ?	239	डाकिये का अपने आप को पैग़म्बर कहना	272
मन्क़बत में "मुखड़ा" बोलना कैसा ?	240	अम्बिया की गुस्ताख़ी के बारे में कुफ़्रिय्यात की 28 मिसालें	273
शे'र "मुझे बता ओ जहां के मालिक......"	241	**(13) सादाते किराम की तौहीन के बारे में सुवाल जवाब**	276
"तू न हम को भूल जा" कहना कैसा ?	241	सय्यिद की तौहीन करना कैसा ?	276
"अ़र्शे आ'ज़म पे रब" वाला शे'र पढ़ना कैसा ?	242	अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक और एक सय्यिद साहिब की हिकायत	277
"जब रोज़े ह़श्र तख़्त पे बैठेगा किब्रिया" कहना कैसा ?	242	सादात से हुस्ने सुलूक की फ़ज़ीलत	279
(12) अम्बियाए किराम عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْھِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام		सादाते किराम की ता'ज़ीम की अस्ल वज्ह	280
की गुस्ताख़ी के बारे में सुवाल जवाब	243	अहले बैत पर ज़ुल्म करने वाले पर जन्नत ह़राम है	282
ग़ैरे नबी के साथ عَلَیْہِ السَّلَام बोलना कैसा ?	243	अहले बैत से लड़ने वाले की शामत	283
मो'जिज़ाते अम्बिया का इन्कार करने वाले का हुक्म	244	सय्यिद को मारने की अ़जीब ह़िकायत	283
नबी के इल्मे ग़ैब का मुन्किर मुसल्मान है या काफ़िर ?	244	क्या सय्यिद शागिर्द को उस्ताद मार सकता है ?	284
क्या ह़ज़रते ईसा मुर्दे ज़िन्दा करते थे ?	248	सय्यिद मुलाज़िम के साथ सुलूक का अन्दाज़	285
ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام का इल्मे ग़ैब	249	अहले बैत का दुश्मन दोज़ख़ी है	286
ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام और इसराईली बच्चे	251	ह़ौज़े कौसर पर चाबुक मारे जाएंगे	287
ग़ौसे आ'ज़म का इल्मे ग़ैब	253	सय्यिद अगर कोई वारिदात कर बैठे तो ?	287
बछड़े की बोली समझने वाले बुज़ुर्ग	254	सय्यिद अगर कुफ़्र बक दे तो सय्यिद रहेगा या नहीं ?	288
क्या ईसा عَلَیْہِ السَّلَام वफ़ात पा चुके हैं ?	256	सय्यिद अफ़्ज़ल या आ़लिम ?	289
ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام के आस्मान पर		**(14) अ़रबों की गुस्ताख़ी के बारे में सुवाल जवाब**	290
उठाए जाने का ईमान अफ़्रोज़ वाक़िआ़	257	क्या अहले अ़रब को बुरा भला कहना कुफ़्र है	290
आदम عَلَیْہِ السَّلَام को कुरबानी का बकरा कहना कैसा ?	260	अ़रब से बुग़्ज़ कब कुफ़्र है	292
"ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام ने ना फ़रमानी की" कहना कैसा ?	260	मह़बूब से मन्सूब हर चीज़ मह़बूब होती है	293
आदम عَلَیْہِ السَّلَام गन्दुम न खाते तो......	262	क्या कुफ़्फ़ारे अ़रब से भी मह़ब्बत रखनी होगी ?	293
क्या नबी का बदन मिट्टी खा सकती है ?	262	कुफ़्फ़ारे अ़रब से नफ़्रत ज़रूरी है	294
क्या ह़यातुन्नबी कहना जाइज़ है ?	264	अहले अ़रब अ़रबी आक़ा के हमक़ौम हैं	295
क्या अम्बियाए किराम आमदो रफ़्त भी करते हैं ?	264	अ़रबिय्यों के फ़ज़ाइल पर 6 अह़ादीसे मुबारका	296
मूसा व यूनुस عَلَیْہِمَاالسَّلَام को देखा	265	मह़बूब के कुत्ते से भी प्यार हुवा करता है	296
स़ह़ाबए किराम ने किस का दस्ते मुबारक देखा ?	266	अ़रबों से बुग़्ज़ रखने वाला शफ़ाअ़त से मह़रूम	297
क़ब्र में जूं ही उतारा नमाज़ पढ़ने लगे !	267	अ़रब से बुग़्ज़ निफ़ाक़ की अ़लामत है	298
"एक लाख 24 हज़ार अम्बिया" कहना कैसा ?	268	बरोज़े क़ियामत अ़रब सब से ज़ियादा क़रीब	298
गोतम बुध को नबी कहना कैसा है ?	269	अ़रब से मह़ब्बत ईमान की अ़लामत है	298

उन्वान	सफ़हा
(15) फ़िरिश्तों की तौहीन के बारे में सुवाल जवाब	299
"मलकुल मौत को बुरा भला" कहना कैसा ?	299
हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द की हिकायत	300
"इस बात का तो मेरे फ़िरिश्तों को भी इल्म नहीं" कहना कैसा ?	301
क्या किरामन कातिबीन दिलों का हाल भी जान लेते हैं ?	302
गुनाह का इरादा तर्क करने पर नेकी मिलने की सूरत	304
जब फ़िरिश्तों का येह मक़ाम है तो आक़ा की शान क्या होगी !	305
"जैसी रूह वैसे फ़िरिश्ते" कहना कैसा ?	305
हर शख़्स पर रोज़ाना 20 फ़िरिश्तों की ज़िम्मादारियां	306
मलकुल मौत को सख़्त दिल कहना कैसा ?	309
येह तो जिब्रईल भूल गए...... कहना कैसा ?	311
फ़िरिश्तों के मुतअ़ल्लिक़ कुफ़्रिय्यात की 13 मिसालें	311
(16) जिन्नात के बारे में सुवाल जवाब	313
जिन्नात के वुजूद का इन्कार करना कैसा ?	313
क्या भूत और चुड़ेल का भी वुजूद है ?	314
क्या इन्सान पर औलिया की सुवारी आ सकती है ?	315
जिन्नात की हाज़िरी	315
क्या जिन्न को आयिन्दा की बातों का पता चल जाता है ?	316
वफ़ाते सुलैमान عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की हिकायत	317
हयातुल अम्बिया	320
दो अम्बियाए किराम लब्बैक पढ़ रहे थे	321
जिन्नात का गुज़श्ता हालात बता देना	322
हमज़ाद कौन होता है ?	323
(17) क़ियामत के बारे में सुवाल जवाब	325
"क़ियामत की भीड़ में छुप जाऊंगा" कहना	325
"क़ियामत में दुगना दे दूंगा" कहना	325
"आख़िरत में जो सब का होगा वोह अपना होगा" कहना कैसा ?	326
"क़ियामत में रिश्वत देनी पड़ेगी" कहना कैसा ?	326
क़ियामत के मुतअ़ल्लिक़ कुफ़्रिय्यात की 8 मिसालें	327
(18) शरीअ़त की तौहीन के बारे में सुवाल जवाब	328
"शरीअ़त पर अ़मल कर के क्या भूका मरूं !" कहना कैसा ?	329
"हम को शरीअ़त ना मन्ज़ूर" कहना कैसा ?	329
शरई मसाइल की किताब की तौहीन	329
जो फ़िक़्ह का बिल्कुल ही इन्कार करे उस का हुक्म	330
ह़दीस का इन्कार करना कैसा ?	331
मुन्किरे ह़दीस के बारे में हुक्म	332
ह़दीस, ख़बर और मुतवातिर की ता'रीफ़ात	333
ख़बरे वाहिद की ता'रीफ़	334
पिछली उम्मतों के आ'माल की 13 झल्कियां	335
नेकी की दा'वत की तौहीन	336
शरीअ़त की तौहीन के मुतअ़ल्लिक़ कुफ़्रिय्यात की 38 मिसालें	337
(19) आ़लिम व इल्मे दीन की तौहीन के बारे में सुवाल जवाब	342
कौन कौन से मसाइल किस किस पर सीखना फ़र्ज़ है	342
"ईद का चांद निकालना तो मौलवियों का काम है" कहना कैसा	344
उ़लमा की तौहीन के ह़यासोज़ अन्दाज़	344
आ़लिम की तौहीन कब कुफ़्र है और कब नहीं	345
आ़लिमे बे अ़मल की तौहीन	346
बद मज़्हब आ़लिम की तौहीन	348
आ़लिम ही आ़लिम की तौहीन करे तो ?	350
अ़वाम को उ़लमा से बदज़न करना बहुत सख़्त गुनाह है	350
काश मैं दरख़्त होता !	352
काश मुझे ज़ब्ह़ कर दिया जाता	353
जाहिल को आ़लिम से बेहतर जानना कैसा ?	354
त़ालिबे इल्मे दीन को कूंएं का मेंडक कहना	354
"मौलवी लोग क्या जानते हैं" कहना कैसा ?	354
"दीन पर अ़मल को मौलवियों ने मुश्किल बना दिया है" कहना कैसा ?	355
सुन्नी आ़लिम के बयान की तह़क़ीर	355
मौलवियों वाला अन्दाज़	355
"आ़लिम सारे ज़ालिम" कहने का हुक्मे शरई	356
आ़लिमे दीन को ह़क़ारत से मुल्ला कहना	356
"मौलवी बनोगे तो भूके मरोगे" कहना	357

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
तौहीने उ़लमा के मुतअ़ल्लिक़ 10 पैरे	357	**(24) गुनाहों के ज़रीए़ होने वाले**	
(20) अज़ान की तौहीन के बारे में सुवाल जवाब	359	**कुफ़्रिय्यात के बारे में सुवाल जवाब**	385
حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ का मज़ाक़ उड़ाना	359	गुनाह की ता'रीफ़	385
अज़ान के मुतअ़ल्लिक़ कुफ़्रिय्या कलिमात की 8 मिसालें	361	गुनाहे सग़ीरा पर इस्रार के मा'ना	386
(21) नमाज़ की तौहीन के बारे में सुवाल जवाब	362	गुनाह को ह़लाल समझना	388
बे वुज़ू नमाज़ पढ़ना कैसा ?	362	"गुनाह कर के तौबा करना **अल्लाह** की सुन्नत है"	
"नमाज़ की वज्ह से मुसीबतें आती हैं" कहना कैसा ?	362	कहना कैसा ?	389
कुत्ते की त़रफ़ से अ़मली नसीह़त	363	गुनाह को अच्छा जानना कैसा ?	389
नमाज़ को बोझ समझना	364	"झूट बोला तो क्या बुरा किया !" कहना कैसा ?	390
"आप लोग **अल्लाह** का पेट भरें" कहना कैसा ?	365	"छोटी मोटी बातें तो चल जाएंगी" कहना	391
"कौन से गुनाह किये जिन्हें बख़्शवाने के लिये		इमामे आ'ज़म का ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ	391
नमाज़ पढ़ें !" कहना	366	गुनाहे सग़ीरा कब कुफ़्र होता है	393
"आमीन" का मज़ाक़ उड़ाना	366	नाह़क़ माल छीन कर लाने वाले की ता'रीफ़ करना कैसा ?	394
क़िब्ला रू थूकना	367	नेकियों को अच्छा न मानना कैसा ?	395
क़िब्ला की त़रफ़ थूकने वाले की ह़िकायत	367	मुसल्मान का क़त्ल ह़लाल जानना कैसा ?	396
का'बे के का'बा की बे अदबी करने वाला		बद फ़े'ली को जाइज़ समझना कैसा ?	397
क्यूंकर इमाम हो सकता है !	369	"काश ! बद फ़े'ली जाइज़ होती" कहना कुफ़्र है	397
नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ बके जाने वाले		अज्नबिय्या का बोसा लेने को जाइज़ कहना	398
कुफ़्रिय्यात की 52 मिसालें	371	गुनाहों के ज़रीए़ दीन की ख़िदमत	398
(22) रमज़ान की तौहीन के बारे में सुवाल जवाब	377	मा'सियत के ज़रीए़ दीन की ख़िदमत बाइ़से हलाकत है	399
रोज़ए रमज़ान की फ़र्ज़िय्यत का इन्कार	377	शरीअ़त से ज़िना की इजाज़त मांगना कुफ़्र है	400
रोज़ादार को बुरा भला कहना कैसा ?	378	ख़ुदा की नाराज़गी को हलका जानना कैसा ?	401
"रोज़ा वोह रखे जिस के पास खाना न हो" कहना कैसा ?	378	**अल्लाह** व रसूल के हुक्म पर दूसरे के	
रमज़ान शरीफ़ को भारी महीना कहना	379	हुक्म को तरजीह़ देना कैसा ?	402
रोज़े की ता'दाद से बेज़ारी का इज़्हार	379	डान्स को जाइज़ कहना कैसा ?	403
मुरतद्दीन के साथ सुलूक की झल्कियां	380	इन्सान को शैत़ान कहना कैसा ?	404
(23) ज़कात के इन्कार के बारे में सुवाल जवाब	382	"गुनाह" के मुतअ़ल्लिक़ कुफ़्रिय्यात की 11 मिसालें	405
जो ज़कात को फ़र्ज़ न माने वोह काफ़िर है	382	**(25) ह़राम को ह़लाल कहने के बारे में सुवाल जवाब**	407
ढाई फ़ीसद से ज़ाइद ज़कात का हुक्म होता तो......	382	पराए माल को ह़लाल समझना कैसा ?	407
ज़कात को ज़ुल्म कहना	382	ह़राम फ़े'ल से क़ब्ल बिस्मिल्लाह पढ़ना कैसा ?	407
ज़कात को ह़क़ारतन टेक्स कहना	383		
ख़ूबरू दूल्हा	383		

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
हराम माल से ख़ैरात करना कैसा ?	408	क्या मुरतद को ता'वीज़ दे सकते हैं ?	441
ख़ैरात में हराम माल ले कर फ़क़ीर का दुआ देना कैसा ?	409	कुफ़्फ़ार के मेलों में शिर्कत	442
हुजूम में रह कर दीन की हिफ़ाज़त की दुश्वारी	410	दसहरे में शिर्कत फ़िक़्ही कुफ़्र है या कलामी ?	442
बहन से निकाह़ को जाइज़ समझना कैसा ?	412	कुफ़्फ़ार के तहवार में तोह़फ़े का लेन देन	444
सूद को ह़लाल जानना	412	मुश्रिक की बख़्शिश का अ़क़ीदा रखना कैसा ?	445
हर ह़ाल में गोश्त को ह़राम कहने वाले का हुक्म	413	घर में कुफ़्फ़ार के बुतों की तसावीर आवेज़ां करना	446
ग़स्ब को ह़लाल कहना कैसा ?	414	काफ़िर के पास नोकरी करना कैसा ?	446
ह़राम को ह़लाल कहने के मुतअ़ल्लिक़		मुरतद के यहां मुलाज़मत कर सकते हैं या नहीं ?	447
कुफ़्रिय्यात की 11 मिसालें	415	काफ़िरों के मह़ल्ले से जल्दी गुज़र जाइये !	448
(26) सुन्नतों की तौहीन के बारे में सुवाल जवाब	417	कुफ़्फ़ार के मह़ल्लों में कारोबार करने	
दाढ़ी को चमगादड़ के पर कहना कैसा ?	417	जा सकते हैं या नहीं ?	449
पीर बचा लेगा	418	काफ़िरों के मेलों में तिजारत के लिये जाना	449
दाढ़ी वाले को जंगली कहना कैसा ?	419	**(29) इरादए कुफ़्र के बारे में सुवाल जवाब**	451
कुफ़्रिय्या कलिमात की 21 मिसालें	420	"**अल्लाह** व रसूल एक हैं" कहना कैसा ?	451
(27) कुफ़्रिय्या वसाविस के बारे में सुवाल जवाब	423	वीज़ा फ़ोर्म पर खुद को क्रिस्चेन लिखना कैसा ?	453
ज़ेहन में कुफ़्रिय्या ख़यालात आना	423	नोकरी की ख़ातिर झूटमूट ख़ुद को यहूदी लिखना कैसा ?	453
"मुझे फ़ुलां कुफ़्रिय्या वस्वसे आते हैं" कहना कैसा ?	424	"मैं क़ादियानी हो जाऊंगा" कहना कैसा ?	454
वस्वसों के तीन इलाज	424	एक मग़रूर का इब्रतनाक अन्जाम	454
बुरे ख़ातिमे के ख़ौफ़ से रोना	426	मौत के वक़्त सल्बे ईमान का अन्देशा	456
(28) कुफ़्फ़ार से दोस्ती वग़ैरा के बारे में सुवाल जवाब	428	8 कुफ़्रिय्यात की निशान देही	457
काफ़िर से दोस्ती रखना ह़राम है	428	**(30) कुफ़्र पर मजबूर किये जाने के बारे में सुवाल जवाब**	458
काफ़िर से मह़ब्बत करने का हुक्म	429	मजबूरी में तोरिया की सूरतें	459
क्या काफ़िर से हाथ मिला सकते हैं ?	432	तोरिये की ता'रीफ़ और इस का आसान त़रीक़ा	460
काफ़िर के पास ता'लीम ह़ासिल करना कैसा ?	433	क्या जान बचाने के लिये ब ज़ाहिर	
काफ़िर की दोस्ती ईमान के लिये ख़त़रनाक है	434	कुफ़्रिय्या फ़े'ल करना ज़रूरी है ?	463
काफ़िर की ता'ज़ीम करना कैसा ?	435	अ़ज़ीमत की मश्हूर तरीन मिसाल	464
बद मज़्हबों से सलाम दुआ करना कैसा ?	436	(1) सह़ाबी ने जान क़ुरबान कर दी	465
कुफ़्फ़ार के साथ मुश्तरका खाना पकाना कैसा ?	437	(2) येह इक जान क्या है करोड़ों	467
काफ़िर का झूटा खाना	440	तेरे नाम पर सब को वारा करूं मैं	470
काफ़िर को ता'वीज़ देना कैसा ?	440	**(31) कुफ़्रिय्या अफ़्आ़ल के बारे में सुवाल जवाब**	471
		माथे पर क़श्क़ा लगाना कैसा ?	472

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
कुफ़्री बात सुन कर हंसना	474	कलिमा शरीफ़ का मज़ाक़ उड़ाना कुफ़्र है	502
कुफ़्रिय्या मज़्मून की कम्पोज़िंग छपाई और ख़रीदो फ़रोख़्त	474	"आज नमाज़ की छुट्टी है" कहना कैसा ?	503
अगर मुरव्वत में कुफ़्रिय्यात कम्पोज़ करने पड़ जाएं तो ?	482	सुब्ह मोमिन तो शाम को काफ़िर	503
अफ़्आले कुफ़्र की 4 मिसालें	483	आंधी के वक़्त सरकार बे क़रार हो जाते	504
रहमत की उम्मीद और नाराज़गी का ख़ौफ़	484	जब तेज़ हवा चलती तो......?	505
तो मैं राख बनना पसन्द करूं	484	बरात का मज़ाक़ उड़ाना	505
कहीं मुझ पर आग न बरसे !	485	आजिज़ी की निराली हिकायत	507
कहीं सब से पहले मुझे दोज़ख़ में न डाल दिया जाए	485	"जी चाहता है यहूदी हो जाऊं" मज़ाक़न ऐसा कहना कैसा ?	509
जहन्नम से अमान मिलती हो तो दुन्या की		मज़ाक़ में बोले जाने वाले कुफ़्रिय्यात की	
आग में जल जाना मन्ज़ूर है	486	कमो बेश 19 मिसालें	510
एक गुनाह के मुक़ाबले में हज़ारों साल की इबादत भी कम है	486	**(34) गानों के 34 कुफ़्रिय्या अश्आर**	512
उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ के ख़ौफ़ का निराला अन्दाज़	487	ईमान बरबाद हो गया	524
ह़क़ीक़ी ख़ौफ़ येह है कि गुनाह तर्क कर दे	488	**(35) मियां बीवी के मुतअ़ल्लिक़**	
(32) फ़ौतगी में बके जाने वाले		**कुफ़्रिय्यात के बारे में सुवाल जवाब**	525
कुफ़्रिय्यात के बारे में सुवाल जवाब	489	"**अल्लाह** मालिक नहीं बस आप को	
"**अल्लाह** को ऐसा नहीं करना चाहिये" कहना कैसा ?	489	काम करना है" कहना कैसा ?	525
"नेक लोगों की **अल्लाह** को भी ज़रूरत पड़ती है" कहना कैसा ?	489	"ख़ुदा भी जुदा नहीं कर सकता" कहना कैसा ?	526
"येह **अल्लाह** को चाहिये होगा" कहना कैसा है ?	490	मियां बीवी के बारे में कुफ़्रिय्यात की 10 मिसालें	526
बच्चे की फ़ौतगी पर सब्र का इन्आम	491	दो जन्नतें...... किस के लिये ?	528
जिस का बच्चा फ़ौत हो जाए उस के लिये जन्नत की बिशारत	491	सोने और चांदी की जन्नतें	529
"या **अल्लाह** ! तुझे बच्चों पर भी तर्स नहीं आया !" कहना कैसा ?	492	**(36) "اِنْ شَآءَ الله" का मज़ाक़ उड़ाने के बारे में सुवाल जवाब**	530
बे सब्री करने से मरने वाला पलट कर नहीं आता	492	"येह اِنْ شَآءَ الله ढीली है" कहना कैसा ?	530
नौहा करने वालियों के लिये वईद	493	मुबल्लिग़े आ'ज़म के रूह परवर बयान की एक झलक	531
"या **अल्लाह** तुझे भरी जवानी पर भी रहम न आया" कहना	494	"मैं बिग़ैर اِنْ شَآءَ الله काम करूंगा" कहना	533
"या **अल्लाह** ! हम ने तेरा क्या बिगाड़ा है"		جَزَاكَ الله सुन कर कहना कि इस की ज़रूरत नहीं	533
कहने का हुक्मे शरई	494	जन्नत दिखा कर महरूम कर दिया जाएगा	534
अ़ज़ाब के दो कुरते	495	**(37) क्रिस्चेनों वग़ैरा के बारे में सुवाल जवाब**	536
नौहा के मा'ना और इस के बा'ज़ अह़काम	496	"क्रिस्चेनों को अहले ईमान" कहना कैसा ?	536
(33) मज़ाक़ में कुफ़्रिय्यात बकने के बारे में सुवाल जवाब	496	क्या अहले किताब, अहले ईमान नहीं ?	537
मज़ाक़ में कुफ़्र बकने वाले की क़ुरआन में मज़म्मत	497	ईसाई तीन ख़ुदाओं को मानते हैं	538
फ़िल्मी अदाकारों की वज्ह से जहन्नम को पसन्द करना कैसा ?	499	क्या तौहीद के क़ाइल यहूदियों को भी	
"जन्नती को दोज़ख़ में सिगरेट जलाने के लिये जाना पड़ेगा" कहना	500	अहले ईमान न कहा जाए ?	539
बद मज़्हबों की किताबें पढ़ने का मस्अला	500	क्या किताबियों को अहले ईमान कहने की कोई गुन्जाइश ही नहीं ?	541

www.dawateislami.net

उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा
क्या शिर्क से बचने वाले किताबी को भी अहले ईमान नहीं कह सकते ?	543	"मेरा कोई दीन मज़्हब नहीं" येह तस्लीम करना कैसा ?	572
क्या यहूदो नसारा दाइमी जहन्नमी हैं ?	545	चार मुहावरात	573
काफ़िर को इस्लाम के क़रीब लाने के लिये कुफ़्र बकना	547	शफ़ाअ़त का इन्कार	574
लुग़वी तौर पर किसी को अहले ईमान कहना	549	"तौबा कोई चीज़ नहीं" कहना कैसा ?	575
(38) काफ़िर के इस्लाम क़बूल करने के बारे में		"**अल्लाह** मालिक नहीं" कहना कैसा ?	576
सुवाल जवाब	550	"चाहे **अल्लाह** पसन्द करे या न करे	
क़बूले इस्लाम के त़ालिब को सोचने का मश्वरा देना कैसा ?	550	मैं तो ज़ियादा खाऊंगा" कहना	576
काफ़िर के मुत़ालबे पर आ़लिम के पास		"मुसल्मान बन कर इम्तिहान में पड़ गया हूं"	
क़बूले इस्लाम के लिये ले जाना	550	कहना कैसा ?	577
काफ़िर को मुसल्मान करने का त़रीक़ा	551	"नहीं मा'लूम कि मुसल्मान हूं या काफ़िर" कहना कैसा ?	577
क्या क़बूले इस्लाम से क़ब्ल नहाना ज़रूरी है ?	552	क्या दोबारा जनम लेना मुम्किन है ?	578
नौ मुस्लिम का ख़तना	553	आवागोन के बारे में हैरत अंगेज़ मा'लूमात	579
अगर नौ मुस्लिम ख़तना न करवाए तो ?	554	क्या दिल का पर्दा काफ़ी है ?	579
नौ मुस्लिम के लिये इब्तिदाई मा'लूमात के ज़राएअ़	555	किसी को "**अल्लाह** मियां की गाय" कहना कैसा ?	581
क्या नौ मुस्लिम को इस्लामी ता'लीम भी देनी होगी ?	556	झूटी बात पर कहना, "**अल्लाह** जानता है मैं सच्चा हूं"	581
क्या काफ़िर के लिये किसी के हाथ पर मुसल्मान होना ज़रूरी है ?	558	खाना खाने को "पेट पूजा करना" कहना कैसा ?	582
नौ मुस्लिम की माली मदद	559	**अल्लाह** की दी हुई तौफ़ीक़ ही से सब कुछ होता है	582
एक ही कलिमए कुफ़्र से बार बार तौबा	561	जो जैसा करने वाला था वैसा लिख दिया गया	583
क्या मुसल्मान और काफ़िर बराबर हैं ?	562	तक़्दीर के बारे में एक अहम फ़तवा	584
समाजी कारकुन	563	तक़्दीर के बारे में बह़्स करना कैसा ?	585
कलिमए कुफ़्र की ताईद भी कुफ़्र है	564	काफ़िर हो जाने की क़सम	586
ख़ुद को आधा मुसल्मान कहना कैसा ?	565	सिर्फ़ "एक लफ़्ज़"	
"वोह तो न दीन का है न दुन्या का" कहना	565	बरबादिये आख़िरत के लिये काफ़ी है	587
कुफ़्रिय्या कलिमात की 15 मिसालें	566	"हम ख़ुदा और रसूल को नहीं जानते" कहना कैसा ?	588
(39) मुतफ़र्रिक़ात	568	मस्जिद की तौहीन का हुक्म	589
अल्लाह के दुरूद भेजने के मा'ना	568	का'बा शरीफ़ को ईंट मिट्टी का बना हुवा कहना कैसा ?	589
दुरूदे पाक पढ़ने में सुस्ती न करें	569	का'बे को गाली देना कैसा ?	590
दुरूदे पाक न पढ़ने का वबाल	569	किसी बुज़ुर्ग को क़य्यूमे ज़मां कहना कैसा ?	590
ख़्वाब की बुन्याद पर किसी को काफ़िर नहीं कह सकते	570	अ़ब्दुल क़ादिर को क़ादिर कहना कैसा ?	593
ढूंडने से ख़ुदा भी मिल जाता है	571	"न ख़ुदा ही मिला न विसाले सनम" कहना कैसा ?	594
अल्लाह को ह़ाज़िर नाज़िर कहना कैसा ?	571	अपने पीर को नबी से बढ़ कर कहना	595
"रह़मान के घर शैत़ान पैदा होता है" कहना	572	वाह क्या बात आ'ला ह़ज़रत की	595

उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा
इस जुम्ले "**अल्लाह** करम फ़रमा देगा" को		कुफ़्र की आंधियों से हिफ़ाज़त की पनाह गाहें	635
रद कर देना कैसा ?	597	कलिमा पढ़ लिया अब जन्नत से कौन रोक सकता है !	636
"या मुर्शिद ! आप करम फ़रमा दीजिये" कहना कैसा ?	598	आक़ा ने ग़ैब की ख़बर दी	639
इमाम मालिक ने क़ब्र में जा कर इमदाद फ़रमाई	600	क्या अहले क़िब्ला को भी	
साहिबे मज़ार का अपने ज़ाइर की ख़बर गीरी करना	601	काफ़िर कहा जा सकता है ?	641
मज़ार को सज्दा करना कैसा ?	603	नेक नमाज़ी कैसे काफ़िर हो सकता है ?	645
मज़ार के सामने से ज़मीन चूमना कैसा ?	604	हाजी नमाज़ी कोई भी हो सब के लिये	
समझाने पर ज़िद करने वाले की मज़म्मत	606	कुफ़्र का ख़ौफ़ है	646
"लोग बे मौत मर रहे हैं" कहना कैसा ?	606	ईमान सीने में दाख़िल हो कर निकल भी सकता है !	647
मुझे जज़ाए ख़ैर नहीं चाहिये कहना कैसा ?	608	नाबीना को बद निगाही से कोई नहीं रोकता	648
येह कहना : अच्छा जाओ (पूजा) कर लो	608	हर मुल्क में जराइम की सज़ाएं हैं	649
"पूजा कर के आता हूं" कहने वाले को क्या जवाब दे ?	610	ग़द्दार को कोई भी मुहिब्बे वत़न नहीं कह सकता	651
ज़िक्र के मुतअ़ल्लिक़ कुफ़्रिय्यात की 9 मिसालें	610	क़त़ई कुफ़्र के सुदूर के बा'द कोई आदमी	
मुतफ़र्रिक़ात की 45 मिसालें	611	मुसल्मान नहीं रह सकता	652
(40) तजदीदे ईमान, तजदीदे निकाह़ वग़ैरा		अगर मुजरिम ही ज़ियादा हों तो क़ाज़ी क्या करे !	653
के बारे में सुवाल जवाब	621	आइन्दा काफ़िर हो जाने की पेशिन गोई !	654
तजदीदे ईमान का त़रीक़ा	621	उ़लमा पर ए'तिराज़ कि जब देखो	
तजदीदे निकाह़ का त़रीक़ा	622	कुफ़्र का फ़तवा दाग़ देते हैं !	656
ह़ालते इरतिदाद में होने वाले निकाह़ का मस्अला	623	उ़लमा की इत़ाअ़त रसूल की इत़ाअ़त है	657
अ़लानिया तौबा का अहम तरीन मस्अला	625	उ़लमाए दीन की तौहीन संगीन जुर्म है	658
एह़तियात़ी तजदीदे ईमान कब कब करें ?	626	शैत़ान लोगों को आ़लिमों से क्यूं दूर करता है	659
शोहर मुरतद हो जाए तो बीवी क्या करे ?	627	शैत़ान मां बाप के रूप में !	659
मुरतद तौबा कर के इ़द्दत के अन्दर		उ़लमा के बिग़ैर इस्लाम का निज़ाम नहीं चल सकता	661
निकाह़ कर सकता है या नहीं	628	उ़लमा की बारगाह में ह़ाज़िरी	
मुश्रिका का शोहर मुसल्मान हो गया		तौबा की तौफ़ीक़ का ज़रीआ़...	662
निकाह़ का क्या बना ?	629	क्या जाहिल के ईमान पर ख़ातिमे की उम्मीद नहीं ?	663
बीवी मुरतद्दा हो गई तो निकाह़ टूटा या नहीं ?	630	अच्छा ख़ासा मुसल्मान कुफ़्र के ग़ार में	
क्या साबिक़ा मुर्शिद ही से तजदीदे बैअ़त करे ?	631	कैसे जा पड़ता है ?	668
(41) इसी किताब "कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब"		ईमान की ह़िफ़ाज़त की फ़िक्र ज़रूरी है	672
के मुतअ़ल्लिक़ मुतवक़्क़अ़ वस्वसों के बारे में सुवाल जवाब	632	ईमान की ह़िफ़ाज़त की दुआ़ के लिये	
क्या कलिमा गो भी काफ़िर हो सकता है ?	632	दरबारे आ'ला ह़ज़रत में ह़ाज़िरी	673
बरबादिये ईमान के इम्कान का क़ुरआन से सुबूत	634	फ़ेहरिस	676

ماخذ و مراجع

نمبر شمار	کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ/سال اشاعت
1	قرآن پاک	کلامِ الٰہی عزوجل	ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور
2	ترجمۂ کنز الایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمٰن	رضا اکیڈمی بمبئی ہند
3	تفسیر طبری	امام ابو جعفر محمد بن جریر طبری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
4	تفسیر بغوی	امام ابو محمد حسین بن مسعود رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۴ھ
5	تفسیر کبیر	امام فخر الدین محمد بن عمر رازی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۰ھ
6	تفسیر قرطبی	ابو عبد اللہ محمد بن احمد انصاری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۲۰ھ
7	تفسیر در منثور	امام جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۰۳ھ
8	تفسیرات احمدیہ	شیخ احمد بن ابی سعید جونپوری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	پشاور
9	تفسیر روح البیان	شیخ اسماعیل حقی بروسی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	کوئٹہ ۱۴۱۹ھ
10	حاشیۃ الجمل	علامہ شیخ سلیمان جمل رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	باب المدینہ کراچی
11	روح المعانی	شہاب الدین سید محمود آلوسی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۰ھ
12	خزائن العرفان	سید نعیم الدین مراد آبادی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	رضا اکیڈمی بمبئی ہند
13	تفسیر نعیمی	مفتی احمد یار خان نعیمی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز
14	نور العرفان	مفتی احمد یار خان نعیمی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	پیر بھائی اینڈ کمپنی
15	صحیح بخاری	امام محمد بن اسماعیل بخاری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۹ھ
16	صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج قشیری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار ابن حزم بیروت ۱۴۱۹ھ
17	سنن ترمذی	امام محمد بن عیسیٰ ترمذی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ

18	سنن نسائی	امام احمد بن شعیب نسائی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الجیل بیروت
19	سنن ابوداود	امام سلیمان بن اشعث سجستانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	داراحیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۱ھ
20	سنن ابن ماجہ	امام محمد بن یزید قزوینی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
21	السنن الکبری	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۴ھ
22	شعب الایمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
23	المستدرک	امام محمد بن عبداللہ الحاکم نیشاپوری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۱۸ھ
24	المسند	امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
25	مسند ابی یعلی	امام احمد بن علی موصلی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۸ھ
26	مسند الفردوس	امام شیرویہ بن شہردار دیلمی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۸ھ
27	المعجم الکبیر	امام سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	داراحیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۲ھ
28	المعجم الاوسط	امام سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۲ھ
29	جمع الجوامع	امام جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
30	الجامع الصغیر	امام جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۵ھ
31	کتاب الورع	امام ابوبکر عبداللہ بن محمد قرشی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	المکتبۃ العصریۃ بیروت ۱۴۲۶ھ
32	مجمع الزوائد	امام حافظ نورالدین ہیثمی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۲۰ھ
33	کنز العمال	علامہ علاؤالدین علی متقی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۹ھ
34	المصنف	امام عبداللہ بن محمد بن ابی شیبہ کوفی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
35	الترغیب والترہیب	علامہ عبدالعظیم بن عبدالقوی منذری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۲۱۸ھ
36	مشکاۃ المصابیح	علامہ ولی الدین تبریزی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ

www.dawateislami.net

37	حلیۃ الاولیاء	علامہ ابو نعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۹ھ
38	عمدۃ القاری	علامہ ابو محمد محمود بن احمد عینی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الحدیث ملتان ۱۴۱۸ھ
39	مرقاۃ المفاتیح	علامہ ملا علی قاری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
40	التیسیر	علامہ محمد عبد الرءوف مناوی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الحدیث مصر
41	فیض القدیر	علامہ محمد عبد الرءوف مناوی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۲ھ
42	اشعۃ اللمعات	شیخ عبد الحق محدث دہلوی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	کوئٹہ ۱۹۱۳ء
43	مراٰۃ المناجیح	مفتی احمد یار خان نعیمی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور
44	نزہۃ القاری	مفتی محمد شریف الحق امجدی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	فرید بک اسٹال لاہور ۱۴۲۱ھ
45	فیوض الباری	علامہ سید محمود احمد رضوی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	مکتبۂ رضوان مرکز الاولیاء لاہور
46	تفہیم البخاری	علامہ غلام رسول رضوی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	تفہیم البخاری پبلی کیشنز سردار آباد
47	شرح نخبۃ الفکر	حافظ ابن حجر عسقلانی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	باب المدینہ کراچی
48	شرح العقائد النسفیۃ	مسعود بن عمر تفتازانی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	باب المدینہ کراچی
49	منح الروض	علامہ ملا علی قاری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	باب المدینہ کراچی
50	المعتمد المستند	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمٰن	برکاتی پبلشرز باب المدینہ ۱۴۲۰ھ
51	ھدایہ	علامہ علی بن ابی بکر مَرغینانی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار احیاء التراث العربی بیروت
52	فتاوی قاضی خان	علامہ حسن بن منصور اوز جندی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	کوئٹہ
53	خلاصۃ الفتاوی	علامہ طاہر بن عبد الرشید بخاری رحمۃ اللہ تعالی علیہ	کوئٹہ
54	المدخل	علامہ محمد بن محمد ابن الحاج رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۵ھ
55	تبیین الحقائق	علامہ عثمان بن علی زیلعی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۰ھ

56	فتاوٰی تاتارخانیہ	علامہ عالم بن علاء انصاری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	باب المدینہ کراچی ۱۴۱۶ھ
57	الحاوی للفتاوی	امام جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالفکر بیروت ۱۴۲۰ھ
58	البحرالرائق	علامہ زین الدین بن نجیم رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	کوئٹہ ۱۴۲۰ھ
59	غمز عیون البصائر	علامہ احمد بن محمد حموی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	باب المدینہ کراچی ۱۴۱۸ھ
60	مجمع الانھر	علامہ عبدالرحمٰن بن محمد بن سلیمان رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۹ھ
61	فتاوٰی عالمگیری	شیخ نظام و جماعۃ من علماء الہند رحمۃ اللہ تعالٰی علیہم	دارالفکر بیروت ۱۴۰۳ھ
62	درمختار	علامہ علاء الدین حصکفی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالمعرفۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
63	حاشیۃ الطحطاوی علی الدرالمختار	علامہ احمد بن محمد طحطاوی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	کوئٹہ
64	ردالمحتار	علامہ ابن عابدین محمد امین شامی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالمعرفۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
65	فتاوٰی خیریہ	علامہ خیرالدین بن احمد رملی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	باب المدینہ کراچی
66	فتاوٰی بزازیہ	علامہ محمد بن محمد کردری حنفی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	کوئٹہ ۱۴۰۳ھ
67	حاشیہ عالمگیری باب احکام المرتدین	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمٰن	صدیقی پبلیشرز باب المدینہ کراچی
68	فتاوٰی رضویہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمٰن	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
69	فتاوٰی افریقہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمٰن	نوری کتب خانہ لاہور ۲۰۰۳ء
70	عرفان شریعت	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمٰن	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
71	الملفوظ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمٰن	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ ۱۴۲۹ھ
72	فتاوٰی امجدیہ	مفتی محمد امجد علی اعظمی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	مکتبہ رضویہ باب المدینہ ۱۴۱۹ھ
73	فتاوٰی مصطفویہ	مفتی مصطفٰے رضا خان نوری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	شبیر برادرز مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۲۱ھ
74	وقارالفتاوٰی	مولانا مفتی وقارالدین رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	بزم وقارالدین باب المدینہ ۲۰۰۱ء

75	فتاوٰی فقیہ ملت	مفتی جلال الدین امجدی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	شبیر برادرز مرکز الاولیاء لاہور ۲۰۰۵ء
76	فتاوٰی فیض الرسول	مفتی جلال الدین امجدی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	شبیر برادرز مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۱۱ھ
77	بہارِ شریعت (جلد اوّل)	مفتی محمد امجد علی اعظمی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ ۱۴۲۹ھ
78	بہارِ شریعت (حصہ اوّل)	مفتی محمد امجد علی اعظمی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ ۱۴۲۶ھ
79	بہارِ شریعت (حصہ نہم)	مفتی محمد امجد علی اعظمی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ ۱۴۳۰ھ
80	الخصائص الکبرٰی	امام جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
81	الشفا	علامہ قاضی عیاض مالکی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	مرکز اہلسنّت برکات رضا ہند ۱۴۲۳ھ
82	شرح الشفا	علامہ ملا علی قاری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
83	تاریخ بغداد	علامہ علی بن احمد خطیب بغدادی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۷ھ
84	تاریخ دمشق	علامہ ابو القاسم علی بن حسن رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۶ھ
85	الطبقات الکبرٰی	علامہ محمد بن سعد المعروف با بن سعد رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۸ھ
86	الطبقات الکبرٰی	علامہ عبد الوہاب بن احمد شعرانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۹ھ
87	المیزان الکبرٰی	علامہ عبد الوہاب بن احمد شعرانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	مصطفٰی البابی مصر
88	الخیرات الحسان	علامہ شہاب الدین احمد بن حجر ہیتمی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۰۳ھ
89	الزہد	امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الغد الجدید مصر ۱۴۲۶ھ
90	الزھد الکبیر	امام ابو بکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	مؤسسۃ الکتب الثقافیۃ بیروت ۱۴۱۷ھ
91	رسالہ قشیریہ	امام ابو القاسم قشیری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۸ھ
92	قوت القلوب	شیخ ابو طالب محمد بن علی مکی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند ۱۴۲۳ھ

www.dawateislami.net

93	تنبیہ المغترین	علامہ عبدالوہاب بن احمد شعرانی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارالبشائر بیروت
94	احیاء العلوم	امام ابوحامد محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارصادر بیروت ۲۰۰۰ء
95	منہاج العابدین	امام ابوحامد محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
96	الحدیقۃ الندیۃ	علامہ عبدالغنی نابلسی حنفی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	پشاور
97	سبع سنابل	علامہ میر عبدالواحد بلگرامی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مکتبہ قادریہ مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۰۲ھ
98	تذکرۃ الاولیاء	شیخ فریدالدین محمد عطار رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	انتشارات گنجینہ تہران
99	اخبارالاخیار	شیخ عبدالحق محدث دہلوی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	فاروق اکیڈمی
100	الروض الفائق	علامہ شعیب بن سعد عبدا لکافی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
101	بحرالدموع	علامہ ابن جوزی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مکتبۃ دارالفجر دمشق ۱۴۲۴ھ
102	شرح الصدور	امام جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند ۱۴۲۳ھ
103	احسن الوعاء	علامہ مولانا نقی علی خان رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ ۱۴۲۰ھ
104	تمہید الایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمٰن	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ ۱۴۲۵ھ
105	أخلاق الصالحین	علامہ محمد شریف محدث کوٹلوی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ ۱۴۲۸ھ
106	شانِ حبیب الرحمٰن	مفتی احمد یار خان نعیمی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مکتبہ اسلامیہ مرکز الاولیاء لاہور
107	حیات اعلیٰ حضرت	علامہ مولانا ظفرالدین بہاری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
108	سوانح کربلا	علامہ سید نعیم الدین مرادآبادی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ ۱۴۲۹ھ
109	المفردات	علامہ راغب اصفہانی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارالقلم دمشق ۱۴۱۶ھ
110	کتاب التعریفات	علامہ سید شریف علی بن محمد جرجانی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارالمنار

www.dawateislami.net

कन्ज़ुल ईमान
मअ़
ख़ज़ाइनुल इरफ़ान
इमाम अहमद रज़ा ख़ान
मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी
नाशिर : मक्तबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)
K 125

कन्ज़ुल ईमान
मअ़
ख़ज़ाइनुल इरफ़ान
इमाम अहमद रज़ा ख़ान
K I 26

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमे'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

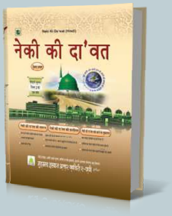

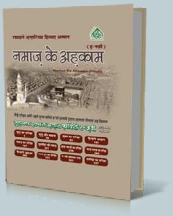

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁ देहली :- मक्तबतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली ☎ 011-23284560

❁ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद, गुजरात ☎ 9327168200

❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र ☎ 09022177997

❁ हैदराबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टांकी, हैदराबाद, तेलंगाना ☎ (040) 2 45 72 786

E-mail : maktabadelhi@gmail.com / **Website :** www.dawateislamihind.net